



Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4

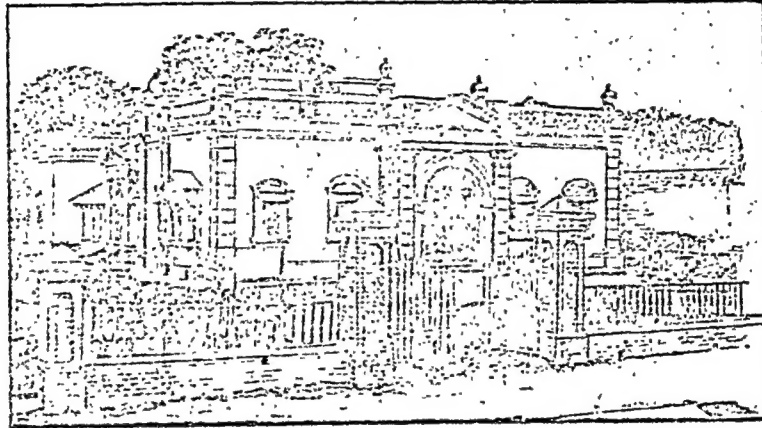
# THE PRITHVIRAJ RASO

OF  
CHAND BARDAI,  
VOL. VI.  
EDITED  
BY

Mohanlal Fichnuld Pandia & Syam Sundar Das, B. A.

With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.

CANTOS LXVII-LXIX AND  
RASO-SAR.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

छठां भाग

जिसको

मोहनलाल के गल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया ।

BY PT. BAIJNATH, B. A. & SYAM SUNDAR DAS, B. A.  
AND PUBLISHED BY H. JIJJA, MANAGER, AT THE TARA PRINTING  
PRESS, BENARES.  
ED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA,  
BENARES.

1918.

Price Rs. 4/-



## सूचीपत्र ।

( ६७ ) वान वेध प्रस्ताव ।

[ पृष्ठ २३८७ से २४१८ तक ]

- १ देवी जालपा के मन्दिर के कायाट खुलने पर कविचन्द्र का दिल्ली को जाना । २३८७
- २ श्रीहीन दिल्ली नगर की दुर्दशा देख कवि का हार्दिक विचार-वर्णन । २३८८
- ३ कवि की स्त्री का सध हाल कहना और राजा का वधन मुनकर कवि का दुःखिन होना । २३८९
- ४ कवि का राजा के उद्धार का निश्चय विचार करके योग धारण करना । "
- ५ कवि का भवानी की स्तुति करके निर्विघ्न ग्रंथ की पूर्ति के लिये विनय करना । २३९०
- कविचन्द्र का कौरी पोथी हाथ में लेकर भवानी का ध्यान करना । २३९२
- ७ रामो की छंद संख्या वर्णन । "
- ८ देवी का कवि को दर्शन देना और कवि का वर मांगना । "
- ९ रामो के रचना समय की सीमा । २३९३
- १० कवि का अपने पुत्र जल्ह को रासो पढ़ाना और स्त्री से विदा मांगना । "
- ११ कवि का अपनी स्त्री से कहना कि संसार में एक मात्र कीर्ति ही सार है २३९४
- १२ कवि का योगी भेष धारण करना और स्त्री का पूछना कि योग की पराकाष्ठा क्या है । "
- १३ कवि का स्त्री को योग साधना की

विधि और उसकी सिद्धि संक्षेप में बतलाना । २३९५

- १४ कवि की स्त्री का शंका करना कि एक पंथ दो काज कैसे सध सकते हैं । २३९७
- १५ कविचन्द्र का उत्तर । "
- १६ कविचन्द्र के पुत्रों के नाम और सर्व श्रेष्ठ जल्ह को कवि का रासो पढ़ा कर खाना होना । २३९८
- १७ कविचन्द्र का अपनी धुन में मस्त हो कर गजनी की राह लेना । "
- १८ दुर्गम मार्ग की कठिनता का वर्णन और कवि का क्लान्तचित्त होना । २३९९
- १९ कविचन्द्र का भगवती का स्मरण और स्तुति करना । २४००
- २० देवी का कवि को दर्शन देना और कवि का अपनी सब विपत्ति निवेदन करके सहायता के लिये वर मांगना २४०१
- २१ भगवती का प्रसन्न होकर कवि को अंचल का चीर देना । २४०३
- २२ देवी की कृपा से कवि का प्रसन्नता पूर्वक गजनी पहुँचना । २४०४
- २३ गजनी नगर की शोभा और प्रतिभा वर्णन । २४०५
- २४ कवि का शाही दरबार को जाना । २४०६
- २५ दरबारियों का वर्णन । २४०७
- २६ कवि के विषय में लोगों की कल्पना । "
- २७ कवि का राजद्वार पर जाकर द्वारपाल से अपना परिचय देना । "



२८ द्वारपाल का कवि को सादर आसन देना । २४०८

२९ कवि का अपनी विद्याओं का बखान करना । ”

३० द्वारपाल का कहना कि कविचन्द में तुम्हें पहचानता हूँ जरा ठहर इत्तला होती है । २४०९

३१ कवि का अपना प्रगट होना जान कर वहाँ से चल देना । ”

३२ शाहो पासवान सरदारों का और शाही डयोढ़ी का औसाफ वर्णन । २४१०

३३ दिन के तीसरे पहर शाह का हृदय खेलने की इच्छा करना । २४११

३४ शाही सवारी का निकलना और कवि का शाह को हाथ उठाकर आशीर्वाद देना । ”

३५ कवि का शाह की विरद पढ़ना । २४१४

३६ शाह का कवि की तरफ मुतवज्जह होना और कवि का अपना परिचय देना । ”

३७ शाह का कवि को पास बुलाकर सब हाल पूछना । कवि का सब बातों का उत्तर देना और शाह का उसे ठहरने के लिये कहना । २४१५

३८ शाह का पीरोज खाँ हवसी को कवि की खातिर करने की आज्ञा देना । २४१६

३९ कवि का भीम नामक खत्री के घर डेरा दिया जाना । २४१७

४० कविचन्द का भीम से एक एकान्त स्थान माँगना और कवि की रुचि के अनुसार भीम का एकान्त स्थान देना २४१८

४१ पूजन की सामग्री जुटा कर कवि का हवन करना । ”

४२ कवि का वीज मंत्र का जप करना २४१९

४३ वीज मंत्र के जाप की विधि और ध्यान ”

४४ देवी का प्रगट होकर वर देना कि

शाह पृथ्वीराज और तू दोनों एकही घड़ी अन्त को प्राप्त होगे । २४२०

४५ कवि के पूजन समाप्त करने पर भीम का पूछना कि आप अपनी इच्छा को क्यों कर पूर्ण कर सकते हैं, तब कवि का उसको देवी के दर्शन कराना । २४२१

४६ देवी की स्तुति । ”

४७ उस रात्रि को मुसलमानी जंत्र मंत्र का न चलना और मुल्लाओं के मन में विस्मय होना । २४२२

४८ प्रातःकाल होतेही शाह का कवि को बुलाने की इच्छा करना । २४२३

४९ शाह का हुजाव को कवि के लाने की आज्ञा देना और तत्तार का उसे मना करना । २४२४

५० शाह का कहना कि देखें तो उसमें क्या रहस्य है, बातों बातों में बड़े रहस्य प्रगट होते हैं । ”

५१ तत्तार खाँ का कहना कि शत्रु और सपने का विश्वास करना उचित नहीं २४२५

५२ तत्तार का कहना कि खाड़ा खुदाकर तब कवि को बुलाया । २४२६

५३ शाह का कहना कि वह गुणी पुरुष है मैं उससे अवश्य मिलूँगा तू मुख क्या जाने २४२७

५४ तत्तार खाँ का पुनः मना करना परन्तु शाह का न मानना । २४२८

५५ कवि का दरवाजे पर आना परन्तु तत्तार खाँ के इशारे के अनुसार दरवान का उसे भीतर जाने से रोकना । ”

५६ कविचन्द का रोके जाने पर देवी का स्मरण करना । २४२९

५७ शाह के आज्ञानुसार हुजाव का कवि को शाह के समुख लिवा जाना । २४३०

५८ उस स्थान का वर्णन जहाँ पर कवि शाह के समुख गया । ”

५९ शाह का कवि से योग के विषय में



वीरशिरोमणि महाराज पृथ्वीराज ।

Indian Press, Allahabad.



- प्रश्न करना । २४३१
- ६० कविचन्द का पृथ्वीराज के पास जाना । २४३६
- ६१ दर्शकों के बीच कवि का कौतुक करना ।
- ६२ कवि का राजा की करुणामय मूर्ति देख कर आशीर्वाद देना परन्तु राजा का कवि को सिर न नवाना । २४३७
- ६३ कवि का विरदावली पढ़ना और राजा का कवि की वाणी पहिचान कर क्रोधित हो उसे धिक्कारना । ”
- ६४ कवि का कहना कि मैं होनहार कौ क्या जानू । २४३८
- ६५ कवि का गला भर कर राजा को समझाना परन्तु राजा का फिर भी सिर न नवाना । २४३९
- ६६ कवि का राजा से कहना कि तू वह वरदान दे जो तूने देने को कहा था ”
- ६७ राजा का कहना कि मैं नेत्रहीन होकर अब कैसे निशाना वेध सकता हूँ । ”
- ६८ कवि का कहना कि मैं शाह को बुलाऊंगा आप वचन दीजिये । २४४०
- ६९ राजा का कवि का अभिप्राय समझकर शोकित होना । ”
- ७० कवि का पृथ्वीराज को प्रबोधन करना ”
- ७१ राजा का कहना कि कवि से सब संभव है वा असंभव है । २४४१
- ७२ कवि वाक्य कि करतूत लेने को सब समय है । ”
- ७३ राजा वाक्य । ”
- ७४ कविचन्द वाक्य ”
- ७५ राजा वाक्य । २४४२
- ७६ कविचन्द वाक्य । ”
- ७७ पृथ्वीराज वाक्य । ”
- ७८ हुजाव का कवि को लिवाकर शाह के पास आना । २४४४

- ७९ कविचन्द का शाह से कहना कि यदि आप आज्ञा देना स्वीकार करें तो राजा दान देना स्वीकार करता है । २४४५
- ८० तत्तार खां का खिम्त कर कविचन्द को डपटना । ”
- ८१ कवि का पुनः कहना कि यदि शाह वचन दे तो प्रत्यक्ष तमाशा देख लो । ”
- ८२ शाह का शब्द देने पर सहमत होना और धरियार मंगाकर सजाया जाना २४४६
- ८३ कौतुक देखने के लिये दर्शकों की भीड़ होना । ”
- ८४ तत्तार खां का कहना कि आज जुमा-रात है आज रहने दीजिये । २४४७
- ८५ तत्तार खां का शाह से अपने स्वप्न का हाल कहना और समझाना । ”
- ८६ शाह का कहना कि मैं तो अब कहाँ हुआ वचन नहीं पलट सकता । २४४८
- ८७ तत्तार खां का खिम्त कर दरवार से उठ जाना । २४४९
- ८८ शाह का कवि को पान देना कि हमने दिया तुम राजा से माँगा । ”
- ८९ कवि का राजा को लिवा कर रंगभूमि में आना । ”
- ९० हुजाव का राजा के हाथ में कमान देना और राजा का कई कमान तोड़ देना । २४५०
- ९१ राजा को मीरा की कमान दी जाना और राजा का उसे चढ़ाना । २४५१
- ९२ पृथ्वीराज का कमान को तानना और उसे देखकर मीरा का कहना कि यदि धरियार फोड़ दिए तो शाह राजा को छोड़ देगा और कुछ और भी देगा । ”
- ९३ कवि का कहना कि राजा का निज का कमान दिया जाय वही बहुत है । २४५२
- ९४ राजा को हुजाव का वही कमान देना

- और तत्तार का पुनः कहना कि यह तमाशा न देखो इसमें मारे पड़ोगे । ”
- ८५ कवि की उक्ति । २४५३
- ८६ राजा का अपनी कमान पाकर परम प्रसन्न होना और निसुरत खाँ का राजा के हाथ में तरकस भी देना । ”
- ८७ राजा का कमान लेकर उसे संधानना कविचन्द का राजा को ज्ञान समझा कर दड़ता देना । २४५४
- ८८ राजा का कहना कि मित्र अब वह पुरुषार्थ नहीं क्या करूँ । २४५६
- ८९ कवि का कहना कि तुम वाण संधानों में तुम्हे वैसाही न करदूँ तो कवि नहीं । २४५७
- १०० कवि का राजा को पुनः समझाना और उत्कर्ष देना । ”
- १०१ पृथ्वीराज का उत्तेजित हो कर कहना कि मैं शत्रु को अवश्य मार गिराऊँगा २४५८
- १०२ कवि का पुनः राजा को उत्तेजित करना । ”
- १०३ पृथ्वीराज वचन । २४५९
- १०४ कविचन्द वचन । ”
- १०५ पृथ्वीराज वचन । ”
- १०६ कविचन्द वचन । ”
- १०७ कविचन्द का राजा को समझाना कि सात नहीं एक को वेध । २४६०
- १०८ कवि के इशारे पर राजा का शाह की तरफ मुखा करना । २४६१
- १०९ पृथ्वीराज का कमान ले सन्नद्ध होकर शाह के हुक्म की प्रतीक्षा करना । २४६३
- ११० कवि का डमरू बनाकर शाह से हुक्म देने के लिये प्रार्थना करना और राजा को उत्कर्ष देना । ”
- १११ बादशाह की आज्ञा से पृथ्वीराज का सर संधानना और कवि का विरदावली पढ़ना । ”
- ११२ शाह के हुंकार देने पर राजा का उसके

- तालू पर निशाना लक्ष करना । २४६३
- ११३ पहिले हुक्म पर राजा का सर संधानना दसरे पर चढ़ाना और तीसरे पर शाह का तालू वेध देना । २४६४
- ११४ शाह के प्राण हीन होकार गिर पड़ने पर कवि का राजा को हठयोग द्वारा प्राण त्याग करने को कहना । २४६५
- ११५ राजा का कहना कि यह मुझसे कैसे हो सकता है । ”
- ११६ शाह के मरने पर महा हाहाकार होना । ”
- ११७ कविचन्द का हूरे से अपना सिर काट कर राजा को भी हुरी सौंप देना । २४६६
- ११८ राजा पृथ्वीराज का प्राणान्त और रासो का इति । २४६८
- ११९ पृथ्वीराज की पूर्व कथा और उनका गुण एवं सुयश गान । ”

### (६८) राजा रयनसी नाम प्रस्ताव ।

[ पृष्ठ २४६८ से २५०६ तक ]

- १ पृथ्वीराज के पकड़े जाने पर और कवि के कांगेड़ से छूट आने पर राजा रयनसी का पाट बैठना । २४६९
- २ कविचन्द के कौशल से शाह और पृथ्वीराज का मरण सुनकर रयनसीजी का सब सामंत मंडली से सलाह करना । २४७०
- ३ उत्तराधिकारी नामंत मंडली का वर्णन । ”
- ४ युवक सामंत मंडली का मत होना कि शाही सेना से छेड़ छाड़ की जावे । २४७१
- ५ उधर गजनी में शहाबुद्दीन के उत्तराधिकारी का तख्तनसीन होना । २४७२
- ६ सलाह पक्की हो जाने पर राजा रयनसी का शाही सेना पर आक्रमण करने को सन्नद्ध होना । २४७३
- ७ राजा रयनसीजी का सब सेना तैयार करके पंजाब की सरहद पर स्थित शाही

- सेना पर आक्रमण करने के लिये कूच करना । २४७५
- ८ राजा रयनसी का शाही सेना को मार भगाकर लाहौर पर अपने थाने बैठना और इस बात का गजनी में समाचार पहुंचना । २४७७
- ९ उक्त समाचार पाकर शाह का कुटवारखां को अपना प्रतिनिधि बनाना और अन्य सरदारों को हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने की आज्ञा देना । २४७८
- १० शाही सेना का हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करना । शाही सेना के कूच का आतंक वर्णन । २४७९
- ११ शाही सेना के चढ़ आने का समाचार पाकर रयनसीजी का राजपूत सरदारों से सलाह करना । २४८०
- १२ रयनसीजी का कहना कि ऐसा मंत्र करना चाहिये जिसमें बात रहे और हँसाई न हो । ”
- १३ सब सामंतों का युद्ध करने पर उद्यत होना और दिल्ली के किले में ही युद्ध होने की बात पक्की होना । २४८१
- १४ शाही सेना के दूत का आना और राजा रयनसी का युद्ध का प्रस्ताव स्वीकार करना । २४८३
- १५ शाही सेना का किले को घेर लेना । २४८३
- १६ सात महीने दो दिन पर्यंत किला न टूटने पर तत्तारखां का सुरंग लगा कर किले की दीवार उड़ा देना । २४८४
- १७ सुरंगों से किले की पश्चिम दीवार का टूटना । ”
- १८ किले की दीवार टूट जाने पर दोनों तरफ से तलवार का युद्ध होना । २४८५
- १९ युद्ध वर्णन । २४८६
- २० वीर रणधीर का दरवाजा रोकना और शाही सेना के कई सरदारों को मारकर आप मरना । २४८७
- २१ प्रथम दिन के रणधीर के युद्ध में मृत योद्धाओं के नाम । २४८८
- २२ शाही सेना का किले में पैठने के लिये अग्रसर होना और वीरचन्द का मोरचा रोकना । २४८९
- २३ दूसरे दिन वीरचन्द के साथ कई राजपूत सरदारों का काम आना और यवन सेना का बल बढ़ना । ”
- २४ किला टूटा हुआ जानकर राजा रयनसी जी का राजगुरु को बुलाकर मंत्र पूछना । २४९२
- २५ प्रोहित का मंत्र देना कि कट मरना सलाह है । ”
- २६ राजा रयनसिंह का जौहर करना । ”
- २७ दोपहर ढरते रयनसी का किले से निकलना और मुसलमानों का उसे पकड़ने के लिये धावा करना । २४९३
- २८ हिन्दू मुसलमान दोनों का परस्पर घमासान युद्ध वर्णन । ”
- २९ कन्ह के पुत्र ईसरदास एवं अन्य वीरों का पराक्रम से काम आना । २४९५
- ३० शाह के आज्ञानुसार पोरख खां का रयनसी के साम्हने आकर प्रचारना और रयनसी का उसे मार गिराना । २४९६
- ३१ यवन सेना का रयनसी को घेरना और बड़े पराक्रम से हथियार करते हुए रयनसी जी का मारा जाना । २४९७
- ३२ रयनसी के मरने पर दिल्ली पर मुसलमानी कब्जा होना । २५००
- ३३ दिल्ली कब्जे में करके कन्नौज पर मुसलमानी सेना का आक्रमण करना । २५०१
- ३४ इस मुसलमानी आक्रमण में जयचन्द का लड़कर मारा जाना । २५०२
- ३५ ग्रंथ समाप्ति उपसंहार । २५०३

## महोवा समय ।

( पृष्ठ २५०७ से २६१५ तक )

- १ चौहान और चंदेल कुल में कैसे भगड़ा पड़ा इसकी सूचना । २५०७
- २ विवह के अनन्तर सुलतान को कैद करके पृथ्वीराज की सेना का महोवा में पहुंचना ।
- ३ समुद्र सिंघरगढ़ से विवाह करके चलने पर सुलतान का बीच में आ घेरना उसे जात कर पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर चलना ।
- ४ पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना, कुछ घायल सरदारों का रास्तों भूलकर महोबे में आ पहुंचना, वहां भारी वर्षा होनी, सरदारों का विकल होकर परमाल राजा के बाग में छाया में ठहरना, मालिया का रोकना, बातों बात बात बढ़ जाने पर मालियों का गाली दे बैठना, सरदारों का माली को मार गिराना, मालिन का रानी मल्हन देवी के पास आकर सब घृतांत कहना, रानी का राजा को बुलाकर समाचार सुनाना, राजा का अपने वीरों को उन सभी के पकड़ लाने की आज्ञा देना । २५०८
- ५ परिमाल देव की आज्ञा से सरदारों को पकड़ने के लिये सेना का आना, घोर युद्ध होना, परिमाल की तीन हजार सेना का मारा जाना, पृथ्वीराज के तीस वीरों का मारा जाना और सत्रह का घायल होना, यह समाचार पाकर परिमाल देव का क्रोधकर अपने प्रसिद्ध वीर ऊदल को बुलाकर उन घायलों के सिर काट लाने की आज्ञा देना, ऊदल का कहना कि यह घायलों को मारना वीरधर्म के विरुद्ध है, राजा का कुछ न सुनना । २५०९

- ६ ऊदल का फिर कहना कि एक तो घायल को मारना पाप है दूसरे ये पृथ्वीराज के दूत हैं उनसे विरोध न कीजिये और इन लोगों को जात्र दान दीजिये २५१२
- ७ ऊदल के शत्रु महला और भोपति ने राजा के कान भरे कि ऊदल जी चुराता है और कुछ बात नहीं है ।
- ८ राजा का महला और भोपति की बात मान कर ऊदल को आज्ञा देना कि तुम तुरंत जाकर घायलों को मारो ।
- ९ आज्ञा मानकर ऊदल का बाग को जा घेरना और राजपूतों को ललकारना फिर घोर युद्ध होना और कनक चौहान की चोट से ऊदल का मूर्छित होना ।
- १० चंदेल के बहुत वीरों का मारा जाना और पृथ्वीराज के बीस घायल सरदारों का कनक चौहान के साथ मारा जाना । २५१४
- ११ यह समाचार सुनकर कि चंदेलों ने मेरे घायल वीरों को मारा पृथ्वीराज को क्रोध हुआ । २५१५
- १२ पृथ्वीराज का कन्ह चौहान को बुलाना और सब सामंतों को इकट्ठा करके यह समाचार कहकर परामर्श करना ।
- १३ सामंतों का महोबे पर चढ़ाई करने और परिमाल देव को मार गिराने की सलाह देना, पृथ्वीराज का शुभ मुहूर्त दिखला कर कूच करना और पहिले दिन बाग में डेरा देना ।
- १४ रात को वहां रहकर घड़ी रात रहे उठ नित्य क्रिया कर सब सरदारों को पृथ्वीराज ने बुलाया । २५१७
- १५ सब सरदारों को इकट्ठा करके सभी को सवारी के लिये घोड़े बांटना और कूच की तयारी करना ।
- १६ धूमधाम से चंदेल को जातने के लिये पृथ्वीराज का कूच करना । २५१८

१७ बीस हजार वीरों के साथ पृथ्वीराज का कूच करना, सेना का वर्णन । २५१६

१८ पृथ्वीराज की सेना की चढ़ाई का समाचार परिमाल देव को मिलना, परिमाल देव का अपने सब सरदारों को इकट्ठा करके सलाह करना । महला भोपति की चुगली से आल्हा और ऊदल का अलग होना । २५२१

१९ परिमाल देव की सेना का तैयारी करना, पृथ्वीराज और परिमाल देव की सेना का सामना होना, घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज के सरदारों का परिमाल देव के बड़े बड़े सरदारों को मार गिराना । २५२२

२० सिरसा के टूटते, बहुतसी सेना मारी जाने पर अरिसिंह का भाग कर महोबे जाना । २५२४

२१ अरिसिंह का परिमाल देव से सिरसा के युद्ध में मलखान वीर सिंह नरसिंह जैसिंह आदि वीरों के मोर जाने और पृथ्वीराज की विजय का समाचार कहना । ” २५२५

२२ परिमाल देव का यह सब समाचार सुनकर अपने बेटों और सरदारों को बुलाकर परामर्श लेना कि भाई क्या करना चाहिये । २२२५

२३ रानी मल्हन देवी का कहना कि दो महीना युद्ध बन्द करके जगनक को भेजकर आल्हा को बुलाइये और पृथ्वीराज के पास जल्हन को भेजकर दो महीना लड़ाई बन्द रखने को कहलाइये । रानी का मत सबके मन में भाया । ” २५२६

२४ पचास हजार पान, गुलाब, बन्दूक, बर्छे और कच्छी थोड़े सौगात में लेकर जल्हन का पृथ्वीराज के पास जाना और पत्र देना । २५२६

२५ जल्हन का पृथ्वीराज से कहना कि बनावर ( आल्हा ऊदल ) रुठकर कन्नौज जा बैठे हैं उन्हें लाने को राजा ने जग-

नक को भेजा है सो आप चतुर धर्म के अनुसार उनके आने तक युद्ध बन्द रखिये । २५२६

२६ पृथ्वीराज ने नजर रखली और आल्हा के आने तक युद्ध बन्द रखना स्वीकार किया । ”

२७ जल्हन का महोबे लौट आना, पृथ्वीराज का वहीं डेरा डाल कर रहना । २५२७

२८ पृथ्वीराज का चंदवर्दाई से पूछना कि आल्हा ऊदल चंदेल से क्यों रुठ गये हैं । ”

२९ चन्द का कहना कि पहिले चन्देल के यहां दसरान सेनापति था उसने गोंड लोगों की लड़ाई में बड़ी वीरता की । सिर कट जाने पर धड़ही से उसने सहस्रों वीर शत्रुओं को मार कर चन्देल राजा की विजय कराई । ”

३० राजा विजय करके महोबे आया और आतेही ऊदल को बुलाकर बड़ा आदर किया और सेनापति बनाया । २५२८

३१ रानी मल्हन देवी आल्हा ऊदल को अपने बेटे ब्रह्मानन्द की तरह मानती थी । ”

३२ महला और भोपति ने राजा से चुगली की कि आल्हा के पास पांच बछेड़े ऐराकी घोड़े के बड़े उत्तम हैं । ”

३३ राजा कालिंजर देखने को गया और वहां आल्हा को बुलाकर उन पांचों बछेड़ों को मांगा और बदले में बहुत घोड़े देने को कहा । ”

३४ आल्हा की मां का बेटे से कहना कि बछेड़े कदापि न दो वरन देश को छोड़ दो और कन्नौज चलकर रहो । ”

३५ परिमाल देव ने फिर कहा कि या तो बछेड़ा दो या हमारा देश छोड़ दो । २५२९

३६ आल्हा यह सुन घर लौट आया और अपने घोड़े आदि सब साज बाज लेकर कन्नौज की ओर चल पड़ा । ”



३७ भोपति की जागीर नष्ट कर सारा नगर उजाड़ दिया । २५२६

३८ आल्हा ऊदल का कन्नौज पहुँचना, जैचन्द का बड़े आदर से उन्हे अपने पास रखना । ”

३९ चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि यह कारण आल्हा के बिगड़ने का है पर वह फिर मनाकर आवेगा और घोर युद्ध मचावेगा । २५३०

४० जगनक ने कन्नौज पहुँच कर चिठी आल्हा को दी और सब समाचार कह कर महोबा चलने के लिये परिमाल की बिजती सुनाई । ”

४१ जगनक की बात सुनकर आल्हा ने कहा कि खेद है की महोबा लुटा और चन्देल का गुमान टूटा, बिना अपराध हमारा देश छोड़ाया, हमारी कुछ भी सेवा न मानी अब भी चुगलों को दूर करे सुर सामंतों को आगे करके वेखटके चौहान से लड़े । २५३१

४२ जगनक का समझना कि तुम्हारे पिता ने चंदेल की बहुत कुछ सहायता की और चंदेल ने तुम्हारा भी आदर किया । तुम्हारा कहना ठीक है पर इस समय स्वामी को छोड़ना क्षत्रियों का धर्म नहीं है । २५३२

४३ जगनक ने आल्हा की माता देवल दे से कहा कि रानी मल्हन दे ने तुम से कहा है कि इस समय चन्देल पर संकट है तुम्हें आना चाहिये । २५३४

४४ देवल दे ने यह सुन अपने बेटों से कहा कि महोबा चलो और पृथ्वीराज से लड़कर स्वामी का काम बनाओ । ”

४५ ऊदल ने फिर कहा जिस दुर्दर्शा से महोबा से परिमाल देव ने निकाला था वह भूल गई, जगनक तुम महोबा लौट

जाव । २५३४

४६ देवल दे ने यह कह कर कि मैं बांझ क्यों न हुई मेरे बेटे क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध बात कहते हैं और संकट में स्वामी को छोड़ते हैं, रो दिया । २५३५

४७ मां की बात सुनकर दोनों भाई सृख गये और महोबा चलने का निश्चय कर जयचन्द से सीख लेने जगनक के साथ गये । ”

४८ जयचन्द ने पूछा कि आज क्या है जो रणसज्जा से आप द्वार में आये हैं । आल्हा ने कहा कि पृथ्वीराज ने चढ़ाई की है सो परिमाल देव ने हम लोगों को बुलाया है । ”

४९ जयचन्द ने कहा तुम लोग मरने के लिये महोबा न जाने पाओगे । २५३६

५० यह सुन आल्हा की आंखें लाल हो गई और उसने कहा कि पहिले कन्नौज लूट कर तब महोबा में युद्ध करेंगे । ”

५१ इतने में जगनक ने पत्र दिया जिसमें परिमाल देव ने पृथ्वीराज से लड़ने के लिये जयचन्द से सहायता मांगी थी । ”

५२ पत्र पढ़कर जयचन्द ने कहा कि पृथ्वीराज से लड़ने के लिये मैं अवश्य आल्हा के साथ सेना भेजूंगा और दीवान को बुलाकर आल्हा के साथ सेना भेजने की आज्ञा दी । २५३७

५३ बहुत भारी सेना, सिरोपाव आदि दे कर और जगनक को सिरोपाव आदि दे कर आल्हा को जयचन्द ने बिदा किया । ”

५४ आल्हा का कहना कि जैसे दुर्योधन ने कहा न माना और नाश हो गये वैसेही ऊदल ने बहुत समझाया पर चुगलखोरों के मारे घायलों को न मारने की बात न सुनकर परिमाल देव ने अपने हाथ

से सब बात बिगाड़ी। २५३६  
 ५५ जगनक ने कहा कि होनहार प्रबल है।  
 अस्तु सबका गङ्गातट पर डेरा डालना  
 और वहाँ लाखन सी और तालन सी से  
 मित्रता होनी। ”  
 ५६ नदी उतर कर जयचन्द की कुमक  
 साथ लिये महोवा की ओर सब चले। २५४०  
 ५७ आल्हा ऊदल का सेना सहित पहुँचना,  
 परिमाल देव को दून का आल्हा ऊदल  
 और कन्नौज की सेना के आने का  
 समाचार देना। ”  
 ५८ दूत से समाचार पाकर राजा का प्रसन्न  
 होना। २५४१  
 ५९ अगवानी के लिये नकीव आदि को  
 तैयार करना। ”  
 ६० आल्हा की माँ देवल दे के आने का  
 समाचार पा मल्हन दे का आगे से  
 मिलने को चलना। २५४२  
 ६१ देवल दे का पुत्र से कहकर जगनक के  
 साथ पालकी में बैठ कर वाग में आकर  
 रानी से मिलना। ”  
 ६२ जगनक का राजा से कहना कि चल  
 कर लाखनसी से मिलिये। ”  
 ६३ राजा का ब्रह्मानन्द के साथ सवार हो  
 कर आल्हा को लेने और लाखनसी  
 तालनसी से भेंट करने को चलना। ”  
 ६४ आल्हा का लाखनसी तालनसी को  
 साथ लेकर आगे बढ़ना और बीच में  
 राजा परिमाल से मिलना। ”  
 ६५ परिमाल देव का जगनक को बहुत  
 कुछ गौ हाँथी आदि देना। २५४३  
 ६६ आल्हा के आने का समाचार सुनकर  
 पृथ्वीराज का कन्ह कैमास आदि को  
 बुलाकर युद्ध की तैयारी करने के लिये  
 कहना। ”  
 ६७ चंद का पृथ्वीराज से कहना कि अब

युद्ध में देर न कीजिये आल्हा कन्नौज  
 से पचास हजार सेना लेकर सात दिन  
 हुए आ गया है। २५४५  
 ६८ पृथ्वीराज का परिमाल देव को  
 पत्र भेजना कि क्षत्रिय धर्म विचार कर  
 हमने दो महीना युद्ध बंद कर प्रतीक्षा की  
 अब या तो लड़ो या महोवा छोड़ दो। ”  
 ६९ पत्र पढ़कर परिमाल देव का आल्हा  
 आदि अपने सब सरदारों को बुलाकर  
 परामर्श और लड़ाई आरम्भ करने के  
 लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखना। २५४६  
 ७० पत्र पढ़कर पृथ्वीराज को आवेश आना  
 और शुक्रवार को नगरे पर चोट दे  
 चढ़ाई के लिये प्रस्तुत होना। २५४८  
 ७१ सेना का तैयारी, वीरों के हृदय में युद्ध  
 उत्साह तथा अप्सराओं के उल्लास का वर्णन ”  
 ७२ उधर परिमाल देव का सेना सजना  
 और नौमी शुक्रवार को आगे बढ़कर  
 दो कोस के अन्तर पर डेरा डालना। २५४९  
 ७३ परिमाल देव का आल्हा आदि सब अपने  
 सरदारों को इकट्ठा करके परामर्श करना कि  
 अब क्या कर्तव्य है। २५५०  
 ७४ राजा का आल्हा को साथ ले महल  
 में रानी के पास जाना और परामर्श करना ”  
 ७५ आल्हा का कहना कि जो स्वामी को  
 विपति में छोड़ता है वह अनन्त काल  
 तक नर्क भोगता है और जो प्राण  
 का मोह छोड़ लड़ाई में मरता है  
 वह सूर्यमंडल को भेदता है। २५५१  
 ७६ माँ का कहना कि मुझे बेटों का मोह  
 नहीं है। ”  
 ७७ आल्हा का कहना कि मैं पृथ्वीराज  
 की फौज को मार गिराऊंगा, सब  
 सावतों को जीतूंगा, माता तुम्हारी  
 लज्जा निवाहूंगा।  
 ७८ रानी मल्हन दे का कहना कि दंड

देकर देश की रक्षा करो उनके सामंतों की वीरता की वड़ाई बहुत सुनी जाती है । २५५२

७६ ऊदल का तमक कर कहना कि यह बात घायलों के मारने के समय मैंने कही थी तब क्यों न मानी । अब क्या है, अब लड़ो । यह निश्चय जानो कि हम दोनों भाई मर लेंगे तब राजा का कुछ होगा । ”

८० देवल दे का कहना कि होनहार टल नहीं सकती है, बेटा ! तुम लोग चंदेल का नमक अदा करो । ”

८१ राजा, आल्हा, तथा ऊदल का बाहर आना प्रजा का आकर पुकार करना कि शत्रु ने गांव जलाकर असंख्य धन लूट लिया अब दौड़िये देर न कीजिये । २५५३

८२ आल्हा का आवेश में आकर उठना, राजा का रोकना कि आज शनिवार है कलह लड़ाई करना ।

८३ आल्हा का कहना कि अपने देश को जलते देखना क्षत्रिय धर्म नहीं है । इस प्रकार उस्ताह की अनेक वाक्य कह कर सब वीरों को उत्तेजित करके आल्हा ने प्रतिज्ञा की कि कलह में पृथ्वीराज की सेना को उथल पथल कर डालूंगा । ”

८४ सबको विदा कर राजा का महल में जाकर रानी से परामर्श करना, रानी का कहना कि अब इस समय शयन कीजिये सेवरे शत्रुओं का नाश कीजिये । २५५४

८५ आल्हा ऊदल अपने महल में गये और भोजन कर अपनी स्त्रियों के साथ भोग विलास में उन्होंने आनन्द से रात बिताई । २५५५

८६ पहर रात रहे स्नान कर गोरखनाथ का ध्यान होम नवग्रह पूजन आदि कर, चौहान का साम्हना करने को घोड़े पर सवार हो दोनों भाई का चलना । ”

८७ ऊदल का मां को आकर प्रणाम करना, मां का कहना कि जाओ पृथ्वीराज से युद्ध कर स्वामी का काम बजाओ और मेरा मुख उज्ज्वल करो । ”

८८ ऊदल का कहना कि मैं सब सामंतों से खड्ग के साथ खलूंगा और पृथ्वीराज को भगाऊंगा । २५५६

८९ देवल दे का दोनों बेटों से कहना कि आज नमक अदा करो स्वामी के कार्य में शिर देकर स्वर्ग का राज्य करो । ”

९० ऊदल की स्त्री का कहना कि जो स्त्री पति का मरना सुनकर सती नहीं होती वह नर्क में पड़ती है । ”

९१ राजा का सेवरे उठ कर नगारे पर चोट दिलाना और आल्हा को बुलाना । २५५७

९२ आल्हा ऊदल को बुलाकर नागौर की और बढ़ने की तैयारी करना । तैयारी का वर्णन । ”

९३ परिमाल देव का डर से काँपते हुए आल्हा से कहना कि जो पृथ्वीराज को जीत कर मुझे कालिञ्जर पहुंचाओगे तो मैं आधा राज्य पांच लाख रुपया और अपनी कन्या तुम्हें दूंगा ।

९४ चंदेल की सेना का आगे बढ़ना । २५५८

९५ चंदेल की सेना आते देखकर पृथ्वीराज का व्यूह रचना और लड़ाई के लिये सेना सजना । उधर आल्हा और ब्रह्मानन्द का अपनी सेना को सजना । ”

- ६६ परिमल देव का पृथ्वीराज की सेना देखकर डर कर दश हजार सेना ले कालिञ्जर की ओर भाग जाना । २५६१
- ६७ कुँवर ब्रह्मानन्द का लड़ाई के लिये आगे बढ़ना । ”
- ६८ युद्ध आरम्भ होना । कन्ह चौहान का घोर युद्ध करना । ”
- ६९ कन्ह का अपनी वीरता से सेना में हलचल मचा देना । युद्ध का वर्णन । २५६२
- १०० अपनी सेना का कटते देखकर आल्हा को अपनी ओर के सरदारों को इकट्ठा करके ललकारना । २५६४
- १०१ जयचन्द के भतीजे लाखनसी का घोर युद्ध करना । लाखनसी की वीरता का वर्णन । २५६५
- १०२ जयचन्द की सेना का भागना । २५७०
- १०३ अपनी सेना को भागते देख लाखन सी का ललकारना । सेना का फिर लौटकर लड़ने के लिये डँट जाना । ”
- १०४ युद्ध का वर्णन । लाखन सी का मारा जाना । जयचन्द की सेना का भागना । २५७१
- १०५ जयचन्द के सरदार कायस्थ मकरन्द का घोर युद्ध करना । युद्ध का वर्णन । मकरन्द का मारा जाना । २५७३
- १०६ मकरन्द का मारा जाना और कैमास का विजयी होना । २५७४
- १०७ निहदुरराय का घायल होना । कनौज की सेना का काम आना । पृथ्वीराज की विजय का वर्णन । ”
- १०८ आल्हा का कहना कि लाखनसी तो काम आये पर कुछ चिन्ता नहीं मैं तो अभी तैयार हूँ । २५७५
- १०९ आल्हा का सरदारों को इकट्ठा करके उत्तेजित करना । ”
- ११० आल्हा का कुँवर ब्रह्मादित्य से कहना कि आप घर लौट जाइए मैं लड़ाई देख लूँगा । ”
- १११ ब्रह्मादित्य का कहना कि मैं अभी पृथ्वीराज की सेना को काट गिराता हूँ । मैं पीठ नहीं देने का । ”
- ११२ ब्रह्मादित्य की वीर रस सनी बातें सुनकर आल्हा का सरदारों को इकट्ठा करके उत्तेजना के वाक्य कहना । २५७६
- ११३ आल्हा का उत्तेजन सुनकर सबका मरने कटने के लिये प्रस्तुत होजाना । २५७७
- ११४ आल्हा का शास्त्रों की आज्ञा सुनाना कि जो राजपूत लड़ाई से हटता है वह नर्क में पड़ता है और जो वीरता से मारा जाता है वह स्वर्ग का राज्य भोगता है और जीतता है तो पृथ्वी भोगता है और जिसको भागना हो अभी से चला जाय । ”
- ११५ ब्रह्मादित्य का सब सरदारों और सेना से कहना कि आल्हा ऊदल जो कहें वही करना चाहिये । सब सरदारों का इकट्ठे होना और लड़ाई की तयारी करना । २५७८
- ११६ सब साठ हजार सेना का सजना । २५८०
- ११७ आल्हा का मरने का सामान करके अर्थात् तुलसी सालिगराम सिला आदि सिर पर बांध करके लड़ाई के लिये आगे बढ़ना । ऊदल का लड़ने के लिये आगे होना । ”
- ११८ ऊदल की लड़ाई आरम्भ होना । ऊदल की वीरता का वर्णन । २५८१
- ११९ चक्रपानि का मारा जाना । ब्रह्मादित्य का क्रोध करके अपनी सेना को ललकारना । २५८३
- १२० कुँवर ब्रह्मादित्य का लड़ाई का प्रबंध करना । आल्हा को सेनापति बनाना । ऊदल आदि सरदारों के साथ सेना

बाँट कर देना ।	२५८४	चहुआन सेना को मूर्छित कर देना ।	"
१२१ इधर कन्ह के साथ सब सरदारों का लड़ाई के लिये तैयार होना ।	२५८५	१३७ कविचन्द का आल्हा की कथा वर्णन करना । उसका कहना कि आल्हा सल्ह का अवतार है । वह गोरख से मिला था और उनकी सेवा करके, इसने उनसे वरदान पाया था ।	२६०५
१२२ दोनों सेनाओं का साम्हना होना और युद्ध का आरम्भ ।	"	१३८ गोरख का आला प्रति वरदान ।	"
१२३ कन्ह और ऊदल का युद्ध । चंदेल की सेना का उखड़ना । ऊदल का आगे बढ़कर लड़ना ।	२५८६	१३९ चंद का पृथ्वीराज से कहना कि चामंडराय को परमाल को पकड़ने के लिये कालिंजर भेजिये और अत्ता-ताई की आल्हा की वरनी कीजिये	२६०६
१२४ कन्ह चौहान और ऊदल के घोर युद्ध का वर्णन ।	२५८७	१४० राजा का चंद को कही करना ।	
१२५ कई सामंतों और चंदेल सेना के सरदारों का वरनी वरनी से युद्ध करना ।	२५८८	१४१ अत्ताताई और आल्हा का युद्ध वर्णन ।	
१२६ देवकर्ण की तलवार से संजम राय का सिर फट जाना और सत्रसाल के तीर से सिर जुड़ जाने पर उसका दोनों को मार गिराना ।	२५८९	१४२ कैमास और जगनक का युद्ध और जगनक का मारा जाना ।	२६०७
१२७ कन्ह और ऊदल का युद्ध वर्णन ( सेना का युद्ध )	२५९०	१४३ जगनक का पराक्रम वर्णन	"
१२८ कन्ह के साथ के निड्डुर आदि सामंतों से फिर ऊदल के साथ के कई सगदारा का परस्पर युद्ध वर्णन ।	२५९३	१४४ अत्ताताई और आल्हा का परस्पर युद्ध वर्णन ।	२६०८
१२९ जल्हन कवि का मारा जाना और उसका ऊदल को पुकारना ।	२५९६	१४५ आल्हा का मूर्छित हो जाना ।	२६०९
१३० ऊदल और कन्ह का वरनी से युद्ध और ऊदल का मारा जाना ।	२५९८	१४६ कविचंद का कहना कि आल्हा की मूरछा झूटने के पहले ब्रह्माजीत को मार लो ।	"
१३१ ऊदल का कंध खड़ा होना, फिर उसका चौहान सेना के एक हजार सिपाहियों को मारना ।	२६००	१४७ पृथ्वीराज का हाथी बढ़ा कर कुँवर ब्रह्माजीत पर बाण चलाना ।	"
१३२ ऊदल का मरना जान कर कुँवर ब्रह्माजीत का मोरचे पर आना ।	"	१४८ तीर लगतेही ब्रह्माजीत का पृथ्वीराज पर सांग चलाना ।	२६१०
१३३ ब्रह्माजीत की सेना का व्यूह वर्णन ।	"	१४९ पृथ्वीराज और ब्रह्माजीत का युद्ध । ब्रह्माजीत का मारा जाना ।	"
१३४ भाई का मरण जान कर आल्हा का पसर करना	२६०१	१५० आल्हा का अत्यंत कुपित हो कर पृथ्वीराज पर आक्रमण करना और मंत्र अस्त्र प्रयोग करना पर कविचंद का उन्हें काट देना ।	२६११
१३५ आल्हा का कन्ह के मुकाबले में आकर उससे उत्कर्ष वचन कहना ।	२६०३	१५१ गोरखनाथ का संमुख आकर आल्हा को अपने साथ लिवा ले जाना ।	२६१२
१३६ आल्हा का निद्रास्त्र प्रयोग करके सब			

१५२ पृथ्वीराज के मूर्छित होने पर गिद्धिनी  
का उसकी आँख निकालने लगना  
और संजमराय का उसे अपना मांस  
देकर राजा को बचाना । २६१३

१५३ संजम राय का प्राणान्त । ”

१५४ चाँवडराय का परिमाल को कालिंजर  
से पकड़ कर ले आना । ”

१५५ चामंड का कालिंजर के किले को लूट  
कर वहाँ चौहान के नाम का निशान

रोप देना । ”

१५६ पृथ्वीराज का खेत भरवा कर घायल  
सांमंतों को उठवाना । २६१४

१५७ पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को महोबे  
का थानापति नियत कर के दिल्ली  
को आना । ”

१५८ पृथ्वीराज का संजम राय के पुत्र को  
आधी गद्दी का आसन और आधे  
राज का पट्टा देना । २६१५



## रसो सार का सूचीपत्र ।

	पृष्ठ		
१ आदिपर्व	१	३४ जैतराय युद्ध	१२१
२ दशम समय	१८	३५ कांगुरा युद्ध प्रस्ताव	१२३
३ दिल्ली किल्ली कथा	२५	३६ हंसावती नाम प्रस्ताव	१२५
लोहाना आजानवाहु समय	२७	३७ पहाड़राय समय	१३२
५ कन्हपट्टी समय	२८	३८ वरुण कथा	१३६
६ आखेटक वीर वरदान	३०	३९ सोम वध	१३९
७ नाहरराय कथा	३४	४० पञ्जून छेगा नाम प्रस्ताव	१४१
८ मेवाती मुगल कथा	३७	४१ पञ्जून चालुक प्रस्ताव	१४३
९ हुसेन कथा	३६	४२ चन्द द्वारिका गमन	१४५
१० आखेटक चूक वर्णन	४४	४३ कैमास युद्ध	१४६
११ चित्ररेखा समय	४५	४४ भीम वध	१५४
१२ भोलाराय समय	४६	४५ विनय मंगल नाम प्रस्ताव	१६०
१३ सलष युद्ध समय	५२	४६ विनय मंगल	१६७
१४ इच्छनी व्याह कथा	५४	४७ सुक वर्णन	१७१
१५ मुगल युद्ध कथा	५७	४८ बालुकाराय प्रस्ताव	१७५
१६ पुंडीर दाहिनी विवाह कथा	५९	४९ पंगयज्ञ विंध्यंस समय	१८३
१७ भुमिस्वप्न प्रस्ताव	६०	५० संयोगिता नाम प्रस्ताव	१८५
१८ दिल्ली दान प्रस्ताव	६२	५१ हौसीपुर प्रथम युद्ध	१८६
१९ माधो भाट कथा	६४	५२ द्वितीय हौसी युद्ध	१८३
२० पदमावती विवाह कथा	६८	५३ पञ्जून महुवा प्रस्ताव	१८६
२१ पृथा विवाह कथा	७०	५४ पञ्जून पातिसाह युद्ध प्रस्ताव	२१०
२२ होली कथा	७२	५५ सामन्त पंग युद्ध प्रस्ताव	२०३
२३ दीपमालिका कथा	७३	५६ समर पंग युद्ध प्रस्ताव	२१०
२४ धन कथा	७४	५७ कैमास वध समय	२१५
२५ शशिव्रता वर्णन	८२	५८ दुर्गा केदार समय	२१६
२६ देवगिरि समय	८५	५९ दिल्ली वर्णन	२३७
२७ रेवातट समय	८६	६० जंगम कथा	२४१
२८ अनंगपाल समय	१०४	६१ कनवज्ज कथा	२४५
२९ घघर नदी का युद्ध	११०	६२ शुक चरित्र	३४६
३० कर्नाटी पात्र समय	११२	६३ आखेट श्राप प्रस्ताव	३५६
३१ पीपा युद्ध	११३	६४ धीर पुंडीर प्रस्ताव	३६४
३२ करहरा युद्ध	११६	६५ विवाह समय	३८२
३३ इन्द्रावती व्याह	११६	६६ बड़ी लड़ाई	३८३
		६७ बान वेध समय	४३५
		६८ राजा रैनसी नाम प्रस्ताव	४४६
		६९ महोबा युद्ध प्रस्ताव	४५७

## सूचना ।

—c:—

निम्न लिखित पुस्तकों “ सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी ” को लिखने से मिल सकती हैं ।

	मूल्य डाकव्यय
लिखत मुहम्मद की अख़रादत ... ..	... 1=) )॥
कविवर बिहारीलाल-(बाबू राधाकृष्णदास रचित) ... ..	... =) )॥
हिन्दी भाषा के सांख्यिक पत्रों का इतिहास ( बाबू राधाकृष्णदास रचित ) ... ..	... 1) )॥
समालोचना-( पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित ) ... ..	... =) )॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र-( पण्डित नारायण पांडे रचित ) ... ..	... ॥) -)
विस्तृष्टिका चिकित्सा ... ..	... 1) )॥
हरिश्चन्द्र-पद्य- बाबू जगन्नाथ दास रचित ) ... ..	... =) )॥
भगवद्गीता-( बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित ) ... ..	... 1-) )॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका ( सभा द्वारा सम्पादित ) १६ भाग छप चुके हैं ( सातवां भाग नहीं है ) मूल्य-प्रति भाग ... ..	... १) -)
हिन्दी लेखन- ( बाबू हरिश्चन्द्र रचित ) ... ..	... -) )॥
सूदन कवि का लुजानचरित्र ... ..	... २) )॥
नन्ददास की रामपञ्चाध्यायी ... ..	... 1=) )॥
प्राचीन-लेख-मणि-माला-१ भाग ( बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित ) ... ..	... १) -)
अशोक का जीवनचरित्र ( ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा लिखित ) ... ..	... 1) )॥
नेपाल का इतिहास ( पण्डित नारायण पांडे लिखित ) ... ..	... 1-) )॥
कुमारसम्भवसार ( पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी अनुवादित ) ... ..	... ३) )॥
श्रीधर कवि का जंगनामा ... ..	... ॥1) -)
धम्मपद ( ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा लिखित ) ... ..	... 1-) )॥
मनोविज्ञान ( पण्डित गणपत जानकी राम डूवे लिखित ) ... ..	... ॥) -)
चंद्रशेखर का हम्मीर हठ ... ..	... ॥) )॥
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र ... ..	... ॥=) -)
महिलाष्टकवाणी (मुसी देवीप्रसाद लिखित) ... ..	... १) -)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग ... ..	... १॥) =)
यूरोपीय दर्शन ( पण्डित रामावतार पांडेय लिखित ) ... ..	... ॥) -)
प्रबोधचन्द्रिका ... ..	... ॥1) -)
आनन्दवन कृत विरहलीला ... ..	... =) )॥
जांधराज का हम्मीररासो ... ..	... २) ३)
सरल व्यायाम ( बाबू फालिदास लिखित ) ... ..	... 1=) -)
पञ्चाकर कृत हिम्मतवहादुर विरदावली ... ..	... ॥1) -)
भूषण ग्रन्थावली ... ..	... १॥1=) -)॥
मान कविकृत राजविलास ... ..	... २) -)॥
चित्रावली कवि उत्तमान कृत ... ..	... २) -)॥
राज्य प्रबन्ध शिक्षा ... ..	... ॥1) -)



			मूल्य डाकियय	
बाबू राधाकृष्णदास का जीवन चरित्र	...	...	... II=)	-)
भाषा	...	...	... II=)	)II
सम्राट पंचम ज्याज का जीवन चरित्र	...	...	... II)	-)
सौरी सुधार	...	...	... II)	-)
छूतवाले रोग और उनसे बचने का उपाय	...	...	... १)	-)
सिन्धु देश का इतिहास	...	...	... I=)II	)I
युवती योग्यता	...	...	... II=)	)II
वैपदेव	...	...	... =)	)II
शेख मोहम्मद बाबा	...	...	... -)	)II
लेखक और नागरी लेखक	...	...	... =)	)II
दुःखनी वाला	...	...	... -)II	)II
निः सहाय हिन्दू	...	...	... I)	)II
परिचर्या प्रणाली	...	...	... I)	)II
महाराणा प्रतापसिंह	...	...	... III)	-)
मानस कोष अर्थात् अकारादि क्रम से रामायण के शब्दों के अर्थ...	...	...	... १)	-)II
हिन्दी शब्दसागर अर्थात् हिन्दी का वृहत् कोश जो बड़े आकार के २६ पृष्ठ के खण्डों में प्रकाशित होता है। चार खण्ड छप चुके हैं। प्रत्येक खण्ड का मूल्य	...	...	... १)	-)II
हिन्दी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज की सन् १९०६-०८ की रिपोर्ट अंग्रेजी और हिन्दी में	...	...	... ३)	=)
नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से जन्त की ३ पुस्तकों को छोड़ कर शेष पुस्तकों आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के समासदों को मिल सकती हैं।				

Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4-22.

# THE PRITHVIRAJ RASO

OF

CHAND BARDAI,

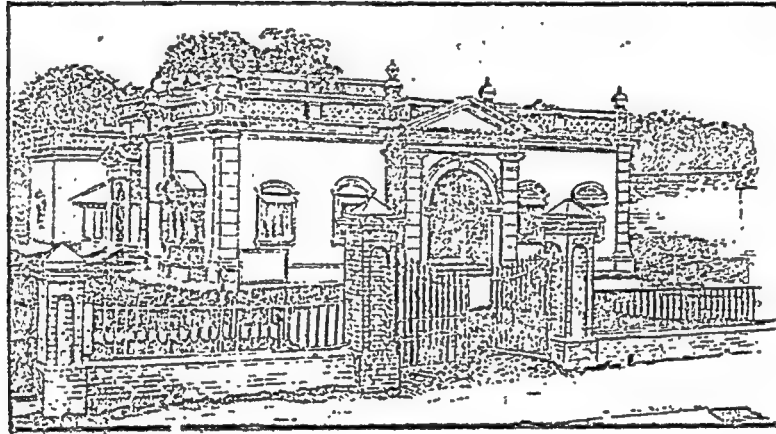
EDITED

BY

*Mohanlal Vishnupal Pandia & Syam Sundar Das, B. A.*

*With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.*

CANTO LXIX.



महाकवि चंद बरदाई

हृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया ।

पर्व ६६

PRINTED BY PT. BAIJNATH JIJJA, MANAGER, AT THE TARA PRINTING  
WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA,  
BENARES.

1918.

मूल्य १।)

Issued 28th August 1913.

Price Rs. 1/4/.

## सूचीपत्र ।

—o—

महोवा खंड	....	...	पृष्ठ २५१३ से	२६१५ तक
रासोसार	....	....	” ४५५ ”	४७३ ”
छठे भाग का सूचीपत्र आदि—			१ ”	१४

—o—

## निवेदन ।

इस भाग के साथ यह ग्रंथ और इसका सारांश समाप्त होता है । अब केवल इसकी श्रुतिका का प्रकाशित होना बाकी है । इसे लिखने का भार पंडित मोहनलाल निष्कुलाल पंड्या ने अपने ऊपर लिधा था पर गत दिसंबर मास में उनका शोकजनक मृत्यु के कारण यह काम न हो सका । इधर ६ महीने से अधिक हुआ कि मेरा स्वास्थ्य बिगड़ रहा है । अतएव मैं भी अभी तक इस काम में हाथ नहीं लगा सका हूँ । ईश्वर की अनुकंपा से स्वास्थ्य ठीक होने पर इस काम में हाथ लगाने का संकल्प है और उसे यथालाभ्य शीघ्र समाप्त करके रासो के प्रेमियों की सेवा में उपस्थित करने की इच्छा है—आगे उस लीलासय की लीला वही जाने—

२५-७-१३

श्यामसुन्दर दास ।

दियौ राज फुरमान छेरा सिधारे । किये कवच अंग निहगं हकारे ॥  
दिये पंच हज्जार सथ्यं चदेखं । चले वाग काजै समाजै सुखेलं ॥  
छं० ॥ ४० ॥

निवाटुं सुवागं वचनं पुकारे । कठौ वेगि रजपूत प्रियिराज वारे ॥  
सुनौ कन्ह वानी गुमानी चलाये । अभंगं बली बाहु जंगं मिलाये ॥  
छं० ॥ ४१ ॥

करै षंड षंड भसुंडैनि भारै । हथ्यारं धरै वीर उदल हकारे ॥  
सुनौ नंद जस राज के लारवाली प्रियीराज की लौन पग्गां उजालै ॥  
छं० ॥ ४२ ॥

हूँ बोलि वानी दलं मध्य आयौ । चिरंचे बली बाहु अस्चंचलायौ ॥  
चलावंत हूँ बँदूकै विरत्ती । परै फुटि न्यारी उडै लागि छत्ती ॥  
छं० ॥ ४३ ॥

वरं तीर मारे वरनं वनंके । उरं फुटि सन्नाह धरती पनंके ॥  
लगौ सेल छत्ती समंती भनारे । मनो जावकं माठ कीनै पनारे ॥  
छं० ॥ ४४ ॥

बहै तेग कंधं करै सीस न्यारे । परै टूटि तरबूज धरती पनारे ॥  
लगे धौक जमदाढ पीकं अटारी । किधौ दुलहनी हथ्य कट्टे कटारी ॥  
छं० ॥ ४५ ॥

जटारी धरं रंजकं वार नावै । मनो सर्पिनी तक्र पृछं वनावै ॥  
सिरं हार प्रियिराज को नौनं कीजै । तजै रंजकं जोध वायीन लीजै ॥  
छं० ॥ ४६ ॥

भये लथ्य बथ्यं दुहै सेन वारे । किधौ आमिषं काज जुट्टे सुनारे ।  
लगे षंजरं पंजरं वार कारे । भुजा जारकै तोर मुक्की उरारे ॥  
छं० ॥ ४७ ॥

भगी फौज चंदेल की जद जानी । लषी नैन परिमाल मलहन्न रानी ॥  
चल्यौ सैन रन सै पिल्यौ जह भारी । गह्यौ सेल हथ्यं सुसेल पंचारी ॥  
छं० ॥ ४८ ॥

उतै कनक चहुआन रजपूत धायौ । वरं वीर उदल पै कूदि आयौ ॥

लख्यौ कनक चहुआन जदिल भारी। हन्यौ खेल छत्ती सुवत्ती प्रचारी ॥

छं० ॥ ४८ ॥

हन्यौ उह नै अंध धरती मिलायौ। कियौ जुद्ध चहुआन रजपूत चायौ  
लख्यौ हीक उदिल को आप नेजा। पर्यौ फूटि चहुआन धरअतसेजा ॥

छं० ॥ ५० ॥

लगी तेग ७ । स की वंकवारो। भयौ मूरखित उदिल धरनीन भारो ॥

छं० ॥ ५१ ॥

चंदेल के बहुत वीरों का मारा जाना और पृथ्वीराज के बीस  
घाइल सरदारों का कनक चौहान के साथ मारा जाना ।

कवित्त ॥ कटे घेत चंदेल लहर । इक सहस अमानह ।

गिरे बनाफर साठ । इक उदल परमानह ॥

परि परिहार पचास । परे चेरा सत सोई ।

गहरवार सत दोइ । लोइ अंतह सिर होई ॥

चहुआन परे घाइल कनक । बीस और संग पगई ॥

कविचंद कहत परिमाल सौ । प्रिथीराज सौ लगई ॥

छं० ॥ ५२ ॥

दूहा ॥ परे बीस घाइल समर । और कनक चहुआन ॥

गिरे जद रन मूरछा । कटि दासी वपुयान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥ कटि दासी वपुयान । लखे परिमाल अवासह ॥

सहस एक चंदेल । सेन खेलैं करितासह ॥

लगी राइ परि माल । चाइ प्रिथिराज सु तुम्हर ।

कहैं चंद वरदाय । बीस घाइल परि समर ॥

सनमज देह जथप परनि । पर घाइल सहुवे गवन ।

झौनौ विरुद्ध चहुआन सौं । भविषि वात सिद्धि कवन ॥

छं० ॥ ५४ ॥

चौपार्ष ॥ परे बीस घाइल रजपूतह । सहस एक चंदेलहि धूतह ॥

गहरवार सत दोइ सुमानौ । साठि इक्योवन सो अति जानौ ॥

छं० ॥ ५५ ॥

यह समाचार सुनकर कि चंदेलों ने मेरे घाइल बीरों को  
मारा पृथ्वीराज को क्रोध हुआ ।

दूहा ॥ कहै प्रियु कानन सुनौ । घाइल हनत सुजान ॥

चाहुआन चंदेल सौ । कलि जंगी अति मान ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह चौहान को बुलाना और सब सामंतों  
को इकट्ठा करके यह समाचार कह कर परामर्श करना ।

कवित्त ॥ सुनिय वचन चहुआन । करिव चंदेल विरुद्ध ॥

हन घाइल विन चूक । और दासी तिन सथ्यह ॥

सुनौ कन्ह कौमास । सुनौ जादौ रा जामं ॥

सुनौ चंद पुंडीर । सुनौ गुजर रा रामं ॥

चावंड राइ सुनियौ अवन । सलष पजून विचारियव ॥

संजम्म राइ निहुर सुनौ । तत्त सुमत्त विचारियव ॥

छं० ॥ ५७ ॥

सामंतों का महोबे पर चढ़ाई करने और परिमाल देव को  
मार गिराने की सलाह देना, पृथ्वीराज का शुभ मुहूर्त  
दिखलाकर कूच करना और पहिले दिन बाग में  
डेरा देना ।

पङ्करी ॥ उच्चर बघेल लषन समथ्य । मंनियौ देस महवौ सुहथ्य ॥

उच्चरिय वत्त चहुआन कन्ह । भंजिये भूप महवौ सुथन्न ॥

छं० ॥ ५८ ॥

चावंड बोलि विरदालि वंक । धारहु टेक मारहु निसंक ॥

बुल्लियौ चंद पुंडीर वीर । पक्करि नरेस परिमाल धीर ॥

छं० ॥ ५९ ॥

सज्जिए राइ बोलिव विरत्त । कट्टिये भूप चढिये सुरत्त ॥

सारंग बोलि वानी विराट । कट्टिये माल परिमाल थाट ॥

छं० ॥ ६० ॥

सुनि मंत कुमद निहुरि नरेस । मारिये वेस महवौ सुदेस ॥

बोलीय सुजैत मतनेस सुख । कौजिय जु वेगि चहु आन जुद्ध ॥  
छं० ॥ ६१ ॥

अचलेस बालि भट्टी सुरद्ध । भौंहा चंदेल बुल्लिय विरुद्ध ॥  
हाठिय सुदैस चंदेल छीर । गोहंद बोलि रावत वीर ॥  
छं० ॥ ६२ ॥

कोजिये राघ परिसाल साज । कट्टिय वीर चढिय समाज ॥  
सदसा सु सांगुला कहिय सोह । चढिये राइ अति क्रोध होइ ॥  
छं० ॥ ६३ ॥

सामंत छर अति विरत होइ । थप्ये मत्त कयमास सोइ ॥  
हाहिमा बालि अग्नौ नरेस । चितंयौ मत्त भरसू धनेस ॥  
छं० ॥ ६४ ॥

जैचंद करिय जपर चंदेल । किजिये मत सविधान घेल ॥  
कानवज्ज और महुवौ सुवेस । भंजिये भूप नृप विनय देस ॥  
छं० ॥ ६५ ॥

थप्ये मत्त चहु आन सुद्ध । धरिये परम चंदेल जुद्ध ॥  
बुल्लाइ चंद वरदाइ सोइ । भव भवषि बात तिह अगम होइ ॥  
छं० ॥ ६६ ॥

बुल्लाय राम गुरराय राज । कहिये महूरत वेग साज ॥  
रवि कुंड सुंड सुचि होम सार । साक्षिल कीन मारन विचार ॥  
छं० ॥ ६७ ॥

वनजाय निमष सिवदास चाढि । उत कुंभलान काहीय काढि ॥  
अहि अस्त माल जपि रुंडमाल । चियलोक विजय भुव मंडिपाल ॥  
छं० ॥ ६८ ॥

पैतगी पुहण पर पर चढाइ । कांसेक फूल हित करि चढाइ ॥  
चकोर आप नृप दरस दीन । पंजन सिपंड वपु प्रसन कीन ॥  
छं० ॥ ६९ ॥

रवि जैग पुहण तिय थान चंद । पंचमौ छर आनंद कंद ॥  
सातमौ सुक दस गुरु जान । नौमौ सुवुद्ध बल अधिक पान ॥  
छं० ॥ ७० ॥

तीसरौ सनीचर छठौ केत । पंचमो भौम अरि दहन नेत ॥  
 ग्यारहौ राह वल अति अनंद । पारथ्य जेमि वल चढय द्वंद ॥  
 छं० ॥ ७१ ॥

कीनौ सुकाम नृप वाग आय । सचीय वंस हेमर संगाय ॥  
 छं० ॥ ७२ ॥

रात को वहां रहकर कर घड़ी रात रहे उठ नित्य क्रिया कर,  
 सब सरदारों को पृथ्वी राज ने बुलाया ।

कवित्त ॥ गैर महल प्रिथ्वीराज । सघी सब कारन दिनव ॥  
 कुसुम पटा सिर पाग । लाग कंद्रप रस किन्नव ॥  
 पहर निसा रहि जागि । सुकीन क्रिया क्रम अंगह ॥  
 सीष दीन सुंदरिय । चीर कीनौ वपु जंगह ॥  
 कपमास बोधि अग्नौ लियव । दीरघ नाद बजाइ थव ॥  
 चहुवान कन्ह नृप राम गुरु । सब सामंत सुहाइव ॥

छं० ॥ ७३ ॥

सब सरदारों को इकट्ठा करके सभों की सवारी के लिये घोड़े  
 बाँटना और कूच की तयारी करना ।

हनुफाल ॥ नृप जंग वम कराय । कयमास अग बुलाय ॥  
 चहुआन कन्ह चंद । गुरु राज आनंद कंद ॥

छं० ॥ ७४ ॥

साहनी सर्वहिय साज । बिलहना वटन राज ॥  
 हय मोर कन्ह दीन । ऐराक वंस नवीन ॥

छं० ॥ ७५ ॥

सिरताज आरव सुद्ध । कयमास दीन विवुद्ध ॥  
 हयराज चावड कज्ज । धंधार उपजिब मज्ज ॥

छं० ॥ ७६ ॥

हय रतन चंद पुंडीर । पञ्जून सिंह मर हीर ॥  
 हय मुकट गोइंद राज । मानिक वाज समोज ॥

छं० ॥ ७७ ॥



एथ छर नरसिंघ दीन । तुरकी सुकोध कहीन ॥

इँस राज जैत पमार । लट्टिया सुवेगिन मार ॥

छं० ॥ ७८ ॥

सनय्यार निंदुर लाह । अस कहा धर उपजाह ॥

इँ तेज रूप सुरज्ज । दिय राज देवन कज्ज ॥

छं० ॥ ७९ ॥

इंजिया सहि सतनेस । बड़ गुज्जर कनकेस ॥

तूरान के अस दून । समपियौ राय पज्जून ॥

छं० ॥ ८० ॥

बगसी मलेसी काज । समपियौ मानिक वाज ॥

अश्व कुसम अरि दल ठेल । विलहना भौंइ चंदेल ॥

छं० ॥ ८१ ॥

चहुआन हरि पद काज । समपियौ सोतिय वाज ॥

सह सिंघ हेमर लीन । अचलेस कारन दीन ॥

छं० ॥ ८२ ॥

सुरषा सुसनमुख छर । दिय अरह कारन तूर ॥

नवलेस को हय दीन । नृप हेम सरभरि लीन ॥

छं० ॥ ८३ ॥

इंहुलिय कारनि हीर । ताजी सुतेज गहीर ॥

इम्मीर काजै इँस । उपजियौ सुतुरकी वंस ॥

छं० ॥ ८४ ॥

गम्हीर काज तुरंग । देसमी रंग सुरंग ॥

साधुल सहस मल काज । दिह पुरी राज सुवाज ॥

छं० ॥ ८५ ॥

सावंत और कुलीन । अग्नेक हयवर लीन ॥

मग्गाम पील नरिंद । वकसीस कीन सुचंद ॥

छं० ॥ ८६ ॥

गुरराय कारन कीन । दोय सहस हेमर दीन ॥

मग्गाय पाठ सिंगार । मदगलति गति जिमि मार ॥

छं० ॥ ८७ ॥

जत्तंग गिरवर अंग । मनु सिघर काजर रंग ॥  
सिर घरचि लाल सिँदूर । मनु तडित घन मै पुर ॥  
छं० ॥ ८८ ॥

असवार है प्रियिराज । कयमास संग समाज ॥  
ता समय धू धुव पच्छ । चौकीर देवन अछ ॥  
छं० ॥ ८९ ॥

सनमुष्य सारद सह । अइ जीधन फन मह ॥  
जा सीस बैठिव देवि । जलजात पंजन सेवि ॥  
छं० ९० ॥

कग दधिन जचौ पाउ । सुप सै मली भँष चाउ ॥  
जल मांझ चकवन मिलि । सज करिय दित अति केलि ॥  
छं० ॥ ९१ ॥

भए सगुन आनँद कंद । इँसिगंठि बंधिय चंद ॥  
छं० ॥ ९२ ॥

धूमधाम से चंदेल को जीतने के लिये पृथ्वीराज का कूच  
करना ।

दूहा ॥ चलिव साजि सहरिधनिय । सामँत छर सकज ॥  
ब्यौर नयन चंदेल को । लोपिय सागर लज्ज ॥  
छं० ॥ ९३ ॥

बीस हजार वीरों के साथ पृथ्वीराज का कूच करना । सेना  
का वर्णन ।

कवित्त ॥ चडिव राज चहुआन । लीन सामँत छरवर ॥  
अतुल तेज बल अतुल । सतुल सुर धरम महावर ॥  
बीस सहस सब संग । अंग कंगल कसि भारिव ॥  
चाहुआल राठीर । गौर, कूरम, वडवारिव ॥  
गहलौत, बघेलौ, वगारिय । बडगुजर आदिक मिलव ॥  
तीमर, पहार, प्रीची, मल्हन । दाहिं घाम छाडा चलिव ॥  
छं० ॥ ९४ ॥

भीतीदाम ॥ चह्यौ प्रियिराज सुसजिय सेन । सजै सब सामँत छर सतेन ॥

सजे चहुँ आन सुकन्ह समथ्य । सजे कछवाह मु पञ्जुग सथ्य ॥

छं० ॥ ८५ ॥

सजे सँग चाल, क सारँग देव । सजे सक्रवार सुलष्यन पैव ॥

सजे सँग दाहिम चावँड स्वर । सजे कयमासलिये मुष नूर ॥

छं० ॥ ८६ ॥

सजे सकमधुज सु निहुर राव । सजे वरसंग सुकितिव चाव ॥

सजे सँग भौँह चंदेल सुधीर । सजे अचलेस सु भट्टिय वीर ॥

छं० ॥ ८७ ॥

सजे परिहार सुअल, ह कुँवार । सजे सख साधुल सामँत लार ॥

सजे सुवधेलय लाषन लाय । सजे चहुँ आन सु संजमराय ॥

छं० ॥ ८८ ॥

सजे अतिताइय स्वर सतन । सजे सँगहाहुल राव रतन ॥

सजे सँग गंभिर हाडहठाल । सजे भरजह हमीर सुचाल ॥

छं० ॥ ८९ ॥

सजे सँग चंद पुँडीर मरह । सजे सँग गौरस गाहिल हह ॥

सजे हरिचंद मलैसिव हह । सजे सँग नाहर राय समह ॥

छं० ॥ ९०० ॥

सजे परसंग सुमल, हन देव । सजे सँग माल विसाल सुयेव ॥

सजे सँग जादव जाम मरह । सजे गहलौत सगोयँद हह ॥

छं० ॥ ९०१ ॥

सजे सँग बुद्धय राय पगार । सजे विडराज सुषेत घँगार ॥

सजे सँग बग्गर सादुल सोइ । सजे सँग माल चंदेल सुजोइ ॥

छं० ॥ ९०२ ॥

सजे सँग भट्टिय भान गहीर । सजे सँग स्वर रठौर सुवीर ॥

सजे निरवान सुवीर मवाह । सजे सँग वीर अत, न्न अथाह ॥

छं० ॥ ९०३ ॥

सजे परिहार सुपीय मरह । सजे भर भीम जँघाल सुहह ॥

सजे सँग मोरिय सारँग स्वर । सजे सँग तेजल डोड करूर ॥

छं० ॥ ९०४ ॥

सजे बलिभद्र सुमल्ल सदेस । खलभल पूरन मल्ल महेस ॥

सजे सँग धांधुल राव परम्भ । सज्यौ सँग रावत राम गुरम्भ ॥

छं० ॥ १०५ ॥

लिये सँग सावँत छर सपन्न । किए जुध चाव उपाव मगन्न ॥

चले दर ह्वाँच किये चहु आन । जँदेहन ऊपर क्रोध निदान ॥

छं० ॥ १०६ ॥

भजे भुमियां निज छाडिकै देस । वसै वन मंदिर कंदर भेस ॥

चले मगखद सुघट्ट रु वाट । पिले दल सावँत दाहन ठाट ॥

छं० ॥ १०७ ॥

सुनौ परिमाल कौ धानव ताम । सिरस्सव कोपि द्वयो बड़ ठाम ॥

छं० ॥ १०८ ॥

पृथ्वीराज की सेना को चढ़ाई का समाचार परिमाल देव को  
मिलना, परिमाल देव का अपने सब सरदारों को इकट्ठा  
करके सलाह करना । महला भोपाति की चुगली से  
आल्हा और ऊदल का अलग होना ।

कवित्त ॥ मल्लिषान सुनिपत्त । मत्त वजरंग उपाइव ॥

पौथौरा पा धरै । सैन चौरै सजि आइव ॥

नहीं आरहन जदल्ल । करहि उप्पर भर संगह ॥

महला भोपति चुगल । चारि परिहार सुअगल ॥

अरिसिंघ बोलि नरसिंघ । विर सिंघ मत्त सुलिजियव ॥

जयसिंघ छर बंधव बली । मिली अनी किहि किजियव ॥

छं० ॥ १०९ ॥

चौपाई ॥ मल्लिषान अरिसिंघ बुलायव । नरसिंघ हरीसिंघ सब आयव ॥

जयसिंघ बोलि कीयौ मप गट्टव । प्रिथीयं राज जुद्ध करि विट्टव ॥

छं० ॥ ११० ॥

परिमाल देव की सेना का तयारी करना, पृथ्वीराज और  
परिमाल देव की सेना का सामना होना, घोर युद्ध होना,

## पृथ्वीराज के सरदारों का परिमाल देव के बड़े बड़े सर- दारों को मार गिराना ।

भुजंगी ॥ सुनी मल्लिषानै करन जुद्ध मंडे । अरीसिंघ विरसिंघ नरसिंघ दंडे ॥  
सजे अंग जयसिंघ भाई सुपंचौ । करै नौन परिमाल को आज संचौ ॥

छं० ॥ १११ ॥

सहस्र सजे संग भाई भतीजे । सहस्र सजे स्वर असवार बीजे ॥  
बंधी फौज थट्टं गरहं चलायौ । सजे कंगल अंग नैन छिदायौ ॥

छं० ॥ ११२ ॥

कियौ नंद नीसान फौजे सुफेरी । भिदी दिष्टि सों दिष्ट चहुआन केरी ॥  
सुषं अग्र कन्ह सुकैमास वीरं । नरं नाह चासुंड कनकं गहीरं ॥

छं० ॥ ११३ ॥

वरीसिंघ वीरंम गोयंद राजं । इते अग्र सामंत रचि बुद्धि साजं ॥  
वरं बीर सौरंग सोरी सहनं । पवारं सलघ जैत जुद्धं सहनं ॥

छं० ॥ ११४ ॥

पजूनं वरं कच्छवाये सपीथं । जुरे जाम जहूँ दिसा दिष्पिनीयं ॥  
धरंधीर धम्मर पुंडीर चंदं । अचक्षेस भट्टी पहारं सुइंदं ॥

छं० ॥ ११५ ॥

बघेला लघन भीम मारु सहनं । भरं हाहुली और हम्मीर पैनं ॥  
इते कीन सावंत बाई भुजानं । रची फौज चंदेल गोयं रिसानं ॥

छं० ॥ ११६ ॥

विचै राज प्रिथीराज सज्जै सयनं । वज्जे नंद नीसान गज्जं गयनं ॥  
लघौ मल्लिषानं दिष्टौ चाहुआनं । उठी वाग वीरं गहीरं गुमानं ॥

छं० ॥ ११७ ॥

लघौ फौज चंदेल की वीर पिछे । धराधीर पत्ती वरावीर मिछे ॥  
करे षंड षंड भंसुंडै न भारी । छकं छाक लग्गै बजै षग्ग तारी ॥

छं० ॥ ११८ ॥

अन्यौ अन्नवारी कहै वीर दोई । कटं काट कट कूट घट घूम होई ॥  
सटं मागि लग्गै षटं बारि छत्ती । पटं पंक रंती विष्टौ अंग मत्ती ॥

छं० ॥ ११९ ॥

घटकै घटं सो विहो खर वारे । गटकंति गिहनि दोऊ खर सारे ॥  
चटकंति धावति नटं वीर नचै । चरखी चषैया चटं चार संचै ॥  
छं० ॥ १२० ॥

जटं जवान को सीस जटाल लेई । झरझर झरै उभारै सुतेई ॥  
टटं आय रथ्ये रहे अचरेसं । थटं खर धावत नावत तेसं ॥  
छं० ॥ १२१ ॥

उडकंत डोरू चहू फेर सहं । ढढकंत ढूकंत खूकंत सहं ॥  
रनकंत रोसं करे पैज धावै । तटकंत छोहं सुलोहं मनावै ॥  
छं० ॥ १२२ ॥

घटं काटि चंदेल कौ साय सारौ । दढं दाठ कन्हं मिल्यौ जुझ भारौ ॥  
धकं मल्ल सानं जुधावै रसानौ । नटं जेम नाटंत आचेत मानौ ॥  
छं० ॥ १२३ ॥

पठं बीच कन्हं वटं विधि आयो । हन्यौ अंग मलिपान धरनी मिलायौ  
भंग्यौ सर्व थानं सुपरिमाल वारौ । चलयौ खर नरसिंघ पग्नं सुभारौ ॥  
छं० ॥ १२४ ॥

लषे दोइ नरसिंघ विरसिंघ वीरं । लषे चंदपुंडीर सुद्धं गह्वीरं ॥  
गह्वीर कुंत चंदं हन्यौ हीक सोई । गिर्यौ सिंघ नरसिंघ चकचूर होई ॥  
छं० ॥ १२५ ॥

लष्यौ चंद पुंडीर वरसिंघ तैसौ । हन्यौ धाइ पग्नं घटं धाइ संसौ ॥  
लग्यौ चंद को धाइ घूम्यौ सुअंगं । पछै मारिग्यौ चंद वरसिंघ जंगं ॥  
छं० ॥ १२६ ॥

उतै देषि चामुंड जयसिंघ धायौ । तजे आयुधं मारु वध्यं भरायौ ॥  
खरै मल्ल जंगं अभंगे सुसोई । धरकै सुधरनी धरकै सुदोई ॥  
छं० ॥ १२७ ॥

अन्यौ अन्य मुक्की वरं वीर बाहै । गह्वीर गुमानी अमानी उगाहै ॥  
उतै दौरि चामुंड चरनं गहायौ । समानं हयं दाटि धरनी मिलायौ ॥  
छं० ॥ १२८ ॥

हन्यौ राय चामुंड जैसिंघ भाई । तवै अंग वरसिंघ जंगं भगाई ॥  
मुर्यौ सिंघ अरिधंग दाडं पलाईल्यौ सिरसवा नग्र चहुआन चाई ॥  
छं० ॥ १२९ ॥

सिरसा के टूटते, बहुतसी सेना मारी जाने पर अरिसिंह का  
भागकर महोबे जाना ।

हूँहा ॥ तोरि सिरसवा नग्र नृप । हनै सैन रन भाइ ॥  
अरिसिंघ भाइ मराय कै । भग्यौ महीबै जाइ ॥

छं० ॥ १३० ॥

अरिसिंह का परिमाल देव से सिरसा के युद्ध में मलखां वीर-  
सिंह नरसिंह जैसिंह आदि वीरों के मारे जाने और पृथ्वी-  
राज की विजय का समाचार कहना ।

कवित्त ॥ मल्लिषान रन परेउ । जान छत्रौ पन सिष्यव ॥  
करौ तौन हल्लाल । ख्याल देवन गन दिष्यव ॥  
परि विरसिंघ नरसिंघ । परे जैसिंघ अमानह ॥  
भगि अरिसिंघ से भाइ । गयौ चंदेल सुथानह ॥  
परि छौठ सहस ठाकुर अवर । चारि सहस संगी रहव ॥  
पच्चास गिरे प्रिथीराज के । लरि सुरपुर इतने गयव ॥

छं० ॥ १३१ ॥

जोपाई ॥ मल्लिषान अरिसिंघ विरसिंघ परि । परि जैसिंघ अंग घावन झरि ॥  
छौठ हजार वंघ परि अंगिय । चारि हजार सु ठाकुर संगिय ॥

छं० ॥ १३२ ॥

भगि अरिसिंघ महोबै आइव । सिरसवाह भाई मरिवाइव ॥  
सो परिमाल सुनी इह कोनह । अंतर उर उपज्यौ चहुआनह ॥

छं० ॥ १३३ ॥

फिरि फिरि बेगि पुकार सु आइव । प्रिथीराज सब देस दुहाइव ॥  
सो परिमाल नृपति सुध लिजिय । सनमुष साज जूझ वल किजिय ॥

छं० ॥ १३४ ॥

परिमाल देव का यह सब समाचार सुनकर अपने बेटों और

( १ ) रासों के और समयों में ठाकुर शब्द कही नहीं आया है ।

## सरदारों को बुलाकर परामर्श लेना कि अब क्या करना चाहिये ।

कवित्त ॥ सुनिव वत्त परिमाल । काल आयौ प्रिथिराजह ॥  
 मल्लिपान कौ मोरि । मारि विर सिंघ सु साजह ॥  
 भंजि सिरसवा नय । गंजि नरसिंघ वीर रन ॥  
 हनि जयसिंघ दुवोह । देस दवियौ लट्टि घन ॥  
 चहुआन सबल सम्भर करन । पातिसाह गहि छंडियव ॥  
 बुल्लाइ कुँवर परिगह सकल । जूझ किहौ विधि मंडियव ॥  
 छं० ॥ १३५ ॥

चौपाई ॥ सुत चंदेल बुलाइव दोइय । महला भोपति परिगह सोइय ॥  
 कोइय श्रीवासह कलियानह । उच्चरि वचन राज मलियानह ॥  
 छं० ॥ १३६ ॥

कवित्त ॥ बुल्लि सुतन परिमाल । बुल्लि काइय कल्यानह ॥  
 बुल्लि वैस नारैन । गौर सारंग मलियानह ॥  
 गहर वार गोयंद । भाट जगनक ढिग बुल्लिव ॥  
 मोहित केशव समुक्ति । राज बनिय वर खुल्लिय ॥  
 आइयौ सेन चहुआन सजि । जूध जालिम सब हारियव ॥  
 हित होइ सोइ जोई कहौ । तत्त सुमत विचारियव ॥  
 छं० ॥ १३७ ॥

रानी मल्हनदेवी का कहना कि दो महीना युद्ध बन्द करके  
 जगनक को भेजकर आल्हा को बुलाइए और पृथ्वीराज के  
 पास मल्हन को भेजकर दो महीना लड़ाई बन्द रखने को  
 कहलाइए । रानी का मत सब के मन में भाया ।

चौपाई ॥ रानी मल्हन दे यह भाषिय । राजा जूझ मांस दोय राखिय ॥  
 जगनक पठयव आल्ह बुलाइव । पंग काज अर दास पठाइव ॥  
 छं० ॥ १३८ ॥



रानी बात कही सब मानिव । पीयल कौं सौगात पठोइव ॥  
जल्हन पठय नजरि सब दिज्य । मास दोय मुक्काम सुकिज्य ॥

छं० ॥ १३६ ॥

पचास हजार पान, गुलाब, बन्दूक, बछे और कच्छी  
घोड़े सौगात में लेकर जल्हन का पृथ्वीराज के  
पास जाना और पत्र देना ।

पान हजार पचास पठायव । जे सह छंदनि सह सब गाइव ॥  
अन्न गुलाब बंदूक वरच्छिय । हेमर वाय चढन के कच्छिय ॥

छं० ॥ १४० ॥

लै सौगात जल्हन चल्लिय । प्रिययराज सु नदी परि मिलिय ॥  
दै कागद सब नजरि सु दिन्नय । सब प्रमोद मिलन की किन्नय ॥

छं० ॥ १४१ ॥

जल्हन का पृथ्वीराज से कहना कि बनाफर ( आल्हा  
ऊदल ) रूठकर कन्नौज जा बैठे हैं उन्हें लाने को राजा ने  
जगनक को भेजा है सो आप क्षात्रियधर्म के अनुसार  
उनके आने तक युद्ध बन्द रखिए ।

राजा जगनक कनवज पठयौ । जहाँ बनाफर रूठ सु वठयौ ॥  
अल्हा आए जुझा विचारौ । जो पीयल छची अम धारौ ॥

छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज ने नजर रख ली और आल्हा के आने तक  
युद्ध बन्द रखना स्वीकार किया ।

पीयल नजरि सौं सब रष्य । वचन जल्हन सौं श्रीमुष अष्य ॥  
सब सामंत लरन कौ भरियौ । आवइ आल्ह जबहिं जुंघ करियौ ॥

छं० ॥ १४३ ॥

जल्हन का महोबे लौट आना, पृथ्वीराज का वहीं डेरा  
डाल कर रहना ।

दूहा ॥ कागद लै जल्हन चली । हली महीबै ठाम ॥  
डेरा करि सरिता निकट । पीथल कियौ मुकाम ॥

छं० ॥ १४४ ॥

पृथ्वीराज का चंद वर्दाई से पूछना कि आल्हा ऊदल  
चंदेल से क्यों रूस गए हैं ।

फिर राजन वरदाय सौ । वानी बोल्यौ एम ॥

आल्ह जद चंदेल सौ । रूसि गयो सो केम ॥ छं० ॥ १४५ ॥

चन्द का कहना कि पहिले चन्देल के यहां दसराज सेनापति  
था उसने गोंड लोगों की लड़ाई में बड़ी बीरता की, सिर  
कटजाने पर धड़ही से सहस्रों वार शत्रुओं को  
मारकर चन्देल राजा की विजय कराई ।

कवित्त ॥ कान मंड चह आन । कहिय वरदाइ मत्त गति ॥

प्रथम देस परिमाल । रहै दसराज सेनपति ॥

गढ़ी लौ नृप जाय । करौ गोंडन सौ जंगह ॥

पर्यौ चोल चंदेल । झेल घन रन अपु अंवह ॥

रुक्मियौ तेन अरि सैन सब । माम मरन जुझिय धरिय ॥

पिल्लयौ प्याल बिन सीस धर । काम आय फत्ते करिय ॥

छं० ॥ १४६ ॥

चौपाई ॥ गंठा नगर चंदेल सुलगिव । गौड सिमिटि जुध कारन पगिव ॥  
भगिव सैन लख्यौ जस राजह । दीनौ सीस स्वामि के काजह ॥

छं० ॥ १४७ ॥

दूहा ॥ चालु परै रुक्यौ सत्रै । काम आय जसराज ॥

मारि गौड लीनौ गढा । सिर दै स्वामि सुकाज ॥

छं० ॥ १४८ ॥

राजा विजय करके महोबे आया और आल्हा ऊदल  
को बुला कर बड़ा आदर किया और  
सेनापति बनाया ।

चौपाई : राजा जीति महोबे आइव । आल्हा उदिल पाय लगाइव ॥  
द्वै जसराज महातम सारौ । सैनापति धरती रषवारौ ॥

छं० ॥ १४८ ॥

रानी मल्हन देवी आल्हा ऊदल को अपने बेटे ब्रम्हानन्द  
की तरह मानती थी ।

करै प्यार मल्हन दे रानीय । ब्रम्हानन्द जेस सुत मानिय ॥  
सब धरनी सह हुकुम सुसाजौ । सुजस जेसि अरहन कर साजौ ॥

छं० ॥ १५० ॥

महला और भूपति ने राजा से चुगली की कि आल्हा ऊदल  
के पास पांच बछेड़े ऐराकी घोड़े के बडे उत्तम हैं ।

ऐराकी घर घेरिय जाय । पांच बछेरा लगै सुहाय ॥  
महिला भूपति चुगली कीनिय । सो परिमाल मानि सब लिनिय ॥

छं० ॥ १५१ ॥

राजा कालिंजर देखने को गया और वहां आल्हा को बुला  
कर उन पांचों बछेड़ों को मांगा और बदले में बहुत  
घोड़े लेने को कहा ।

नृपति कलिंजर देखत किनव । राजा आल्ह बुलाइ सु लिनव ॥  
पांच बछेरा मांगै दीजै । उनको साटै हय बहु लीजै ॥

छं० ॥ १५२ ॥

आल्हा की मां का बेटे से कहना कि बछेड़े कदापि न दो  
बरञ्च देश को छोड़ दो और कन्नौज चलकर रहो ।

घर बैठे देखल दे पिजिय । पूत बछेरा दै नन किजिय ॥

वास छांडि कनवज कहँ चलिव । राजा दल पंगुर सह मिलिव ॥  
छं० ॥ १५३ ॥

परिमालदेव ने फिर कहा कि या तो बछेड़ा दो  
या हमारा देश छोड़ दो ।

नृप परिमाल कही मुष बानिय । आल्हा देव बछेरा आनिय ॥  
नां तर वास छांडि कै चलिये । आनहि ठाम ठिकानो करिये ॥  
छं० ॥ १५४ ॥

आल्हा यह सुन घर लौट आया और अपने  
घोड़े आदि सब साजावाज लेकर  
कन्नौज की ओर चल पड़ा ॥

सुनि करि वचन आल्हा घर आये । छंदौ वास पयान कराये ॥  
साहन वाहन सबही लीनौ । कनवज दिसा पयानौ कीनौ ॥  
छं० ॥ १५५ ॥

भोपति की जागीर नष्ट कर सारा नगर उजाड़ दिया ॥

जागीरी भोपति की मारिय । वसती मारि सबै उज्जारिय ॥  
परिपाटी परिहार सु बुझिय । उदिल मुष काहू नहि दक्षिय ॥  
छं० ॥ १५६ ॥

आल्हा उदल का कन्नौज पहुंचना, जैचन्द का बड़े आदर से  
उन्हें अपने पास रखना ।

कदित ॥ आल्हा गयौ कनवज्ज । छाडि परिमाल वास बर ॥  
भोपति को जागीर । बाध उज्जार जारि घर ॥  
करि आदर जैचंद । दियव बढ देस सुभारिय ॥  
घोरे पांच मंगाय । दोय हथिय हितकारिय ॥  
मोतिन माल उतंग अति । हीरा पहुंची सहरिय ॥  
दसराज सुतन अरचौ अधिक । मिलि मारु मंगल भरिय ॥  
छं० ॥ १५७ ॥

चन्द का पृथ्वीराज त कहना कि यह कारण आल्हा के  
बिगड़ने का है पर वह फिर मनाकर आवैगा और  
घोर युद्ध मचावैगा ।

दूहा ॥ चंद कहै प्रिथीराज सुनि । विरस आल्हा कौ गाय ॥

मनौ बनावर आइवै । रुंडन सुंड नचाय ॥ छं० ॥ १५८ ॥

जगनक ने कन्नौज पहुंच कर चिट्ठी आल्हा को दी और  
सब समाचार कहकर महोवा चलने के लिये परिमाल की  
बिनती सुनाई ।

कवित्त ॥ गय जगनक कनवज्ज । दीन आल्हा कर पचिय ॥

ऊदल ईदल जोग । दई देवल है मंचिय ॥

पीथोरा पहरिय । सांजि महुवे वर आइव ॥

मल्लिवान बरि सिंध । बली नरसंघ जुझाइव ॥

अनि भजिं सिरसवा संभरिय । देस चंदेल दहाइव ॥

परमाल थाम दुइ मास रण । सो तुव पास पठाइव ॥

छं० ॥ १५९ ॥

चौपाई ॥ अब तुम आल्हा विसरु करि चलि । मरहन है अति दुष रुप घलि ॥

बैठी महलै बाट सु जोवै । कनवज दिसा देषि करि रोवै ॥

छं० ॥ १६० ॥

अब दल जोरि पिथोरा आइव । सिंगरौ देस उजारि दहाइव ॥

भग्यौ मद चंदेलन को सब । आल्हा सुनि पछिताय महा तब ॥

छं० ॥ १६१ ॥

सो गुदराय करौ तुव जाइव । जयचंद कौ अरदास पठाइव ॥

कुमक मांगि कैसे गह लीजै । प्रंग न घाल बनावर कीजै ॥

छं० ॥ १६२ ॥

जगनक की बात सुनकर आल्हा ने कहा कि खेद है कि महोवा  
लुटा और चन्देल का गुमान टूटा, बिना अपराध हमारा देश  
छोड़ाया, हमारी कुछ भी सेवा न मानी अब भी चुगलों को

दूर करै सूर सामंतों को आगे, बेखटके चौहान  
से लड़ै । सु

कवित्त ॥ सुनि जगनक किय वत्त । आलछ वुल्यो करि वानि य ॥  
ल,व्यो महोवौ नगर । कुट्ट चंदेल गुमानिय ॥  
विना चूक परिमाल । किये फिर देसह न्यारे ॥  
काम आइ जसराव । सबै नृप काम सुधारे ॥  
परिहार सैन आनइ धरह, । चुगली चाहिन कान लहु ॥  
सामंत सूर सनमुष्पहु । जइ करहु चहुवान सह ॥

छं० ॥ १६३ ॥

चौपाई ॥ सुनु जगनक यह वात सुमानिय । हमनै राज कछु नहि जानिय ॥  
हम सिर बांधि महोवै रषिव । नृप चंदेल चुगल दिसि दिष्व ॥

छं० ॥ १६४ ॥

कवित्त ॥ हम मारे सव गोड । देवगढ दावा चारिव ॥  
हस जादौ रन भंजि । धरा हिंडोल उजारिव ॥  
हम कटहरिये काटि । याहि परिमाल देस दल ॥  
हम कूरम किरवान । दाढि लीनो सु महाबल ॥  
लीनै सु पील जयचंद के । असी लाष गनिये सु तुछ ॥  
सुनि वह भट्ट रजपूत की । राजन जानी नाहि कछु ॥

छं० ॥ १६५ ॥

हम आगै पतिसाह । फौज भगिय दस बारह ॥  
हम निसरत पां लूटि । किये दल कूटि वषारह ॥  
हम जीते घर गाय । दहिब सो प्रवल पठानह ॥  
हम रेवा तन वरै । बली हनिव सुरतानह ॥  
मेवात मारि हिंडोरधर । अंतरवेद दहाइव ॥  
वधेल मारि वसुधा परिय । घर चंदेलन ल्याइव ॥

छं० ॥ १६६ ॥

चौपाई ॥ राजा दस जीते जसराजह । लीनी धर कंचन नग साजह ॥  
जाकौ फल राजन इह किन्नव । हमको देस निकारो दिखव ॥

छं० ॥ १६७ ॥

जिन पाछै हम घे ~~क~~ तीनव । राजा जीत चालीसक लीनव ॥  
 सात वार घाएल ~~र~~ अंगह । हम जित्यौ परिमाल सु जंगह ॥  
 छं० ॥ १६८ ॥

सात वार उहिल जुध किनव । जैतपच चंदेल सु दिनव ॥  
 तीन वार गढ भंजिव भारिय । अंत दया नृप की रघवारिय ॥  
 छं० ॥ १६९ ॥

कवित्त ॥ सात वार परि घाव । खगे चौरासी गातह ॥  
 जीति राज इक दैस । हसि कछि सैन सपातह ॥  
 स्वामि धर्म सग्रहव । सह्यौ दुज्जन दल जोरह ॥  
 गौंड मारि उज्जारि । पारि निसरति जंग तीरह ॥  
 वाजिध्व लोह तेरह वरस । पंचासन लगि छोह किय ॥  
 चंदेल चुगुल मानिय कछिय । तापर हम परदेस दिय ॥

छं० ॥ १७० ॥

जगनक का समझना कि तुम्हारे पिता ने चंदेल का बहुत कुछ  
 सहायता की और चंदेल ने तुम्हारा भी आदर किया । तुम्हारा  
 कहना ठीक है पर इस समय स्वामी को छोड़ना क्षत्रियों का  
 धर्म नहीं है ।

पद्वरी ॥ सुनि वत्त उखर भट्ट ताम । आल्हा नरेस सुनि अवन काम ॥  
 परिमाल छाडि वालक बाप । जंमाय धरा जसराज आप ॥

छं० ॥ १७१ ॥

चांदा सु पास लिय देहु दंड । वारी सुदेस गढ कीन षंड ॥  
 देवा सुपार लिन लुट्टि सर्व । भजौ सुजोर जेरा सु गर्व ॥

छं० ॥ १७२ ॥

जाटवा राइ पगनि घियाय । मेवात मारि धर लिये उ धाय ॥  
 पंचाल देस पंजाब थान । बैराठ देस कौमल दिवान ॥

छं० ॥ १७३ ॥

मालवा देस लिय पास मारि । उदया पमार को घर उजारि ॥  
 फिरि गढा मारि गट पेस कीन । चंदेलराय बंझाय दीन ॥

छं० ॥ १७४ ॥

यह बत्त सुनि परिमालराज । आए सु काम दसरथ्य राज ॥  
सिर धुनिय आलह लीनौ बुलाय । आपनो देस सुदखल पाय ॥

छं० ॥ १७५ ॥

तरवारि बंध सिर तिलक दीन । गैयर मग्गाइ वह वीर दीन ॥  
किय सोइ अग्ग सिरदार सुद्ध । वाजियौ वनाफर नाव जुद्ध ॥

छं० ॥ १७६ ॥

बैठे सु पाट आलहा नरेस । मारियो जाइ पूरब देस ॥  
पट्टान गया के जेर कीन । तहं दर्व कोटि तिय लुट्टि लीन ॥

छं० ॥ १७७ ॥

सम सहावाद घग्गनि षिपोय । जीतयौ जुद्ध निसरति जाय ॥  
लीनौ सु पील जयचंद दौरि । केहरि कंठेरि कौ मान मौरि ॥

छं० ॥ १७८ ॥

लूटी सु सिद्ध नव निद्धि भाय । हिंडवन देस जहव दहाय ॥  
मारे सुवेस दल सवल दाहि । बधघेल बाघ वारी धराहि ॥

छं० ॥ १७९ ॥

चालूक सिंघ कौ गर्व गारि । पतिसाहि फौज कौ वार मारि ॥  
सत वार घेत परियौ सु द्वंद । धरि स्वाभि धर्म जस राजनंद ॥

छं० ॥ १८० ॥

यह भभषि बात वर लहै कीइ । संकरै सामि छंडै न कीइ ॥  
सांकरै सामि को छंडि जाय । अघघोर नरक रजपूत पाय ॥

छं० ॥ १८१ ॥

साकरै पर्यौ चंदेल राय । तुम सहौ आज कनवज रहाय ॥  
तुव होत बधाई नृपति कीन । सत लष्य हेम भिस्सु कन दीन ॥

छं० ॥ १८२ ॥

रनवास आइ सब गान कीन । कर चाव मलहन दे ग्रवीन ॥  
करि चाउ मलहन दे कछ्यौ मोहि । सो मात दिवल दे कछ्यौ मोहि ॥

छं० ॥ १८३ ॥

जगनक ने आलहा की माता देवल दे से कहा किरानी मलहन



दे ने तुम से कहा है कि इस समय चन्देल पर संकट है  
तुम्हें आना चाहिए ।

दोहा ॥ देवल दे कानन सुनौ । कहि मल्हन दे मोहि ॥  
भारि परी चंदेल पै । है मिलिबे की तोहि ॥

छं० ॥ १८४ ॥

चौपाई ॥ देवल दे तुम वाचा वंधिय । धर परमाल धरा नहि छडिय ॥  
गढ कौ आनि लगै कोइ राजह । आल्हा सीस दियौ तुम काजह ॥

छं० ॥ १८५ ॥

वाचा सार ब्यास सुष गाइव । वाचा जग मै सुक्ति बताइव ॥  
जे कोइ वाचा हार न करई । चंद लहर ते नरक सु परई ॥

छं० ॥ १८६ ॥

देवल दे ने यह सुन बेटों से कहा कि महोवा चलो और  
पृथ्वीराज से लडकर स्वामी का काम बनाओ ।

सुनि वाचा देवल दे बुलिय । आल्हा सुतन महोवे चलिय ॥  
प्रियौराज सौ जुद्ध जु किजिय । स्वासि धरस कौजस बहु लिजिय ॥

छं० ॥ १८७ ॥

ऊइल ने फिर कहा जिस दुर्दशा से महोवे से परिमालदेव  
ने निकाला था वह भूल गई, जगनक तुम महोवे  
लौट जाओ ।

तब उइल फिर बोलिय वानिय । देहु महोवे की चक्र धानिय ॥  
बुरे हाल काढे परिमालह । सो अब भूलि गई वह प्यालह ॥

छं० ॥ १८८ ॥

जगनक भट्ट अवै घर जावहु । नगर सोहवा लगे अभावहु ॥  
धर घट्टय दसराज उथपिय । हम कनवज उतन कर थपिय ॥

छं० ॥ १८९ ॥

देवल दे ने यह कहकर कि मैं बांझ क्यों न हुई, मेरे बेटे

क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध बात कहते हैं और संकट में स्वामी  
को छोड़ते हैं, रो दिया ।

देवल दे कहि बांझ न रषिय । छवी धर्म करस मय भषिय ॥

सांमि सांकरै देह न कटिय । हौ करतार कूषि किम फटिय ॥

छं० ॥ १६० ॥

माता दीन वचन करि रोई । तुम सब बनाफरन की घोई ॥

जंग वचन सुनि कै नहि नचय । ते रजपूत धरम नहि संचय ॥

छं० ॥ १६१ ॥

दोहा ॥ सांमि सीकरै जानि कै । रहे अवर घर सोइ ॥

सो रानी फिर तो लहौ । कुल रजपूत न होइ ॥ छं० ॥ १६२ ॥

मां की बात सुन कर दोनों भाई सूख गए और महोवे चलने  
का निश्चय कर जयचन्द से सीख लेने जगनक के साथ गए ।

कवित्त ॥ आला जदिल सुनिव । उठे सुरभाय वीर दुहु ॥

माता सुष मन मानि मरै । उहां जाइ कुटम सहु ॥

लरै जाइ सनमुष । करै अपवात धरा बहु ॥

धरै सांमि भ्रम सीस । कटै किरवान पान रहु ॥

सोमंत वधय घल्लै विहस । रहसि स्वर समर अनिय ॥

उजियालि दुहु कुल में सुघर । जरन भेंट सम्भरि धनिय ॥

छं० ॥ १६३ ॥

दूहा ॥ चलन महीधै कीन मत । देवल सीष उपाय ॥

अरज करन जयचंद सौं । चलै सु दोनों भाय ॥

छं० ॥ १६४ ॥

रषत वषत सब साज करि । कंगल अंग हुलास ॥

जगनक को संग लै चले । पांगुराय के पास ॥ छं० ॥ १६५ ॥

जयचन्द ने पूछा कि आज क्या है जो रणसज्या से आप  
द्वार में आए हैं । आल्हा ने कहा कि पृथ्वीराज ने चढाई  
की है सो परिमालदेव ने हमलों को बुलाया है ।

कवित्त ॥ दिष्टि नयन जयचंद । बुझि आल्हन सहि वानिय ॥  
 क्यौं आवहि दरबार । उट्ट पावार-गुनानि ॥  
 सजे कवच किसि अंग । जंग लग्गे भट भारिय ॥  
 बिदा किये कहु नाहि । नाहि पुकारह कारिय ॥  
 इस कहौ बनावर जाइ कर । लेन सु जगनक आइयव ॥  
 प्रियीराज महोबे जुझ कहु । हम परिमाल बुलाइयव ॥

छं० ॥ १८६ ॥

जयचन्द ने कहा तुम लोग मरने के लिये महोबे न जाने  
 पाओगे ।

चौपाई ॥ नयन रत्त करि बुझय वानिय । मरिवे काज महोबे ठानिय ॥  
 अञ्जल गट्टु हमारौ घायो । चंदेलन ढिग लग्गहु लायौ ॥

छं० ॥ १८७ ॥

सगरी नाव जाय बंध किजय । आल्ह उदिल उतरन नहि दिजय ॥  
 छावनि करौ हमारे पास । छांडौ अब महुवा कौ आस ॥

छं० ॥ १८८ ॥

यह सुन आल्हा की आँखें लाल होगई और उसने कहा कि  
 पहिले कन्नौज लूट कर तब महोबे में युद्ध करेंगे ।

तब आल्हन रस कीनै नैनह । सुनि जयचंद नृपति के बैनह ॥  
 कनवज लूटि अडि सब हरिहौ । पाछै जुझ महोबे करिहौ ॥

छं० ॥ १८९ ॥

इतने में जगनक ने पत्र दिया जिसमें परिमालदेव ने पृथ्वी-  
 राज से लड़ने के लिये जयचन्द से सहायता मांगी थी ।

जब जगनक कह विरद विसालह । दीनी अरज लिषी परिमालह ॥  
 करै चाकरी सेवा ठाइय । पिथ्यल पर सुइ कुमक पठाइय ॥

छं० ॥ २०० ॥

पत्र पढ़कर जयचन्द ने कहा कि पृथ्वीराज से लड़ने के  
 लिये मैं अवश्य आल्हा के साथ सेना भेजूंगा और दीवान

को बुलाकर आल्हा के साथ सेना भेजने की आज्ञा दी ।

कावित ॥ बंघि अरज जयचंद । कहिय सुष वचन भाट वर ॥

करहि चाकरी प्रगट । करहु उप्पय आतुर कर ॥

पीथीरा वध वीर । मलख बड जौ मस किन्नव ॥

लूटि सिरसवा नग्र । लूटि धरती निधि लिन्नव ॥

पट्टाय दुसक सँग अल्ह के । जूझ समर स्मर लगत इव ॥

संभरी गाजि विजपाल सह । तुव सुजजर जुरि पुंगइव ॥

छं० ॥ २०१ ॥

दूहा ॥ बंघि अरज जयचंद नृप । बोलि दिवान जरूर ॥

विदा करौ सेना सजौ । आल्हा संग गरूर ॥

छं० ॥ २०२ ॥

बहुत भारी सेना, सिरोपाव आदि देकर और जगनक को  
सिरोपाव आदि देकर आल्हा को जयचन्द ने बिदा किया ।

पहरी ॥ विदा किय आल्हन पंगुर राय । दिये दस हेमर साज वनाय ॥

दिये दोउ पील सु उज्जल दंत । छुरित छाक रहै मद मंत ॥

छं० ॥ २०३ ॥

दई दस बीनि कौ सुत्तिय माल । दई कर पौंचिय वज्र विसाल ॥

दिये सिर पावक सद्धिय सात । निरप्यत चंद सुतकृत जात ॥

छं० ॥ २०४ ॥

कटारि जराव की दीनिय सोइ । रपौ तुम आल्ह छती भ्रम होइ ॥

बुलाइव लापनसौ कमधज्ज । धरौ धम सीसह छत्र धरज्ज ॥

छं० ॥ २०५ ॥

दई संग फौज पचास हजार । दिये दस डील दंतार जुझार ॥

दिये सँग मोरिय रूप सि सुद्ध । दिये सँग चालुक के सब जुद्ध ॥

छं० ॥ २०६ ॥

दिये संग तोवर बोहिय वीर । दियौ सँग जादव छद्द गहीर ॥

दियौ किरवार सु कूवर पाल । दियौ सँग वैसन पंगु सकाल ॥

छं० ॥ २०७ ॥

नदी उतर कर जयचन्द की कुमक साथ लिए महोवा  
और सब चले ।

दूहा ॥ देवल मिजमानी करी । सब सँग एकै काज ॥  
अन धन जपट करिव । बहु पकवान समाज ॥

छं० ॥ २२३ ॥

राति रहै उतरे नदी । चलै महोवा वार ॥  
कुमक लिए जयचंद की । क्रमै सुवीर जुझार ॥

छं० ॥ २२४ ॥

आल्हा ऊदल का सेना सहित पहुंचना, परिमाल देव को  
दूत का आल्हा ऊदल और कन्नौज की सेना के आने का  
समाचार देना ।

पड्वरी ॥ चढ़ि चले आल्ह उदिल सोइ । उर स्वामि धर्म रत विरत होइ ॥  
गाजिव गरुहीर वाजिव निसान । सज्जिव जवान अति जोरवान ॥

छं० ॥ २२५ ॥

धरि पीर अग्न पचास पांच । आरन्य मांझ धारीन आंच ॥  
जीवनौ साजि सारस कौन । सेमली लघ्य सुख भय हीन ॥

छं० ॥ २२६ ॥

चक्रव विद्ध्रिय दिसा मांझ । हय नयन झरय विन विपत मांझ ॥  
फिक्करी दौरि आडी सु आइ । जंबूक सबद बेले कुभाइ ॥

छं० ॥ २२७ ॥

खरज मध्य एक कुमद दिष्य । यह चरित जाय लप्पन विलप्प ॥  
हंसि कहिय आल्ह यह हाल गाय । रजपूत सरन मंगल बताय ॥

छं० ॥ २२८ ॥

यह बार सोच कीजै न कोइ । रजपूत वड इक विकट होइ ।  
दर कूंच कूंच कीने पयान । धरि युद्ध चाव अति विबुध मान ॥

छं० ॥ २२९ ॥

कहुं इक दिवस विलसे न चाय । परिमाल हेत वधि नेत वाय ॥

तारत तुरिय मारत मृग । भव भवषि भोग तैसा सुरग ॥

छं० ॥ २३० ॥

परिमाल प्रतिग्य किय जुड जोध । चहुआन पान लषि विषम बोध ॥

पट्टाय दीन कासिह एक । परिमाल जोध लषि अज्ज मेक ॥

छं० ॥ २३१ ॥

केसरि मंगाय केसर्या कीन । पूजंत ईस सेवा अधीन ॥

उच्छाह अधिक किय भात दीय । सांकरै स्वामि जान्यौ सुलोय ॥

छं० ॥ २३२ ॥

कासिह आइ परिमाल पास । बैठई भूप जँचै अवास ॥

गुदराय बैठ दरवार जाइ । आए बनावर दीय भाय ॥

छं० ॥ २३३ ॥

दरवान जाइ बुल्लयौ दूरि । आये सु आल्ह सेना हजूर ॥

सुनि राज हष मन अधिक कीन । कासिह बोलि हजूर लीन ॥

छं० ॥ २३४ ॥

उच्चरै वात चंदेल राय । कितनै सैन आल्हन मिलाय ॥

बुल्लयौ बैन कासिह पाय । पचास सहस दिय पंगुराय ॥

छं० ॥ २३५ ॥

यह कह बचन कासिह आन । चंदेल भूप हिय सुष्य सान ॥

लषन भतीज नृप संग दीन । सिरदार आठ दुवलार कीन ॥

छं० ॥ २३६ ॥

दूत से समाचार पाकर राजा का प्रसन्न होना ।

दूहा ॥ सुनि वानिय कासिह की । किये नगरिते नैन ॥

साज वाज सब सुइ है । सजि आवो सब सैन ॥

छं० ॥ २३७ ॥

अगवानी के लिये नकीब आदि को तैयार करना ।

चंद्रायना ॥ दौरि नकीब बुलाये परिमाल के ।

साहन वाहन सज्ज करी इह हाल के ॥

आवै मिलि दरवारि कि सामंत सूरिमां ।

परिहा साजि सनाह सरीर भलकै पूरिमां ॥

छं० ॥ २३८ ॥

आल्हा का मां देवलदे के आने का समाचार पा मल्हनदे  
का आंग से मिलने को चलना ।

दूहा ॥ देवल दे सँग भाटकै । चली महौबै आइ ॥

मल्हन दे सुनि कौ पवर । सामही भई सुभाइ ॥

छं० ॥ २३९ ॥

देवल दे का पुत्र से कहकर जगनक के साथ पालकी में  
बैठ कर बाग में आकर रानी से मिलना ।

चौपाई ॥ तब देवल दे बुल्य वानिय । आगे चलौ मिलन कौ रानिय ॥

जगनक संग पठावहु सो कह । राजा की सुनि कहिहौं तोकह ॥

छं० ॥ २४० ॥

दूहा ॥ मिली बाग सै आइकै । वपु सो अंग लगाय ॥

एक पालकी बैठि कौ । भूप भवन चढि आइ ॥

छं० ॥ २४१ ॥

जगनक का राजा से कहना कि चलकर लाखनसी से मिलिए ।

जगनक भाट हजूर गौ । कहौ खबर जा सोइ ॥

डीलनि राज पधारिये । मिलिये लाघन छोइ ॥

छं० ॥ २४२ ॥

राजा का ब्रह्मानन्द के साथ सवार होकर आल्हा को लेने

और लाखनसी तालनसी से भेट करने को चलना ।

असवारी राजा करौ । सँग ब्रह्मानंद लीन ॥

तुरी बैठि परिमाल जू । आल्हनि लावो कीन ॥

छं० ॥ २४३ ॥

आल्हा का लाखनसी तालनसी को साथ लेकर आगे  
बढ़ना और बीच में राजा परिमाल से मिलना ।

सुनी अरज साम्है चले । लापन तालन संग ॥  
मिलि आइकौ बीच में । भेटे राजन अंग ॥

छं० ॥ २४४ ॥

हनूफाल ॥ चढि चले आल्ह अमान । परिमाल आये जानि ॥  
सिर पाव कौन सुअंग । चढि, चले आल्हन संग ॥

छं० ॥ २४५ ॥

मिलियौ सु आल्हन आइ । परिमाल हीय लगाइ ॥  
मिलि टांक रूप नवीन । चंदल आदर कौन ॥

छं० ॥ २४६ ॥

चालुक केसवदास । परिमाल मिलिय हलास ॥  
तोवर सु वोइथ्य आइ । लगि नृपति कौ मिलि भाइ ॥

छं० ॥ २४७ ॥

चलि जादवा दुष भाइ । मिलि हेत करि परि भाइ ॥  
चहुआन मंगल आइ । मिलिवे नरेसुर जाइ ॥

छं० ॥ २४८ ॥

वडगुज्जर सौनिग । मिलिये सु राजन अंग ॥  
मिलि सत्र कुवर सु पाल । मिलिये सुराजन लाल ॥

छं० ॥ २४९ ॥

सैगर सुराय अमान । मिलि रूप भूप अमान ॥  
ढिग आइ आल्हन तेग । पट्टान हित मिलि वंग ॥

छं० ॥ २५० ॥

नव किश हैवर हद । इक हरत ससत दुरिह ॥  
जयचंद कुसल पुछाइ । फुरमान सौस चढाइ ॥

छं० ॥ २५१ ॥

दिय आल्ह कारन पाय । परगनै चारि सँगाय ॥  
सँगाय हथिय दोय । समपियौ आल्हन सोय ॥

छं० ॥ २५२ ॥

सँगाय मुत्तिय माल । हीरानि पौचि विसाल ॥  
सिर पेच पना पान । मिलि जोति भाइय तान ॥

छं० ॥ २५३ ॥



सिरदार लगियौ पाइ । नृप लियौ सीस चढाइ ॥

दिय तुरी तेरह साज । सेवन् सोज समाज ॥

छं० ॥ २५४ ॥

रानी सुनिकट बुलाइ । निछावर करि दो भाइ ॥

किय अरज मलहन एव । अहवात आल्हा देव ॥

छं० ॥ २५५ ॥

फिरि आल्ह बुलिय तास । सो सीस तुअरे काम ॥

सोतीनि आरति कीन । यह भांति आदर दीन ॥

छं० ॥ २५६ ॥

दूहा ॥ आल्हन कज्ज बिदा करि । नृपति हवेली काज ॥

फौज उतारी पंगु की । वागह साउ समाज ॥

छं० ॥ २५७ ॥

देवल रानी गोट रहि । कहि कनवज की बात ॥

वचन कहै जयचंद नै । सो पुनि किय विख्यात ॥

छं० ॥ २५८ ॥

परिमालदेव का जगनक को बहुत कुछ गांव हाथी आदि  
देना ।

जगनक कौ हाथी दिय । चारि गाम आघाट ॥

थाट निवाजि चंदेल नै । करी बडाई भाट ॥

छं० ॥ २५९ ॥

आल्हा के आने का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का कह  
कैमास आदि को बुलाकर युद्ध की तैयारी करने के लिये  
कहना ।

आल्हा आये सात दिन । भये सुनी प्रथिराज ॥

बोलि कन्ह कैमास भर । कियौ लरन कौ साज ॥

छं० ॥ २६० ॥

कवित्त ॥ बोलि कन्ह चहुआन । बोलि कैमास महाभर ॥

बोलि चंद पुंडीर । बोलि चासुंड पुंड वर ॥

बोलि सलष पंमार । बोलि पञ्जून महामति ॥  
 बोलिव संभरराय । बोलि कनकैस विरदपति ॥  
 कमधुञ्जराय निहुर बुलिव । अरु वरदाई बुलियव ॥  
 सब मिले सूर सामंत वर । मत्त तत्त सब मंतियव ॥

छं० ॥ २६१ ॥

चंद का पृथ्वीराज से कहना कि अब युद्ध में देर न कीजिए,  
 आल्हा कन्नौज से पचास हजार सेना लेकर सात दिन हुए  
 आ गया है ।

दूहा ॥ कहै चंद प्रियिराज सुनि । ढौल न करिए नेति ॥  
 आयो आल्हा कनौज तैं । सहस पचास सनेति ॥

छं० ॥ २६२ ॥

चौपाई ॥ आल्हा सहस पचासक लयायौ । पंग जंग पर सैन पठायौ ॥  
 आल्हा आय सात दिन बीते । कीजै जुद्ध चंदेख कहीते ॥

छं० ॥ २६३ ॥

पृथ्वीराज का परिमालदेव को पत्र भेजना कि क्षत्रिय धर्म  
 विचार कर हमने दो महीना युद्ध बन्द कर प्रतीक्षा की अब  
 या तो लड़ो या महोवा छोड़ दो ।

दोय मास हम छावनि कीनी । छपी धरम कारन चीनी ॥  
 अब चंदेख जुद्ध वर माँखौ । नातर नगर महोवा छँडौ ॥

छं० ॥ २६४ ॥

गुन मंजरि मोहि साखी दासी । घाइल इनै अनाइक तासी ॥  
 पहले जौम लरन कौ कीनी । अब चंदेख कहा बलहीनी ॥

छं० ॥ २६५ ॥

कवित्त ॥ लिषि पची प्रियिराज । जोग परमास सु किजव ॥

छचि धरम धरि सूर । जुद्ध सुरखोकहि दिजव ॥

करै जुद्ध पाधरौ । चंदेखे खेल भेख कुल ॥

नातर घर तजि ठाम । रहौ आधीन सेव तुल ॥

धरियो धीरज धारना । कादरता सब छंडियै ॥

बुलाय कुमक कमधुज्ज की । सिंघ नाद नृप गज्जिये ॥

छं० ॥ २६६ ॥

चौपाइ ॥ छची धरस धरो परिमालह । करी नरेस घग्ग रन घ्यालह ॥

कौ तो ठाम महीबो छंडौ । कौ सब साज लरन कौ मंडौ ॥

छं० ॥ २६७ ॥

पत्र पढ़कर परिमालदेव का आल्हा आदि अपने सब सरदारों  
को बुलाकर परामर्श करना और लड़ाई आरम्भ करने के

लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखता ॥

लिय परिमाल पत्रिका बंचिय । सोच करौ सज्जन दिल घंचिय ॥

अपनी परिगह सकल बुलाइय । संभरि काज कियौ मति ठाइय ॥

छं० ॥ २६८ ॥

नाराच ॥ बुलाय राज अलहयं । करंत मत्त घालयं ॥

बुलाय उह लीनयं । कुमार हो प्रवीनयं ॥

छं० ॥ २६९ ॥

बुलाइ काइयं कली । सुचार बुद्धि है भली ॥

बुलाइ राज सीहयं । अनेक जुद्ध जीवयं ॥

छं० ॥ २७० ॥

बुलाइ भाट लीनयं । नरेस थप्पि कीनयं ॥

बुलाय वस वीरयं । चहेल चीर धीरयं ॥

छं० ॥ २७१ ॥

बुलाय साह सुंदरं । करंत बात अंदरं ॥

गहै रघार रूपयं । सुषग्गगी गजूपयं ॥

छं० ॥ २७२ ॥

तहां समत्त कीनयं । अनेक भर्म लीनयं ॥

पियौर दूत आययं । जुरन जुद्ध ढाययं ॥

छं० ॥ २७३ ॥

सिताव जुद्ध मंडियं । नहों तो ठाम छंडियं ॥

बुले सु आल्ह नूपयं । सुनौ चहेल भूपयं ॥

छं० ॥ २७४ ॥

विषारि लोग आपनौ । अरिं दलं उद्यमनौ ॥  
परमार गोहि गोहिलं । वघेल जोर मोहिलं ॥

छं० ॥ २७५ ॥

कमह त्वार मासिले । वघेल वागरी चले ॥  
जहां सुचन्द पौचियं । भिघोर वैस वीचियं ॥

छं० ॥ २७६ ॥

ससांपुला हड़ावयं । वनाफरं जुकारयं ॥  
गरूर गोहिलोतयं । पवै पनीर होतयं ॥

छं० ॥ २७७ ॥

वरनि बाल नौतयं । चिरंत डोड होतयं ॥  
निपान नंद वानियं । कठोर लोह जानियं ॥

छं० ॥ २७८ ॥

पुँडरी दाहिमां भिले । जमहि सिंघु लैचलै ॥  
पिलंत पारिहारियं । चंदेल सैन भारियं ॥

छं० ॥ २७९ ॥

सवै सयन मिलियं । हज्जोर साठि हलियं ॥  
पँचास दीन पंगुसं । कुमह राज संगयं ॥

छं० ॥ २८० ॥

गयंद तीन सेहलं । जिलं सुपाट जेवलं ॥  
चंदेल दोई रीसयं । दलं असेक दीसयं ॥

छं० ॥ २८१ ॥

करै सँग्राम सुद्वयं । पिथौर सौं विद्वयं ॥  
चंदेल चेत कीनयं । निकसि छेर दीनयं ॥

छं० ॥ २८२ ॥

लिपी पिथौर काजयं । करै रनं समाजयं ॥  
मिलंत लोह दीतयं । दिवस्स दोइ वीतयं ॥

छं० ॥ २८३ ॥

दूहा ॥ लिपी पिथौरा कारनै । सुनि सँभरि के राव ॥  
दीत वार एकादसी । करै जुद्ध को चाव ॥

छं० ॥ २८४ ॥

चौपाई ॥ पचि लिषि कासीद पठायौ । सिर धरि दिल्लीसुर ढिग आयौ ॥  
 सुद्ध चाव चंदेल सु कीनौ । यह परिमाल लिअो करि दीनौ ॥  
 छं० ॥ २८५ ॥

पत्र पढकर पृथ्वीराज को आवेश आना और शुक्रवार नौमी  
 को नगारे पर चोट दे लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना ।

दूहा ॥ लियो वाचि सम्हर धनिय । कियो जुद्ध कौ चाव ॥  
 सानौ रावन ऊपरै । कोप्यौ रघुकुल राव ॥  
 छं० ॥ २८६ ॥

शुक्रवार नौमी निवटि । सम्हर वीर नरिंदु ॥  
 वैरन धरि परिमाल कौ । भयो नगारे नंदु ॥

छं० ॥ २८७ ॥

सेना की तयारी, वीरों के हृदय में युद्ध के उत्साह तथा अप्स-  
 राओं के उल्लास का वर्णन ।

चावर नाराच ॥ कीनौ निसान मह पान विहसि सामंत खरय ॥  
 मरदन कार ए अंग न्हाये पुनि सुठाये पूरिय ॥  
 उत सुनिय अपसर करिय सुहर अंग मंजन कीजय ॥  
 बहु फिरै हरषी बाल सुरषी नैन अंजन दीनय ॥  
 छं० ॥ २८८ ॥

हरषे कपाली पुले ताली रुंड माली पूरिनै ॥  
 चौसठि अंग वधि उछंग पान पच नूरनै ॥  
 पलचरा धावै गीत गावै चित्त आवै मंगल ॥  
 चहुआन चंदेल षेल षेलै मिले मेल उदंगल ॥

छं० ॥ २८९ ॥

चौपाई ॥ सावत खर बळ्यौ जुध चावह । सार समाहि संभरी रावह ॥  
 इते सुघट कब अंगहु लीनौ । सामंत सबै उसाहति दीनौ ॥  
 छं० ॥ २९० ॥

दूहा ॥ खरा कवच बनाय तन । मंगल कीनौ चाव ॥

उतै अपहरा तन सजै । अंजन कीनै भाव ॥

छं० ॥ २६१ ॥

सुजंगी ॥ इतै छर न्हाए करै दान ध्यान । उतै अपहरा अंग मंझौ सुतान ॥  
इतै टोप टंकार कसि सिर उतंग । उतै अपहरा कंचुकी कसि अंग ॥

छं० ॥ २६२ ॥

इतै छर मोजाव नावत भाये । उतै अपहरा नूपर पारिहाये ॥  
इतै छर राग बंधे तापतंग । उतै अपहरा चरन पा पहिरि जंग ॥

छं० ॥ २६३ ॥

इतै पाग पेच समारंत छर । उतै सीस फूल गुं धावत छर ॥  
इतै छरमां पाग पै भिलम डारै । उतै झुंडर रंभ मागै सवारै ॥

छं० ॥ २६४ ॥

इतै छर सरव घरे षण्ण माँजै । उतै अपहरा भाल पै तिलक साजै ॥  
इतै ढाल छर अलौ वच्छ टावै । उतै अपहरा अवन ताटक नावै ॥

छं० ॥ २६५ ॥

इतै छर दसतान हथ्य सु कीये । उतै अपहरा हथ्य मेहदी सुदीये ।  
इतै छर करके हरी नं प लीजै । उतै अपहरा कंकन पान कीनै ॥

छं० ॥ २६६ ॥

इतै छर बरछी लिये है अन्यारी । उतै अपहरा हाथ वर मालधारी ॥  
इतै छर तुलसीनि की मालनाई । उतै अपहरा हाथ मोती बनाई ॥

छं० ॥ २६७ ॥

इतै छर किरवान कम्मान नाई । उतै अपहरा चमकि नैन निचाई ॥  
इतै तंग सामंत घोरन लीय । उतै अपहरा साजि विस्मान कीय ॥

छं० ॥ २६८ ॥

काही कबि चंद निरखी सु सोई । वरनी समान परी छर दोई ॥

छं० ॥ २६९ ॥

उधर परिमालदेव का सेना सजना और नौमी शुक्रवार को  
आगे बढ़कर दो कोस के अन्तर पर डेरा डालना ।

चौपाई ॥ परी छर वरनै कवि दोऊ । उत परिमाल सजै दल सोऊ ॥

होय कोस को बीच जु कोन । दुइ दल आय पयानौ दीन ॥

छं० ॥ ३०० ॥

दूहा ॥ नौमी तिथि सुक्रह दिवस । सजे सकल चढि सूर ॥

होय कोस अंतर करिव । करि सुकाम वल पूर ॥

छं० ॥ ३०१ ॥

परिमालदेव का आल्हा आदि सब अपने सरदारों को इकट्ठा  
करके परामर्श करना कि अथ क्या कर्तव्य है ।

कवित्त ॥ करि मसलति परिमाल । आल्ह जदिल ढिग बुल्लिव ॥

अह काइय कलियान । धरम धर प्रोहित मिलिव ॥

बुल्लिव जगनक भट्ट । बुल्लि लाषन कमधुज्जह ॥

बुल्लिव तालहन तुरक । बुल्लियौ भोपति सल्लह ॥

रानी सुबोलि परदै रषी । देवल ढिग्ग विचारियौ ॥

परिमाल कहै सामंत हौ । तत्त सुमत्त विचारियौ ॥

छं० ॥ ३०२ ॥

चौपाई ॥ बुल्लौ भामासाह सुजान । राजा आल्हा मानु सुमान ॥

दावै कारन ढिग बैठारौ । पाछे लरन भतौ सु विचारौ ॥

छं० ॥ ३०३ ॥

राजा का आल्हा को साथ ले सहल सै रानी के पास जाना  
और परामर्श करना ।

राजा उठि भीतर को आये । धावै ढिगां आल्ह वैठाये ॥

रानी मल्हन ढिगां बुलाये । पाछे चाते मते पुलाये ॥

छं० ॥ ३०४ ॥

तेज पिथौरा को अति कहिये । तासो जुद्ध किही विधि ठह्ये ॥

हारे नगर महोवा छूटै । डंड दिये तै अपजस फूटै ॥

छं० ॥ ३०५ ॥

अथ तू स्वामि सांकरै छंडै । आपन आय फेरि घर मंडै ॥

पवन नीर लौं नरक परई । ताकी साधि व्यास इह धरई ॥

छं० ॥ ३०६ ॥

फिर देवल दे बुलिय वानिय । सुनौ अवन राजा अरु रानिय ॥  
नीकौ होइ सो करो विचार । परिगढ़ वालि मतौ उचार ॥

छं० ॥ ३०७ ॥

आल्हा का कहना कि जो स्वामी को विपत्ति में छोड़ता है  
वह अनन्त काल तक नर्क भोगता है और जो प्राण का मोह  
छोड़ लड़ाई में मरता है वह सूर्यमंडल को भेदता है ।

सुनियो मात आल्ह यों भापिय । रामायन भारथ की सापिय ॥  
स्वामि सांकरै छांडन कहियै । चंद छर तौलो नक सहियै ॥

छं० ॥ ३०८ ॥

खाइ धान परनोन निहारै । अपनौ अंग जूझ सौं टारै ॥  
जासौं जार जाति सो कहियै । असल बीज रजपूत न कहियै ॥

छं० ॥ ३०९ ॥

स्वामी राघै आपन मरै । छत्री धर्म सीस पर धरै ॥  
माया घर की दूरि सुषेदै । वै नर छरज मंडल भेदै ॥

छं० ॥ ३१० ॥

मां का कहना कि मुझको बेटों का मोह नहीं है ।

मोहि आस राजा की भावै । बेटा की कछु दया न आवै ॥  
वे जीवंत सती कहि नारी । पारवती की अस निहारी ॥

छं० ॥ ३११ ॥

आल्हा का कहना कि मैं पृथ्वीराज की फौज को मार गिरा-  
ऊंगा सब सावंतों को जीतूंगा, माता तुम्हारी लज्जा निबाहूंगा ।

बोख्यौ आल्ह सुनौ तुम माता । कलि मांझ राघै अस वाता ॥  
संभरौस की फौजां मारौं । सामंतनि विहंड करि डारौं ॥

छं० ॥ ३१२ ॥

मैं कुल काज चढ़ाऊं पानी । भुव मंडल सब हीनै जानी ॥  
ईदल की रखवारी कीजौ । देवल दे की लज्जा निहिज्यौ ॥

छं० ॥ ३१३ ॥



रानी मल्हन दे का कहना कि दंड दंकर देश की रक्षा करो  
उनके सामंतों की वीरता की बड़ाई बहुत सुनी जाती है ।

मल्हन दे फिरि बोली वानिय । आल्हा सुनौ हमारौ वानिय ॥

राषा देस दंड दे गुनिये । सामंत छर विषम अति सुनिये ॥

छं० ॥ ३१४ ॥

ऊइल का तमक कर कहना कि यह बात घायलों के मारने  
के समय मैंने कही थी तब क्यों न मानी । अब क्या है,  
अब लड़ो । यह निश्चय जानो कि हम दोनों भाई मर लेंगे  
तब राजा का कुछ होगा ।

ऊइल तमकि बैन सुनि कही । पहिलै ऐसी काहि न लही ।

घाइल मारत सैं बरजानै । अब क्यों माता भयौ सयानै ॥

छं० ॥ ३१५ ॥

दूहा ॥ चार वार विनती करी । मानी नहीं लगार ॥

अब क्यों राजा समझियौ । लषि सामंतन भार ॥

छं० ॥ ३१६ ॥

हम्म उभै निरषै नहीं । तुमरी बुरी नरेख ॥

कामि आवतैं छंडिहैं । नगर महीवा देस ॥

छं० ॥ ३१७ ॥

तुम आगे परिमाल नृप । मरिहैं दोनो सज्ज ॥

अवस वरै सुर अच्छरी । राज चंदेल सुकज्ज ॥

छं० ॥ ३१८ ॥

देवलदे का कहना कि होनहार टल नहीं सकती, हे बेटा !

तुमलोग चंदेल का नमक अदा करो ।

होनहार कैसे मिटै । कहि देवल दे सुइ ॥

लौन सीस चंदेल कौ । पूत उजालो दुइ ॥

छं० ॥ ३१९ ॥

राजा, आल्हा, तथा ऊदल का बाहर आना, प्रजा का आकर  
पुकार करना कि शत्रु ने गाँव जलाकर असंख्य धन लूट  
लिया अब दौड़िए देर न कीजिए ।

मसलति करि बाहर कहे । अदिल आल्ह नरेस ॥

उत रैयति पुकारि कौ । चांवड जार्यौ देस ॥

छं० ॥ ३२० ॥

जारि उजारि जु गाँव सव । लूटी निधि अचेत ॥

धरौ लरौ चंदेल तुम । थोरे जोरे छेत ॥

छं० ॥ ३२१ ॥

आल्हा का आवेश में आकर उठना, राजा का रोकना कि  
आज शनिवार है कलह लड़ाई करना ।

उठे आल्ह वरजे नृपति । आजु सनीयर वार ॥

काबिह करै चहुआन सौ । चौरै जूझ विचार ॥

छं० ॥ ३२२ ॥

आल्हा का कहना कि अपने देश को जलते देखना क्षत्रिय  
धर्म नहीं है । इस प्रकार उत्साह के अनेक वाक्य कहकर सब  
वीरों को उत्तंजित करके आल्हा ने प्रतिज्ञा की कि कलह में  
पृथ्वीराज की सेना को उथल पथल कर डालूंगा ।

जा धरती को पाय करि । धूवां जु देखै सोइ ॥

कहे आल्ह परिमाण सौ । छयी धर्म न होय ॥

छं० ॥ ३२३ ॥

पावँद की देखे बुरी । अंग रखावन छर ॥

कहे आल्ह रजपूत कौ । दीजे नरक करूर ॥

छं० ॥ ३२४ ॥

पावँद घर को ताकि कौ । इन्द्रिय रस न काय ॥

कहे आल्ह उन नरन कौ । गहरे नरक पराय ॥

छं० ॥ ३२५ ॥

बिगरी हेरे नृपति की । चाकर कसक न होय ॥  
साठि सहस्र सौ नर्क में । भ्रमत रहै नर सोय ॥

छं० ॥ ३२६ ॥

वैरी सौं छाँसी करे । यार धनी को सुझ ॥  
कहै आल्ह उन नरन को । कीजै स्वान प्रसिद्ध ॥

छं० ॥ ३२७ ॥

बौपाई ॥ एती मैं बानी उचारी । अब लगि यह मैं सबै सम्हारी ।  
बालिह फौज पीयूष की षंडौ । सासंतनि के जुद्ध विहंडौ ।

छं० ॥ ३२८ ॥

डूहा ॥ आल्ह कही सबही सुनत । मन की मन की बात ।  
लहरज मंडल भेदिहैं । ते मनी साक्षात ॥

छं० ॥ ३२९ ॥

राजन आगे पैज करि । कही बनाफर सोय ॥  
प्रात करौं प्रियीराज सौं । जंग विरूद्ध न होय ॥

छं० ॥ ३३० ॥

सब को विदा कर राजा का महल में जाकर रानी से परामर्श  
करना, रानी का कहना कि अब इस समय शयन कीजिए  
सबरे, शत्रुओं का नाश कीजिए ।

सबको यह नृप सीष दे । मेर महल फिरि होय ॥  
रानी सौं मसलति करै । मन धरि चिंता होय ॥

छं० ॥ ३३१ ॥

बौपाई ॥ बाल चहैल सुनौ है रानिय । अबतौ दिवस पाछिलौ मानिय ॥  
आय चळ्यौ चहुआन अपारौ । करता बिन कोऊ न उबारौ ॥

छं० ॥ ३३२ ॥

रानी कहै सुनौ नृप राज । करिये सैन सुणेन समाज ॥  
प्रात जुद्ध करियौ अद्भुतह । मिलियौ आन दुहु दल दूतह ॥

छं० ॥ ३३३ ॥

आल्हा ऊदल अपने महल में गए, और भोजन कर अपनी  
स्त्रियों के साथ भोग विलास में उन्होंने आनन्द से रात बिताई ।

आल्हन गये हवेली आपन । उदिल देवल मिलै सु जातन ॥

भोजन किए इकट्ठे होइ । चौथी उदिल मिलियौ सोइ ॥

छं० ॥ ३३४ ॥

भोजन करिकै पौढ़ौ जाइ । आप आप की चिये बुलाइ ॥

गैर महल हैं कद्रप पुले । अधरा रस अमृत फल फले ॥

छं० ॥ ३३५ ॥

परस परसपर आरस कौनौ । यह विधि जदिल रँग रस भीनौ ॥

अधरनि लागि सुग्रेम बढायौ । पाछे भय चीरा रस ढायौ ॥

छं० ॥ ३३६ ॥

पहर रात रहे स्नान कर गोरक्षनाथ का ध्यान, होम, नवग्रह  
पूजन आदि कर, चौहान का सास्हना करने को घोड़े पर  
सवार हो दोनों भाई का चलना ।

कवित्त ॥ पहरि निसा पाछिलिय । न्हान कौ नीर मँगायौ ॥

करि दांतौन सनान । ध्यान गोरप को ध्यायौ ॥

क्षियव बनाफर होम । नवग्रह पूजा कौनव ॥

हनूपताषां जंच धारि । करि काँठह लीनव ॥

आइयौ तुरिय पहलै पहल । समर समै तापर चढ़य ॥

बहुआन पास लै पहुँचहौ । खरन पर धायन चढ़य ॥

छं० ॥ ३३७ ॥

ऊदल का मां को आकर प्रणाम करना, मां का कहना कि  
जाओ पृथ्वीराज से युद्ध कर स्वामी का काम बनाओ और  
मेरा मुख उज्ज्वल करो ।

जदिल वीर बुलाय । बोलि ईदल सुत लीनौ ॥

देवी आगे आय । चाप प्रणाम सु किनौ ॥

पीथौरा ऊपरौ । पैज करिकै चढ़ि जावहु ॥

सांमंतनि साँकरै । स्वामि छट मारि दहायहु ॥  
 उज्जल जस जस राज कौ । देवल दे उज्जल करहु ॥  
 परचंड बात परिमाल करि । सीस ईस रुंडह धरहु ॥

छं० ॥ ३३८ ॥

उदल का कहना कि मैं सब सामंतों से खड्ग के साथ खेलूँगा  
 और पृथ्वीराज को भगाऊँगा ।

बौपाई ॥ इह सुनि जहिल वचन उचारिव । भाई तुम नीकी जु विचारिव ॥  
 सांमंतनि सौं बगान खेलहुं । प्रिथीराज के अटुनि पेलहुं ॥

छं० ॥ ३३९ ॥

देवल दे का दोनों बेटों से कहना कि आज नमक अदा करो  
 स्वामी के काम में सिर देकर स्वर्ग का राज्य करो ।

देवल कहै सुनौं पुत होइय । नोन हलाख करौ तुम सोइय ॥  
 पावँद आगैं सीस जुहीजै । निरभै राज सुरग कौ लीजै ॥

छं० ॥ ३४० ॥

उदल की स्त्री का कहना कि जो स्त्री पति का मरना सुन  
 कर सती नहीं होती वह नर्क में पड़ती है ।

ठकुरानी जहिल की बोलिय । सुनियहु सास वचन यह बोलिय ॥  
 निहचै बेट नरक तेहि भाषे । पिय कौ मरत चिया तन राषै ॥

छं० ॥ ३४१ ॥

दूहा ॥ पीयहिं मरत चीया रहै । करै पुत्र की आस ॥  
 वह नारी निहचै करै । घोर नरक में बास ॥

छं० ॥ ३४२ ॥

पियन छोड़ जा ना मरै । नारी सती न होय ॥  
 अगत जाय भटकात फिरै । कही गोरजा सोय ॥

छं० ॥ ३४३ ॥

राजा का सबेरे उठकर नगारे पर चोट दिलाना और अल्हा  
को बुलाना ।

चौपाई ॥ राजा जागि नकरो कीनौ । आल्हा काजै आइस दीनौ ॥

सिंघ नाद वाजी सहनाई । वनौ पष्परै हेमर ठाई ॥

छं० ॥ ३४४ ॥

आल्हा ऊदल को बुलाकर नागौर की ओर बढ़ने की तैयारी  
करना । तैयारी का वर्णन ।

पद्मरी ॥ बुल्लाय आल्ह ऊदिल राज । कीनौ नगोरा चहु वस्म साज ॥

साजियौ साज अन्नैक जोध । सामंत छूर करि करिव क्रोध ॥

छं० ॥ ३४५ ॥

बुल्लाय आल्ह नृप अग लीन । विलहन्न राज वाटन्न कीन ॥

अरि दिष्ट दीन आल्हन्न काज । मानिक दीन पन्नान साज ॥

छं० ॥ ३४६ ॥

दलठेल तुरिय आरव्व उच्च । समपियौ राज उदिल समुच्च ॥

छारिदं काज हरि वाज दीन । पंधार वंस उपज्यौ नवीन ॥

छं० ॥ ३४७ ॥

गोयंद काज दिय मृगराज । पर काज देस टट्टी समाज ॥

वो दला दीन नव लेस सोय । उपजियौ कच्छ वर सुभट लोय ॥

छं० ॥ ३४८ ॥

इंजि पास दीन भोपत्ति काज । कलिंदी जंच नृप लियौ वाज ॥

तारैन काज दिये तेज रूप । ऐराकि जात लियो नय नूप ॥

छं० ॥ ३४९ ॥

जगनक काज हय मोर दीन । दस ठेलि तुरी सुष अग्न कीन ॥

वासे सु तुरिय ग्यारह हजार । दीनै सुवाट करि अरि विचार ॥

छं० ॥ ३५० ॥

हजार साठि परिमाल सैन । सजियौ सार चंदेल तैन ॥

पचास सहस पंगुर सुदीन । चंदेल काज परनाम कीन ॥

छं० ॥ ३५१ ॥

पचास पांच धरि पील अग्न । गाजंत मह चालै सुरग्न ॥  
बैठियौ वीर हय आल्हा सोय । परिमाल राज कचर्यो लोय ॥  
छं० ॥ ३५२ ॥

पंचसी पील चढि, जसरथ्य नंद । चापू चलाइ जुर करह, दुंद ॥  
उच्चरै बलाफर सुनि चंदेल । हेमर चलाय दल करौ ठेल ।  
छं० ॥ ३५३ ॥

परिहार उच्च सब सुनिव राज । असुर सु आल्हा चर रहिव बाज ॥  
बैठंत पील पच सबद पूर । परिहि भीरतौ सीस सूर ॥  
छं० ॥ ३५४ ॥

यह सुनिय वीर चहुआन रान । बजाय वन सामुह चलान ॥  
पष अग्न कन्ह पुंडीर चंद । बिहसियौ वीर सुनि कान सुह ॥  
छं० ॥ ३५५ ॥

दिष्पी सुफौज चंदेल राव । कापंत देह डग मगत पांव ॥  
द्रग मूदि कांपि आल्हा बुलाय । कालिंज मेल सुख मोहि लाय ॥  
छं० ॥ ३५६ ॥

दिज्जिय सुदंड प्रियिराज काज । छंडहि सुराज सम्हर समाज ॥  
दिज्जिय सुताह अधदेस बांठि । चहुआन सँग संगरन मंडि ॥  
छं० ॥ ३५७ ॥

परिमाल देव का डर से काँपते हुए आल्हा से कहना कि जो  
पृथ्वीराज को जीतकर मुझे कालिंजर पहुँचाओगे तो मैं आधा  
राज्य, पचास लाख रुपया और अपनी कन्या तुम्हें दूँगा ।

चौपाई ॥ काँपि कछ्यौ परिमाल नरेसह । आल्हा आधा दीजै देसह ॥  
लाष पचास द्रव्य अरु कन्या । दै चहुआन मिलाइसु मन्या ॥  
छं० ॥ ३५८ ॥

दूहा ॥ देषि कान्ह परिमाल नृप । वचन कहै अति अंध ॥  
मोहि कलिंजर मेलिये । दै धर अड्ड सवंध ॥  
छं० ॥ ३५९ ॥

### चन्देल की सेना का आगे बढ़ना ।

सहला भोपति संग है । दल सौं कटिब चंदेल ॥

पिली फौज चंदेल की । भिल्ली बनाफर षेल ॥

छं० ॥ ३६० ॥

चन्देल की सेना आते देखकर पृथ्वीराज का व्यूह रचना  
और लड़ाई के लिये सेना सजना । उधर आल्हा और ब्रम्हा-  
नन्द का अपनी सेना को सजना ।

मेतोदाम ॥ दिषि राजन फौज चंदेल पिली । दरियाव समान अमान हली ॥

इका लष्प विलोकिय सैन घनी । चहुआन बनाइय चारि अनी ॥

छं० ॥ ३६१ ॥

सुष अग सु कन् अमान कियौ । भर चंद सहीसुर संग दियौ ॥

कमधज्ज सु निड्ढुर लापन ये । अंग संजमराय सुभाषन ये ॥

छं० ॥ ३६२ ॥

कनक बडगुजर सारंग ये । जह आल्ह कुआर से तारंग ये ॥

अचलेस नवल्ल हरीसिंघ ये । जह जादौ राम रिषी रिष ये ॥

जं० ॥ ३६३ ॥

इतनै सिरदार अगै धरिये । फिरि दाहनि बाजुवकौ भरिये ॥

कछवाह पजून रू पाल्ह नय । नरसिंघ पहारसुत वरय ॥

छं० ॥ ३६४ ॥

तह धावर धीर समो वरियं । विभुराज समाज समो धरयं ॥

पम्मार सलष्प सुयं वरयं । हनवत समान हठी वरयं ॥

छं० ॥ ३६५ ॥

तह घीचिय देव रजैत पिले । संग हाहुलि राउ हमीर चले ॥

दिसि दाहन सामंत ए करियं । दिसि बांडप भौह चंदेल कियं ॥

छं० ॥ ३६६ ॥

अचलेस मलेसिय संग दियं । दसि दच्छिन सांवत भूमि रयं ॥

दोय वीर हमीर गंभीर नर । अति ताइय संभरि इस वर ॥

छं० ॥ ३६७ ॥



तहँ माल चंदेलय पूरनयं । तहँ वाम दिसा मुख नूर नयं ॥

सइ साँमल साँधुल संग दियं । इतने सिरदार सुधाम कियं ॥

छं० ॥ ३६८ ॥

कयसास कमध्वज विक्रमयं । तहँ टाक सु चाड, सु विक्रमयं ॥

जहाँ गोड सपत्तिय मोर दयं । तहँ षेत षगार सुचार भयं ॥

छं० ॥ ३६९ ॥

कयसासु रू सम्हरि मध्य हुव । चतुरंगिय सेन दिठालि दुव ॥

हलकारिय सैन नरेसु रयं । भर चाँव ड राय बली धरयं ॥

छं० ॥ ३७० ॥

उत आल्हन फौज सु दोय कियं । हलकारि बनाफर लोह लियं ॥

कमधज्ज सुलापन अंग कियं । चहुआन सुमंगल संग दियं ॥

छं० ॥ ३७१ ॥

तहँ रूप मी कूँवर वांस सियं । सिक्रवाल सेाँ कूँवर पाल हियं ।

तहँ चाल,क सारंग वीर वरं । जहँ जादव रैनिसि सीस धरं ॥

छं० ॥ ३७२ ॥

वर तालहन वेग हरोल कियं । हय बीस हजार सु संग दियं ॥

बिचि तीन हजार की गोल रची । सिरदार सुलष्यन मध्य सची ॥

छं० ॥ ३७३ ॥

तिन पूछि सु आल्ह बनाफरयं । जिन अगुसु जुझ लिये भरियं ॥

दिसि बाँइय मोहन दास कियं । सिर कासी लुड प्रताप लियं ॥

छं० ॥ ३७४ ॥

अरि सिंघ सु संग समाज वरं । पंमार सुसाजि चल्थो अमरं ॥

तहँ सैगर राय अमान भये । जहँ वांस दिसा भरनैन लिये ॥

छं० ॥ ३७५ ॥

दिसि दाहनि वीरम वीर पुरं । द्वातयं दलकाइ पतेज नरं ॥

भरनं अति तोवर लोहनयं । परिमाल सबै दल सोहनियं ॥

छं० ॥ ३७६ ॥

महकुन सु वागरि धारि हियं । इतने भर दाहनि फौज कियं ॥

बड़ गुजर देव करन मिले । दस दौड़ हजार चंदेल चले ॥

छं० ॥ ३७७ ॥

चीपाई ॥ ब्रह्मानन्द आल्ह विचि सार । आगै उदिल दंध सुधार ॥  
वांय दिसा कौ मोहन कौनौ । दसन पूरनमल सु दीनौ ॥

छं० ॥ ३७८ ॥

पंग हजार पचास चले पिलि । और पचास चंदेलन के मिलि ॥  
चारि फौज आल्हन सजि सार । प्रिथीराज के वीस हजार ॥

छं० ॥ ३७९ ॥

परिमाल देव का पृथ्वीराज की सेना देखकर डरकर दस हजार  
सेना ले कालिञ्जर की ओर भाग जाना ।

दूहा ॥ देपि फौज परिमाल जू । कांपि चल्थौ तजि पान ॥  
दस हजारह संग लै । तज्यो महोवौ थान ॥

छं० ॥ ३८० ॥

कुँवर ब्रह्मानन्द का लड़ाई के लिये आगे बढ़ना ।

ब्रह्मादिति फिर आइयो । सिर छची धूम धारि ॥  
प्रिथीराज सों पा धरै । वज्रावन तरवारि ॥

छं० ॥ ३८१ ॥

युद्ध आरम्भ होना । कन्ह चौहान का घोर युद्ध करना ।

भुजंगी ॥ दुहौं सेन मिले दुहौं वाग लीनी । दुहौं धारि धूम वर द्रष्ट कीनी ॥  
दुहौं सांगि कही दुहौं कोरवट्टी । दुहौं वार बानी सबहं उचट्टी ॥

छं० ॥ ३८२ ॥

वज्रै भेरि नीसान जंगी तवल । वज्रै नाद तुरही नफेरी सुबुल्ल ॥  
दुहौं नाद कीनै सुर संप भारी । दुहौं नाम छकै सुर्खा छां उचारी ॥

छं० ॥ ३८३ ॥

कहै चंद कबी सुनौ चाहुआन । चलायो गरट बांधि बाँध सुजान ॥  
सुषं पाठ जंपै सु रूस भवानी । मिलाये वली बाहु धावै जुवानी ॥

छं० ॥ ३८४ ॥

अंगे कीन चंदेल सेना सुदृष्टी । रहै मुटि असवार भर भार सृष्टी ॥  
चलायो सुषं कन्ह पट्टी उठाई । किधौं रावनै राम भौहै रुठाई ॥

छं० ॥ ३८५ ॥

अगे आय हाथीन पै हथ्य वाहै । वरं दंत ताने उठान अमाहै ॥  
उपारंत दंत वजा वाहु जोर । गहैं पूछ सुंड वजावै अमौर ॥  
छं० ॥ ३८६ ॥

कहूं जे खुसुंडनि पै तेग तावै । कहूं कोपि करि तस्सि धरनी मिलावै ॥  
कहूं भाव सहै कहूं जाय मारै । कहूं धीक बक्कै कहूं कौ प्रचारै ॥  
छं० ॥ ३८७ ॥

चहुआन बल सौं कियौ पील कानी । सुंषं संच बोलंत संकर भवानी ॥  
हकां हांक बकां दहै सैन सोई । वजावै वरं लोह निरमोह होई ॥  
छं० ॥ ३८८ ॥

करै षंड षंड घटै घाउ धारै । विकट वली बाहु पट्ट निहारै ॥  
चलावत तीरं गहीरं गुमानी । पनकत धरनी भनकै सु बानी ॥  
छं० ॥ ३८९ ॥

उरं सेल लण्गौ परं पार होई । गिरै नटु वासे कला चूक होई ॥  
बहै कंध किरवान बंधं पलावै । परै मुंड धरती सुखंड नचावै ॥  
छं० ॥ ३९० ॥

गुरजै वहै लीस रीस रमानी । सिरं होत चूतं विषूतं जवानी ॥  
वहै सुंदरंग सार धारत छत्ती । परै पील ममवार धरनी विरत्ती ॥  
छं० ॥ ३९१ ॥

करै बार हांक कटारी कलरं । करै मार माती परै चक्र चूरं ॥  
इसी भांति जुझ कियौ कन्ह भारी । मिथ्यो ध्यान मानं पुली रुद्र तारी ॥  
छं० ॥ ३९२ ॥

कन्ह का अपनी वीरता से सेना में हलचल मचा देना । युद्ध  
का वर्णन ।

टूटा ॥ कन्ह कटक कीन्है कहर । छटक परी दल मांहि ।  
भटक वीर भागे बली । कोउ पलट्टै नांहि ॥

छं० ॥ ३९३ ॥

रसावला ॥ कन्ह कोण्यै तबै । कौन जुझ जवै ॥

धाय लूधो वली । सर्व फौजें हली ॥

छं० ॥ ३८४ ॥

चाय पायं गह्वै । ठारि धरनी सहै ॥  
काय वज्रं कियं । पाय सैना लियं ॥

छं० ॥ ३८५ ॥

गाय रामं दुषं । धाय हट्टे सुषं ॥  
वीर नादं जचै । चाय क्षीयं सकै ॥

छं० ॥ ३८६ ॥

छाय सुरगा रछौ । धाय हंसं नछौ ॥  
धाय बालै घटं । ठाय पन्नं पटं ॥

छं० ॥ ३८७ ॥

ठाय रावै नरं । वाय वाहै वरं ॥  
छाय नापै दलं । ताय तेगं कलं ॥

छं० ॥ ३८८ ॥

धाय वीरं वली । दाप दीयं दुली ॥  
धाय पारे धरं । नाय वध्यं वरं ॥

छं० ॥ ३८९ ॥

पाप टूटै फहं । फाय बेलं फहं ॥  
धाय वज्रै वरं । भाय दोरै वरं ॥

छं० ४०० ॥

पाय नारी मलं । ज्वाप ज्वानं जलं ॥  
सैन कं पै सबै । कन्ह देषे जवै ॥

छं० ॥ ४०१ ॥

पाय लीने षगं । हंस लागे मगं ॥  
सैन कं पै सबै । कन्ह देषे जवै ॥

छं० ॥ ४०२ ॥

दूहा ॥ कान्ह पानि देख्यो जवै । भग्यो सेन चंदेल ॥

हनि हाथी हल कान के । सुरिसोहरा रन ठेल ॥

छं० ॥ ४०३ ॥

अपनी सेना को कटते देख कर आल्हा का अपनी ओर के  
सरदारों का इकट्ठा करके ललकारना ।

कवित्त ॥ देषि पराक्रम आल्ह । मझ लाघन सी बुल्लिव ॥  
ता लनि बेग पठान । रूप येती षग पुल्लिव ॥  
सोल पी केहरी । बैस कल्लान वीर वर ॥  
बोइय तीवर बेहलि । खर सैगर गुमान धर ॥  
धुर धवल सीस धारवि धरनि । मुत्ति आस संगर करिय ॥  
सब खर वीर एकत्त हुव । धारा तीरथ आदरिय ॥  
छं० ॥ ४०४ ॥

दूहा ॥ आल्हनि जदलि जायकै । सँभाल्यो सब सैन ॥  
सकल खरमा टेरिकै । रन मन आन्यौ हैन ॥  
छं० ॥ ४०५ ॥

पहरी ॥ धावत आल्ह सम्हारि सैन । सिरदार चारि वर कछौ तैन ॥  
गोयंटु राउ हरियंटु सोय । येकल चलाय दल लप्प लोय ।  
छं० ॥ ४०६ ॥

सैरीय रूप सैगर अमान । जादवा दंद बल लछौ पान ॥  
मंगल चुहान तोवर समथ्य । लालक केस रन समर पथ्य ॥  
छं० ॥ ४०७ ॥

बड़गुजर रन महाबाहु । सुकल बैस बड़ समर चाह ॥  
नर हरिय गौड़ कायथ कलखान । सैगर वरेह जे जल्ह जवान ॥  
छं० ॥ ४०८ ॥

बघेल और पुरन अमीर । वग्गा सघग्गा परमा सनीर ॥  
लोधी सु धीर वर धरे धम्म । ईदल सुसोम वंसी सु कम्म ॥  
छं० ॥ ४०९ ॥

गोतम जुझार पलहन पमार । गोकुल सु बघेला व्यरचि सार ॥  
भगवान खर चंदेल चित्त । डोंगरसि देव दौवान रत्त ॥  
छं० ॥ ४१० ॥

जगनक भट्ट जलहन जवान । ईसर सुवान यौ रोर पान ॥

कायथ्य कौसना क्रम चंद । मकरंद और श्रीवास द्वंद ॥

छं० ॥ ४११ ॥

परही सुदेव कृत दुरित जेअर । गोवा कृपाल जूझन अमेअर ॥

वछ गोत जुद्ध जुत तेग बाह । अठ भौ पाहनि मत राय गाह ॥

छं० ॥ ४१२ ॥

भिद्यौ सु भूपनि रनय स्वर । कछवाहा रामां लिये तूर ॥

गरुहीर वेग आजानबाह । सुर कौ वसंत नित समर चाह ॥

छं० ॥ ४१३ ॥

अनुवृद्ध सिंघ सैंगर भुवाल । विरसिंघ कट्ट है आल्ह काल ॥

जटवार जाट कसनेत पुर । धवरा सु, राय धुरवंस स्वर ॥

छं० ॥ ४१४ ॥

हेते सु, इकट्टे भये जाध । सामंत स्वर पर करह क्रोध ॥

परिमाल सख्य समरख्य देपि । सामंत स्वर सब नयन पेपि ॥

छं० ॥ ४१५ ॥

कौसास चंद पुंडीर जाय । निहुरह जैत पञ्जून हीय ॥

हाहुली राय हस्मीर वीर । सुलप पम्मार सज्ज्यौ गहीर ॥

छं० ॥ ४१६ ॥

रावत राम तौवर पहार । संजम्स राय रन विषम सार ॥

हैं अतिताय चहुआन वंक । नरनाह कन्ह अग्गे निसंक ॥

छं० ॥ ४१७ ॥

चावंड राय उप्पर अमान । उप्पर करन सौना सुजान ॥

निहुरह राय चहुआन संग । लप्पन कमह दल दयो पंग ॥

छं० ॥ ४१८ ॥

परिमाल संग लप्पन सु धाय । प्रिथिराज सैन निहुर सहाय ॥

भाई सु, देाय वगमेल कीन । गह चरन छक्कि किरवान लीन ॥

छं० ॥ ४१९ ॥

जयचन्द के भतीजे लाखनसी का घोर युद्ध करना । लाखन  
सी की बीरता का वर्णन ।

दूहा ॥ लाखनसी परिमाल जू । निडुर डर चहुआन ॥

दुप सामंत सु आहरे । कमधुज सैन सुजान ॥

छं० ॥ ४२० ॥

चौपाई ॥ लावन जै चंद बंधव नंदन । निडुर राय भतीजा द्वंदन ॥

दोज बीर बाहुरे जंगह । दल चंदेल सभारी अंगह ॥

छं० ॥ ४२१ ॥

मेातीदाम ॥ मँडि निडुर लावन सीह नर । चहुआन चंदेल सु निरषि भर ।

कमधुज सौ दोउय वार अरे । बह, लाज जंजीरन सौं जकरै ॥

छं० ॥ ४२२ ॥

हलकार कियं बल धारि बप । निरषै चहुआन चंदेल अप ।

बर जंचिय मंचिय लाग उर । वपु फुट्य बीर वार परं ॥

छं० ॥ ४२३ ॥

लगि तीर सनाह न पार रुष । मछरी वर जार लै काढि सुष ॥

लगि सैन दुहैं बप पेलि कियं । निकसै फन पंग वार वियं ॥

छं० ॥ ४२४ ॥

किरवान लगै बलवान हथ । चबूज मनो हरकंत जथ ॥

जमदाढ़ लगै करि गाढ़ सह । दुसहौ कर काढि अटारि बह ॥

छं० ॥ ४२५ ॥

इक सथ्य लरै बल वाथ वली । तहं ओनितकी सलिता जु चली ॥

गहि दंत सुमंत उषारि लियं । कटि पीलनि डील प्रहार कियं ॥

छं० ॥ ४२६ ॥

उचकाय कौ पृछ बली धुरयं । हनवंत सुद्रोनगिरी गहियं ॥

हय के गहि पाय पटक धरं । उड़ि हंस चले मिलिकै अग्रं ॥

छं० ॥ ४२७ ॥

गहकै कर दीय उपाटि लियं । अरि सेन समूह सबै दहियं ॥

उडरेनु अकोस अपार छयं । नहि लुभत अछन भास अयं ॥

छं० ॥ ४२८ ॥

यह भाति लरै कमधुज बली । चहुआन चंदेल की फौज हली ॥

अप अप विगारि कौ रोस रुधं । विफरै वर बग्घ सु दोइ जुधं ॥

छं० ॥ ४२६ ॥

दूहा ॥ लापन निहु,र राय दुहुं । कमधुज सुदोव जवान ॥

आहरिण संमर सकल । अंमर सौस समान ॥

छं० ॥ ४३० ॥

कवित्त ॥ निहु,र राय कमधज । वंधु जयचंद सुतन कहु ॥

लापन सी राठौर । अनुज पंगान मान सहु ॥

चाहुआन चंदेल । मिले दल मेल पेल सजि ॥

भाई भाई विरंचि । वीर निस्सान पान गजि ॥

पिप्पंत अनिय दोई धनिय । लपि लेय चढ़ा परिये प्रगट ॥

परिमाल और प्रियिराज ढिल । स्वासि काम सौपंत घटि ॥

छं० ॥ ४३१ ॥

लापन सी उप्परै । भरि तालनसी आयव ॥

मेरिय रूप जुधीर । दंद जादव चलायव ॥

संगलसी चहुआन । तवर उध्यान नाह नर ॥

कुंवर पाल सिकवार । दोत चालुक केसो भर ॥

बड़ गुजर सौनिग सरस । सैगर राय अमान सजि ॥

लापन हमीर यते भिरन । आय पंगु कुमक सजि ॥

छं० ॥ ४३२ ॥

निहु,र राय सहाय । चले सामंत मत्त धरि ॥

कल् जयत कौमास । लप नरसिंह वंच करि ॥

पालन धौं पज्जौन । वीर तौवर पहार वर ॥

पिले पते सामंत । हृथ्य साम हजार कर ॥

दुहु सैन ऐन दिपियव । नयन धाय षग्गे सुहय ॥

चहुआन वीर चंदेल ढिल । प्रथम लोहि लीनौ सुमय ॥

छं० ॥ ४३३ ॥

प्रहरी ॥ विरचियौ लोह लापन सुधाय । तासीय कोपि निहु,र सहाय ॥

बज्ज बजावहु गल गरजि नाग । सज्जियौ सैन उत्तंग बाग ॥

छं० ॥ ४३४ ॥



हलकारि शिष्ट किलकारि दीय । हनुवंत सकति पढि उकति सोय ॥  
लप्पन जरह बजरंग वीर । निहुर अराधि सकती गहीर ॥

छं ॥ ४३५ ॥

हंकारि सह बल करत हांक । तिहु लोक मझि चलि बढिय धांक ॥  
बिध फुरै वीर वानैति वाहि । मंगल तुरंग सब दिये ढाहि ॥

छं० ॥ ४३६ ॥

पारंत दंत मारंत पील । धारंत तेग अति तेग डील ॥  
गहि सुंड सुंड फेरंत पाइ । गहि लोमछ हाथिनि गाहि ॥

छं० ॥ ४३७ ॥

हंसर उठाय पटकेत भूमि । अस्वार देह होय फांक आंसि ।  
वाहत वान बलवान एक । टूटंत अंग फटंत फेक ॥

छं० ॥ ४३८ ॥

छूटैत बँदूकै सलक कह । धरनी पताल पर पूर सह ॥  
करि खेल खेल बगमेल देाय । निकरंत पार वर नाग लाय ॥

छं० ॥ ४३९ ॥

दुहुं तेग वेग लगि कंध झुंड । कहेरत पिंड धर परत सुंड ॥  
लागत कटारि तन हीक वार । जची अटारि जनु पुले द्वार ॥

छं० ॥ ४४० ॥

रज्जिक बसन्न पीटंत कोपि । फल करत नाग भीजंत रोपि ॥  
वादंत मुष्टिका रूष्टि भाल । निकरंत आंच द्वै श्रीन लाल ॥

छं० ॥ ४४१ ॥

जादवां दंद मोरी सरूप । मंगल चहुआन मडि मंगल रूप ॥  
बोइथ तौंवर भर हथ्य वाहि । कूंवर सुधाय जादौं सहाय ॥

छं० ॥ ४४२ ॥

सौनिष्ण राव सेरं सु लाज । तालन पठान सजि समर काज ॥  
हज्जार संग पचास भीर । लापन सुवीर सजि वंग भीर ॥

छं० ॥ ४४३ ॥

बाहत तेग बिकरंत आप । इक सथ्य होय दौरे उताप ॥

इहलौ कियौ निहू, रस चौज । पञ्चान सखल जयचंद फौज ॥

छं० ॥ ४४४ ॥

धावंत तेग बाहंत रुक । लपटंत लाय उटंत जक ॥  
इहलौ लख्यौ निहू नरेस । दौर्यौ सुकन्ह कौमास तेस ॥

छं० ॥ ४४५ ॥

पञ्जून सखय मिलि जैत जैर । नरसिंघ सिंघ चलियौ अमेर ॥  
कौने सु चले सामंत चौज । रुहियौ आय बिचि पंग फौज ॥

छं० ॥ ४४६ ॥

पुलिये सु अप्पि पट्टी सु कन्ह । उठंत रोस भए लाल वन्ह ॥  
सांमह पिययो तालन्ह वेग । आयौ सुकन्ह पर कट्टि तेग ॥

छं० ॥ ४४७ ॥

कौनौ सह मंगल गरजि चाय । दीनी सुकन्ह को कंध आय ॥  
घूमियौ कन्ह किरवान चोट । गैछै सु कन्ह हनि कुंत चोट ॥

छं० ॥ ४४८ ॥

फुव्यो पट्टानह भर समेति । सेदौ सुधत्त तरवारि धेत ॥  
फिरि दई आय कयमास तैर । सिर पर्यो टूटि उठियौ सु घोर ॥

छं० ॥ ४४९ ॥

हनियौ पठान सैनिय देपि । चलियौ सु साजि सैंगर सु पेपि ॥  
आयौ पजौन सैंगर सु अग्न । लागियौ कुंत छत्ती सुलग्न ॥

छं० ॥ ४५० ॥

पञ्जौन दई किरवान धाय । दीनौ समेत संगर वपाय ॥  
दिपिये रूप मोरी पजौन । आइयौ सत्त सामंत तौन ॥

छं० ॥ ४५१ ॥

मोरियौ रूप मंगल चुहान । जादुवां दंद चंदेल मान ॥  
मालून सुकेसव समर सोय । अठभैया अत्ति उम्यडि होय ॥

छं० ॥ ४५२ ॥

नारैन नर वंदनि चाहि वीर । पञ्जौन सीस साजिय गंभीर ॥  
मचकंत धरा चलकंत सेस । कसकंत फरक चंदेल देस ॥

छं० ॥ ४५३ ॥

वाज्जंत वज्र कर सवर सात । मनु करत अंत परवत निपात ॥  
पज्जौन कोपि लिय तेग हथ्य । मारियौ राय सैंगर समथ्य ॥  
छं० ॥ ४५४ ॥

फूक्यौ सुदेह क्यो तुरंग । धर भई लोल रत्ती सुरंग ॥  
जादवा दंद चंदेल मानि । पकर्यौ मथ्य पज्जून पान ॥  
छं० ॥ ४५५ ॥

हेमर सखेति धर परिय राय । फेरिय सुसीस कर मसकि ताय ॥  
भजि सुसथ्य किय समर छाड़ि । उभ्रै पजौन रन माहि टाड़ि ।  
छं० ॥ ४५६ ॥

### जैयचन्द की सेना का भागना ।

कवित्त ॥ हनि तालहन पठान । कन्ह काढ़े सुगान रन ॥  
सैनह संगर रूप । मानि चंदेल परे तन ॥  
मालहन केसव दास । पासि परिगह सम सुम्भव ॥  
करवाहै क्लरम्भ । जोर जम लोकह जुत्तव ॥  
बारह हजार रजपूत कटि । हाथी पंच जु देस दल ॥  
जयचंद सेनि सुरि करि चलिय । परिय फौज सामंत हल ॥  
छं० ॥ ४५७ ॥

दूहा ॥ हाथी पंच तुरंग सथ । अर रजपूत पचास ॥  
भइ पजून सौं मोरछा । इते परे संग पास ॥ छं० ॥ ४५८ ॥  
अपनी सेना को भागती देख लाखन सी का ललकारना ।  
सेना का फिर लौटकर लड़ने के लिये डँट जाना ॥

भगिय फौज लष्पन लघिय । तालहन आण कामि ॥  
हांक मारि जयचंद दल । बल करिकै फिरि आनि ॥  
छं० ॥ ४५९ ॥

चौपाई ॥ तालहन परे पठान सु जंगह । पंच परे सिरदार उमंगह ॥  
बारह सहस्र जंग रन लूते । हाथी तीस मतंगह लूते ॥  
छं० ॥ ४६० ॥  
सुरछे राय पजून सु सोई । हाथी पंच महामद होई ॥

सगत परे पञ्चास जवानह । जपर रन कौनौ चहुवानह ॥  
छं० ॥ ४६१ ॥

भाजी फौज पंग की सोई । सो लापन देपौ दग दोई ॥  
वानी कही रत्न करिनैना । फिरि यौ आव पंग की सेना ॥  
छं० ॥ ४६२ ॥

दूहा । वानी सुनि सैना फिरी । लापन कही निराट ॥  
घेरयौ निह्दुर आय के । फिरे लासुहैं याट ॥ छं० ॥ ४६३ ॥

युद्ध का वर्णन । लाखन सी का मारा जाना । जयचन्द की  
सेना का भागना ॥

मोतीदास ॥ सुनी दल लप्पन वानी सोय । किये अग पील चले रिस होय ॥  
पिलै उंग पील चले सरदार । पर्यौ सिर निह्दुर ऊपर भार ॥  
छं० ॥ ४६४ ॥

हजार छतीस सजे रन सुझ । जुरे सब आय रूपे कमधज्ज ॥  
कठेरिय बाबुअ जोर जवान । विरचियौ गौतम श्रीभगवान ॥  
छं० ॥ ४६५ ॥

जुरे दल पत्तिय वैस मरह । जुरे अठ भाया हुते नरवझ ॥  
नरायनदास वियो वधु लार । मुकंद सी कायथ क्षित्तिय सार ॥  
छं० ॥ ४६६ ॥

लपे नरनाह सु कन्ह दुवाह । चले कयमास विय संचाह ॥  
पिले भर चंद पुंडीर सु सोइ । महाभर निह्दुर कौं रन जोइ ॥  
छं० ॥ ४६७ ॥

उतै रुच लप्पन नामिय सुझ । इतै रुपि निह्दुराय सो जुझ ॥  
वहै किरवान जु वानिन हथ्य । कियौ रन ऊपर जै जै पथ्य ॥  
छं० ॥ ४६८ ॥

भभक्किय सैन सु छुटित तोप । करक्किय जंचिय खूरन लोप ॥  
भरक्कय वाननि पंजर छेदि । करक्कय सेल दुहो डर भेदि ॥  
छं० ॥ ४६९ ॥

लगै वलि संगि सु पील गिरंत । सनस्सुष खूर उपारह दंत ॥  
वहै अक्वार सुपारहि मार । करे किलकार सु जुगिन लार ॥  
छं० ॥ ४७० ॥

वहै किरवान परै सिर स्हर । करै वपु होस दुहो दल पूर ॥  
मिल्यौ षण निढुदुर लष्यन आय । निरष्यहि नूर वियौ रस पाय ॥  
छं० ॥ ४७१ ॥

गही किरवान सुलष्य नरेस । दई किरवान मुकटिय केस ॥  
लगी किरवान पगी बल मार । बल्यौ भर स्हर कल्यौ सत वार ॥  
छं० ॥ ४७२ ॥

गही कर निढुदुर वीर गुरज्ज । दई वर लष्यन सीस मुरज्ज ॥  
इजारक टूक भये सिर सोय । परयो धर लष्यन लष्यन लोय ॥  
छं० ॥ ४७३ ॥

भयो धर मूर्छित निढुदुरराय । गिरै धर लष्यन अंत सुपाय ॥  
गही किरवान सु कन्ह नै कोपि । चले कयसास रुचंद सुजोपि ॥  
छं० ॥ ४७४ ॥

उतै सनमुष्य सु बाबुव साजि । भये भगवान हरौल सु गाज ॥  
जुरे दलपति लिये किरवान । चले नरबद्ध नरायन तान ॥  
छं० ॥ ४७५ ॥

मुकंदसि कायथ अग्न सु होय । हुतौ कासीदल पंग कौ सोय ॥  
मि यौ वर कन्ह पुंडीर सु चंद । कठेरिया बाबूअ रोकियौ दंद ॥  
छं० ॥ ४७६ ॥

इतै भगवानिय गोतम गाजि । नरबद्ध और नरायन साजि ॥  
लई कर संगि सु कन्ह नै कोपि । दई भगवान के सीस पै रोपि ॥  
छं० ॥ ४७७ ॥

भइ सिर पार परयो धर मध्य । इतै चलि आइयौ बाबूअ रधि ॥  
नरायनदास नरबद्ध कोपि । मिले तिहि आनि कौ कन्हर जोपि ॥  
छं० ॥ ४७८ ॥

मुद्गर कन्ह पै तीन नवाहि । गही तन कन्ह सुधौपियौ पाहि ॥  
गहै तव कन्ह नै तीन चरन । पटकिय लै करि उत्त थरन ॥  
छं० ॥ ४७९ ॥

भये सिर चून हयसिस तीन । किये नरजीव वली वपु हीन ॥  
भजी जयचंद कौ सेन विराट । कियौ नृप लापन निदुर काट ॥  
छं० ॥ ४८० ॥

दूहा ॥ लापन सी रन पौढियौ । नरवद और नरैन ॥  
परि घाइल निहुर कमध । दो अठ भैया तेन ॥

छं० ॥ ४८१ ॥

चौपाई ॥ परे कांठरी बावू जंग । अरु गोतम अगिवान अभंग ॥  
नरवद अरु नारैन सुकटिव । पंगु कास रन तान उपटिव ॥

छं० ॥ ४८२ ॥

जयचन्द के सरदार कायस्थ मकरन्द का घोर युद्ध करना ।

युद्ध का वर्णन । मकरन्द का मारा जाना ।

कवित्त ॥ दौरि दलपति वीर । वैस दाठन दल भाई ।  
सनमुप हँ श्रीवार । हतौ वकसी दल सोई ॥  
लपि कायथ मकरन्द । चंद पुंडीर अघोई ॥  
कर लेपनि किरवान । दंत सावतन वोई ॥  
उच्चर्यौ इष्ट गिरजा सुमुप । कस्य कस्य क्रोध सँ लिय ॥  
जयचंद लौन धरि सीस पर । प्रगट लोह सँ भरह किय ॥

॥ ४८३ ॥

भुजंगी ॥ पिल्यौ वैस दलपति सनमुप्य क्षरौ । गहौ तेग हथ्यं समथ्यं करूर  
वियौ जंपियौ जोध मकरंद वीर । अघोर मंडवे विचारे गहीर ॥

छं० ॥ ४८४ ॥

हलाल कियौ नौन पंग नितबं । भयौ पाज चहूवान दलरोकि सब  
गजै नालि गोला वटूकै वरकै । किते कायर अंग जंघं धरकै ॥

छं० ॥ ४८५ ॥

वहै नाव कांठाव कांतीर सोरै । लगै अंग अंग सनौ सर्प कोरै ॥  
मिले हथ्य हथ्य विहथ्य सुवानी । किधौ प्याल घेलैत होगी रवानी ॥

छं० ॥ ४८६ ॥

विकट वहै षग घट सुलग्गी । सिर फारि अंग हय देव पग्गी ॥  
भूलै भूल जूझै सुभूलै भट्टकै । चर चूरिया चाय आघाय चुकै ॥

छं० ॥ ४८७ ॥

ठठकै नहीं स्वर लपि लोह अणै । टटकै पर टूटि मकरंद दिख्यौ ॥

इतै चंद पुंडीर मकरंद देख्यो । अमोर भुजाते वचनं सुभष्यो ॥

छं० ॥ ४८८ ॥

गह्यो चंद ने काइयं पगग केरौ । लष्यो आज षंगा सवै सैन तेरौ ॥  
इतै चंद मकरंद मुष मेल कीनौ । दुहौं हथ्य किरवान बलवान लीनौ ॥

छं० ॥ ४८९ ॥

दई चंद्र कै सीस पै वीस वानी । किधौं वीज आकास की षीज पानी ॥  
लटकै सुचंद धरा मोर छाया । लष्यो वीर कै मास बाजी सुताय ॥

छं० ॥ ४९० ॥

दई दौरि कै मास मकरंद सीस । करी आप सीस सुदेवी सगीस ॥  
लई फाक अंग हथ फार षगगी । षहा षग चल्ली धरा आय लगगी ॥

छं० ॥ ४९१ ॥

पर्यौ देषि मकरंद दलपति धायौ । मुषं मेल लीनौ कर सेल सायौ ॥  
हन्यौ आय कयमास के अंग भारी । वरं भेदि अंग निहंगं करारी ॥

छं० ॥ ४९२ ॥

कट्यौ सेल कयमास हथ्यं गहायौ । मुषं मेल कीनौ फिर सेल सार्यौ ॥  
हन्यौ काइयं वीस कयमास भारी । फवी जीत चहु आन प्रस्मान सारी ॥

छं० ॥ ४९३ ॥

**मकरन्द का मारा जाना और कैमास का विजयी होना ।**

चौपाई ॥ हनि मकरंद काइयं जंगह । दलपति वीस दवनि किथ अंगह ॥

जहा चंद घाइल सुभक्षानै । भई जीत कयमास सुभानै ॥

छं० ॥ ४९४ ॥

तीस सहस लाघन के संग । सम्मर मांझ परे कटि अंग ॥

हाथी परे तीस पर पांच । बोले चंद बदन वर सांच ॥

छं० ॥ ४९५ ॥

**निहुरराय का घायल होना, कन्नौज की सेना का काम आना ।**

**पृथ्वीराज की विजय का वर्णन ।**

घाइल निहुरराय अचेत । वासठि पेर कमडुज घेत ॥

कनवज कुमर कामि सब आइय । फाते लई चहुआन अचाइय ।

छं० ॥ ४६६ ॥

आल्हा का कहना कि लाखन सी तो काम आए पर कुछ  
चिन्ता नहीं मैं तो अभी तयार हूँ ।

दूहा ॥ आए लापन काम रन । उचरे आल्ह सुमाय ॥

हम आवेगे काम सब । राज चंद नहि जाय ॥

छं० ॥ ४६७ ॥

आल्हा का सब सरदारों को इकट्ठे करके उत्तेजित करना ।  
चौपाई ॥ उचरै आल्ह सुनौ सब संगी । पौथोरा की फौज उमंगी ॥  
मारे लापन ताल्हन स्हर । नायक निरवाहे सब पूर ॥

छं० ॥ ४६८ ॥

जगनक भाट बुलाये आगे । वाइक कहि कनवज्जहि जागै ॥

लापन आल्हन वचन निवाहे । पौथल दल पगगन सो ढाहै ॥

छं० ॥ ४६९ ॥

आल्हा का कुँवर ब्रह्मादित्य से कहना कि आप घर लौट  
जाइए मैं लड़ाई को देख लूंगा ।

कवित ॥ उच्चरि आल्ह सु वचन । ब्रह्माजित करिये कानह ॥

आप युद्ध छंडिये । जाहु जीवत घर मानह ॥

हम करिहैं मंग्राम । ताम आवै घर काजह ॥

भूमि कलिजंर जाहु । मिलौ परिमाल समाजह ।

किज्जियौ सेव तजि जोम को । दंड दिव्य दै मण्णियहु ॥

किज्जियौ सेव तन सैहुडा । नगर महोवा रापियहु ॥

छं० ॥ ५०० ॥

ब्रह्मादित्य का कहना कि मैं अभी पृथ्वीराज की सेना को  
काट गिराता हूँ मैं पीठ नहीं देन का ।

चौपाई ॥ उचरे वचन ब्रह्माजित लोइ । सुनिये आल्ह अवन दै सोई ॥



तुम द्वेषत घग्गनि तन घंडौ । संभरिया को सैन विहंडौ ॥

छं० ॥ ५०१ ॥

लाघन तालहन काम सो आये । अरु मंचौ मकरंद कटाये ॥

अबै बनाफर ढील न कीजै । निरभै राज सुरग कौ कीजै ॥

छं० ॥ ५०२ ॥

ब्रह्मादित्य की वीर रस सनी बातें सुनकर आल्हा का सब  
सरदारों को इकट्ठा करके उत्तेजना के वाक्य कहना ।

पड़रौ ॥ उच्चरै ब्रह्मजित सुनौ आल्ह । चक्षिये जंग छचीन चाल ॥

लौजिये वाग सब मोह छंडि । लहरमा लोक भेदे सु तंडि ॥

छं० ॥ ५०३ ॥

सुनि बैन आल्ह उदिल बुलाय । दीनौ सुवोज भोरथ्य भाय ॥

केसवादीत चंदेल लहर । वोइथ्य वीर परवार पूर ॥

छं० ॥ ५०४ ॥

कोपियौ राय सलगौर लोह । ईसरह दास लोधी सुतोह ॥

मालहन बोलि भोपति थूप । बोलियौ वैसे नरपाल रूप ॥

छं० ॥ ५०५ ॥

रुसतम्स घान पट्टान पाय । मालहन वीर सत साल आय ॥

सकतेस सौम बंसी मरह । जगते धस जाय गोतम्स सह ॥

छं० ॥ ५०६ ॥

प्रौहित सु प्रमानंद नाम । मायर मरह काइथ्य ताम ॥

बोलियो गंग बनिया परम्स । जगनक भाट धारै सरम्स ॥

छं० ॥ ५०७ ॥

जलहन बोलि बिय बंध ताम । मिलिये आय परिमाल काम ॥

सेना सुसाठि हज्जार ताल । उच्चरै आल्ह जिन संग बोल ॥

छं० ॥ ५०८ ॥

कनवज्ज नाथ दिय कुमक सुइ । आये सुकामि सार्वत जुइ ॥

लाघन कमइ तालन पठान । पहिलै सुटुटु परियौ जठान ॥

छं० ॥ ५०९ ॥

चंदेल नौन कीजै इलाल । कीजिये जुद्ध आवध विसाल ॥

लीजिये लोह इक सत्त होय । बाहौ तजि घर वारह सोय ।

छं० ॥ ५१० ॥

चौपाई ॥ सुनिय आल्ह कौ वानी भारिय । तुलसी दल मै सैन संहारिय ॥

एकमत है जुरि जुद्ध जु कीजै । छचिय धर्म काज जिय दीजै ॥

छं० ॥ ५११ ॥

आल्हा का उत्तेजन सुनकर सब का सरने कटने के लिय प्रस्तुत  
होजाना ।

दूहा ॥ आल्हन मत सुनियो सवन । चित दिय सेलन धेल ॥

आजि वरौ सुर अच्छरी । नौन इलाल चंदेल ॥

छं० ॥ ५१२ ॥

आल्हा का शास्त्रों की आज्ञा सुनाना कि जो राजपूत लड़ाई  
से हटता है वह नक में पड़ता है और जो बीरता से मारा जाता  
वह स्वर्ग का राज्य भोगता है और जीतता है तो पृथ्वी भोगता  
है और जिसको भागना हो अभी से चला जाय ।

भुजंगी ॥ कही वत्त आल्ह सुनो ब्रह्म जीत । धरी वत्त चीत लही मत्त मीत ॥

अतुल जुद्ध सामंत सज्ज सुभारी । करै जुध परिमाल नंद विचारी ॥

छं० ॥ ५१३ ॥

वधं षोडसं राजकुमार सोई । महा तेज चहुवान बलवान होई ॥

तज्जो जुद्ध सामंत नृप संग जावौ । पछै राज परिमाल नीकै जमावौ ॥

छं० ॥ ५१४ ॥

परै भार रजपूत स्वामिही निकारै । मिलै लोह अंग निहंग संहारै ॥

धरै धर्म सीस सु छचीय सूरै । उवारंत वामी अपारै हजूरै ॥

छं० ॥ ५१५ ॥

भजै रजपूत धनी काम आवै । वसे रतिवन काम गहरे परावै ॥

अवै जाहु संग कुमार तु दोई । मरै हेसकाज समाज सलोई ॥

छं० ॥ ५१६ ॥

सुनी कुवर बानी ब्रह्मानंद सारी । तबै आल्हसौ वैन बोल्यौ हकारी ॥  
धनी होय धरतीनि के भोग भोग । मरै नाहि जातै इसै सर्व लोग ॥

छं० ॥ ५१७ ॥

नही बीज रजपूत कौ ताहि मानै । लीयौ नारि कितौ सुकरं वषाणै ॥  
सुनी व्यास बानी बड़े मुष्य गार्ह । सबै लोग मानी पुरानीनि गार्ह ॥

छं० ॥ ५१८ ॥

चौपाई ॥ जा धरती को भोगै भोग । जा तन मरे नहीं कोइ लोग ॥  
सो धरती नै कितौ लयौ । वेदव्यास निरनै यह कियौ ॥

छं० ॥ ५१९ ॥

सो रजपूत न गति को पावै । जम कौ डंड सीस पर लावै ॥  
चौरासी जौननि मै भटकै । क्रम पर देही दर दर भटकै ॥

छं० ॥ ५२० ॥

दूहा ॥ राजन धर जातन मरै । करै सुरग को भोग ॥  
दुनियां मै जस विस्तरै । हंसै न दुरजन लोग ॥

छं० ॥ ५२१ ॥

जा धरती को घाड़ कै । मरै न जायै कोइ ॥  
अंत काल नरकह परै । जग में अपजस होइ ॥

छं० ॥ ५२२ ॥

चौपाई ॥ धरती जा तन राजा मरई । नाम सु जार जाति सब धरई ॥  
अंतकाल वह नरकह परै । ताकी साधि व्यास मुनि भरै ॥

छं० ॥ ५२३ ॥

दूहा ॥ उदिक उतारत ना मरै । ब्राह्मन जागी भाट ॥  
जीवत भुव भटकत फिरै । मरै नरक मै वास ॥

छं० ॥ ५२४ ॥

कविस्त ॥ कहत ब्रह्मविनि । मानि आल्हन सब लिज्जहि ॥

करै पैज प्रेम धारि । मारि सामंतनि लिज्जहि ॥

करै सुरग अच्छरिय । हरौ बहुवान गरब सब ॥

धरुं दस गल मुंड । हर मंडल भेदों तब ॥

परिमाल नंद इस उचरय । षंड षंड पिंडह करहु ॥

जह्नों सुदंत हस्तीनि के । मखहन दे निरमल तरहुं ॥

छं० ॥ ५२५ ॥

ब्रह्मादित्य का सब सरदारों और सेना से कहना कि आल्हा  
ऊदल जो कहैं वही करना चाहिए । सब सरदारों का इकठे होना  
और लड़ाई का तयारी करना ।

सोतीदास ॥ कहै ब्रह्मादित्त सुबैन हुलास । सुनौसव सैन चँदेलन पास ॥  
सुनौ उचवानिय जदिल आल्हा । सबै चली जाध छत्रोधम चाल ॥

छं० ॥ ५२६ ॥

पुलायव केसव दीन चँदेल । करं परिहार सो चौ अथ जेल ॥  
लिय राय सबै छि लंगोउ बुलाय । मिले वय ईसर लोधिय जाय ॥

छं० ॥ ५२७ ॥

दिये सब भूपति मारहन पूर । मिलायव वैसे नरबद्ध नूर ॥  
लिये चहुवानह रूप गहीर । दिये दस वाइय ए भरभीर ॥

छं० ॥ ५२८ ॥

सु रस्तम घान पठान दलेल । भए सत साल सु मखहन जेल ॥  
सकति सब सिय सोम विबुध । जगन्तिय गौरय समर सज ॥

छं० ॥ ५२९ ॥

सु प्रोहित वै परमानंद पूर । दिये दिसि दाहिनी ए दल छूर ॥  
लिये भर माधव काइय वांछ । भये भर वानिय गंग उमाछ ॥

छं० ॥ ५३० ॥

जहां मिली जल्हन भाट विकट । मिले दल दिट्टि अभंग सटट ॥  
कियो सु चँदेल इते भर सोय । लिये चष कोड न लाज सहोय ॥

छं० ॥ ५३१ ॥

भए अग जदिल सावत ठेल । वरं चक्रपानि वघेल सजेल ॥  
दला गहलोत भुजाधर भार । मिल्यौ जगनल्ल सुभाट जुझार ॥

छं० ॥ ५३२ ॥

दल उर दाहि वाहा उर दीन । इते सिरदार हरौल सु कीन ॥

सुनी दुवर बानी ब्रह्मानंद सारी । तबै आल्हसौं वैन बोल्यौ हंकारी ॥  
धनी होय धरतीनि के भोग भोग । सरै नाहि जातै हसै सर्व लोग ॥

छं० ॥ ५१७ ॥

नही बीज रजपूत कौ ताहि मानै । लीयौ नारि कितौ सुकूर वषावै ॥  
सुनी व्यास बानी बड़े सुष्प गाई । सबै लोग मानी पुरानीनि गाई ॥

छं० ॥ ५१८ ॥

चौपाई ॥ जा धरती को भोगै भोग । जा तन मरे नहीं कोइ लोग ॥  
सो धरती नै कितौ लयौ । वेदव्यास निरनै यह कियौ ॥

छं० ॥ ५१९ ॥

सो रजपूत न गति को पावै । जम कौ डंड सीस पर लावै ॥  
चौरासी जौननि मै भटकै । क्रम पर देही दर दर भटकै ॥

छं० ॥ ५२० ॥

दूहा ॥ राजन धर जातन सरै । करै सुरग को भोग ॥  
दुनियां मै जस विस्तरै । हँसै न दुरजन लोग ॥

छं० ॥ ५२१ ॥

जा धरती को घाड़ कौ । सरै न जायै कोइ ॥  
अंत काल नरकह परै । जग में अपजस होइ ॥

छं० ॥ ५२२ ॥

चौपाई ॥ धरती जा तन राजा सरइ । नाम सु जार जाति सब धरइ ॥  
अंतकाल वह नरकह परै । ताकी साधि व्यास सुनि भरै ॥

छं० ॥ ५२३ ॥

दूहा ॥ उदिक उतारत ना सरै । ब्राह्मन जागी भाट ॥  
जीवन भुव भटकात फिरै । सरै नरक मै वास ॥

छं० ॥ ५२४ ॥

कवित्त ॥ कहत ब्रह्मदात बानि । मानि आल्हन सब लिजहि ॥

करै प्रेज प्रेज धारि । मारि सामंतनि लिजहि ॥

नरै सुरग अच्छरिथ । हरौ बहुवान गरब सब ॥

धरुं देस गल सुंड । हर मंडल भेदों तब ॥

परिमाल नंद इम उच्चरय । षंड षंड पिंडह करहुं ॥

काढौं सुदंत हस्तीनि के । मलहन दे निरमल तरहुं ॥

छं० ॥ ५२५ ॥

ब्रह्मादित्य का सब सरदारों और सेना से कहना कि आल्हा  
ऊदल जो कहैं वही करना चाहिए । सब सरदारों का इकट्ठे होना  
और लड़ाई का तयारी करना ।

मोतीदाम ॥ कहै ब्रह्मादित्त सुवन हुलास । सुनौसव सैन चँदेलन पास ॥  
सुनौ उचवानिय जदिल आल्हा । सबै चली जाध छचौधम चाल ॥

छं० ॥ ५२६ ॥

बुलायव केसव दीन चँदेल । करं परिहार सो चौ अथ मेल ॥  
लिय राय सबैहि लगोउ बुलाय । मिले वय ईसर लोधिय जाय ॥

छं० ॥ ५२७ ॥

दिये सब भूपति मालहन पूर । मिलायव वैसे नरबद्ध नूर ॥  
लिये चहुवानह रूप गहीर । दिये दस वाइय ए भरभीर ॥

छं० ॥ ५२८ ॥

सु हस्तम घान पठान दलेल । भए सत साल सु मलहन मेल ॥  
सकति सब सिय सोम विबुध । जगत्तिय गौरय समर सुह ॥

छं० ॥ ५२९ ॥

सु प्रोहित वै परमानंद पूर । दिये दिसि दाहिनी ए दल खूर ॥  
लिये भर साधव काइय वांइ । भये भर वानिय गंग उमाइ ॥

छं० ॥ ५३० ॥

जहां मिली जलहन भाट विकट । मिले दल दिट्टि अभंग सटट ॥  
कियौ सु चँदेल इते भर सोय । लिये चष कोइ न लाज सहोय ॥

छं० ॥ ५३१ ॥

भए अग जदिल सावंत ठेल । वरं चक्रपानि बघेल समेल ॥  
दला गहलोत भुजाधर भार । मिल्यौ जगनक सुभाट जुझार ॥

छं० ॥ ५३२ ॥

दल उर दाहि वाहा उर दीन । इते सिरदार हरौल सु कीन ॥

दिचै ब्रह्मादित कूँवर खर । दलं सिर मोर सु आल्हन पूर ॥

छं० ॥ ५३३ ॥

अमान सुराय पमार सु प्रम । चले सुध स्वामित चाल धरम ॥  
सबै दल साठि हजार सपूर । मिले रन संग अभंग सु नूर ॥

छं० ॥ ५३४ ॥

सब साठ हजार सेना का सजना ।

चौपाई ॥ सात सहस चंदेल सुकीनै । अरु दस सहस वाम दिसि दीनै ॥

ग्यारह सहस दाहिनै सोई । आठ हजार हरील सुहोई ॥

छं० ॥ ५३५ ॥

दूहा ॥ चतुर विंश अतिमोल छे । ब्रह्मादित जह आल्ह ॥

साठि सहस सेना सबै । हरकारी तत काल ॥

छं० ॥ ५३६ ॥

आल्हा का मरने का सामान करके अर्थात् तुलसी सालि-  
ग्राम सिला आदि सिर पर बाँध करक लड़ाई के लिये आगे  
बढ़ना । उदल का लड़ने के लिये आगे हाना ।

पड़रौ ॥ हलकारी आल्ह सेना स पूर । सब किये जोध आगे जरूर ॥

सिर बाँधि गल्लिका सिला सोय । तुलसी सिर मंजरि मेलि लोय ॥

छं० ॥ ५३७ ॥

मौजा सभरे मौहर निस पूर । किये मरन साज कूँवर करूर ॥

हलकारी सैन सब इक्क कीन । अप अजुइ रन भए लीन ॥

छं० ॥ ५३८ ॥

कंगल सुअंग सिर टोप लाय । प्राचीर छांह मिलि छांह दोय ॥

आगे सु चंद बाँध लईय वाग । करि तेज तुरिय करक चवषाग ।

छं० ॥ ५३९ ॥

दुवसैन मिलिव सागर समान । कूहियौ अग्र पय मंडि कान ॥

हजार बीस उदिल समाज । कूदे सु पंगु पर उमगि साज ॥

छं० ॥ ५४० ॥

सत सहस कूदि सामंत सैन । उतरे धरिवर विस्तार नैन ॥

नरनाह कन्ह पुंडीर चंद । पज्जोन जैत भोहा सु दंद ॥

छं० ॥ ५४१ ॥

गोयंद राज गहलोत खूर । कनकैस सुभर मुख उमगि नूर ।

संजस राय हाहुलि हमीर । तोवर पहार हाड़ा गम्हीर ॥

छं० ॥ ५४२ ॥

नरसिंघ दाहिमां मत्त कीन । इतनैनि सुभट हय छंडि दीन ॥

उदिल्ल चक्रपानं वधेल । गहलोत दलां भोपत्ति मेल ॥

छं० ॥ ५४३ ॥

रायसल गौड़, नरवह वैस । दाहिमा राय डाहरसमैस ॥

दस मत्त घान पट्टान संग । ववदास खूर रन करि उमंग ॥

छं० ॥ ५४४ ॥

सकतेस सौम वंसी भुभार । जगतेस गौरवंसी सभार ॥

प्रोहित परमानंद सच साल । जगनक भाट विद्या विसाल ॥

॥ छं० ॥ ५४५ ॥

आमान राय परिहार सोय । जालहन्न जोरवर वद लोय ॥

भुन्नग भदौरिया विरचि भार । इतनै कूदि उदिल्ल लार ॥

छं० ॥ ५४६ ॥

हजार बीस ठाकुर समाज । कूदिय सुजग कहं पहरि साज ॥

उतरे जोध दोज दिसान । अप अप्य इष्ट वर करत आन ॥

छं० ॥ ५४७ ॥

उत अंग मंग सन्नाह संधि । रूपे पयाल पग समर वंधि ॥

छंडिये तरिय मंडिये जुह । विहंसे सु बुध सावत कुह ॥

छं० ॥ ५४८ ॥

दूहा ॥ जदिल कूदे छंडि हय । इत कूदे सामंत ॥

नौनव धार्यौ सीस पर । कियौ खरन कौ मंत ॥

छं० ॥ ५४९ ॥

ऊदल की लड़ाई आरम्भ होना । ऊदल की बीरता का वर्णन ।

चोटक ॥ सजिय हय जदिल कन्ह नर । गहिये किरवान सु ढाल कर ॥



उमगे चहुआन चँदेल दल । अप अप ससैन कराय हल ॥

छं० ॥ ५५० ॥

गजराज हरौलनि पंति लगी । वरभद्वज जानि घटा उमगी ॥  
अति उज्जल दंत समंत सधे । बगुला घन में जनु पंति बंधे ॥

छं० ॥ ५५१ ॥

वरलाल विसाल धजा रमकी । तड़िता मनु वादल में दमकी ॥  
हसती सत दोय हरोल दिय । तिन ऊपर कन्ह सो कोप किय ॥

छं० ॥ ५५२ ॥

गहि दंत उषारहि मत्त बल । कढ़ई जानु भीलनि कंद फल ॥  
पटकै गहैयौं गर पानि कर । हनवतव गावत पानि गिर ॥

छं० ॥ ५५३ ॥

विरथो वर कन्ह अमान बली । डर मानि चंदेल की फौज हली  
मिलिय उत जहिल कोप किय । उमगे वड रावत बीचि लिय ॥

छं० ॥ ५५४ ॥

करै वपु घाव सदाव संहारि । किधौं वन कटिये कंटक वारि ॥  
वहै किरवान अमान संहथ्य । परे धर ऊपर सीस समथ्य ॥

छं० ॥ ५५५ ॥

करषि कमान कर कर छट्टि । परकि स भूमि दुहौं घट फट्टि ॥  
गन गन जुत्थ सु अच्छर धाय । वन घट घाइन देह घमाई ॥

छं० ॥ ५५६ ॥

नर नर नूर सो लोहन पूर । चरचर चुट्य सोसनि स्वर ॥  
छल बल षेलहि झेलहि सार । जुरत जुवान झिलै धर मार ॥

छं० ॥ ५५७ ॥

झलझल तेग झलाहल झेल । ठट्टट रथ्य अपच्छर षेल ॥  
ठट्टट मिलिय पिलिय पाय । डर उर कायर देषि डराय ॥

छं० ॥ ५५८ ॥

ढरक्य सुंड निरष्य नैन । तरक्य तीर वरक्य वैन ॥  
थिर दुव सैन सुरकंति नांहि । दरहर दौरि परै दल मांहि ॥

छं० ॥ ५५९ ॥

धरद्वर धारहि मार सुधीर । करकर वाहित मागिरु तीर ॥

नचै रन स्वर सचेत सपूर । धरद्वर धावत अग्गहि स्वर ॥

छं० ॥ ५६० ॥

वरद्वर वेदल आवध टूटि । भरभर भाजत नाहिनै रूठि ॥

सरभर छेदहि मार सुखाल । जरजर नाचत घाय जटाल ॥

छं० ॥ ५६१ ॥

उरं उर फटति सांगि सु लग्न । सुरा सुर देषत घेतत घग्न ॥

घरी करि घांति उपैदल दौय । हरी हरि वानि उचारत सोय ॥

छं० ॥ ५६२ ॥

पिले वलवत सु संजमगाय । इतै गहलोत दूया उमगाय ॥

मित्यौ सुष आइय मदन मेल । तजौ किरवान गह्यौ कर सेल ॥

छं० ॥ ५६३ ॥

लगायउ संजमगाय क सार । सद्यौ तहां मार कियौ फिरि वार ॥

दई दलपति के सीस मै दौरि । लियौ सिर केलि सदासिव गोरि ॥

छं० ॥ ५६४ ॥

लख्यौ तव भोपति कीनौय रीस । दई फिरि दौरि कै संजम सीस ॥

अस्यौ तव वार समूरछ मान । चह्यौ नरसिंघ तहां थक तान ॥

छं० ॥ ५६५ ॥

दई नरसिंघ गुरज की सीस । पर्यौ गहलोत लियौ मन रीस ॥

लखे चक्रपानि नरसिंघ सोय । भिरे भरवध्य समध्यइ लोय ॥

छं० ॥ ५६६ ॥

किये भुज पानि बघेल अमान । इते वपु दाहिम इंद्र समान ॥

लख बय होइ जुरे मिलि जुड । गिरे धर दोइप वीर विबुड ॥

छं० ॥ ५६७ ॥

दुहौ जम दाढ दुहौ डर सोय । हन्यौ चक्रपानि सो घंजर जोय ॥

छं० ॥ ५६८ ॥

चक्रपानि का मारा जाना । ब्रह्मादित्य का क्रोध करके

अपनी सेना को ललकारना ।

दूहा ॥ चक्रपानि रन जूझि तन । आहु फौज परिमाल ॥

तब ब्रह्माजिति कोपि कै । कहै वचन सुष ज्वाल ॥

छं० ॥ ५६६ ॥

ब्रह्मादिति हलकारिकै । बाहुरि दल मै आय ॥

धार स्वामि धम आल सिर । रन वर अनौ बढाय ॥

छं० ॥ ५७० ॥

हनि सांवतन लघन रन । तालन प्रबल पठान ॥

सहस पचास पिपाय कै । कलि मे कियौ कहान ॥

छं० ॥ ५७१ ॥

कवित्त ॥ मरन धार मंग लिये । वीर ब्रह्माजिति आयव ॥

भजे नृपति परिमाल । देषि धरम सुभजाइव ॥

कटी कुमक पंग की । कमध लाघन जुरि जंगह ॥

तिल तिल तन टूटियव । सर कीनै नहि अंगह ॥

तालन पठान विन सीस हपि । अतुल पराक्रम कमधि किय ॥

भाजंत सैन जीवंत सहि । अहभो दुष सीलंत हिय ॥

छं० ॥ ५७२ ॥

कुँवर ब्रह्मादित्य का लड़ाई का प्रबन्ध करना । अल्हा

को सेनापति बनाना । ऊइल आदि सरदारों के साथ

सेना बाँट कर देना ।

पद्यरी ॥ परिमाल नंद हल कीन आय । विहंसियौ कुँवर मंगल मनाय ॥

हलकाहि सैन सब इक कीन । आल्हन सीस सब भार दीन ॥

छं० ॥ ५७३ ॥

सकतेस सौमवसी सु सूर । बरगहर वार सतसल करूर ॥

बरहो सुदेव कान विरचि नूर । डौगर सी दल दौवा गरूर ॥

छं० ॥ ५७४ ॥

राठौर राय सल कोपि अंग । तौवर अमान मन चढ़ि उमंग ॥

सिक्रवार सुरजन धूम सुसुद्ध । वलिवंश डौग केसव सुबुद्ध ॥

छं० ॥ ५७५ ॥

जादव सु भाल संवाध लोय । सुर का वसंत बलवंड लोय ॥  
जल्हन सुभाट अति तेज ताप । कायस्थ क्रम चंद अतुल वाप ॥  
छं० ॥ ५७६ ॥

बनिशा सुभार मद्दि बुधि उमंग । इतने दीनै उद्विल्ल संग ॥  
हजार बीस असवार और । गज राज होय सत सहनि जौर ॥  
छं० ॥ ५७७ ॥

पच्चास तोप वड़ सहन अंच । गोलीन पाय मन पंच रंच ॥  
हजार पांच दिय वान साथ । लपि विपम बाह सामथ्य बाथ ॥  
छं० ॥ ५७८ ॥

इधर कन्ह के साथ सब सरदारों का लडाई के लिये तयार होना ।

उत कन्ह चंद पुंडीर जैत । कन्नक वड़ गुज्जर सलष नैत ॥  
भोहां चंदेल परिहार पीप । अतताइ कोपि रन अरिन जीप ॥  
छं० ॥ ५७९ ॥

संज्जमराय धरि दियउ युद्ध । तौवर पहार भुज धरि विरुद्ध ॥  
अचलेस अंग उमगे सुजंग । नवलेस अरु रन मन उमंग ॥  
छं० ॥ ५८० ॥

पज्जौन मलयसी पिता पूत । कोपंत जानि रघुनाथ दूत ॥  
छं० ॥ ५८१ ॥

दूहा ॥ पंच सहस प्रथिराज के । हरवल कन्ह सुभार ॥  
उतै वनाफर सेन सँग । उद्विल बीस हजार ॥  
छं० ॥ ५८२ ॥

दोज वीर रिसाय कै । लए अत्र कर मांहि ॥  
बोग उठाई पग कढ़ि । चढ़े मोह तन नांहि ॥  
छं० ॥ ५८३ ॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना और युद्ध का आरम्भ ।  
हनूफाल ॥ दल मिले दोयउ संग । बज रंग वीर उमंग ॥  
उत कन्ह होमर डारि । आए सुवीर हँकारि ॥  
छं० ॥ ५८४ ॥

दल सहस उहिल लोइ । उत्तरे सुहेमर सोइ ॥  
दस सहस हेमर फुटि । जिन तोप वाननि छुटि ॥

छं० ॥ ५८५ ॥

हय छंडि तीन हजार । चहुआन कन्हर लार ॥  
असवार दोय सहस । रह फुटि रापि रहस ॥

छं० ॥ ५८६ ॥

दिषि पिलै पैलै ताहि । झिल्लै सुकन्ह सुभाहि ॥  
काढि दंत मत्तनि पानि । थल भील कंदलि तानि ॥

छं० ॥ ५८७ ॥

गहि सुंढि फेरत गाहि । हनवंत गिरवर वाहि ॥  
भुव पूछ पटकौ वानि । बलिदेव दुनि जिह जानि ॥

छं० ॥ ५८८ ॥

हय पकरि वाहिन फेरि । असवार जुत्थन हेरि ॥  
अगहत्त पीलनि कोट । मानियौ कन्हर जोट ॥

छं० ॥ ५८९ ॥

पेले सुदल मध रत्थ । जिमि लंक वानर जुत्थ ॥  
सुरकी अनी बंदेल । दल दक्खि कन्हर मेल ॥

छं० ॥ ५९० ॥

कन्ह और ऊदल का युद्ध । चन्देल की सेना का उखड़ना ।  
ऊदल का आगे बढ़ कर लड़ना ।

कवित्त ॥ कन्ह कोप चहुवान । हनै हथ्यी मतवारे ॥  
काढि दंत जुरि वाह । डील डौंगर से डारे ॥  
हैवर हत्थ समाहि । ठाहि दल दियौ सुसैनह ॥  
भगी फौज बंदेल । देष सोमंतनि नैनह ॥  
सुरकात फौज उहिल लषि । भयो बनावर कौढनी ॥  
सैलोट करिय दुरजन भूम । रन भेटत सम्हरधनी ॥

छं० ॥ ५९१ ॥

कन्ह चौहान और ऊदल के घोर युद्ध का वर्णन ॥

मोतीदाम ॥ मिली रन फौज बनाफर वीर । चली सनमुख मरन सुधीर ।

करी परदछिन आलहन काज । लिये सब रावत जंग समोज ॥

छं० ॥ ५८२ ॥

चली सौमवंस सकत सुधीर । फिर्यो वृद्धदेव करन गहीर ॥

मिल्यो दल डौंगरसी दोउ वाह । पिल्यो सुअमान ह्वै तौवर ताह ॥

छं० ॥ ५८३ ॥

मिल्यो रयसल रठौर मरद । विल्यो सचसाल सुवांधि जरद ॥

पिल्यो सिक्कार सुरजन सीह । पिल्यो दल डौंग सुकेसव वीह ॥

छं० ॥ ५८४ ॥

पिल्यो दुरजन सुजादव जोर । सुरघि सुवीर वसंत अमोर ॥

पिल्यो दल जलहन भाट हुलास । पिल्यो क्रमचंद सुकायथ जास ॥

छं० ॥ ५८५ ॥

पिल्यो नरमल सु वैस वरिष्ट । इतै पिलि उदिल सग गरिष्ट ॥

इतै हय छंडिय कन्ह समतथ । उतै हय छंडिय सामंत सतथ ॥

छं० ॥ ५८६ ॥

भुजकल आवध सायध वाय । डगामग कायर धुक्त घाय ॥

करघि कमान लई दुहु सैन । मरघिय कुंडल कौनिय सैन ॥

छं० ॥ ५८७ ॥

चलावत सैल दिढाव पगन । मनो अहिवौ विय होत मगन ॥

चलावत हय चढ़ि दंति दुवाह । करै वपु प्रान सुभट्ट वराह ॥

छं० ॥ ५८८ ॥

वहै गउकर्न सु लगन हीक । मनो अहि मंचिय जीह सुलीक ॥

वहै बहुते सर नावक नेह । वरषहि बूंद सु अंत पियेह ॥

छं० ॥ ५८९ ॥

दई कर डारि कमानस तेन । गहै कर सेल लषे दोज सैन ॥

करै दोज सैन अन्यो अन्य मार । दुहु घट होत है पंजर पार ॥

छं० ॥ ६०० ॥

वहै रुधि छेछ दुहौ दल वोर । लगावत तौवर जीवर जोर ॥

लगै उर आनि सकतिय सूर । मनौ विष आंसिव लगि कूर ॥

छं० ॥ ६०१ ॥

अन्या अन्य खेल को थपिय सार । तवै दुहौ वीर गह्यो किरवार ॥  
लगे दर कंध सुबंध पुलाय । मनौ जमराज जनेउ बनाय ॥

छं० ॥ ६०२ ॥

लगै सिर जपर कट्टि है टोप । किधौ कियौ संग सरस्वति लोप ॥  
वहै किरवान सौ कंधन आंक । रूपे धर रुंड वहै सिर हांक ॥

छं० ॥ ६०३ ॥

वहै सिर सूरन के सजि नेत । हँकारत राह किधौ विय केत ॥  
तजी किरवान लई जम दहु । लगावत हीय किये वल गहु ॥

छं० ॥ ६०४ ॥

बषत्तर फारि करै कर जोर । मनौ घन मेंडि उठी रज कोर ॥  
लगावत षंजर पंजर पार । किधौ कियौ कालिका दंत निवार ॥

छं० ॥ ६०५ ॥

बलावत संकल फेरि जुवान । घुसावत अंग निहंग कमान ॥  
बलायव गुज्ज सु पीलन सीस । मनौ सिर तोरि पुरंदर सीस ॥

छं० ॥ ६०६ ॥

लगाय भसुंदिनि सीस नितानि । मनौ दधि फोरि गवालिय स्याम ॥  
बलावत केहरि के नष पे'ट । बखस्यल फारिकै डारिण ठे'ट ॥

छं० ॥ ६०७ ॥

लगावत राज कुंवार निदान । किधौ कटी पूछ सुनागनि तानि ॥  
यही विधि उदिल कह लरंत । महा सुध छविय धर्म धरंत ॥

छं० ॥ ६०८ ॥

ठठकिय सैन उते चहुवान । मिले दुअ वीर प्रगटन आनि ॥

छं० ॥ ६०९ ॥

दूहा ॥ दौक्यौ संजमराय रन । ऊदिल जपर आय ॥  
सकल सौमवंसी मरद । भिहल्यौ वीर रिसाय ॥

छं० ॥ ६१० ॥

## कई सामंतों और चंदेल सेना के सरदारों का वरनी वरनी से युद्ध वर्णन

भुजंगी ॥ पिल्यौ संजमराय उदित कीनी । धरै पग हृथ्यं समष्ट्यं गुमानी ॥  
लघ्यौ संजमाराय सकतेस राजं । लियौ वीचही प्रान जुद्ध समाजं ॥  
छं० ॥ ६११ ॥

दुहौ वीर गाजे वधाए सुवाहं । दुहौ लहर मरनं सु मंझो उछाहं ।  
कटं काट पगं उमंगं चलावै । कयौ धर सु सौसं विकटं मिलावै ॥  
छं० ॥ ६१२ ॥

गटं गट जुगिनी सु लोह भरवै । घटं को चिहूँ घाउ घटं धरावै ॥  
नटं जेम नाचंत वारं सुधारै । चटकौ तुरी छंडि पटकौ सुधारै ॥  
छं० ॥ ६१३ ॥

ढलं ढाल वूडंत सारं सु जोरं । जरै जजरं ज्वान आमान तोरं ॥  
हहकै दलं दोय देषै हटकै । पटकं दिहौ छूटि कौनै लटकै ॥  
छं० ॥ ६१४ ॥

ठटकौ दोज सै न देषै तमासौ । डढकतं वाजंत डौरु उमासौ ॥  
ढढकं दरं ढाढरं कुटि भरियं । ततथेई नाचतं सावंत झरियं ॥  
छं० ॥ ६१५ ॥

ररकतं जोगिनी भैरौ निषारी । उमाकतं नाचंत दै हृथ्य तारी ।  
ततथेई नाचंत ईसं उरंगै । थरके दुहौ सेन देषै रमंगै ।  
छं० ॥ ६१६ ॥

दलं दोइ द्रढै वलं बाह दोई । धपै वीर धावंत आवंत तोई ॥  
नरं नेह छंडे भरी नेह न्यारे । पुलकतं बाहू अघारे पचारै ॥  
छं० ॥ ६१७ ॥

फिरै नाहि होज फतै स्वामि अड्डे । धरी माथ हृथ्यं परी पाप गड्डे ॥  
हन्यौ आय संजम सेलं समाही । तवै वीर सकतेस किरवान वाहीं ॥  
छं० ॥ ६१८ ॥

लग्यौ संजमं सेल हीकं सुतायं । रुप्यो जाय वरनो जियौ देह कायं ॥  
लगी तेंग संजम कौ अंग भारी । गई छूटि संग्या पर्यौ भूम धारी ॥  
छं० ॥ ६१९ ॥



पर्यौ अंत सेजं सकंतं लषायौ । तहां गहरहारं सता कोपि आयौ ॥  
उतै चंद पुंडीर नैनन लषायौ । तवै कोपि करि वीर सत्ता सुधायौ ॥

छं० ॥ ६२० ॥

लष्यौ चंद पुंडीर आयौ चलार्ई । गहर वीर चहुवान सैना हलार्ई ॥  
जय्यौ मंच हनवंत सत साल सोई । गयौ सिरह नदं वरं वीर लोई ॥

छं० ॥ ६२१ ॥

उतै चंद पुंडीर देवी पुजार्ई । तज्यौ शकरं संग किलकारि आई ॥  
लष्यौ सचसालं विसालं वरिष्ठं । चल्यौ पीप परिहार भीरं गरिष्ठं ॥

छं० ॥ ६२२ ॥

चल्यौ मंच करनं सहार्ई सछत्ता । जय्यौ मंच सुघ भैरजं क्रोध रत्ता ॥  
किलकारि भैरू ललकारि आयौ । हन्यौ महिष येव वली दीन पायौ ॥

छं० ॥ ६२३ ॥

इतै देव करनं सता गहरवारं । उतै चंद पुंडीर पीपं पहारं ॥  
एते दीय परिमाल के सुभट ठाये । तिनं उप्परं चंद पुंडीर आये ॥

छं० ॥ ६२४ ॥

वियौ पीप परिहार साहाय आये । लिये वीर दोईस किरवान चाये ॥  
करं सचसालं कमानं सलीनं । धर्यौ वान लेसं प्रहारं सुकीनं ॥

छं० ॥ ६२५ ॥

लग्यौ पीप परिहार कौ हीक आयौ । भिंयौ अंगरंगं धरनी मिलायौ ॥  
पर्यौ पीप परिहार धरनी अचेतं । उद्यौ संजमराय पायौ सुचेत ॥

छं० ॥ ६२६ ॥

लष्यौ संजमाराय घौ करन धायौ । सिरं आय संजम के सीस नायौ ।  
लगी सीस तेगं सिरा फार होई । दुहौ हृथ फंदं गही वीर सोई ।

छं० ॥ ६२७ ॥

कुवानं सतं पीचि सीसं विधायौ । दुहौ कार वेधी सचारं न धायौ ॥

छं० ॥ ६२८ ॥

देवकर्ण की तलवार से संजमराय का शिर फटजाना और  
सत्रसाल के तीर से सर जुड़ जाने पर उसका दोनों को  
मार गिराना ।

दूहा ॥ देवकरन दिय दौरिकै । संजम सौस गहीर ॥  
लटकी फांक निराट विय । सच्चौ सत्रसल तीर ॥

छं० ॥ ६२६ ॥

कवित्त ॥ देवकरन ने दौरि । सीस संजम कै दीनिय ॥  
फन्यौ सीस विचि सोइ । आय नासा वगि लौनिय ॥  
सत्रसाल सांगिनि । हन्यौ विहु फांकन तीरह ॥  
अयौ सीस सावित । नह्यौ विचि पाल गहीरह ॥  
संजम सीस विचि सों विधिव । सत्रसाल मुजरा कियव ॥  
दुहौ हाथ घालि वर धारि कर । वरही कै कांधै दियव ॥

छं० ॥ ६३० ॥

पड़री ॥ संजम राय हनि सोमवंस । रुपियो कुंत छाती उतंस ॥  
सकतेस दई किरवान धाय । परियौ सुधरनि संजम राय ॥

छं० ॥ ६३१ ॥

धाये सुचंद पुंडीर वीय । आये सु सज्जि चंदेल दीय ॥  
तहं सत्रसाल आयौ सु संग । वरि हंस देव करि करि उमंग ॥

छं० ॥ ६३२ ॥

कम्मान पकरि सत्रसाल खुर । दीनी सु पीप कै हिय कूर ॥  
लग्यौ तीर धर फुटि लोय । परियौ सो पीप धर विगरि होय ॥

छं० ॥ ६३३ ॥

ता समे उठे संजम नरेस । मिटि गई मूरछा सरव तेस ॥  
दौरे सु देव कन किये रीस । दीनी सु जाय संजम सीस ॥

छं० ॥ ६३४ ॥

ता समै सत्रसाल तीर बाहि । फटि गयौ तीर लति नाक चाहि ॥  
परिहार तीर किये अवन ठाम । विधि गयौ सीस लगि तीर ताम ॥

छं० ॥ ६३५ ॥

सचसाल काज किन्नव सलाम । किरवान जाय दर्ई कन्ह ताम ॥  
 लगी सु कंह नौगुन उतार । खुल गयो कन्ह दिवकरन धार ॥  
 छं० ॥ ६३६ ॥

कटि भो मरंन लगि रोस आय । पापर समेत हेमर पुलाय ॥  
 उत चंद आय मुषमेल कीन । सचसाल सीस किरवान दीन ॥  
 छं० ॥ ६३७ ॥

परियो सु टुटि रन गहर वार । दौवां डोंगर सी गह्वार सार ॥  
 चल्यौ वीर पुंडीर मुष्प । दुहुं हथ्य विरचि वाही सुष्प ॥  
 छं० ॥ ६३८ ॥

लागी सु झिलम सै मध्य जाय । कटि ढाल टोप लगि कमरि आय ॥  
 परियो सुचंद धर सलषि दिष्प । चल्यौ पमार दौवा समुष्प ॥  
 छं० ॥ ६३९ ॥

वाही स हथ्य दौवा सु स्हार । कटि टोप झिलम भृकुटी करूर ॥  
 तरवार वाहि पमार चाय । कटि कटि जीन हय गय षपाय ॥  
 छं० ॥ ६४० ॥

घूम्यौ पवार परि धरनि मध्य । दिष्प्यौ जयत निड्डुर प्रसिद्ध ॥  
 चल्यो सु जैन निड्डुर नरेस । तौमर अमान चलि गयो तेस ॥  
 छं० ॥ ६४१ ॥

कमधुज्ज राय सलखीय सहाय । चलिये सुवीर रन सज्जि आय ॥  
 कीन्है सु कन्ह ऊपर चलाय । आयौ सु वनाफर जद धाय ॥  
 छं० ॥ ६४२ ॥

**कन्ह और ऊदल का युद्ध वर्णन ( सेना का युद्ध )**

दूहा ॥ उतै सज्जि कन्ह धायकै । इत ऊदल सजि आय ॥

अप अप नृप जै इच्छई । मंगल मरन उपाय ॥

छं० ॥ ६४३ ॥

चौपाई ॥ परे सकतेस सोमवंसी रन । गहरवार घौ करन कटे तन ॥

डोंगरसी दौवा तन कटिय । सामंतनि सनमुष आवटिय ॥

छं० ॥ ६४४ ॥

चंद पुंडीर परे मुरछाय । अहि परिहार पीप गिर ठाय ॥

संजम राय बुल्लि सिर कट्टिव । वीर वीर तन में रस फुल्लिव ॥

छं० ॥ ६४५ ॥

कन्ह के साथ के निड्डुर आदि सामंतों से फिर ऊदल के

साथ के कई सरदारों का परस्पर युद्ध वर्णन ।

मोतीदाम ॥ लपि निडुर जयति कन्ह चलियं । कनक वड गुजर जै मिलियं ॥

लपि भौह पज्जौन चंद वली । इतने मिलि सैन सुमुष्प चली ॥

छं० ॥ ६४६ ॥

लपि जदिल जोध सन मुषयं । सँग तैवर मान वली रुषयं ।

कामधुज सु राय सला पिलियं । सिक्रवार सु रज्जन से मिलियं ॥

छं० ॥ ६४७ ॥

वल्लिवंड सु केसव गौंड पिले । जहां जादवं दंद उमंगि चले ।

सुरको वर वीर वसंत वनै । गय जल्हन भाट समार नलै ॥

छं० ॥ ६४८ ॥

वकसी जहां कायथ क्रम चंद । उमग्यौ वनियां भर माल दंद ॥

पिलियौ तहां जदिल पायन सौ । भर झेलि वनाफर रायन सौ ॥

छं० ॥ ६४९ ॥

मुष अग्रि पचासक तोप करी । ठहराइय सोरनि जोर भरी ॥

हलकारिय गोल सलोल भरी । बड़ कोट जंजीर तहां जकरी ॥

छं० ॥ ६५० ॥

अरु ज्वान सु वान दई चिनगी । दल सांवत जेपर रौस लगी ॥

रुष तोपन जाम गिलाय दई । परिये जनौ घोरनि हाव सही ॥

छं० ॥ ६५१ ॥

अरराट भयौ अति सोर रछ्यौ । उलका सद अंवर चाय रछ्यौ ॥

धुरकी धर संजम राय परे । रन पंच हजार तहां जकरे ॥

छं० ॥ ६५२ ॥

हस्ती परि तीस सु संमर में । कितनै डंडर कायर वै मन में ॥

सब फेर सु जदिल वाग लई । सँग वीस हजार सौ भार तई ॥

छं० ॥ ६५३ ॥

बलिवं ड करै बिय षंड रनं । षंड षंड सु पील प्रचंड करं ॥  
विचले दल पीयल तेग तयो । सब भार सु जदिल भेलि लियो ॥  
छं० ॥ ६५४ ॥

चहुवान धरोल अनी सुरकी । लषि संजम राय गिरे धरकी ॥  
तहां चंद पुंडीर पिपासे परे । सुरदाय सुलष्य धरनि गिरे ॥  
छं० ॥ ६५५ ॥

तहां कन्ह कोप कर्यौ रन में । सुरकी सब सैन दुवाभर में ॥  
किरवान गही छय छांड़ि दियौ । सनमुष्य सु जदिल पौं पिलियौ ॥  
छं० ॥ ६५६ ॥

तहां जैत पज्जौन मलै सी परं । रनसिंघ पहार सजौ गहरं ॥  
पर हाहुली राव हमीर चले । इतने भरि जदिल पैजु पिलै ॥  
छं० ॥ ६५७ ॥

उत बीर वसंत रुक्रम चंद । बनिया वड़ भार जु माल दूद ॥  
देवरा रन डोंगर सी उमहे । चहुवान सु जल्हन भाट कहे ॥  
छं० ॥ ६५८ ॥

परिमाल सुनौ न प्रगास वलं । चहुवान सबै भर तानि दलं ॥  
मग रोकिय कन्ह को आजु अगै । विवि लीजियै आय को जुष्य पगै ॥  
छं० ॥ ६५९ ॥

सनमुष्य लहौ जु सबै अवही । मृत लोक के भोग तजौ सबही ॥  
छं० ॥ ६६० ॥

कवित्त ॥ दिगय फौज प्रियीराज । तोप बाननि के मारिय ॥  
गिर्यो सु संजम राय । चंद पुंडीर सुधारिय ॥  
पर्यौ पीप परिहार । परे बड़ गुजर सोइय ॥  
परिय सु तीस गयंद । सहस हेंवर गिर लोइय ॥  
रजपूत सहस छौढह परे । फौज विचिलि पाछे भइय ॥  
चहुवान सहसति हांक हुआ । कन्ह वीर दारुन दइय ॥  
छं० ॥ ६६१ ॥

चौपाई ॥ सुरकी फौज देखि चहुवान । पिलियौ हाथी अंमत तानं ॥  
कन्ह जयत हाहुली हमीरह । नरसिंघ राम मलैसी धीरह ॥  
छं० ॥ ६६२ ॥

हांकि सैन नृप आगै किन्नय । चांवड काजै आयस दिनय ॥

तुम परिमाल पकरि कर लाज । मै उदिल कौ जंग घपाज ॥

छं० ॥ ६६३ ॥

पोटक ॥ नृप हाथिय पीयस पेल वर । सब सैन सकेलि कै एक कर ॥

कौभास रु कन्ह पजौन मिले । संग हाहुलि राय हमीर चले ।

छं० ॥ ६६४ ॥

तहां घीचीय देव प्रसंग वली । विश्वराज सु धावत धीर हली ॥

तहां घेतर पूरन मल्ल चले । भरभालुन जद पगार मिले ॥

छं० ॥ ६६५ ॥

नृप जदिल ऊपर कोप किये । इतने उमराव सु संग दिये ॥

उत देषि वनाफर वै पुलिय । संग डौंगर सी दौवां मिलिय ॥

छं० ॥ ६६६ ॥

कूम चंदव संतर जल्हनय । सिक्रवार सु रज्जन मल्हनय ॥

तहां भोज वनाफर भार मल । ववता अज बावर कोपि दल ॥

छं० ॥ ६६७ ॥

मौहकम मिले भरभार दये । इतने मिलि जदिल संग भये ॥

उत कन्ह चलायव कोपि किय । इत जदिल वीर अपार धिय ॥

छं० ॥ ६६८ ॥

विफरै चहुवान वनाफरय । धरि हथ्यन लोहपि हथ वरय ॥

चहुवान दवाय हरोल लिय । उत आल्हन पोवत जुड़ जिय ॥

छं० ॥ ६६९ ॥

पिलिय मई भीर पजौन चली । द्रिग देषि चंदेलकी फौज हली ॥

पठकै गहि हेमर भूलाय । मसलति पयादिन के थलय ॥

छं० ॥ ६७० ॥

कहू हांकय धाकय वीर मुष । कहू सारत सायक ले सुरष ॥

कहू सेल चलावत बाहु पर । करि टूटि सनाह सु फूटि मर ॥

छं० ॥ ६७१ ॥

विफरै बल वीर पजौन इतै । सिक्रवार सु रज्जन आय उतै ॥

सिक्रवार चलाइ सकति कर । उर लागि पजौन कै फूटि पर ॥

छं० ॥ ६७२ ॥

धुकि राय पजौन वै कोप कियं । किरवान सु रज्जन कंध दियं ॥  
परियं सिर टूटि धरनि गिरे । ततकाल वरंगिम आय वरे ॥

छं० ॥ ६७३ ॥

भूम पाय पजौन गिरै धरनी । फिरि आयव डौंगरसी भरनी ॥  
दौवा तन सायक लाइ भर्यौ । तिन ऊपर आय सुजाम अर्यौ

छं० ॥ ६७४ ॥

गहिकै किरवान तहां वग्यौ । तिन सायक डौंगर कौ लग्यौ ॥  
किरवान बढ़ी कर जाम लियं । बिय हृष्ट गहाय कौ सीस दियं ॥

छं० ॥ ६७५ ॥

धुकि तै दई डौंगरसी पग में । धर घूंमि कौ जाम गिर्यौ मग में ॥  
फिरि चेत कौ तेग दई सिर में । गिरि डौंगरसी दौवा धर में ॥

छं० ॥ ६७६ ॥

दौवा सिर तूटि कमंध नच्यौ । उत वीर सु ईश्वर माल सच्यौ ॥  
वकसी क्रमचंद सु आय ग्यौ । पगधार घनी रन बीच लियौ ॥

छं० ॥ ६७७ ॥

सकसैना श्रीवास दौउ उर में । फरफूटि सनाह कस्यौ चर में ॥  
गह पाय सुधीर पटकि धुरं । नर चून भयौ सिर फूटि वरं ॥

छं० ॥ ६७८ ॥

रन धायकै वैस सुभार मलं । पिलियौ जु जहां प्रिथीराज दलं ॥  
नरसिंघ सुदाहा देवि चषं । वरवीर सुन्यौ धर में सुरषं ॥

छं० ॥ ६७९ ॥

नरसिंह गुरज्ज लई सरमै । उत साहु सु सांगि लई कर मै ॥  
कर साह सु सांगि चलाइ उतै । वरछा वै छूटि कौ डारै कितै ॥

छं० ॥ ६८० ॥

नरसिंघ सुधाय कियौ गुरजं । सिर टूटि धरा सुपरे सुरजं ॥  
अए सिर के सब टूक हजार । रहै विधि स्वामित वाजिय सार ॥

छं० ॥ ६८१ ॥

जलहन कवि का मारा जाना और उसका ऊदल को पुकारना ।  
दूहा ॥ जलहन भाट निराल लषि । सरन सुनी सै आय ॥

सुनियौ सुत जसराज के । सुरग भोग मन ल्याय ॥

छं० ॥ ६८२ ॥

रसावला ॥ कन्ह ऊद लघयो । नैन दोउ दिप्यौ ॥

बोलि बानी वरं । लीन छथ्यं सरं ॥

छं० ॥ ६८३ ॥

बीन भारी मनं । स्वामि सज्जै पनं ॥

जोध दोज चले । क्रोध बोलं मिले ॥

छं० ॥ ६८४ ॥

इष्ट बोले सुषं । ध्यान अंवा रुषं ॥

वान वाहं वियं । दुष्य सैना दियं ॥

छं० ॥ ६८५ ॥

वार लगै उरं । पार पागै परं ॥

भुमि लुटै वहै । अरध चंदं वहै ॥

छं० ॥ ६८६ ॥

काक सीसं लहै । सार झूटै सहै ॥

सेलि लागै हियै । प्रान छकै कियै ॥

छं० ॥ ६८७ ॥

सेलि वाहै वरं । ज्वान धरती परं ॥

रुक् वाहै कहूँ । ताकि मारै अहूँ ॥

छं० ॥ ६८८ ॥

जन्म दाढं दियं । प्रान कट्टी लियं ॥

पंजरं मारियं । पंजरं फारियं ॥

छं० ॥ ६८९ ॥

रंजकं नावते । स्वर सर धावते ॥

फौज मारी सहूँ । सीर कोपे विहूँ ॥

छं० ॥ ६९० ॥

मार मारं कियं । उदिल्लं विहसियं ॥

जह्मन संगयं । भाट जमं गयं ॥

छं० ॥ ६९१ ॥



दूहा ॥ उतै कन्ह आयौ उरप । इतै सु जदल जोध ॥  
बाहुवान चहेल कौ । मँडि सावँत करि क्रोध ॥

छं० ॥ ६६२ ॥

ऊदल और कन्ह का वरनी से युद्ध और ऊदल  
का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ मिले जदिल कन्ह दोऊ अभंग । विरचे सु जोधा दोऊ स्वामि संग ॥  
जपै इष्ट मंत्र उमाकंत सोई । भवानी धरै ध्यान धावँत दोई ॥

छं० ॥ ६६३ ॥

उमाकंत मातं जपंतं सुधाये । विहौ वारवानंत सनसुष्य धाये ॥  
मिली दिष्टि सौ दिष्टि वानी उचारी । अहा कन्ह केरौ चलै जोध भारी ॥

छं० ॥ ६६४ ॥

दल पातिसाही सवै तुम्ह जीते । अवै ऊदसौ प्याल सब आव वीते ॥  
घनै दिन पट्टी सु आषे वधाई । अवै उदल सौ पर्यौ प्याल आई ॥

छं० ॥ ६६५ ॥

उतै कन्ह वोल्थौ मछा रोस छोई । सुनौ नंदजसराज के बात सोई ॥  
इहां गौड़ नाही गढा ठाम जानौ । अवै कन्ह चहुवान सों जुद्ध आनौ ॥

छं० ॥ ६६६ ॥

विरचे दुहौ जोध आवख वर सें । घने वीर जोधानि के प्रान गरसे ॥  
चलावँत तीर सकत्तौ करारी । लगै वार छत्तौ परै फूटि न्यारी ॥

छं० ॥ ६६७ ॥

चलावँत वीर दुहौ वीर वांके । परै फूटि धरनी दुहौ सैन धांके ॥  
चलावँत सेल दुहौ वीर जोरे । सनाह वपू फूटि फूटँत धोरे ॥

छं० ॥ ६६८ ॥

वहै तेग वेग सहार हकारे । मनू पत्र चक्र कुलाल उतारे ॥  
चलावँत फरसा सिर फाक छोई । मनो विटियौ वाट चबूज सोई ॥

छं० ॥ ६६९ ॥

वहै अंग सीस सु अप्पार मार । किधौ कन्ह फोर तदधि ग्वाल सार ॥  
लगै मुदगर मार भारी सु सीस । कटै कैं हजार लट्ठकै सुदीस ॥

छं० ॥ ७०० ॥

चलावत गुरजं हकारं त हाकं । परीदल दुहुं माक दुहुं जोधवाकं ॥  
लगै जस दाढं सनाहं सुपुटै । वपू अंतले कालजे पार फूटै ॥

छं० ॥ ७०१ ॥

लगावत हांको हरी नंघ वारे । वरं कंगल जंग उर अंग फारे ॥  
इसी भांति कन्हं लरै उद्दि दोई । कटक अवट्टै दुहों कोप होई ॥

छं० ॥ ७०२ ॥

उतै कन्ह की भीर कयमास आयौ । वियं ठाक चाटा सिरं खर ठायौ ॥  
लप्यौ जलहनं भाट कौमास सोई । लियौ वीचही आय महावीर होई ॥

छं० ॥ ७०३ ॥

इते ठाक चाटा सुमुप मेल कीनौ । वली जलहनं तानि कौ वीच लीनौ ॥  
गही तेग दोई दुहौ वार कीनौ । तवै भट्ट विपरीति छोड पग लीनौ ॥

छं० ॥ ७०४ ॥

लगी जलहनं हाथ की तेग चाई । फिर्यौ चाहवानं सुधरनी गिलाई ॥  
वरं ठाक चाटा सिरं रूक वांही । लग्यौ वीर जलहनं पर्यौ मूमि माहीं ॥

छं० ॥ ७०५ ॥

उते आय कयमास सेलं चलायौ । वली जलहनं पेत धरनी मिलायौ ॥  
पर्यौ जलहनं देपि उदिल धायौ । वली कन्हकौ कंध मै पगनायौ ॥

छं० ॥ ७०६ ॥

भूम्यौ सात वारं सु कन्हं नरेसं । गह्यौ जदिल धाय हथ्यं सुवेसं ॥  
भर लथ्य वथ्यं सु जदिल कन्हं । इतै आइयौ दौरि परिहार नन्हं ॥

छं० ॥ ७०७ ॥

वली दूसरै वीर कयमास आयो । उरं उद्दि कौ आय सेलं लगायो ॥  
गही तेग कन्हं सिरं वार कीनौ । पर्यौ जदिल टूटि धरनी नवीनौ ॥

छं० ॥ ७०८ ॥

रुप्यौ रुंड धरनी सिरं हाक मारं । भयौ मेर ठाढौ सु जदिल हकारं ॥  
इतं जदिल रुंड धायौ सन्हारी । वली तेग कयमास कौ कंध भारी ॥

छं० ॥ ७०९ ॥

पर्यौ मूरछा दाहिमां भूमि आयौ । गह्यौ रुंड कन्हं धरनी मिलायौ ॥  
हथ्यौ जदिल कंह कयमास दोई । भजी सरब चंदेल की फौज सोई ॥

छं० ॥ ७१० ॥

उदल का कबंध खड़ा होना, फिर उसका चौहान सेना के एक  
हजार सिपाहियों को मारना ।

दूहा ॥ जदिल कौ नाच्यौ कमध । गिर्यौ सीस धर छर ॥  
हनि सैना प्रिथीराज की । एक हजार संपूर ॥

छं० ॥ ७११ ॥

चौपाई ॥ पहिलै जदिल कन्ह घूसायौ । पृथीराज सिर खरग लगायौ ॥  
चितिय कन्ह परिहार नवीनौ । भर मूरछा सामंत तीनौ ॥

छं० ॥ ७१२ ॥

दूहा ॥ तीनौ मिलिकौ मारियौ । रन जसराज कुमार ॥  
सारे भर प्रथीराज के । सिर विन एक हजार ॥

छं० ॥ ७१३ ॥

उदल का मरना जानकर कुंवर ब्रह्माजीत का मोरचे पर आना ।

कवित्त ॥ सुनि ब्रह्मादिति वत्त । काम जदिल रन आइव ॥

गै हरवल सब तूटि । सार सामंतनि षाडव ॥

सचसाल सकतेस । पर्यौ यौ करन अमानै ॥

सुरजन डोंगर परिव । परिव जल्हन नर पानै ॥

धर परे पील सै दोय रन । दस हजार हैवर वहर ॥

मुष बाह बाह जल्हन कहैं । कन्ह कटक कीनौ कहर ॥

छं० ॥ ७१४ ॥

चौपाई ॥ जदिल कटे वीर रन मांहि । छची धरम धरे उर मांहि ॥

ब्रह्मादिति बोले इह बानी । सुरग भोग भोगव मन मानी ॥

छं० ॥ ७१५ ॥

ब्रह्माजीत की सेना का व्यूह वर्णन ।

रसावला ॥ कियौ कुवार हल्लयं । चंदेल चाल चल्लियं ॥

हरोल पील कीलयं । अरी विपुट्टि दीनयं ॥

छं० ॥ ७१६ ॥

तमंकि बाग लीनयं । सु स्वामि धरम चीनहयं ॥

बनाय वेद फौजयं । विचारि आल्ह चौजयं ॥ छं० ॥ ७१७ ॥

मिले सरह सार कै । अनेक दाव धार कै ॥  
बन्धौ गरट सोलियं । विचै स वार होलियं ॥

छं० ॥ ७१८ ॥

चव्यौ सु आल्ह छाथयं । लियं सुभाट साथयं ॥  
उतै चुहान चलियं । सरह मेलि मिलियं ॥

छं० ॥ ७१९ ॥

सबंध साजि चलियं । कुंवार वीर पिलियं ॥  
कैमास कन्ह जैतयं । हमीर जुद्ध नेतयं ॥

छं० ॥ ७२० ॥

गम्हीर कन्ह कैसयं । मलैसी वीर वैसयं ॥  
हाहुलि राय मल्हनं । गोयंद राज जल्हनं ॥

छं० ॥ ७२१ ॥

पहार राज तुंवरं । चले समाज कुंवरं ॥  
उछाह आल्ह कीनयं । वनाफरं प्रवीनयं ॥

छं० ॥ ७२२ ॥

चल्यौ प्रमाल नंदयं । मनू ससी सु चंदयं ॥  
सरग भोग आसयं । पिलन्न पग्ग तासयं ॥

छं० ॥ ७२३ ॥

बुल्यौ वयंन वाचयं । सुनौ चुहान साचयं ॥  
जु भ्रंम जुद्ध किज्जयं । वचन पास लिज्जयं ॥

छं० ॥ ७२४ ॥

बुलाय जोध जोधयं । करै हथियार सोधयं ॥  
अधम्म जुद्ध छंडियं । सुधम्म जुद्ध मंडियं ॥

छं० ॥ ७२५ ॥

भाई का मरण जानकर आल्हा का पसर करना ।

दूहा । उदिल कामि सु आइये । दर्ई षवर प्रतिहार ॥

अब सुकाज परिमाल कै । सब तेरे सिर भार ॥

छं० ॥ ७२६ ॥

भुजंगी ॥ पर्यौ उदिल घेत सौ आल्ह जान्यौ । कियो क्रोध रंन सरन सुठान्यौ ॥

लियो नीरहृद्यं बुल्यौ वीर वानी । करी पैज मन में करी अंत जानी ॥

छं० ॥ ७२७ ॥

धरै ईस सुंड गलै आजु मेरो । उधारौ अबै नौन चंदेल तेरो ॥  
इसे बोल आरुहन सबकौ सुनायो । धरे तवामि धर में समर मध्य आयो ॥

छं० ॥ ७२८ ॥

चलाये दुहौ वीर बाँधै गरिष्ट । चलाए चमू के बली बाँधि थट्ट ॥  
करै षंड षंड भसुंडै निनारै । पिले वीर जोधा करी कुंभ कारै ॥

छं० ॥ ७२९ ॥

नल्लकै भसुंडै नि टूटै वरच्छी । लगै उंकवार परै वरत रच्छी ॥  
सरह घटा जे मि गाजंत गाजं । बली बाहु तोर सुवौ रसमाजं ॥

छं० ॥ ७३० ॥

घटा से न बंधी दुहौ वीर धायो । मनो पुव पच्छाह घन उमंडि आयो ॥  
दसकै लगै सांगि लगैव मोरा । वर फूटि सनाह फूटत घोरा ॥

छं० ॥ ७३१ ॥

मिले लहर सूर सु पूरै अपारै । गहै सूडि मत्ती सुदंती चिकारै ॥  
उतै कन्ह चहुवान कौमास धायौ । पचारै करत अपारै मिलायौ ॥

छं० ॥ ७३२ ॥

कहू की सुजा तोरि जारे उपाटे । किते एक जोधानि के सीस काटे ॥  
किते डोल गहि पील नाघंत धरनी । तरफा करै नीर उद्यो मच्छ करनी ॥

छं० ॥ ७३३ ॥

कहू हेमरतानि गहि तानि बाहैं । कहू पाप प्यादे गहै धरनि साहैं ॥  
कहू सांगि बाहैं कहू कूदि दारै । कहू वान छाडै सुयाट सुमारै ॥

छं० ॥ ७३४ ॥

कहू सीस गुरज कियौ घानि बाहैं । सिर चुन करत विपून दुगाहैं ॥  
कहू काट तै सीस रीस अमेर । कहू वर बली वीर बाहत जार ॥

छं० ॥ ७३५ ॥

कहू संकर सार बाहै अमानौ । मनो कीन मतवार सबै समानौ ॥  
कहू कंध पै बंध नावत फरसी । कहू जम्हराज सबै सैन गरसी ॥

छं० ॥ ७३६ ॥

कहं अंकुस सागि कौ पे सि खेते । कहं अरगला तौरि सिर माहि देते  
कहं वीर वाहै भसुं डौ निकारी । कहं कपिनी हूल हंक अकारी ॥

छं० ॥ ७३७ ॥

कहं सागि उमंगी वाहै अमोर । कहं सागि सै चील गावत जार ॥  
किधौ वीर किरवोन कर पानि वाहै । परे सुंड धरनी सुखं न चाहै ॥

छं० ॥ ७३८ ॥

कटारी किय अंग डर जात नामी । पुले द्वार मानौ अटारी सुवानी ॥  
कहं पंजर पंजर मार फारै । कह राजक वारि हीक सुधारै ॥

छं० ॥ ७३९ ॥

इसौ भांति कै मास कन्ह चलायौ । घनै सैन चंदेल धरनी मिलायौ ॥  
भगी सैन देपी चप आल्ह सोई । भए आप आगै रहे पीठि लोई ॥

छं० ॥ ७४० ॥

दूहा ॥ भगी सैन आल्हन लपी । सामंत तेज अयाह ॥

राखि सरन सैना सबै । भयो अग्र नरनाह ॥

छं० ॥ ७४१ ॥

आल्हा का कन्ह के मुकाबले में आकर उससे उत्कर्ष  
वचन कहना ।

चौपाई ॥ आल्हन ए सेना अप खरे । वचन कन्ह सौ बोलि करुरे ॥

सुनि चहुवान अपुन जंग कीजै । सब सेन कौ दुःप न दीजै ॥

छं० ॥ ७४२ ॥

आल्हा का निद्रास्त्र प्रयोग करके सब चाहुआन सेना को  
मूर्छित कर देना ।

आल्हन सक्ति कौ मंच उपायौ । सो अरुजंन कौ ईस बतायौ ॥

निद्रा अस्त्र प्रयोग सु कीनौ । औधत सांवत खर नवीनौ ॥

छं० ॥ ७४३ ॥

पडरी ॥ उच्चरै आल्ह बानी विराट । सुनियौ सुकन्ह कयमास याट ॥

सब सैन काज दुष देव काय । कौजिये जुझ सो संग चाय ॥

छं० ॥ ७४४ ॥

जं पियौ सुमंत तारा सुभाय । कौनौ सु ध्यान उर मध्य लाय ॥  
हूकार कियौ देवी बलिष्ट । किलकार कौन् हलकार द्रष्ट ॥

छं० ॥ ७४५ ॥

निद्रो प्रयोग कौनौ सुधीर । धारंत सरव सामंत धीर ॥  
कौसास कन्ध पुंडौर चंद । पज्जौन जैत सामंत द्वंद ॥

छं० ॥ ७४६ ॥

तौवर पहार अरु जैत सोइ । भौंहा चंदेल नरस्यंघ लोइ ॥  
परिहार पीप पंवार नन्ध । धावर सुधीर जयमाल पन्ध ॥

छं० ॥ ७४७ ॥

षडरवंड निवान सामंत सार । पीची सुगौड घेता पंगार ॥  
सामंत इत्त क्रोधंत ताह । वजरंग वीर तजि जंग राह ॥

छं० ॥ ७४८ ॥

औधंत औध चष नींद लाइ । छंडिव सु द्वंद सामंत भाइ ॥  
दौरे सु जेध चंदेल सैन । बलवंतवीर निरमोह तैन ॥

छं० ॥ ७४९ ॥

कित्तेक सौस टूटंत सार । कित्तेक अंग लै होत फार ॥  
केतेक चरन टूटंत जंघ । केतेक हथ्य तरफरत रंघ ॥

छं० ॥ ७५० ॥

केतेक खुर रन कठि हुलास । केतेक गये चहुआन पास ॥  
नरनाह कन्ह कौसास सोय । छंझौ सुजंग उनमत्त होय ॥

छं० ॥ ७५१ ॥

मारंत आल्ह सजि सैन खुर । करिये नरेस ऊपर करूर ॥  
अचिरज्ज पाप प्रिथीराज साव । वरदाय चंद बोल्यौ सिताव ॥

छं० ॥ ७५२ ॥

कौन्ही सुमत्त आल्हन अपार । सब छंडि जुद्ध सोवत सुहार ॥  
उच्चरै चंद सुनियो नरेस । कौनौ प्रयोग आल्हन सुवेस ॥

छं० ॥ ७५३ ॥

तारा सुअसच कौनौ उपाय । दीनौ सुमंच संकर सहाय ॥  
पारथ्य कौन कौरव समध्य । सो कियौ अब तुम पर प्रसिद्ध ॥

छं० ॥ ७५४ ॥

अवतार सल्ल को भयो आय । दीनौ सुसंच गोरष्य राय ॥

छं० ॥ ७५५ ॥

कवि चन्द का आल्हा की कथा वर्णन करना, उसका कहना कि आल्हा सल्ल का अवतार है, वह गोरष से मिला था और उनकी सेवा करके उसने वरदान पाया था ।

कवित्त ॥ कहै चंद सुनि राज । आल्ह अवतार सल्ल भय ॥

गय सिकार इक वार । राति उद्यान भूलि रय ॥

गिरिवर ऊपर सिखर । तहां गोरख रिप बैठिव ॥

भूलि गयो पा धरौ । फिरत वन सिद्ध खुदिटव ॥

लगिव पाय जसराज नंद । हय्य जारि विनती कियव ॥

मोहि संग लेहु उपदेस करि । तजौ भवन यह उर धरिव ॥

छं० ॥ ७५६ ॥

आल्ह सीस हय्य मेलि । कहिय गोरष मुप वानिय ॥

रहौ वरस लगि द्वार । देहु दरसन यह मानिय ॥

करै वनाफर-सेव । रैन दिन एक चित्त करि ॥

भरत मोद मन मोह । कोह नहि होइ लेस भरि ॥

एकलौ होय करि वंदगीय । अंतर गत सबहीं लख्यव ॥

बाईस पक्ष दिखौनि रिप । इक दिवस राजी भयव ॥

छं० ॥ ७५७ ॥

चौपाई ॥ तव गोरिप मुप बोलिय वानिय । आल्हां मांगि कछू मन मानिय ॥

वरस एक लग साधव मो कहुं । जो मांगौ सो समपौ ता कहुं ॥

छं० ॥ ७५८ ॥

गोरख का आल्हा प्रति वरदान ।

टूहा ॥ असच ससच सिषए सबै । कीनी अमर सुदेह ॥

जदिल लग ग्रह मे रहै । पाछे जाग सनेह ॥

छं० ॥ ७५९ ॥



चंद का पृथ्वीराज से कहना कि चामंडराय को परमाल को  
पकड़ने के लिये कालिंजर को भेजिये और अत्ताताई की  
आल्हा की बरनी कीजिये ।

चावंड को कीजे विदा । गहि ल्यावै परमाल ॥

आताताई अग्र करि । कीजै जुद्ध विसाल ॥

छं० ॥ ७६० ॥

राजा का चंद की कही करना ।

चावंड को जु विदा किये । कैद करन चंदेल ॥

आताताई अग्र करि । कियौ जुद्ध कौ षेल ॥

छं० ॥ ७६१ ॥

अत्ताताई और आल्हा का युद्ध वर्णन ।

चिभंगी ॥ करि कोप तवै पृथ्वीराज मन । अतताईय अग्र किये सजन ॥

मुष मंच उचारिय आप नृप । अरि को उपजावन देह दिप ॥

छं० ॥ ७६२ ॥

गिरजा हरि संकर ध्यान किये । अतताई नरेसर अग्र दिये ॥

महा कालिय ध्यान धर्यौ जबही । अतताईय सिंधि करी तवही ॥

छं० ॥ ७६३ ॥

वरवीर अराधन चंद किये । वर बल्हन वेहल कारि दिये ॥

विकरे सब वीर चले रन में । मुष मंच उचारत ही पल में ॥

छं० ॥ ७६४ ॥

किलकारिय कालिका आवत की । सब नींद गई उडि सावत की ॥

कथमास रु कन्ठ गजे जबही । सब सांवत जार बढ्यो तवही ॥

छं० ॥ ७६५ ॥

विय घंड बिहंड गयंद करै । आल्हा नानन घावन सौं जकरै ॥

नंद वानिय केसव आय गये । रन मध्य कथमास उठाय लये ॥

छं० ॥ ७६६ ॥

जितने अतताईय मेल किये । वर के सब के सु चिहल दिये ॥

लटव्यौ तन दोसव भूमि पर्यौ । वलिराज चँदेल सौ आनि अर्यौ ॥  
छं० ॥ ७६७ ॥

**कैसास और जगनक का युद्ध और जगनक का मारा जाना ।**

भर भाजत पील के दंत काढे । गहलौत सुगोयंद राज चढे ॥  
गजराज पर्यौ धरनी यल से । जगनक रुपै लायव वल से ॥  
छं० ॥ ७६८ ॥

अम्यौ नरनाह धरनि पर्यौ । तिह ऊपर दाहिम आनि अर्यौ ॥  
कैसास लगाइय तेग तन । अम्यौ कविराज समान रन ॥  
छं० ॥ ७६९ ॥

कविराज सु सांगि लई कर से । कयसास सुडार द्यौ घग्ग से ॥  
पर्यौ धर दाहिम जैत सुनी । सनसुप्य चलाइ के तेग हनी ॥  
छं० ॥ ७७० ॥

पर्यौ कविराज धरनि यल । जिन रुंड उद्यौ दोय देष दल ॥  
धरनी धर दोरत सीस विना । किरवान वहै रिस धारि मना ॥  
छं० ॥ ७७१ ॥

बहु साँवत मूरछ पीड, मही । रनकोर विजै कविराज लई ॥  
विन सीस जगनक पील हन्यौ । भट छूर महा चहुवान गिन्यौ ॥  
छं० ॥ ७७२ ॥

दृष्टा ॥ जगनक पर्यौ सुसीस धर । उद्यौ रुंड कर रोस ॥  
पील हन्यौ देषो न पति । कर किरवानह जोस ॥

छं० ॥ ७७३ ॥

**जगनक का पराक्रम वर्णन ।**

कवित्त ॥ रूपि जगनकरन माहि । हृथ्य वाहै वर हृथिय ॥  
कियौ कन्ध मूरछाह । वियौ कयसास समधिय ॥  
हनिन्यौ सैन हजार । रुंड नाच्यौ विन सीसह ॥  
मानि जार पृथ्वीराज । पील मार्यौ करि रीसह ॥  
कौनौ कहाव रन साझ कदि । लोह लहरि खँड मार करि ॥

जंपी सुचंद वानी वरनि । भाट ठाट कीनौ कहर ॥

छं० ॥ ७७४ ॥

अत्ताताई और आल्हा का परस्पर युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ आताताई आल्हा पर । हंकि चल्थौ वलवान ॥

वतै वनाफर आय के । झिल्ल्यौ वीच झिलान ॥

छं० ॥ ७७५ ॥

रसावला ॥ वीर जागे वलं । पील पागे हलं ॥

कीन ताछे कलं । होय काछे हलं ॥

छं० ॥ ७७६ ॥

कीन जोरे कलं । सीस छेदे हलं ॥

व्याल रचं वलं । चीर नचे नलं ॥

छं० ॥ ७७७ ॥

डील विरचे वलं । हंक सारे हलं ॥

ताकि सीस करं । विष्णुरो संमरं ॥

छं० ॥ ७७८ ॥

धाक हीये धरं । नेह न्यारे धरं ॥

घाव करते घनं । जाय जुरते जनं ॥

छं० ॥ ७७९ ॥

दाय देते दयं । तलप करते वयं ॥

घाव करते घटं । उल्लूषीते लटं ॥

छं० ॥ ७८० ॥

चोट करते चटं । षग घाटे षगं ॥

मार मारं रटं । सार सुद्धं सटं ॥

छं० ॥ ७८१ ॥

सार झारं रटं । काट करते कटं ॥

झारि झोनं मयं । भान षंचौ रयं ॥

छं० ॥ ७८२ ॥

चाव बढे हयं । लेह लयं वयं ॥

जंगरा रंगरं । भाम भंडे भरं ॥

छं० ॥ ७८३ ॥

जंग भारी सच्यौ । वीर नादं नच्यौ ॥  
भीमि लोहं सच्यौ । ईस नंदी सच्यौ ॥

छं० ॥ ७८४ ॥

फाग पगगं पिल्यौ । भूमि अंगं मिल्यौ ॥  
सत्तवारं जिह्मं । घाय घूमे दुहू ॥

छं० ॥ ७८५ ॥

वीर वाहै अरै । धुक्कि धरनी गिरै ॥  
भीम की चकही । पाव साचो वही ॥

छं० ॥ ७८६ ॥

देव देते दुहू । पाई माचे तिहू ॥  
आल्ह संग्या गई । मार भारी भई ॥

छं० ॥ ७८७ ॥

### आल्हा का मूर्छित होजाना ।

दूहा ॥ भर मूरछा आल्ह रन । आताताई इंद ॥  
ता समये प्रियीराज पुनि । वानी बुल्यौ चंद ॥

छं० ॥ ७८८ ॥

कविचंद का कहना कि आल्हा की मूरछा छूटने के पहले ब्रह्मा-  
जीत को मारलो ।

चौपाई ॥ आल्हा गिरे मूरछा घाई । दोज वीर गिरे धर आई ॥  
ब्रह्मादिति कौ बेगे मारौ । नातर आल्ह उठौ रन हारौ ॥

छं० ॥ ७८९ ॥

दूहा ॥ ब्रह्माजित सौं जंग करि । संभरि राव संहारि ॥  
जव जगिहै आल्हन सुभट । तव हारोगे रारि ॥

छं० ॥ ७९० ॥

पृथ्वीराज का हाथी बढाकर कुंवर ब्रह्माजीत पर बाण चलाना ।

कवित्त ॥ हंकि पील प्रथिराज । चल्यौ चंदेल सनस्सुष ॥  
इष्ट मंच उचारि । वीरवर धारि जंचरुष ॥

नरपति आप हँकारि । वान संधान पान किय ॥  
 पेचि राज कोदंड । कान लागि वान पिडं दिय ॥  
 सेदंत हीय छेदंत तन । फूटि सनाह हय धरनि लिय ॥  
 साथक वाहि संभरि धनिय । पग्न घोसि ठीलनि पिलिय ॥  
 छं० ॥ ७६१ ॥

दूहा ॥ तीर लग्यौ चंदेल उर । फूटि सनाह प्रवीन ॥  
 हय पाणर वेधे दुहौ । गगन सरत वे कीन ॥  
 छं० ॥ ७६२ ॥

**तीर लगतेही ब्रह्माजीत का पृथ्वीराज पर सांग चलाना ।**

कवित्त ॥ लग्यौ तीर चंदेल । धर्यौ प्रियिराज सनमुख ॥  
 कहि वायक हँकारि । बौर सहाय सहाव दुष ॥  
 आव आव प्रियिराज । चाव पग्ननि सौं पेलव ॥  
 करौ जुड जिसुद्ध । जुड सामंतनि ठेलव ॥  
 किरवान कुँवर धरि कर पकर । प्रियिराज पर चस्त्रियव ॥  
 हंकंत वीर वसंसाय यह । सहरि लहरि भर मिस्त्रियव ॥  
 छं० ॥ ७६३ ॥

**पृथ्वीराज और ब्रह्माजीत का युद्धाब्रह्माजीत का मारा जाना ।**

भुजंगी ॥ चलायौ चंदेल मुख चाहवान । पिथा वान अगं उमंग उठान ॥  
 लई सांगि गहिय हनी राजहीकं । भाई पार हीकं सुअंगं सुपीकं ॥  
 छं० ॥ ७६४ ॥

निदे कंगलं देह पूनी सलाकै । मनौ नट वानइ पेलै कलाकै ॥  
 घुमायौ बियं सांगि लागि चाहवान । करी मूठराजं जर्यौ पूरवान ॥  
 छं० ॥ ७६५ ॥

लग्यौ वान धायौ ब्रह्मादिति स्वरौ । हन्यौ राज किरवानं मथ्यं करूरौ ॥  
 लष्यौ चंद वरदाय नैनं सहृतै । लग्यौ हीक चंदेल की पार स्हतै ॥  
 छं० ॥ ७६६ ॥

कियौ मंत्र सज्जीवनौ भट्टराज । तवै वीर चहुवान चलयौ समाज ॥  
 लियौ अरधचंद्र चिती वान हथ्यं हन्यौ तीन चहुवान कै आय मथ्यं ॥

छं० ॥ ७६७ ॥

पर्यौ सील धरनी कुमार नवीनी । लियौ ईस धाय वरं सेल कीनी ॥  
भगी फौज पोली चह्वान जीतौ । हतौ मोरछा जंग आल्हन चीतौ ॥

छं० ॥ ७६८ ॥

आल्हा का अत्यंत कुपित होकर पृथ्वीराज पर आक्रमण करना  
और मंत्र अस्त्र प्रयोग करना पर कवि चंद का उन्हें  
काट देना ।

भयो चेत आल्हा इते अत ताई । लियौ पग हथ्यं मिले लोह आई ॥  
हन्यौ अन्य वारे करे दीय अंग । उमट्टै अहुट्टै नही जोध जंग ॥

छं० ॥ ७६९ ॥

करी पील आल्ह चह्यौ राजमुष्यं । धरै स्वामि धर्म उरं छर सुष्यं ॥  
चह्यौ छर वानी प्रिथीराज रूप । हरीस्यं कनकैस पालहन मूष्यं ॥

छं० ॥ ८०० ॥

वलीराम परिहार अचलेस भट्टी । निडुरराय भौहां हमीरं सुरट्टी ॥  
गम्हीरं प्रसंगं सुजादौ जवानं । तहां वगरी देव पेला सयानं ॥

छं० ॥ ८०१ ॥

तहां जन धावन्नं डरौरे जवानं । तहां हाहुली राव सड्यौ उठानं ॥  
तहां चालुके चेति सारंग धायौ । इते सेलि सामंत आल्हन चलायौ ॥

छं० ॥ ८०२ ॥

परे मूरछा जोग कयमास चंदं । वलीराय पज्जौन वाहं सु हंद ॥  
जहां निडुरराय तोंवर पहारं । पर्यौ पील पीपा वर स्यं भारं ॥

छं० ॥ ८०३ ॥

इते छर छते अचेतं उठानं । उतै सज्जस राय गोला कुटानं ॥  
वियं आय सामंत आल्हन रुक्कं । पचारै वियं न सवै उच्च कुक्कं ॥

छं० ॥ ८०४ ॥

लघे सावतं आल्ह वानं वरं से । महावीर जाधान के प्रान ग्रं से ॥  
कियौ गोरिषं ध्यान विघन पहारी । प्रयोगं गिरे सरव सावत भारी ॥

छं० ॥ ८०५ ॥

गुरुराज वरदाय आल्हन रायौ । लगाए सरं और हस्ती फिरायौ ॥  
बली राज विद्या अनेक उपाई । गुरु चंद आगै न जानन पाई ॥

छं० ॥ ८०६ ॥

भई इक बानी सुआनंद आई । अहो आल्ह गुरु भट्ट जीते न जाई ॥

छं० ॥ ८०७ ॥

चौपाई ॥ आल्ह मंच करिवान सँजूते । लगि लगि उर सामँत सब सूते ॥  
भए मूरछा सब वरदाई । गोरिष की विद्या फँलाई ॥

छं० ॥ ८०८ ॥

चंद राम गुर आयस पूते । रुके आल्ह सन्हर मंह तेते ॥

दाव अनेक करि हरि यकै । अंतरीछ गोरिष है वकै ॥

छं० ॥ ८०९ ॥

गोरखनाथ का संमुख आकर आल्हा को अपने साथ लिवा  
ले जाना ।

बोले गोरिष सुन रे भाई । वारहन भाट न जीते जाई ॥

संमर छोडि जोग पथ लीजै । काया काजै अमर सुकीजै ॥

छं० ॥ ८१० ॥

फिरे आल्ह समर तजि स्हर । गोरिष नै मत दीनै पूर ॥

देह अमर करि बन कौ धाये । छाड्यो भोग जोग मन लाये ॥

छं० ॥ ८११ ॥

दूहा ॥ आल्ह फिरे तजि समर को । छाडि भोग को वास ॥

गोरिष संग चलिकै गये । धीर निरंजन आस ॥

छं० ॥ ८१२ ॥

पृथ्वीराज के मूर्छित होने पर गिद्धिनी का उसकी आँख निका-  
लने लगना और संजय राय का उसे अपना मांस देकर  
राजा को बचाना ।

कवित्त ॥ लोह लागि चहुवान । परे मूरछा है धरतिय ॥

उड, गीधनि वैठि कै । चुंच वाहैति विरत्तिय ॥

देख्यो संजम राय । नृपति दृग दाढति पंछिन ॥  
अपनै तन कौ मांस । काटि भपु दियौ ततच्छिन ॥  
अपनै सु नयन देख्यौ नृपति । अंत समै ध्रुम मल्लियव ॥  
आये विवान वैकुंठ के । देह सहत धरि चलियव ॥

छं० ॥ ८१३ ॥

### संजमराय का प्राणान्त ।

दूहा ॥ गीधनि कौ पलभपु दियौ । नृप कौ नैन वचाय ॥  
देह हँसत वैकुंठ कौ । पहुँच्यौ संजम राय ॥

छं० ॥ ८१४ ॥

चावंडराय का परिमाल को कालिंजर से पकड़ कर ले आना ॥

कवित्त ॥ चावंड राय चलाय । जाय कालींजर वैठिव ॥  
दरवाजे करि बंधनारि । पौरनि मध बंधिव ॥  
पौछ लागि दाहिमा । जाय चंदेल हकारिव ॥  
आगे आये स्वर । मारि कीने बट धारिव ॥  
पकरियौ हृथ्य दिल्ली द्रुवनि । हय पै डारि सु चलियौ ॥  
तीसरै दिवस मध्यान दिन । चाहवान सो मिलियौ ॥

छं० ॥ ८१५ ॥

चावंड का कालिंजर के किले को लूटकर वहां चौहान के नाम  
का निशान रोप देना ।

पद्धरी ॥ चावंड जीति परिमाल ल्याय । परिहार सद्य सवही पिपाय ॥  
भोपत्ति पकरि पग पटकि भूमि । लीनौ सुनेज झंडा सुझूमि ॥

छं० ॥ ८१६ ॥

लीनौ सुहृथ्य चंदेल धाय । तीसरै दिवस रन मध्य आय ॥  
दाहिमा लागि चाहवान पाय । दीनौ सु पकरि चंदेल आय ॥

छं० ॥ ८१७ ॥

हाथी सुतीस गाजंत मद् । घोरे हजार इकतीस सह ॥  
पांच सौ जंट रोकत दाम । पच्चास लाख लाये सुताम ॥

छं० ॥ ८१८ ॥



मानिक्य हेम पन्ना प्रवाल । हीरा अनेक अमूल लाज ॥  
सत कोटि द्रव्य कीनौ सुमार । दाहिमा ल्याय सब जीति सार ॥  
छं० ॥ ८१६ ॥

चहुवान काज कीनी सलाम । समण्यौ आय चंदेल ठाम ॥  
गुरराज डंड चासुंड आय । उचाय नृपति पाटे बंधाय ॥  
छं० ॥ ८२० ॥

**पृथ्वीराज का खेत झरवाकर घायल सामंतों को उठवाना ।**

चहुवान हुकम कीनौ सुफेरि । दुंढौ सम्मर सामंत हेरि ॥  
कथमास कन्ह पज्जौन जैत । नरस्यंघ वीर जामिनि ससेत ॥  
छं० ॥ ८२१ ॥

तौवर पहार पुंडीर चंद । धावर सुधीर वह परे द्वंद ॥  
घेता घंगार हाड़ा हमीर । हाहुली रायधरि परिगं वीर ॥  
छं० ॥ ८२२ ॥

सब सुमट खर रन पर अचेत । भयौ विषम जुद्ध रचि औन घेत ॥  
वरदाय चंद गुरु राम देव । पढि मंच सजीवन सरब भेव ॥  
छं० ॥ ८२३ ॥

जग्गे सु सरब सामंत खर । दल मलि असंघि भूलहलत नूर ॥  
करि क्लृंच नृपति दिल्ली दिसान । पज्जौन बोलि हज्जूर आनि ॥  
छं० ॥ ८२४ ॥

तुम रहौ महीबे सुभट थान । धर सौपि भार हय गय प्रमान ॥  
छं० ॥ ८२५ ॥

**पृथ्वीराज का पज्जूनराय को महोबे का थानापति नियत  
करके दिल्ली को आना ।**

दूहा ॥ दियौ भार पज्जौन भुज । राषि महीबे थान ॥  
डंड छंडि परिमाल कौ । कीयौ नृपति पयान ॥  
छं० ॥ ८२६ ॥

चाहुवान दिल्ली नगर । कीनौ नृपति प्रवेस ॥

घर घर मंगल हेल हुव । आयौ जीति नरेस ॥

छं० ॥ ८२७ ॥

पृथ्वीराज का संजम राय के पुत्र को आधी गद्दी का आसन  
और आधे राज का पट्टा देना ॥

संजम राय कुंवर कौ । बोलि हजूर नरेस ॥

हय गय मनि मानिक बकसि । अध आसन अध देस ॥

छं० ॥ ८२८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रियराज रासो महोवा को  
समयौ संपूर्णम् ॥



पृथ्वीराज रासी

छठां भाग ।

अथ बान वेध प्रस्ताव लिप्यते ।

[ सङ्गठवां समय । ]

देवी जालपा के मन्दिर के कपाट खुलने पर कविचन्द्र  
का दिल्ली को जाना ।

दूषा ॥ कहै चंद वलीभद्र सस । अहो वीर जटजात ॥  
दह विघ्नस सुघ्नस सुमन । वज्रपाट विघ्नाट ॥ छं० ॥ १ ॥  
कवित्त ॥ वज्रपाट विघ्नाट । पाट उद्धारिग सबद सुनि ॥  
घंट घोर संक्रमन । भइय आकास सवन' धुनि ॥  
तप्यि त्रिविध गुन तीन । भीन जोगिनि पुर यानह ॥  
गहन चंद विष अंध । सुनिय संचरि किलकानह ॥  
परिनाम विरत उर तन्न मन । आस वास आसन तज्यौ ॥  
रत्न राज सपिम्पह मित्त तन । अम्स छांडि भ्रम्सह भज्यौ ।  
छं० ॥ २ ॥

मोतीदाम ॥ चलयौ रह ईस अलकह यान । छहकिय जम्सह घट्ट करौन ॥  
कम्यौ रह सथ्य वलीभद्र वीर । प्रसंसिय चंदह चित्त सुहौर ॥  
छं० ॥ ३ ॥  
चलयौ रह जोगिनि यान सुभट्ट । परी हिय गंठि मनो परि पट्ट ॥  
सुरत्तह चित्त निरंजन अप्य । धर्यौ हिय ध्यान अजप्पह जप्प ॥  
छं० ॥ ४ ॥  
चलयौ रह अप्पन मरह सुतन । रच्यौ निरकारवि लीयन मन ॥  
धर्यौ मन अप्पन सूनि सुभाइ । सुषंपति धाम धर्यौ निज माय ॥  
छं० ॥ ५ ॥

धरी रह मग्ग अमग्ग सुथान । न मंनहि उंचरु नीच नियान ॥  
न सुभ्भहि छुड पिपास सुमंन । तरस्सहि सीतर ताप सुतंन ॥

छं० ॥ ६ ॥

प्रमुच्छहि कोय न ऊतर देय । उल्लट्टिय जीह सुधारस खेड ॥  
न लप्पहि ग्राम न थान उधान । तरस्सहि ताप न सुप्प नमान' ॥

छं० ॥ ७ ॥

न बूझहि ताप न तम्म सरम्म । त्रिजाम्भन वासुर तास विरम्म ॥  
भयौ कवि ग्यान ग्रथल्लित रूप । न मंनहि अंतर अम्मरु भूप ॥

छं० ॥ ८ ॥

नहीं सुष नंघत ताप असीस । चरन्त उलास सुमंनन दीस ॥  
सजै सुविराम भिरामह मुप्प । चले चकि दिक्खिय रोह सरुप्प ॥

छं० ॥ ९ ॥

चल्यौ निज मग्ग सुमन्न उल्लास । संपत्त सुदिक्खिय सारध मास ॥

छं० ॥ १० ॥

दूहा । कवि आयौ दिल्ली पुर ह । देख्यौ नयर विरूप ॥

बिन आश्रन नर नारि सब । विना तेज ग्रह भूप ॥ छं० ॥ ११ ॥

श्रीहीन दिल्ली नगर की दुर्दशा देख कवि का हार्दिक  
विचार वर्णन ।

ग्रह गयौ कविचंद तव । मन गज्जनिय दिसान ॥

पुत्र कलत्र मिलंत कवि । सित जट्ट हित जान ॥ छं० ॥ १२ ॥

वर पुरन् लोइय सघन । कन दिट्ट नहि राज ॥

मन साया छंडै ग्रहौ । ग्रान प्रमुक्कन काज ॥ छं० ॥ १३ ॥

प्रथम वैर भंजन मनह । दुति साई उडार ॥

लोक जोग कित्तिय कहैं । सुकीय चंद सुडार ॥ छं० ॥ १४ ॥

कवित्त ॥ हकि चित्त कवि अप्प । पेम राजन पर अत्यौ ॥

नयन मंडि सब निरषि । दिप्पि सब लोक विरत्यौ ॥

लषि आयौ कविचंद । नयर नर नारि सबनि मिलि ॥

( १ ) ए० छं० को०—समान ।

मनहु महुँ मधु मास । अहो अचिज्ज चित्त दूलि ॥  
 पुच्छै न कोय उत्तर दियै । नयन झरै गिर विष्कर्करन ॥  
 उच्चै न वच्च आपूर कंठ । स्वेदस वपै ताम मन ॥

छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ निरषे कवि सब लोक मुनि । दुरज काल गति मान ॥  
 राम प्रेम अति चास उर । चल्थौ अण्ण गृह गाम ॥

छं० ॥ १६ ॥

कवि की स्त्री का सब हाल कहना और राजा का बंधन  
 सुन कर कवि का दुखित होना ।

इम कवि आयौ जात करि । गृह सुपिप्पि द्विग काज ॥  
 पुछ्यौ सुत्त सुतीय तिहि । कहा करै प्रथिराज ॥

छं० ॥ १७ ॥

तव सुत्रिया उत्तर दियो । बोलि सुहावने बैन ॥  
 गोरी दल नृप संग्रह्यौ । कियौ साह विन नैन ॥ छं० ॥ १८ ॥  
 सुनत अवन धरनिय परिग । हरि हरि हरि मुष जंषि ॥  
 उद्यौ मनह विश्राम करि । भयौ विविन सन कंषि ॥

छं० ॥ १९ ॥

कवि का राजा के उद्धार का निश्चय विचार करके  
 योग धारण करना ।

मन राजन उद्धार मति । मान काल कृत नडि ॥  
 भसम अंग औ धूल किय । जोग रूप जट बंधि ॥

छं० ॥ २० ॥

मुनि पुत्र पारस फिरिग । तव तरसे कवि तंषि ॥  
 छंडि वसत दिषि रूप दुर । मन विरत्त रत अंषि ॥

चंद वाक्य ॥

छं० ॥ २१ ॥

वृथा गल्ह संसार सुष । गल्ह सत्ति अविनास ॥  
 आषेपित आतम सरिस । करौ गल्ह गुर भास ॥ छं० ॥ २२ ॥

( १ ) ए० कु० को०—विभ्रम ।

## कावे का भवानी की स्तुति करके निर्विघ्न ग्रंथ की पूर्ति के लिये विनय करना ।

भुजंगी॥\*ऊँकारं नमो कल्याणी सु कमला । कला रूपिनी काम दाई सु विमला॥  
कुमारी कल्या कल्या कराली । जया विजया भद्र काली काली॥

छं० ॥ २३ ॥

शिवा शंकरा विष्णु वीमोहनीयं । वराही चमुंडा दुर्गा जोगिनीयं॥  
महालक्ष्मी मंगला रत्न अंघी । महामाद्र पारवती ज्वालमुंघी ॥

छं० ॥ २४ ॥

तुहीं गंग गोदावरी गोमतीयं । तुहीं नर्वदा जमला सरस्वतीयं ॥  
तुहीं द्वारिका मथुरा रूप कासी । तुहीं तीरथं श्रव मन्त्रे निवासी ॥

छं० ॥ २५ ॥

तुहीं कोटि लहरिज लीड प्रकासा । तुहीं चंद्र कोटि कानन भासा ॥  
तुहीं कोटि सामुद्र हीयै गंभीरा । तुहीं कोटि प्राकृष्य लीयै समीरा ॥

छं० ॥ २६ ॥

तुहीं कोटि आकास वित्तार धारा । तुहीं कोटि सुम्मेर छाया अपारा ॥  
तुहीं कोटि दावानल ज्वालमाळा । तुहीं कोटि भैभीत जंम कराला ॥

छं० ॥ २७ ॥

तुहीं कोटि सिंगार लावन्य कारी । तुहीं राधिका रूप रीति सुरारी ॥  
तुहीं विश्वकर्ता तुहीं विश्वहर्ता । तुहीं यावरं जंगम मै प्रवर्ता ॥

छं० ॥ २८ ॥

तुहीं पातिका नासिनी नारसिंघी । तुहीं जग्गमाता अने कंसुरंगी ॥  
तुहीं साकिनी डाकिनी रूप धारा । तुहीं आप लगे तुहीं यै उवारे ॥

छं० ॥ २९ ॥

तुहीं तौहि जाने सुतेरे किरत्तं । कहां लगि चंद्र लपे तो चरित्तं ॥  
अजमेर धानं सिकारं भुलायौ । तहां बीर वावन्न सिद्ध मिलायौ ॥

छं० ॥ ३० ॥

\* इस छन्द के कई चरण भुजंगी छन्द के प्रस्तार के विरुद्ध पड़ते हैं परन्तु पाठ चारों प्रतियों में समान है ।

पहिले उमा कामती मटु किनौ । बलं सेवरा मंच छंडाय दिनौ ॥  
वहे वाद आयौ सुदुग्गा केदारं । तहां अविदा अव रष्यौ अपारं ॥

छं० ॥ ३१ ॥

बिना पून पछै किए यह बालंगयौ रुक्मि सा द्रोह मक्ष्मै दिवालं ।  
पठायौ नृपं कंगुरानी पुकारं । उठी बाहरं ठाहरं फेरि धारं ॥

छं० ॥ ३२ ॥

सकती हरी तै सकती सुभाटं । ग्रह्यौ मेछ सोईन पुल्लै कपाटं ॥  
गयौ गज्जनै पाति की पत्ति लीयै । कलना न आई पलं दुष्ट हीयै ॥

छं० ॥ ३३ ॥

असं पत्ति कट्टो कुपे पिथ्य अंघी । पर्यौ पंजरै जानि वेहाल पंघी ॥  
दर्ह गति राजं गती कौन जानै । कषा लेष लेख्यौ अजू चाहुआनै ॥

छं० ॥ ३४ ॥

जिनै इध्यलं सिंघ हस्ती निपातै । तिनै घेरि मारै कुरंगी सुलातै ॥  
जिनै वाज सिक्कार पिस्ली लवा कीतिनै चप्प लावै दिपावै दवा की ॥

छं० ॥ ३५ ॥

इसी गति तेरी अलप्य कषानी कषां लो गिनाओ कहीं वागवानी ॥  
करी राव तै रंक रंक सुराव । कषा हाथ आवै किए ए सुभाव ॥

छं० ॥ ३६ ॥

पराक्रम छत्ते अछत्ते भर क्यों । दिलीपति से वंधि के मां दर क्यों ॥  
हर अक्ष वैरीन की जिति दिख्यौ किना चाहियै सेवक कीन पिथ्यौ

छं० ॥ ३७ ॥

बुरे सुष्य वारें लंगूरै सुधानै । सुरं सारिघे लहर सामंत भानै ॥  
घरं जोरि जंपौ सुनौ श्रीभवानी । भली किन्न साहाय संसार जानै ॥

छं० ॥ ३८ ॥

करो पुरनं पुस्तकं अब्र जी लो । विघनं हरौ सभरी राव तौ लो ॥

छं० ॥ ३९ ॥

दूहा । सीत करन कारज चलयौ । जी मात प्रसादे भोग ॥

करि रासो प्रथिराज कौ । किति चलाओ जोग ।

छं० ॥ ४० ॥



अन्न पान पोनीय सुकि । पुध पिपास तजि मोह ॥

देव दुग्ग सों चंद कवि । गय राजन वर छोह ॥

छं० ॥ ४१ ॥

कविचन्द का कोरी पोथी हाथ में लेकर भवानी का  
ध्यान करना ।

कवित्त ॥ भट्ट ग्याति नष पिम्भ । मित्त सामंत खूर सब ॥

उभय सुरिन प्रिथिराज । तेने निवृत्त करौं अब ॥

ग्रान कलपि पति काज । एक रिन एम उधारौं ॥

जीह गंठि गुन गरुअ । उभै रिन नाम उतारौं ॥

इम चिंत चिते कविचंद उर । अण्य थान जुगिन गयौ ॥

आकृम मंच देवी सुकवि । विन अण्यर पुस्तक लयौ ॥

छं० ॥ ४२ ॥

रासो की छंद संख्या वर्णन ।

ग्रहि पुस्तक कविचंद । मंच सरसै उच्चरिय ॥

सुष निवास किय जांस । ग्रन्थ सुर वर विस्तारिय ॥

लिषि पुस्तक कविचंद । सहस सत्तह नष सिष उभ ॥

मूत भयछ्यत वृत्त । सबै भूत वंस कृम सुभ ॥

इम करिय ग्रंथ पूरन सुकवि । पढ़िय पुत्र हथ्ये दियन ॥

लिषि मंच पछय कवि जल्ल सुअ । अण्य मंग गज्जन लियन ॥

छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ इम चिंतिन कविचंद करि । भौमन वच कृम एक ॥

सारद सुभ मति ध्यान धरि । वानी वचन विवेक ॥

छं० ॥ ४४ ॥

देवी का कवि को दर्शन देना और कवि का  
वर मांगना ।

अरिल्ल ॥ लै पुस्तक पढ़ि मंच घन । करि कविचंद सुवेद धुन ॥

बहु भति अनेक अलाप किय । बहु जाप सु मंचय हीम विय ॥

छं० ॥ ४५ ॥

दूहा ॥ वानि उमा माधुर धुनौ । पढ़ि अनेक रस भंति ॥  
देवि दरसि कविचंद कौ । भक्तहलंत दीसंत ॥ छं० ॥ ४६ ॥  
सरस्वती वाक्य ॥

जाहु अचिंतिय कवि कहय । वर सुभट्ट गुन वीर ॥  
जौ प्रसाद वर मांगिहै । दीय वयन सुह तीर ॥ छं० ॥ ४७ ॥  
कवित्त ॥ वाल समंपिय सत्ति । भट्ट लिनौ संपुत करि ॥  
सोगुन सुह अप्यौ । जिहि सगुन विस्तरै राज धुरि ॥  
चलै कित्ति जग मग । चंद चंदान देव वर ॥  
धरन राज अप्यन्न । वास निम्मान अप्य कर ॥  
जे देव मनत तरवारि तन । तिहि अप्यन चहुआन रिन ॥  
तं तत्त वान जानै सकल । अकल कित्ति जंपौ सुमन ॥  
॥ छं० ॥ ४८ ॥

### रासो के रचना समय की सीमा ।

दूहा ॥ उभै मास दिन अछ वर । किय रासौ चहुआन ॥  
रसना भट्ट सुचंद कौ । बोलि उमा परमान ॥ छं० ॥ ४९ ॥  
सहस सत्त रूपक सरस । गुन सुंदर बहु वित्त ॥  
ले पुस्तक कविचंद कौ । दिय माता बहु रित्त ॥ छं० ॥ ५० ॥

### कवि का अपने पुत्र जल्ह को रासो पढ़ाना और स्त्री से विदां मांगना ।

फिरिय आय जोगिनि पुरह । रासौ गुन दै पुत्त ॥  
पुच्छि चीय परिवार सब । कहौ तौ साधौ मुत्ति ॥ छं० ॥ ५१ ॥  
मिलन चंद चहुआन वर । पुच्छि सुचिय मत चार ॥  
दंपति गंठि अछेह बंधि । अरु न कि अछिनन चार ॥ छं० ॥ ५२ ॥  
वरनिय वर पुछ्यौ सुवर । मम तजि जिय तर जीय ॥  
सो ग्रहि वर पावन करि । सो ढिखिय अन पीय ॥ छं० ॥ ५३ ॥

कवि का अपनी स्त्री से कहना कि संसार में एकमात्र  
कीर्ति ही सार है ।

कविचंद वाक्य ।

कवित्त ॥ न रहै तन धन तरुनि । तरुनि किरनह उदै अस्तं ॥  
पंद कला परिपष्य । राह करि अस्त विगस्तं ॥  
न रहै सुर नर नाग । जोग भगै जुग भगै ॥  
न रहै बापी कूप । संत सायर गिर लगै ॥  
जानै सुजान अप्पर अमर । विवरि विवरि पूछत रहै ॥  
अपि काल व्याल कलि काल सब । रहै तौ गुर गल्हां रहै ॥

छं० ॥ ५४ ॥

रहै जुगै जुग गल्हा । द्रुग परहरे अष्ट गिरि ॥  
दिष्टि मान विनसिहै । इंद्र तुटि राह सुसंकरि ॥  
तहां छहंत जप वली । बंध नन नाटिक कथ्यं ॥  
माया तन चुक्यौ । चंपि कल पंच सु दृष्यं ॥  
अव किति किति भाजै नहीं । गयौ प्रान से संग्रहै ॥  
दो हंस हंस संजोगि सों । मिलन दृष्य अग्यौ दहै ॥

छं० ॥ ५५ ॥

दूहा ॥ सुभ विलाह न करौ चिय । गुर गल्हां गुन संचि ॥  
जो दिष्यि सो भजिहै । कलन कहौ वर वंचि ॥

छं० ॥ ५६ ॥

कवि का योगी भेष धारन करना और स्त्री का पुछना कि  
योग का पराकाष्ठा क्या है ।

द्रव्यन लैं बंदै सु कवि । तत्र दिषायन चीय ॥  
जुग गहँनौ माया तजन । चित गजन दिस कीय ॥

छं० ॥ ५७ ॥

लोतीदास ॥ अरि वर द्रुपद तत प्रहार । रसी रस निघ सुविघ सुभार ॥  
सयौ कलना वर वीर सुभट्ट । छिनं तत पत्त सुतत्त अघट्ट ॥

छं० ॥ ५८ ॥

सुगच्छ विना दिय वीर सुभट्ट । धर्यौ सिर केसन जट्ट सुदट्ट ॥  
छिनं छिन द्रुपद लै कर तथ्य । करै प्रतिय्यं व सुरंगिघ कथ्य ॥

छं० ॥ ५९ ॥

हहंतुअ हहंतु एत्तुअ कौन । सुनंत सु सह रघै करि मौन ॥  
कहौ तृअ जाति सुभतिय नाम । कहौ तिहि जोति प्रगट्टय काम ॥

छं० ॥ ६० ॥

अजद्व गयान कहौ गुर गति । सुषं दुष भोगिय को जिय पति ॥  
सु कौ प्रभु कौन पुरी कह दास । कहौ अविनासिय काहि विनास ॥

छं० ॥ ६१ ॥

सु कौ सुविदायनि दावन कौन । सु कौ वर तदव्य कौन समौन ॥  
कहौ रत रत विरत्त प्रकार । कौ जोग तरन्न बुझौ नन भार ॥

छं० ॥ ६२ ॥

कहौ कहि मग्न पिया पिय जोति । कहौ कहि कम्म सुगति सुधौति ॥  
अहौ कथि कथ्य कवी जल विंदु । सु उत्तर ताहि दिथै कविचंद ॥

छं० ॥ ६३ ॥

कवि का स्त्री को योग साधना की विधि और उस की  
सिद्धि संक्षेप में बतलाना ।

दोधक ॥ द्रुपद लै प्रतिय्यं व सु सहय । चंद सुचंद कला प्रति बहय ॥  
दादस दून तितन ते जंनिय । पंचनि आस प्रकृति सु हंनिय ॥

छं० ॥ ६४ ॥

ता सर एक कवल प्रगासिय । देषत ताहि गयौ अम नासिय ॥  
नीलहि नील चरन सु मुत्तिय । जुत्तिय मान प्रमान सु जुत्तिय ॥

छं० ॥ ६५ ॥

तापर सह अनाहद होइय । ब्रह्म अनंत अनंद सु जोइय ।

रेचका कुंभक पूरक पूरय । नाभि बटै जुग वद्ध संजूरय ।

छं० ॥ ६६ ॥

उट्टय बीर कलंकल वानिय । और सुभट्ट भयानक जानिय ॥

छं० ॥ ६७ ॥

अरिख ॥ वेद अभट्ट सुतत्त प्रकारं । पंचय वीर प्रकृति सुभारं ॥

सुष प्रति तीन जयं गुनवासी । विंदुग लुट्टिय सुगति सुरासी ॥

छं० ॥ ६८ ॥

नीसल नील वरन सुमोती । प्रोति प्रमान प्रमान सुजोती ॥

भुम्भि द्रवै द्रिग अंमर भीजै । द्रुभृगुटी रविमंडल लीजै ॥

छं० ॥ ६९ ॥

नासिक अग्र दिठै छिठ रष्यै । छै उर संभ अलष्य सुलष्यै ॥

कोम विराम पगै पग पंडय । जीरन वस्त्र जेस तन छंडय ॥

छं० ॥ ७० ॥

जैसी नीर मनसा निध पायौ । तौ ब्रह्म अनंद अनंदह जायौ ॥

पंच दसै मनसा दस सारै । कृष्ण सबै सिर तै भर डारै ॥

छं० ॥ ७१ ॥

आसन इष्ट विभूति सुदीसन । ग्यान सु छन विग्यानन सीसन ॥

श्रीमन मच्छर मारहि मारं । तौ अस दाह तिरै भव सारं ॥

छं० ॥ ७२ ॥

माखत रस भोगंतत भंती । ग्यान पग विस्तर कर दिती ॥

कहै सकि तजि संक न भट्टं । चलै चंद सुगती वर वट्टं ॥

छं० ॥ ७३ ॥

जो जग दिष्य सु दिष्यन कव्वी । ज्यौ घटिका पट दभ्र भहि हव्वी ॥

छै घट घट्ट घटं बहु जानै । पुरन ब्रह्म ब्रह्म पहिचानै ॥

छं० ॥ ७४ ॥

जोति मैं जोति सु तोहि बतायौ । सोइ चंद विरलै किहि पायौ ॥

छं० ॥ ७५ ॥

हूछा ॥ वपु विभूत बहु विंटयौ । जट बंधी जम जूत ॥

मन माया मुक्कवि चण्यौ । को पूजै अवधूत ॥ छं० ॥ ७६ ॥

( १ ) ए० कृ० को-पूरय ।

( २ ) ए० कृ० को०-तीजै ।

चंदचिया वाक्य ॥

कवित्त ॥ सुनौ चंद पापंड । केस लोचै जट धारै ॥  
 कौय भसम ऋतु' काम । अन्न तापसी विचारै ॥  
 वेद कुरान पुरान । ने असा सुर नर ध्यानं ॥  
 परम मंस रावर भगत । कव्वि सुनि सेवि सृजानं ॥  
 त्रिफुल्ल सवह इह गहह कहि । मंच जंचक वेदंत पुग ॥  
 दौ धूत रत्त अनरत्त कौ । सबै तप्य माया तपन ॥ छं० ॥ ७७ ॥

चंद वाक्य ॥

दोहा ॥ इन विध जोग जुगति लिपि । चिय बुझुकी तन ग्यान ॥  
 क्रोध मोह माया तजै । और विटवन जान ॥ छं० ॥ ७८ ॥

कवि की स्त्री का शंका करना कि एक पंथ दो काज  
 कैसे सध सकते हैं ।

चंदचिया वाक्य ॥

चौपाई ॥ उत्तर जानि चिया पय लग्गी । तुम पिय नाद अनाहद जग्गी ॥  
 जोग' जुगति उधार न सामं । दो दो गहह सरै किम कामं ॥  
 छं० ॥ ७९ ॥

कविचन्द का उत्तर ।

चंद वाक्य ॥

दूहा ॥ सकल जोग साई सुभ्रम । तप जप साई भ्रम ॥  
 मोहि सुगति सुभक्त मरम । सुजस किति गुन क्रम ॥ छं० ॥ ८० ॥  
 दिवस रयन राजन सुमति । अरु गजन वै रोस ॥  
 मन वच क्रम एकंग होय । सामि उधारौ दोस ॥ छं० ॥ ८१ ॥  
 उभै सत्त नव रस त्रिगुन । किय पूरन गुन तत्त ॥  
 रासौ नाम उदहि जुति । गहौ मति मै सति ॥ छं० ॥ ८२ ॥

(१) ए० कृ० को०-क ।

[२] सो०-लोभ ।

[३] ए०-भोर ।

(४) मो०-उभय सत्तर नौ रस त्रिगुन ।

कविचन्द के पुत्रों के नाम औ भव श्रेष्ठ जल्ह को  
कवि का रासो पढ़ा कर खाना होना ।

कवित्त ॥ दहति पुत्र कविचंद । स्वर सुंदर सुजानं ॥  
जल्ह वल्ह बलिभद्र । कविय केहरि वष्यानं ॥  
वीर चंद अवधूत । दसम नंदन गुनराजं ॥  
अप्य अप्य क्रम जोग । बुद्धि भिन भिन करि काजं ॥  
जल्हन जिहाज गुन साज कवि । चंद छंद सायर तिरन ॥  
अप्यौ सुहित रासो सरस । चलयौ अप्य राजन सरन ॥  
छं० ॥ ८३ ॥

दूहा ॥ दहति पुत्र कविचंद को । सुंदर रूप सुजान ॥  
इह जल्ह गुन बावरो । गुन समंद ससि मान ॥ छं० ॥ ८४ ॥  
आदि अंत लागि वृत्त मन । वृत्ति गुनी गुन राज ॥  
पुस्तक जल्हन हृष्य है । चलि गज्जन नप काज ॥ छं० ॥ ८५ ॥  
कविचन्द का अपनी धुन में मस्त होकर गजनी  
की राह लेना ।

कवित्त ॥ वपु विभूति विंटियौ । केस जम्जन विधि बंधी ॥  
बहु वियोग ग्रह जोग । चित्त जुग जुगल संधी ॥  
छुध पिपास दम मोह । छोह विन्धौ वर साई ॥  
वर विग्रह चिंतयौ । सुक्कि विग्रह शुक्ल साई ॥  
वरदाय चंद दुबल अवल । वपु सुपेम सुकंद घुत ॥  
सुकयौ मान चिमान बस । इह अजुत जौ पैत जुत ॥ छं० ॥ ८६ ॥  
दूहा ॥ एकाकी सह संग तजि । मिलि राजन सुत सोम ॥  
तपत तुंग तो वृत्त जहि । है इह जग घग नोम ॥ छं० ॥ ८७ ॥  
इह काहि कवि चल्यौ भवन । गवन कियौ दिसि साहि ॥  
दुसह जम्म सज्जन मिलै । धर गज्जनी सुगाह ॥ छं० ॥ ८८ ॥  
सरसै वर अरु कंठ वर । अरु सु हियै वर वीर ॥  
हिंदु कहै हम देव हैं । मेछ कहै हम पीर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

( १ ) ए० छं० को०—तपत तुंग जो वृत्त काहि । ( २ ) मो०—दीन ।

चिंति ठाम प्रथिराज कौ । वाल्पन निज नेह ॥  
 चल्थौ भट्ट सजि जोग तन । ता न्विवदन अछेह ॥ छं० ॥ ६० ॥  
 चल्थौ चंद वरदाय वर । तजि समुद्र वर मोह ॥  
 पट्ट वरन भर भट्ट कौ । दहि विरह वर छोह ॥ छं० ॥ ६१ ॥  
 गहिग चंद रह गज्जनौ । जट पट वंधि विपान ॥  
 प्राण हरो साधो सुगति । जो मिलिहौ चहुआन ॥ छं० ॥ ६२ ॥  
 गहिग चंद गज्जन सुरह । जह सजन सु नरिंद ॥  
 कवहो नैन निरपि हौ । मनो छार अरविंद ॥ छं० ॥ ६३ ॥  
 जोग जानि लग्यौ सुमन । जोति साद जिय लीन ॥  
 अगम निरंजन आदि सुनि । तिहि अचित चित चीन ॥ छं० ॥ ६४ ॥  
 छार सवर अरु कंठ वर । हिय रोहे वर वीर ॥  
 सब देवन में देव है । मेछ मछमद पीर ॥ छं० ॥ ६५ ॥

### दुर्गम मार्ग की कठिनता का वर्णन और कवि का क्लान्तचित्त होना ।

पहरौ ॥ सम चल्थौ भट्ट गज्जन सुराह । वन विषम सुषम उगाह गाह ॥  
 रह उंच नीच सम विषम थान । गह वरन सैल रन जल थलान ॥  
 छं० ॥ ६६ ॥  
 द्विग जोति लग्न मन सवद भीन । भुल्यौ सरीर निज मग्न घीन ॥  
 रत्नौ सुजोग मग्नह सख । जरमगत जोति आयास भूव ॥  
 छं० ॥ ६७ ॥  
 त्रिग जोति संप्रति प्रथिराज अंग । निरकार जीय रत्नौ सुरंग ॥  
 भुल्यौ सुमग्न गज्जनह भट्ट । वन चल्थौ थान उद्यान थट्ट ॥  
 छं० ॥ ६८ ॥  
 उभरत इभम सम अभम नह । के लरत भिरत भज्जत समह ॥  
 उद्यान तज्जि संग्रहै एक । गुंजहिनि वध मग्नह अनेक ॥  
 छं० ॥ ६९ ॥



जुग हेत दंति सिंघहि सुरम्भ । अगि वधघ पंघि अजगर अदम्भ ॥  
सा पंच चिरह संग्रहै सास । सा वह वनंचर विषम भास ॥

छं० ॥ १०० ॥

गुंजरत दरिय समीर सह । निष्करत करत नद रौर नह ॥  
वन विकट रंध कौ चक्र राह । सहहि सु ताम समीर गोह ॥

छं० ॥ १०१ ॥

उहुत उरग धरतर सुलग्न । सुभ्रुह न विदिसि दिसि मभ्रुह मग्न  
वन चलयौ मभ्रुह भट्टह भयंक । रत्नौ सुजोति सज्जे निसंक ॥

छं० ॥ १०२ ॥

निष्करहि करिय करहर कहर । उभरहि सलित सलिता सपूर ॥  
कलरव करंत दुज नेक भास । तर विकट सघन पंघिनि हुलास ॥

छं० ॥ १०३ ॥

निसि दिवस भट्ट वन चलयौ जाम । संभर्यो राज भौ अस्म ताम ॥  
वेध्यौ सुअंग छुवा पियास । तर धवह देषि लग्गे अयास ॥

छं० ॥ १०४ ॥

वैठौ सुतकि भौ संभ स्याम । चितै सुचिंति चंडी भिराम ॥

छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ षट पुरान पारसि निपुन । निगम अगम नह चंद ॥

अह निसा कानन कुहर । भयौ भट्ट गति मंद ॥ छं० ॥ १०६ ॥

छुध पिपास लग्गी तनह । निद्रा भै मिटि गैन ॥

नहीं कहं चहु दिसि सुगम । दिसि दिष्यै जसौन ॥

छं० ॥ १०७ ॥

दिवस तीन पंथह धहिग । गनी न अह निसि संभ ॥

षट दिन नयन असुभ्रुह भय । यकि खतौ वन मंभ ॥

छं० ॥ १०८ ॥

**कविचन्द का भगवती का स्मरण और स्तुति करना ।**

मन वच क्रम चित्तै सुचित । वरदाई वर देव ॥

तुअ कारन तारन तवन । नमो नमो सुर देव ॥ छं० ॥ १०९ ॥

भुजंगी ॥ नमोहं नमोहं नमोहं सुचंडी । सथानं चिसंचं सभू पंच मंडी ॥  
निकारं अकारं सकारं सरूपं । सदा तत्त सौ तत्त चौबीस नूपं ॥

छं० ॥ ११० ॥

चयं मक्ष चयं गुनं चयं थानं । चयं पाय वामनं चयं किसानं ॥  
कला पोड़सं रूप पोड़स्स राया । दुअं चौस रूपं हलं छं पराया ॥

छं० ॥ १११ ॥

रुचं पंच वानं दहंसं समीरं । दहं नारि दुवारि वाहं समीरं ॥  
जंकार सारं श्रींकार सज्जै । ह्रींकार हुंकारि सारूप रज्जै ॥

छं० ॥ ११२ ॥

क्लिंकार ब्रूंकारं कुंकार कारी । श्रींकार कूंकार श्रींकार सारी ॥  
श्रींकार छूंकार सामाच माई । नमस्ते नमस्ते नमो जग्ग जाई ॥

छं० ॥ ११३ ॥

जहां संगटं दुष्घटं निज्ज सेवं । नहीं मात तातं नहीं बंध देवं ॥  
नहीं को सहायं जहां कोन जायं । तहां तौ अरुणै निजं सेव सायं ॥

छं० ॥ ११४ ॥

इरौ मुक्क चिंता तनं तपि भारी । दियौ चिंत ता सह सायं कुमारौ ॥  
छं० ॥ ११५ ॥

दूहा ॥ सुमरि देव वरदाय वर । मक्कि वन वीक्क भयं क ॥

लहौ न दिस अरु विदिस निस । जग्गि नहीं मन हं क ॥

छं० ॥ ११६ ॥

तिहि पिपास लग्गिय बहुल । धव दुंढन वन जग्गि ॥

तहां सुइक्क वढ़ तट निकट । कलयल सिंघ सुलग्गि ॥

छं० ॥ ११७ ॥

देवी का कवि को दर्शन देना और कवि का अपनी सब  
विपत्ति निवेदन करके सहायता के लिये वर मांगना ।

तिन सिंघह मक्कह तरुनि । कह कह जंपिय संत ॥

मनहु धुंम्र मक्कह अगनि । कलहलंत दीसंत ॥

छं० ॥ ११८ ॥

(१) ए० कृ० को०—हलं वं । (२) मो०-व्जं । (३) ए० कृ० को०—माई ।

कावित्त ॥ हेष्टि चंद मन मंद । वृषभ वन सहिष सिंध घन ॥  
 सिव सिवात सुभयौ । बजे डक डक गजि वन ॥  
 दरस वान सिंध धोर । विषै जम धाम पंच मस ॥  
 रुध तुंबरगि वंझि । बाजि तारीक तूर रस ॥  
 मंचह सुजंपि वरदाय वर । चंद पट्टि जंपै रहसि ॥  
 सहैव ध्यान नर कवन ते । वर मनुच्छ उम्भै वहसि ॥

छं० ॥ ११६ ॥

दूहा ॥ तौ जानै सव देव भ्रम । नर नागिंद्र विचार ॥  
 ओई असुरां अपहरन । इह विरदावलि सार ॥ छं० ॥ १२० ॥  
 दरस देवि किय भट्ट वर । कर सिर मंडिन मंत ॥  
 सो पसाव<sup>१</sup> कवि सुंदरीय । जिहि जप संग सुअंत ॥ छं० ॥ १२१ ॥  
 तौ जानै सहैवपुर । पित प्रकृतीय सुतथ्य ॥  
 जौ हौं जंपि जानंत तौ । देवि जानयौ नथ्य ॥ छं० ॥ १२२ ॥  
 पुच्छि मात कविचंद वर । सुह दुह कहि वर भट्ट ॥  
 जौ जस<sup>२</sup> संग सुमंगी कवि । कहत काज इहि घट्ट<sup>३</sup> ॥ छं० ॥ १२३ ॥  
 सुम मनुच्छ राजन सकल । अकल अपूरव कथ्य ॥  
 कहौ सवै भारथ्य कथ । जौ सुनौ छिनक रुकि रथ्य ॥ छं० ॥ १२४ ॥

कावित्त ॥ पच्छैही सुरतान । विंदु दल जोर अहुट्टै ।  
 सुनी कहौं रवि ग्रहन । तदिन भारथ्य सजुट्टै ॥  
 उभै बीह<sup>४</sup> दर दीह । भान अच्छै दिन चलयौ ॥  
 सुनिधर राव सवह । वीर ब्रह्मंड सुहल्यौ ॥  
 चहुआन खेन रावर समर । भीर भगै प्रथिराज गहि ॥  
 वर भट्ट रुकि हाहुलीय भ्रम । जालंधर वर थान रहि ॥  
 छं० ॥ १२५ ॥

सुनिय धुनिय वर सीस । उभय उमया पति पुच्छिय ॥  
 सुनिय ग्रहन विग्रहन । जुद्ध मंद्यौ मति अछिय ॥  
 भव भवस्य निम्मान । जान मत अछ विचारिय ॥

( १ ) मो०—सम । ( २ ) ए० क० को०—पसाव । ( ३ ) ए० क० को०—जग ।  
 ( ४ ) ए० क० को०—सम घट्ट । ( ५ ) ए० क० को०—वाह ।

नरन नाग अरु देव । सुवर ग्रह दुष्ट प्रकारिय ॥  
 सिवसिवा धित जित अरि सिवर वर । हेमदान सोभै सुखछि ॥  
 जौ होय प्रेम तो निवृद्ध है । सोय किति पावन्न अछि ॥  
 छं० ॥ १२६ ॥

भगवती का प्रसन्न होकर कवि को अंचल का  
 चीर देना ।

दूहा ॥ हंसि हर सिद्धय सुद्ध सुष्प । नृप दुष दहौ भट्ट ॥  
 चरचि चीर अंचल धजा । दिख सिर वंदन पट्ट ॥ छं० ॥ १२७ ॥

देवी की स्तुति ।

सोतीदाम ॥ हसी हस सिद्ध तवै सुष पाय । जयजय सह कहैं वरदाय ॥  
 तुहीं सुक्त तारन सारन काम । तुहीं प्रकृति पुर पंधर नाम ॥  
 छं० ॥ १२८ ॥

तुहीं ईक्ष अनेक अचभम आय । तुहीं मति ग्यान तुहीं रज माय ॥  
 तुहीं गति काम तुहीं सुनि धाम । तुहीं धुर वेद तुहीं जुठठाम ॥  
 छं० ॥ १२९ ॥

तुहीं कृत कारन तारन देव । तुहीं सिध साधक सारन सेव ॥  
 तुहीं धर सोषन पोषन मात । तुहीं ससि स्वर तुहीं सरसात ॥  
 छं० ॥ १३० ॥

तुहीं सिसु जीवन बाल रु वृद्ध । तुहीं घट भाष नवै रस सुद्ध ॥  
 तुहीं विष अमृत संमृत सार । तुहीं घट औघट रप्पन हार ॥  
 छं० ॥ १३१ ॥

तुहीं नर नागिंद इंद सुरेस । तुहीं जुग आदि तुहीं लवलेस ॥  
 तुहीं तत पंच चलावन हार । तुह गुन तीन करै उपचार ॥  
 छं० ॥ १३२ ॥

अलेख अगोचर तुंनर दंद । तुहीं नट नाट नचावन छंद ॥  
 तुहीं ब्रज नारि तुहीं ब्रज नाथ । तुहीं गिरधार अंधारन पाथ ।  
 छं० ॥ १३३ ॥

तुहीं धर गंग उधारन सेव । तुहीं चय बेनी सुतीरय देव ॥  
आकास प्रकास तरायन तेज । नवग्रह नाम तुहीं सम रेज ॥

छं० ॥ १३४ ॥

तुहीं सब मंचन आगम मांहि । कहै सब ठौर विना तुअ नाहिं ॥  
धरै कर आवध दंड छचीस । तुहीं तुं नाम तुहीं कर वीस ॥

छं० ॥ १३५ ॥

तुहीं अब चंद सुधारन आस । तुहीं बहुआन भुजा करि बोंस ॥  
तुहीं पिथ अंत सुधारन कोम । तुहीं यवनेस संधारन नाम ॥

छं० ॥ १३६ ॥

तुहीं तन सुभक्त उवारि उवारि । कह्यौ अब कारन संकट टारि ॥

छं० ॥ १३७ ॥

दूहा ॥ वर संकट कविचंद कौ । पुर भारे कुर भीर ॥

जु कछु मनोरथ चिंतयै । सत्य होय वर वीर ॥

छं० ॥ १३८ ॥

भुगति सुगति जस स्वामि किंत । रिन भगौ क्रम भग्नि ॥

छिन छिन पायौ दरसनह । मिटि चलि चंद सुअग्नि ॥

छं० ॥ १३९ ॥

देवी की कृपा से कवि का प्रसन्नता पूर्वक गजनी  
पहुंचना ।

सिर पट्टर भट्टर सुभट । भव भै भगौ तास ॥

परम तत्त रत्तौ वघट । नयर सपत्तौ तास ॥

छं० ॥ १४० ॥

इहि विधि पत्तौ गजनै । जहं गोरी सुरतान ॥

तयै लेख इछ अप्पनी । मनो भान सध्यान ॥

छं० ॥ १४१ ॥

चौपाई ॥ इह अरंभ जुगिनी पुर अत्तौ । गुर नियान जोगह मन रत्तौ ॥

दिसि विचारि लोवह अवलोकिय । गोरिय धर गजन वै सोषिय ॥

छं० ॥ १४२ ॥

दूहा ॥ हैगै अभूत सुभूत गति । नठ नाटक बहु वार ॥  
 इष्ट चरित पिप्पन नयन । गयौ चंद दरवार ॥ छं० ॥ १४३ ॥  
 गजनी नगर की शोभा और प्रतिभा वर्णन ।

बृद्धनाराच ॥ हयं गयं अनेक भंति जोध जोध राजयं ॥  
 स्लेच्छ दुष्ट तेज ताम ता कुरान साजयं ॥  
 पढंत मीर पारसी गियान सामि भ्रम्यं ॥  
 नसंत चंद वीथ चंद पीर सीस नामयं ॥ छं० ॥ १४४ ॥  
 निमाज तंत अंत तीर नीत राज राजयं ॥  
 वहंत गज्ज वारुनी सुवारनी न साजयं ॥  
 केहूत हट्ट हट्ट कांका सेर के मनुच्छयं ॥  
 अलच्छि लोड लच्छनं विनान लोल लच्छियं ॥ छं० ॥ १४५ ॥  
 सुनै न चंद वेद सह वह तं कल मयो ॥  
 मरोरि सुंछ उग्र मेछ दिप्पयो विल मयो ॥  
 कमान वीर पंचयौ सुटंक जो अढारयौ ॥  
 समान मेछ दिप्पियै सुजस तैसु ढारयौ ॥ छं० ॥ १४६ ॥  
 विपास वीर चातुरी सुढारह हट्ट सोहयं ॥  
 विभास नभभ सामि कौ सुमिद्धि मोह मोहयं ॥  
 कटंत ते सुनार हे मतार तार राजही ॥  
 मयूष सांभ प्रात की किरन भान लाजही ॥ छं० ॥ १४७ ॥  
 अमग्न हट्ट पट्टनं सुरंग सुग्र सोभयं ॥  
 ग्रिहं ग्रिहं सुदिप्पियं तुरंग तंग लोभयं ॥ छं० ॥ १४८ ॥  
 लघुनाराच ॥ संपत्त भट्ट गज्जनं । विभूति घट्ट गज्जनं ॥  
 सुकट्ट जट्ट वंधयं । प्रगट्ट रूप सिद्धयं ॥ छं० ॥ १४९ ॥  
 सुघट्ट कट्ट तुट्टयं । मृगतु चाल पट्टयं ॥  
 सुभाव छंडि रुद्रयं । विराग को समुद्रयं ॥ छं० ॥ १५० ॥  
 हुतौ मनो कविंदयं । अनादि कौ जुगिंदयं ॥  
 गयंद नेम घुसतौ । पगं पगं विरंसतौ ॥ छं० ॥ १५१ ॥  
 'निरप्पि मंदिर सुम्भयो । सुवास रास उम्भयो ॥

गवष्य अरु उच्चयं । कनक ढारि वाचयं ॥ छं० ॥ १५२ ॥  
 जरे जराव थंभयं । जगंमगे अचंभयं ॥  
 अनेक तथ्य वालयं । रमत चित्र स लयं ॥ छं० ॥ १५३ ॥  
 परे चचिग्ग ओटयं । उगे कि चंद कोटयं ॥  
 जुगिंद ते निरंषयं । हिरन्न लज्जि अपियं ॥ छं० ॥ १५४ ॥  
 तमोर कोर रत्तियं । दसन में सुभत्तियं ॥  
 मनो कि डार पक्कियं । अनार ते दरक्कियं ॥ छं० ॥ १५५ ॥  
 हले अलक लवियं । उरोज सों विलवियं ॥  
 मनो कि ते उरगियं । कली कुसुद लगियं ॥ छं० ॥ १५६ ॥  
 जुवन्न मह सत्तियं । जुगिंद कौ छरत्तियं ॥  
 रयन्न की उनिंदयं । पवन्न सौं झुकं दियं ॥ छं० ॥ १५७ ॥  
 हरे हरे हसंतियं\* । विलोकि रुप चंदियं ॥  
 समान की सहेलियं । रही सुहृथ्य झेलियं ॥ छं० ॥ १५८ ॥  
 मनो कनक वेलियं । लपट्टियं चमेलियं ॥  
 सकोमलं सुरगियं । पकी मनो नरंगियं ॥ छं० ॥ १५९ ॥  
 जवादि कासमीरयं । चरच्चि अंग चीरयं ॥  
 \*सुमन्न सत्त भीगयं । सुकेस पास चिंगयं ॥ छं० ॥ १६० ॥  
 अभूषनं अलंकियं । चलंत सिंघ लंकियं ॥  
 गुमान लज्ज घेरियं । पयं पती पहेरियं ॥ छं० ॥ १६१ ॥  
 फिरे न दिट्ट फेरियं । हैरान भत्ति हेरियं ॥  
 चलयौ सुचंद सगयं । डगं मगंत पगयं ॥ छं० ॥ १६२ ॥  
 तुही तुही अलषियं । सबह मुष्य भष्ययं ॥ छं० ॥ १६३ ॥

कवि का शाही दरवार को जाना ।

दूहा ॥ नैर निरषि परषि कवि । धरकि हरषि न चित ॥

मात प्रसन्न प्रसन्न पय । तौ मिलियै वर मित्त ॥ छं० ॥ १६४ ॥

( १ ) ए० कृ० को०—कविदं ।

( २ ) ए० कृ० को०—हसंदियं ।

\*-इस पंक्ति के दोनों चरण मो० प्रति में नहीं हैं आगे दो चरण बढ़ते भी हैं इससे मालूम होता है कि ये दोनों चरण क्षेपक हैं ।

उभै जाम वर उत्तरी । पड़ि सुमंच वर चंद ॥

गय गौरी दरवार वर । बुझ्यौ जगावन दंद । छं० ॥ १६५ ॥

### दरवारियों का वर्णन ।

रत्तावत्तार ॥ दरद्वार गोरी, भरं भीर जोरी । उडै रेन झेनं, करे वत्त सेनं ॥

छं० ॥ १६६ ॥

सुपं मेछ दहूँ, पयं पेम चहूँ । कटिं तीन ठानं, कसे कस मानं ॥

छं० ॥ १६७ ॥

हसै के हलकै, महीने अधिकै । फरी तेग झारं, गने के दिहारं ॥

छं० ॥ १६८ ॥

वहै मोन रज्जी, करै केन वज्जी । तसव्वी तुसानं, पढ़ै के कुरानं ॥

छं० ॥ १६९ ॥

पढ़ै पत्ति सोही, सुरत्तान दोही । मरोरंत मुच्छं, गुरं ग्यान तुच्छं ॥

छं० ॥ १७० ॥

दिठौ दिट्ट भट्टं, हियौ पट्टि फट्टं । कृमं चंपि पानं, दरद्वार यानं ॥

छं० ॥ १७१ ॥

### कवि के विषय में लोगों की कल्पना ।

कवित्त ॥ प्रथम सुक्लि दरवार । लज्ज संकर सुरतानी ॥

है गै नट नाटक । अम्स दिष्पिय परमानी ॥

एक कहै इह भट्ट । इक कहै सिद्ध प्रमान ॥

एक कहै ठग ठोठ । एक वेताल सुजानं ॥

इक कहै जोग पापंड इह । अम लग्यौ रोकन कवि ॥

तव लगि चंद वरदाय वर । गयी यान दरवार हवि । छं० ॥ १७२ ॥

कवि का राजद्वार पर जाकर द्वारपाल से अपना

परिचय देना ।

तह अगौ गय निरपि । कनक लकुटीय नग जटित ॥

हयै गय नर असरान । यान इंदा सम यटित ॥

( १ ) ए० कृ० को०—फहि ।

( २ ) ए० कृ० को०—चिभूति ।

( ३ ) ए० कृ० को०—अरु ।

( २ ) मो०—सैल ।



गज्जनवै सुरतान । भान सस तेज सुदिट्टौ ॥  
 लुछ अंमर संसरन । अहित चित बुझिऊ सुमिट्टौ ॥  
 बुझ्यौ विभूति वपु भंति बहू । चंद धूत सिर बंधि पट ॥  
 भव भोग भवन रह छंडि कै । किम जोगी भय भट्ट नट ॥

छं० ॥ १७३ ॥

बधूषा ॥ हों सु जोगिय हों सुजोगिय जनन पर दार ॥  
 जोग जस जोगिनि पुरंदर सुरस चविधि कल कवित्तू जानों सब छंदर  
 सरस रसायन भायनह गीय गाह गुन ग्यान ॥  
 छैल इच्छ अछौ कहौ जो पूछै सलतान ॥ छं० ॥ १७४ ॥

द्वारपाल का कवि का सादर आसन देना ।

दूहा ॥ हेजम हिय वासी सुवर । दिष्ट परषिय भट्ट ॥  
 बहु आदर आसन दियौ । पाय अरचि दिय पट्ट ॥ छं० ॥ १७५ ॥

कवि का अपनी बिद्याओं का बखान करना ।

पद्मरी ॥ कविचंद कहै सुनि जमन मीर । कलमलहि तेज तुम सुमनमीर ॥  
 हों लहों विद्व बल अनत अथ्यि । देपिय जुसाह साहाव तथ्य ॥  
 छं० ॥ १७६ ॥

दस अट्ट चार उच्चार भेद । लघु दिग्घ रुप आनूप छेद ॥  
 गज अस्व सश्व विद्या गुनाह । लुक अंज गुटिक साजं सुराह ॥  
 छं० ॥ १७७ ॥

स्यभनी भेद तिथि लहू अण्य । मारनह मोह वस्सीह जण्य ॥  
 जच्चंग भेद विधि धिर विचार । रस धात पीत उच्चार सार ॥  
 छं० ॥ १७८ ॥

षट भाष रस नव नट्टनाद । जानौ विवेक विचार बाद ॥  
 हय दिष्पि जोति जोतिक्क भेद । गारुडह मंच द्रिग पंष षेद ॥  
 छं० ॥ १७९ ॥

इतिहास अट्ट दह अंक माल । पौरान पृथक बुझ्को विमाल ॥  
 नाटक भरह पिंगल प्रबंध । जानौ सुअरथ उच्चार संध ॥  
 छं० ॥ १८० ॥

Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4-21

# THE PRITHVIRAJ RÂSO

OF  
CHAND BARDÂI,

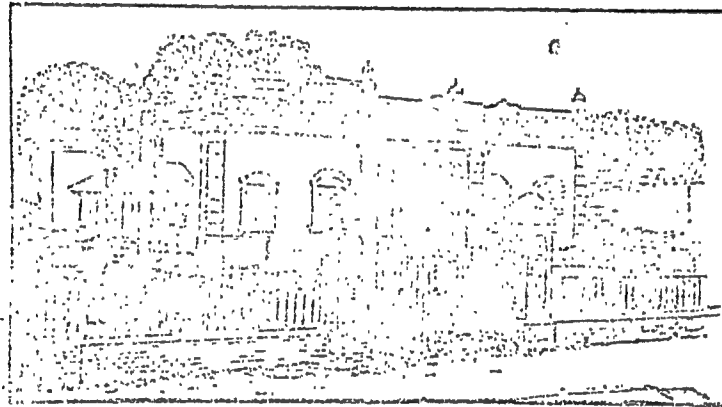
EDITED

BY

*Mohanlal Vishnupal Pandia & Syam Sundar Das, B. A.*

*With the assistance of Kunwar Kanhaiya Jai.*

CANTOS LXVII-LXIX.



महाकवि चंद बरदाई

रुत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया ।

पृष्ठ ६७-६६

PRINTED BY PT. BAIJNATH JIJJA, MANAGER, AT THE TARA PRINTING  
WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA,  
BENARES.

1913.

मूल्य १७

Issued 8th January 1913. Price Rs. 1/4.

## सूचीपत्र ।

—:0:—

( ६७ )	बानवेध समय	....	....	....	पृष्ठ २४०६ से २४६८ तक
( ६८ )	रयनसी प्रस्ताव	....	....	..	२४६९ से २५०६ ..
	महोवा खंड	....	....	..	२५०७ .. २५१२ ..
	रासोसार	....	..	..	४२३ .. ४५४ ..
	पांचवें भाग का सूचीपत्र आदि—				१-२४



विद्याह चतुर दस चित्त मोहि । बुझ्को सुकहो चिभुवन होहि ॥  
 भिट्टै जु एक पिन मोहि साहि । मन उकति, अथ्य पुज्जो सुआहि ॥  
 छं० ॥ १८१ ॥

द्वारपाल का कहना कि कविचन्द मैं तुझे पहचानता

हूँ जरा ठहर इत्तला होती है ।

दूहा ॥ इस्यो जमन परदार तव । तुहि जानौ कविचंद ॥

छिन इक दरह विलंबियौ । कवि न करहु मन मंद ॥

छं० ॥ १८२ ॥

हौं रमून जानों सकल । तुहिं जानों कविचंद ॥

परसादह तुहि देविहै । पढि आनंद सुकंद ॥

छं० ॥ १८३ ॥

वधुआ ॥ तुह रमूजि सह जम<sup>२</sup> नरिंद । निपुन वेद सह सकल समझन ॥

तू लहत गुन भेद जान जानन गुनिक जन । तू लज्ज रू माया अभूप धन ॥

धन पारथन सजन तुंवर बुद्धि विनान । जान को नाहिन तज्जन ॥

छं० ॥ १८४ ॥

चौपाई ॥ हित अहित सनमुष पहिचानी । भावी गति आगति सब जानी ॥

अंतर दंद<sup>३</sup> चंद मति सज्जिय । छुटन अंग संकर गढ लज्जिय ॥

छं० ॥ १८५ ॥

पद्मरी ॥ परदार मुष लप्पिय सुचंद । तू किय<sup>४</sup> विभूति सिर धरै बंद ॥

मुष फेरि हसति दस्तक निपानि । उठि भेद भट्ट जनों पुव पिछानि ॥

छं० ॥ १८६ ॥

कवि का अपना प्रगट होना जान कर वहां से चल देना ।

दूहा ॥ तव विरम्म कवियन करिग<sup>५</sup> । रुचित अण्णनी इच्छ ॥

सह सहाव दर दिप्पियै । जि कछु भुमि परि मिच्छ ॥

छं० ॥ १८७ ॥

( १ ) ए० कृ० को०—उगत ।

( २ ) ए० कृ० को०—मझो ।

( ४ ) ए० कृ० को०—बूकी ।

( ३ ) ए० कृ० को०—दंत ।

( ५ ) मो०—करिय ।

गाथा ॥ साजति अनेक भत्ती । पुरसान पान सुविधानं ॥

गोरी गुर तुरकानं । दानवं दैव दुरवाहं ॥ छं० ॥ १८८ ॥

शाही पासवान सरदारों का और शाही ड्योढा का

औसाफ वर्णन ।

खुजंगी ॥ रुहंमी रुहंगी सुहिली सुरोगी तरुनी तियोजी<sup>१</sup> सुहनी कुरोमी ॥

धरंते तरंते सुधारे सुसल्ले । हरवी सहेवी सरंते गुसल्ले ॥

छं० ॥ १८९ ॥

सकनी तिषनी पुरनी पुरेसी । सरवान भट्टी जिलंगार गोसी ॥

धरनी धरंती समल्ले सुसल्ली । तुरकान चितं चिगत्ते तु सल्ली ॥

छं० ॥ १९० ॥

इबस्सी सुगोरी सुकवी सुपनी । प्रकारं प्रवानं प्रवानी तिवनी<sup>२</sup> ॥

नियाजी सुवाजी सुकाजी कुसल्लै । तजे जस तेजं करं वज्र भल्ले ॥

छं० ॥ १९१ ॥

तुरकी मसकी सनं नेज<sup>३</sup> लल्ले । पवंगे पवने वनं चार गल्ले ॥

सुभं सेषजादे अवादे पठाने । महा मंच जुहंग सुहंग जाने ॥

छं० ॥ १९२ ॥

निमाजं सुरोजं नमो पंच बानं । पढै अथि कौरान सोरान जानं<sup>४</sup> ॥

सिपारा चिवोरा पढै तीस तामं । धरै राह अण्यं सुतण्यं सुधोमं ॥

छं० ॥ १९३ ॥

चलै अग्नि ओसीमि अण्यं सुराहं । तिनं गात लण्यै गुरजीव गाहं ॥

नही ग्रह माया निराया विरागं । तिनं राह वल्लै धनं तीय तामं ॥

छं० ॥ १९४ ॥

इसे देस देसं सुवेसं सुरेसं । दिष्यौ साहि गोरी दरद्वार सेसं ॥

अनेकं वरं व्रनं व्रजे बियाने । दिठै साहि गोरी गरजे सुहाने ॥

छं० ॥ १९५ ॥

बली जिल्ल बानी पवीरज्ज लावी । तुलंगाहरासे हरंमी सुतावी ॥

गनै कोन इच्छै जिते मेछ जाती । ग्रहै आय जानं दरं दिष्य भाती ॥

छं० ॥ १९६ ॥

( १ ) ए० कृ० को०—निराजी ।

( २ ) ए० कृ० को०—निक्की ।

( ३ ) ए० कृ० को०—तेज ।

( ४ ) ए० कृ० को०—बान ।

कवित्त ॥ द्विष्य धान सुरतान । धान सुविहान मसंदलि ॥  
 तीन लष्प निसि दिवस । रषि वज्र ग वज्र कलि ॥  
 वर वज्र नौसान । सह कन्नारव भग्ना ॥  
 स्वर तेज तप साहि । गोर गोरी गुर लग्ना ॥  
 सुरतान सुवर चित पति चढ़ै । पाय विलग्नी चंग गति ॥  
 तहिनह चंद वरदाय कौ । रस संकर संकर विपति ॥ छं० ॥ १९७ ॥  
**दिन के तीसरे पहर शाह का हृदफ खेलने की इच्छा करना ।**

दूहा ॥ इह विध जोम दु वित्ति गय । भयौ चतुर्थ पहरान ॥  
 हृदफ साहि पिल्लन चढ़न । दिधौ आप फरमान ॥ छं० ॥ १९८ ॥  
**हृदफ खेल के लिये शाही सवारी का वर्णन ।**

कवित्त ॥ प्रथम वज्जि घरियार । वज्जि नववत्ति पलान सजि ॥  
 दस दिसि वर धार नकौब । साहि गजराज वीर गजि ॥  
 दुतिय वज्जि नौसान । सबे चतुरंगनि सजिय ॥  
 धानधि भर पुरतान । आय दरवार सुरजिय ॥  
 वाज तैतीन नौसान वर । वर गोरी वर वीर चढि ॥  
 आलम अद्व देष त कवि । वाम कोद वर भट्ट ठढि ॥  
 छं० ॥ १९९ ॥

चौपाई ॥ उठि उठि भट्ट कहै हम जानं । वषत अनंद रस्यो सुविहान ॥  
 विस लज्जह बोल्यो मेछान । कहिहै सो करिहै सुविहानं ॥  
 छं० ॥ २०० ॥

दूहा ॥ बढि अवाज आलम सघन । बहु अद्व्य जमनेस ॥  
 दिसि दषिन लघु बंध नृप । चलै अग्र हुआ भेस ॥ छं० ॥ २०१ ॥

**शाही सवारी का निकलना और कवि का शाह को हाथ उठा कर आशीर्वाद देना ।**

पहरी ॥ चढि चल्यो साहि गोरी प्रमान । जानै कि ग्रीव ग्रीषम भान ॥

तव सह सखाम मंडहित मीर । फिरि वंधि फौज रहै तीर तीर ॥

छं० ॥ २०२ ॥

अंगुलि अधरनि<sup>१</sup> करि करि मसंद । सिर नाइ भई जव निजर मंद ॥

पारस सहस्र लकरीय<sup>२</sup> लाल । वरनंत सोभ मानहु प्रवाल ॥

छं० ॥ २०३ ॥

अग्न सुबंध निसुरति<sup>३</sup> पान । दरस पंच हय उत्त सुबिधान ॥

गोरीय सुअह तत्तार साह । मुच्छंत वत्त चढ़ि पातिसाह ॥

छं० ॥ २०४ ॥

को गिने साह पानह असंप । दिष्ये सहाव जुग जुगति अ<sup>४</sup>पि ॥

आसनह अस ताजी सुहाय । नग जटित जीन रवि ससिय चाय ॥

छं० ॥ २०५ ॥

कंचन लाल करनीय जग्न । चित रहिय चुंधि मन अमय लग्न ॥

रंग रंग पौत वनि सेत लाल । प्रगटे सु प्रगट मान घिनमाल ॥

छं० ॥ २०६ ॥

रंग रंग रंग अमर सुचंग । दिष्यै एक चंदह विरंग ॥

आलम अदब दिष्यौ न जाय । सक्यौ सुमग्न कविचंद धाय ॥

छं० ॥ २०७ ॥

लकरिय लाल अड्डिय करंत । उम्भौ<sup>५</sup> सुदिठु दिष्यौ तुरंत ॥

पर दुअन देस जानै अकाज । निय सामि चहु अप्पन काज ॥

छं० ॥ २०८ ॥

सुर एक घटी चित्तत तंम । आवाज साह किन्नौ हुकंम ॥

तव अली बेग आलम सज्जि । घन जेम भद नीसान बज्जि ॥

छं० ॥ २०९ ॥

भननंकि भेरि भारथ्य सज्जि । सुरपति कपि द्रिग भूपि रज्जि ॥

दिसि दिसा मिले सहे सदान । धर धमकि बंध बंधव अदान ॥

छं० ॥ २१० ॥

( १ ) ए० कृ० को०—अधरति ।

( २ ) मो०—गोरी सूसेहि तत्तार नाम ।

( ३ ) ए० कृ० को०—लम्भौ ।

सोभैत पांवरी सनौ सल । है कंष होत अमुषुगी हल ॥  
लहरी लाल इतसांस तान । ओपल चंद जंपै सुवान ॥

छं० ॥ २११ ॥

जानै कि ताह रिजि सत्र धूप । निहस्यौ अंग धरि कोठि रूप ॥  
सुनि हय्य राज किलकार कोर । यौ चख्यौ अंग सुरतान जोर ॥

छं० ॥ २१२ ॥

सानौ किरौट वै सीस<sup>३</sup> भान । दुहु परी होडकिर निट्ट जान ॥  
पहरीय वृन गंभीर ओप । जान्यौ कि मंडौ मौनज सु कोप ॥

छं० ॥ २१३ ॥

वारुन निसा अष्टि छुट्टि<sup>४</sup> विवाह । जाने कि रूप बहु करै राह ॥  
मंडौ सु छत्र सुरतान सीस । सुरतान जित्ति चहुआन रीस ॥

छं० ॥ २१४ ॥

सनौ भान स्तर सह हरे छांह । चले जुकाम धरि रूप वाह ॥  
दुहु पास वाह चालुक्क हीर । तिन दिष्य रूप सुरतान मीर ॥

छं० ॥ २१५ ॥

नीयज्जपान निज वंध मान । सामुह धरी लज इंद्र जान ॥  
बंध सुअंग द्वै द्वै कुवान । उष्यंम चंद जंपै निदान ॥

छं० ॥ २१६ ॥

कटि किसल स्तर सव वार तोन । जमनेस भेस धन पत्ति द्रोन ॥  
सिंगिन सवह वेधी सुपान । भारथ्य वेर अरजुन समान ॥

छं० ॥ २१७ ॥

दह वेर स्तर स्तरन सलाम । वर हुकुम चढ़न देपन्न ताम ॥  
वर भट्ट भेप पथ अनिव होत । पै धूप जानि सच्चे समोत ॥

छं० ॥ २१८ ॥

विमुक्ति तनह अवधूत दीस । वर दून उन्न दीनी असीस ॥

छं० ॥ २१९ ॥

( १ ) ए० क० कोः—ताम, वाम ।

( २ ) ए० क० को०—कैं ।

( ३ ) मो०—सिस ।

( ४ ) ए० क० को०—जागैं कि मंडौ बहु करिव कोप ।

( ५ ) ए० क० को०—गुटि ।



### कवि का शाह की विरह पठना ।

वचनिका ॥ साहि आर साहि विभार । वैरिआ<sup>१</sup> सोह बांद कुहार ॥  
 सबर साह सान सरदन । \* \* \* ॥  
 निवर साह थापना चारिज । अपिल रीत दलाल आरिज ॥  
 दुगवेस साह धारी तरक । नीरन साह औं गै अरक ॥  
 लोभौन साह उर अकुसाह । उत्तर दप्पिन दिस साह गाह ॥  
 इसै कुरान मूसे मुलान । महमंद दीन ईमान आन ॥  
 छजरति साह आलम जलाल । साहिव करान गात्रीय लाल ॥  
 आषंड जमी कंटक विडार । आदल रीति जालम निडार ॥  
 फकर फरीद रिज कान दार । बगलीस पंनाम काम दार ॥  
 औलिया पीर पैगंम रार । इक बीस चारि कामति कार ॥  
 दावा दरिद्र भंजन विभार । साहन समंद विरहे पगार ॥  
 तबल तबल घालि तबलेश्वर । अंग उपांग भोग भोजेश्वर<sup>२</sup> ॥  
 कालि कतांत कलह कोलेश्वर । औयौ ईस सुरतान साहवेश्वर ॥  
 छं० ॥ २२० ॥

### शाह का कवि की तरफ मुतवज्जह होना और कवि का अपना परिचय देना ।

दूहा ॥ देत असीसह सिर नयौ । विन अप्पन फुरसान ॥  
 दुसह भट्ट दिष्यौ नयन । बेपुछे<sup>३</sup> सुलतान ॥  
 छं० ॥ २२१ ॥

पातिसाह साहाब दीन वाक्य ।

साटक ॥ दुष्ट तो सुविहान तेज तरुन भूपाल जपालयोः ॥  
 तो चहु वर बीर जोति जुधय जितधर जालयो ॥  
 बिबौ घान घुरेस बीर बलन करन वध जंमयो ॥  
 जुद्ध तो जलि कान बीर उपमा भट्ट सि चदो मया ॥  
 छं० ॥ २२२ ॥

( १ ) ए० कृ० को०—वैरियां ।

( २ ) ए०—मोमेश्वर ।

( ३ ) ए० कृ० को०—नूपालयोः ।

शाह का कवि को पास बुलाकर सब हाल पूछना । कवि  
का सब बातों का उत्तर देना और शाह का उसे  
ठहरने के लिये कहना ।

कवित्त ॥ देषि चंद मन मंद । साहि आनंद उपनौ ॥  
निजरि अप्प सुविहान । बोलि आलम अप लिन्नौ ॥  
इय्य अप्पि दस तक्क । वत्त पुच्छी दुप सुप्प-वर ॥  
विधि विधान निस्सयौ । करन उदेंस कविय वर ॥  
संग्राम स्वाम क्यौ सुक्कयौ । क्यौ कविंद्र भारथ्य तजि ॥  
किहि यान लोइ संभरि धनी । कहौ सुवत्त लज्जौ न लजि ॥  
छं० ॥ २२३ ॥

पहरौ ॥ सुरतान पान सदेति मीर । तहां बोलि चंद मन मंद वीर ॥  
विन बोल बोल बुल्यौ सुखंद । हौं सुनौ साहि वर भट्ट चंद ॥  
छं० ॥ २२४ ॥

अवतार लीन ग्रथिराज साथ । वह ग्रह्यौ हौं व अच्छौ अनाथ ॥  
संग्राम धाम मोकलि बसीठ । जालंध राव हस्तीर धीठ ॥  
छं० ॥ २२५ ॥

तिहिं होत वीर सुरतान संधि । जालंध यान मो चंद वंधि ॥  
संग्राम राज भारथ्य कीन । सुरतान वंधि जस जीति लीन ॥  
छं० ॥ २२६ ॥

सुलतान वंधि सुविहान सार । आहुट्ट समर घग छीन धार ॥  
हिंदवान घंभ दोउ असत वीर । सध्यो जुकाम तद्दिन सरीर ॥  
छं० ॥ २२७ ॥

मैं सुन्यौ साहि विन अप्पि कीन । तजि भोग जोग मैं तप्प लीन ॥  
वह पनग विष्प सुरतान छानि । भै अट्ट राज मन अनत पान ॥  
छं० ॥ २२८ ॥

हं मंघ जंघ पालौ न जाउं । वैराग राग धुअ मेछि पांउ ॥

सुरतान आन तप भेषन काज । अस भट्ट सज्जि जोगिंद राज ॥

छं० ॥ २२८ ॥

अैं तव्यौ तप्य बट्टी सुथान । थिर रह्यौ सुनत सुरतान कान ॥  
घरि एक सोचि बोल्यौ सुसाहि । रिस अंग अग्नि पच्छी बुझाइ ॥

छं० ॥ २२९ ॥

वे चंद अध में रिस न कीन । वर वंक दिष्ट छंडै न भीन ॥  
सुविहान थान रप्ये<sup>१</sup> अद्व । करतार हथ्य लकरिय ग्रव ॥

छं० ॥ २३० ॥

करतार केलि जोनी न जाइ । चिंतवै आन आनह सुथाइ ॥  
बलिराइ कीन जीतन सुदंद । बंध्यौ विधान थानह फुनिंद ॥

छं० ॥ २३१ ॥

घरि अइ रह्यौ तिन बार तव । सुरतान बोलि वर कछिग सव ॥  
हम जाहिं चंद खेलनह दप्य । दोय गलह कलिह करि चलहु तप्य ॥

छं० ॥ २३२ ॥

सुरतान हरन साया सुभट्ट । जिहि काज चंद सिर बंधिय जट्ट ॥  
षट सुर पंचवि जो लग्नि घट्ट । सुरतान प्रात वन गहौ<sup>२</sup> बट्ट ॥

छं० ॥ २३३ ॥

दूहा ॥ जु कछु न्मस्यौ भट्ट वर । तुम जानौ बहु बुद्धि ॥  
सो टरै न विधुना सहय<sup>३</sup> । महत न दुष्य अलुद्ध ॥

छं० ॥ २३४ ॥

शाह का पीरोज खां हवसी को कवि की  
खातिर करने की आज्ञा देना ।

पञ्चरी ॥ बुल्यौ सुवीर सुविहान जान । हवसी सबोलि सुविहान घोन ।  
फिरि सोहि ताहि फुरमान दीन । हम बहुत चंद महमान कीन ॥

छं० ॥ २३५ ॥

( १ ) ए० कृ० को०—निरपै ।

( २ ) ए० कृ० को०—गसौ ।

( ३ ) ए० कृ० को०—विहथ ।

कवित्त ॥ वर हयसी पौरोज । तथ्य सुविमान भट्ट द्वि ॥  
 पुत्र दिसा पचिय हुजाव । अतुति मसन्न क्रिय ॥  
 सुप सुपंग सिष्टान । पान सुचंद धूप घन ॥  
 दिव्य धाम दह वाम । कुसति पाहार जुह मन ॥  
 वसतर सुरंग घन सुसन दुति । दुतिन वदिय वर चंद की ॥  
 आनंद कंद वटन दुतिय । दुति वदिय वर दंद की ॥  
 छं० ॥ २३७ ॥

दृष्टा ॥ फिरि सुचंद चलि नगर कौ । दियौ माहि फुरमान ॥  
 विधि उदय कसुदिनि सुदय । गयौ अस्तमित भान ॥ छं० ॥ २३८ ॥  
 करत चंद महिमान सब । अगर धूप दिय देह ॥  
 भिदै न सुप तन दुप्य वढ़ि । ज्यौं सतक वरंगनि नेह ॥ छं० ॥ २३९ ॥  
 निमासां मनपिन विमुप । पिन रेनी नन वित्त ॥  
 माहि सचाव अंदर गयौ । मीर समोधन पित्त ॥ छं० ॥ २४० ॥  
 है हदक करि वेदयौ । ग्रह आयौ सुरतान ॥  
 आपत चंद मन में सुनिसि । इम अप्यै सुविमान ॥ छं० ॥ २४१ ॥

कवि का भीम नामक खत्री के घर डेरा दिया जाना ।

पदरी ॥ हुजाव चंद दोउ एक सथ्य । आए सुग्रेह पचीय तथ्य ॥  
 बोल्यौ भीम हुजाव ताम । वे आम कछि रण्यौ सुमाम ॥  
 छं० ॥ २४२ ॥  
 सुनि भीम अति आनंद अप्य । लग्यौ सुपाइ पची सुतप्य ॥  
 हुजाव फिर्यौ कवि प्रेरि ताम । लै गयौ भीम कित मंगि काम ॥  
 छं० ॥ २४३ ॥  
 किय अर्घ पाद पची सुकछि । उपचार विमल वानी सुतछि ॥  
 आसनह सुप्य अति सेव सज्जि । उपचार देषि कवि कित रज्जि ॥  
 छं० ॥ २४४ ॥  
 अगिया मांगि पचिय अहारि । सम रुचिय भाव गण्यौ सहार ॥  
 छं० ॥ २४५ ॥

कविचन्द का भीम से एक एकान्त स्थान मांगना और  
कवि की रुचि के अनुसार भीम का एकान्त स्थान देना ।

दूहा ॥ रंजि सुकविता पिचि सम । कहीं सति साभिष्टि ॥

देह निरंतर गेह इक । हम मुक्तकै जुनि<sup>१</sup> इष्ट ॥ छं० ॥ २४६ ॥

तव पची कर जोरि कहि । अहो सुकवि आरोह ॥

अति निरंतर गेह इक । तुम आश्रमहु तेह ॥ छं० ॥ २४७ ॥

अदभुत कवि पिचिय जगति । ग्रिह देषवि मन ह्रास ॥

एक सिंघ अरु पष्पर्यौ । अब मन पुरों आस ॥ छं० ॥ २४८ ॥

सुरिल्ल ॥ कवियन मद्धि ताम आयासह । संपन्नौ जहाँ भासन भासह ॥

देषि अवास रौक्षि उर वासह<sup>२</sup> । अति निरमल कज्जल सुर रासह<sup>३</sup> ॥

छं० ॥ २४९ ॥

तहं विरस किन्नौ कविरामह । बोलि कवी पिची वर तामह ॥

मंगे परिकर होम प्रचार<sup>४</sup> । होम जोग प्रति पूजा सार<sup>५</sup> ॥

छं० ॥ २५० ॥

जे जे परिकर मंगिय कवी । ते ते आनि भीम दिय तबी ॥

करि आसन कविचंद महामय । बैठो धारन ध्यान सज्जि सय ॥

छं० ॥ २५१ ॥

पूजन की सामग्री जुटा कर कवि का हवन करना ।

करे जाप सा मंच बीज कर । लग्गो करन होम सा विधि पर ।

करे ध्यान पूरन जप कबी । सनमुष तोन प्रगट्टी हबी ॥

छं० ॥ २५२ ॥

मंनिय घेद कविय जन तामं । लग्गो करन मंच स्तुति कामं ॥

न्यास घडंग अंग रक्षा करि । बैठो मग वच काया संवरि ॥

छं० ॥ २५३ ॥

झर करक कपट करि दूरं । इन विधि मंडप कुंड सपूरं ॥

प्रित गुग्गल कनयर जा कूलं । मधु दधि दुग्ध मिश्र लां मूलं ॥

छं० ॥ २५४ ॥

(१) ए० कु० को०—अति । (२) ए० कु० को०—भासह । (३) मो०—राजह ।

जुग जातक मेवा बहु भंती । श्रीकण पट्ट पितांबर दंती ॥  
ससिध द्विप्य ब्रह्मह सनमान्नी । चाटुति अंगुल जुग नपजानी ॥  
छं० ॥ २५५ ॥

एक पट्ट पछिरन भट्टान । वैठौ करन अंत तुरकान ॥  
प्रानायास करे आचसन । दत्त द्विप्यल वेचपति सुमन ॥  
छं० ॥ २५६ ॥

अग्रज दंती देव अराधी । इस करि मात उमा कवि साधी ॥  
अप्पर आदि अनादि उचार । बीज गुप्त जिय काया धार ॥  
छं० ॥ २५७ ॥

### कवि का बीज मंत्र का जाप करना ।

दृष्टा ॥ प्रनव आदि षोडस वरन । नाम अनंत विचार ॥  
इन में त्रिभुवन साधनी । विद्या नेक प्रकार ॥ छं० ॥ २५८ ॥

### बीज मंत्र के जाप की विधि और ध्यान ।

लघुनाराज ॥ अहो प्रनव रूपयं । जगत् बीज जूपयं ॥  
श्रियं सरूपयं सयं । समीर तेजयं तयं ॥ छं० ॥ २५९ ॥  
सवास बीज साइयं । सुवाग बीज ताइयं ॥  
प्रभास स्वर वासयं । अनंग बीज रासयं ॥ छं० ॥ २६० ॥  
विधान बीज सारयं । सुधा सुमोम कारयं ॥  
स्वरं सरूप षोडसं । वरन्न वरन्न जोडसं ॥ छं० ॥ २६१ ॥  
सकृत्ति रूपयं तयं । प्रचार चार चित्तयं ॥  
कनक रूप साइयं । प्रकार जग ताइयं ॥ छं० ॥ २६२ ॥  
निबंध बंध बंधयं । विलोम लोम संदयं ॥  
वरन्न रूप सन्नयं । विनडि विंजनं मयं ॥ छं० ॥ २६३ ॥  
अकल रूप माधियं । न बुद्ध पार पाइयं ॥  
पुरस्स देक कज्जयं । अनेक रूप रज्जयं ॥ छं० ॥ २६४ ॥  
अहंस सह सेवयं । निबद्ध नेह एवयं ॥  
दरस्स रूप देवियं । सुवाल वद्ध ते वयं ॥ छं० ॥ २६५ ॥

देवी का प्रगट होकर वर देना कि शाह पृथ्वीराज और  
तू तीनों एकही घड़ी अन्त को प्राप्त होगे ।

गाथा ॥ सुनि देवी कवि कव्वं । दीय हुंकार अण्य आयासं ॥  
मम करि दुष्प सुभट्टं । दरसन समय नय्य लहि बुद्धं ॥  
छं० ॥ २६६ ॥

कवित्त ॥ निसि निसह उत्तरिय । चंद जगो रचि होमं ॥  
वेद मंच आरंभ । जाप पूरन पढ़ि सोमं ॥  
दियसु मात हुंकार । देवि धुनि सुनिय वीर भट ॥  
छंद बंध उच्चार । जंच जंची सुमंच पट ॥  
उच्चार भट्ट चित करन वर । वीर प्रबंधन छंद किय ॥  
चिंतयो जोग बंछै सरन । और न तात विचार विय ॥  
छं० ॥ २६७ ॥

गाथा ॥ साह बदी सुलतानं । तो प्रथिराज अंत दिन एकं ॥  
तो चहुआन स कित्ती । वदै वर बेलि पुहमि परचोरं ॥  
छं० ॥ २६८ ॥  
करि साहास रचि बुझी । सिद्धी सिद्ध मंडि सा कज्जं ॥  
उहिम सुहिम सारं । करि कविराज चित्त थिर थप्ये ॥  
छं० ॥ २६९ ॥

तव कहि चंद सुकव्वी । सुनि जग मात सुभक्ति विग्यानं ॥  
बालप्यन निज नेह । सो निव्वाहे नेह सा देवी ॥ छं० ॥ २७० ॥  
अरिल्ल ॥ सुनि सा सकति किह हुंकारं । भूमके विज्जल तेज सभारं ॥  
सुनि वरदाय धीर मय सारं । मकरि मोह मय षेद अपारं ॥  
छं० ॥ २७१ ॥

जे निम्मान विधानं भावं । सो निम्मान मिटै नह ठाकं ॥  
बेली कित्ति बंध राजानं । उरध लोक तुम पावै प्रानं ॥

छं० ॥ २७२ ॥

(१) ए० कृ० को०—दियत । (२) ए० कृ० को०—मंत्री । (३) मो०—परिवार ।

(४) मो०—कज्जं ।

(५) ए० कृ० को०—बुद्धि विज्ञातं ।

दूहा ॥ रीझ उसा कहि डरन करि । दल मिटि कविराज ॥  
बैठि रसन सुखतान कै । चंद करन क्षित काज ॥

छं० ॥ २७३ ॥

सुनि आनखौ कछि जिय । धनिय अंत मन ध्यान ॥  
सिद्धो कारन जानि जिय । विरतौ प्रेम पुरान ॥

छं० ॥ २७४ ॥

कवि के पूजन समाप्त करने पर भीम का पूछना कि आप  
अपनी हृच्छा को क्यों कर पूर्ण कर सकते हैं तब  
कवि का उसको देवी के दर्शन कराना ।

कवित्त ॥ प्राण कलपि पति काज । चित्त सर वेद भेद उर ॥  
आसन वासन तजिय । पूजि द्रुगा पूरन करि ॥  
तब दिपि बोल्यौ भीम । एक विग्यान सुभक्त सुनि ॥  
तुम राजिंद सुभट्ट । भस्म अप्पित इप्पित मन ॥  
जल उसन आनि कुंकुम सकित । पर ख्यालन तन ताम किय ॥  
वसनह सुदिव्य आछादि सुनि । अति आनंदिय भीम जिय ॥

छं० ॥ २७५ ॥

दूहा । उमरि साहि घन घाइ इहि । रस रेती करि दाय ॥  
तमनि किरनि लगत बिपस । वीर मंच परदाय ॥ छं० ॥ २७६ ॥

देवी का स्तुति ।

भुजंगी । निराधार विद्या देवी देहि चंद । जपौ तुंझ तूँही जतुंही प्रबंध ॥  
कहां साहि गोरी असमान खर । कहां भट्ट फकीर लोटंत धूर ॥

छं० ॥ २७७ ॥

कहां राज अधान बंध विधाय । कहां कोस कमान आवै न दाय ॥  
जंही बान आतम मातंग भारी । तुहीं वीर रूपी विराजी करारी ॥

छं० ॥ २७८ ॥

तुंही सत्य सत्य भदै वेद मंच । तुंही भेद अभेद जायासि तंच ॥  
तुंही तेज खरजि सो बलि चंद । तुंही आसमान तुंही भीम नंद ॥

छं० ॥ २७९ ॥



तुंही प्रकृति पारं अपारं सुरष्पं । तुंही अजै अरधंग अजपादि सिष्पं  
करामाति कंधं करत्तार काया । तुंही कामनी काम संसोर जाया ॥

छं० ॥ २८० ॥

कली काल चालंत चामंड माली । तुंही वाल जावन्न ब्रह्मंति काली ॥  
रटै नाट रागं विराजी विराली । हरै मोह रंगं वजै वज्र ताली ॥

छं० ॥ २८१ ॥

हरै सत्र बुद्धी कमिचं जयंती । जपै तोय सायं प्रली लागियंती ॥  
बध्यौ तप्य तेजं जयौ अद्र मुंडं । अजै वा विजै वासही देह छंडं ॥

छं० ॥ २८२ ॥

घरी पंचली देवि को तिग्ग देख्यौ । सती साहसी सिद्ध तूही विसेष्यौ ॥  
धरी ध्यान देखी बढी वीर रूपं । चढी जोति देखी विमानं अनूपं ॥

छं० ॥ २८३ ॥

जमी अंत सोहंत जालंधरानी । सरै सब्ब काजं वरदाय वानी ॥  
उमा मो विसासो परन्तीत पाई । जहां षड्विंसासी तहां देविन ई ॥

छं० ॥ २८४ ॥

नियं देह देखै विरूपं रिसानं । तजै मोह माया गई आसमानं ॥  
निसा पंग रंगी अरंगी सुजायं । सुभं सुभं जानै लियै हृष्य हायं ॥

छं० ॥ २८५ ॥

सकुन्ने जनने मरन्ने विहाने । वजै दुदुभी देवि भूमी निसाने ॥

छं० ॥ २८६ ॥

दूहा । भई सबद आयास धुनि । भय सुकाम तुह सत्त ॥

तव विचित्र चिंत्यौ सुमन । नीति न रष्यौ हित्त ॥

छं० ॥ २८७ ॥

उस शत्रि को मुस्लमानी जंत्र मंत्र कान चलना और मुल्लाओं  
के मन में विस्मय होना ।

भुजंगी । महल साह साहाब सुरतान गोरी । जगी जलनि किरनानि  
समान जोरी ॥

किते बे कुराने कुसी कान लगो । डरे देव बानी नहीं मर्त जभो ॥

छं० ॥ २८८ ॥

डरे दान दीये सुलीए फकीरे । तहा करि सकै कौन ग्रह साहपीरे ॥  
फिरस्ते न हस्ते न सुला पुकारे । उठै सुट्टि दिट्टी तहाँ गातभारे ॥

छं० ॥ २८६ ॥

चले सेप सीधी भषे दंड लीधा । रहै सच मित्रे गुरु ग्यान वीधा ॥  
'हितं अन हितं' दिखै जा उलप्यै । सतं दूअ विद्या परं जीव लप्यै ॥

छं० ॥ २८७ ॥

सथंते धनंते तवी वेव तेहा । चितं अन्न पाने नही जाव जेहा ॥  
नियं भ्रमधारी धुरं पासवानं । सदा सुष्य सेवै जनं गातवानं ॥

छं० ॥ २८८ ॥

पके पक्क पानं समानंत नेहं । अपं अप्य रप्यै जिसे देह देहं ॥  
वसं विस्तरे सा पवासं सहय्यं । अभुतं सु ज्योतीतगं हेम तय्यं ॥

छं० ॥ २८९ ॥

सुखं चुनं पूगी कथा पान धारी । जिके अप्रवाहे जिसे भूप भारी ॥  
जहां मंच सापी चिया चोय लोपै । वरं किंकरै दुष्ट वै रीति कोपै ॥

छं० ॥ २९० ॥

जितै पान पंधार अनुकूल सारे । मनं कपट धरियार चितं विचारे ॥

छं० ॥ २९१ ॥

दुहा ॥ भय विहान सुविहान दर । वजि नववत्ति निसान ।

तम चूरन जूरन किरन । प्रगटि दिसान दिसान ॥

छं० ॥ २९२ ॥

प्रातःकाल हेतेही शाह का कवि को बुलाने की इच्छा करना ।

कवित्त । भय विहान सुविहान । सदि वंदगी निरामय ॥

वजि नववत्ति निहाय । घाय वज्जिय धरियारय ॥

नट्टि तिमर तपि छर । सवर रह दीन तत्त मति ॥

जग्गि साहि साहाव । काज किनौ नित्यह गति ॥

आरोहि बसन उस्नीष रजि । पां पियारि धरि आदरस ॥

निरपंत निवासह मंडिकिय । चंडिय कारन चंड रस ॥

छं० ॥ २९३ ॥

( १ ) मो० — हितं अनहितं देपि जासुं उलप्यै । ( २ ) ए० ल० को० — हिरपंत निवारह ।

दूछा । घरफ हृदकरि गिल्लयौ । घर आयौ सु विद्वान ॥

क्षपत चंद मन मंझ निसि । नीठ सु भयौ विद्वान ॥छं०॥२६७॥

शाह का हुजाव को कवि के लाने की आज्ञा देना और  
तत्तार का उसे बना करना ।

किय आदरस निवास । द्रुम सधि सेव सधारन ॥

तब चित्तह चढि चंदु । मिलन मन किन्नी धारन ॥

तिहि सु समय सल्लाम । प्राय ततार पान तब ॥

पां रस्तम पां जमन । आय वर पास सेव सब ॥

उच्चार्यौ साहि हुजाव सों । बोलि भट्ट चहुआन तत<sup>१</sup> ॥

सिर धर्यौ बोलि हुजाव जव । तब बुल्यौ ततार तत<sup>२</sup> ॥

छं० ॥ २६८ ॥

चौपीई । इस चिंतत चिंत्यौ सुलतान । वे कहां भट्ट निसुरति पान ॥

वैराग राज बन जाय चंद । दोइ करै गरुह दुनिया सदंद ॥

छं० ॥ २६९ ॥

कवित्त । सुनिय हुकम निसुरति । करिय तसलीस साहव ॥

बंदो की इह नाहि । करै सुविद्वान जुबाव ॥

अविचारी करि वत्त । हाय पौछै पछितावा ॥

मंत संति किजियै । दोस दुनिया नह आवा ॥

हित कहै खामि सेवक सुभ्रम । अवर बोलि मत पुच्छियै ।

जानौ न वत्त कपटी करह । क्यौं विसास नस<sup>३</sup> इच्छियै ॥

छं० ॥ ३०० ॥

शाह का कहना कि देखें तो उसमें क्या रहस्य है,

बातों बातों में बड़े रहस्य प्रगट होते हैं ।

बैठि मत्त सुरतान । रसनि निस्सयौ करन वर ॥

अस्म राज दिन मुज्ज । चंद प्राजेज काल चर ॥

(१) ए० कृ० को०-वत् ।

(३) ए० कृ० को०-तस ।

(२) ए० कृ० को०-तस ।

सूर उदै दिन भेद । फंद सुरतान संभरिय ॥  
 बोलि पान निसुरति । पान हुजाव उचारिय ॥  
 मट्टहि सु' तत्त जानन सकल । नवि अकाल गति बुझिभ्यै ॥  
 जानै न लोय इह लोक ले । कोन भेद कत सुझिभ्यै ॥  
 छं० ॥ ३०१ ॥

सुनिय पान निसुरति । पान ततार पंधारिय ॥  
 गरह दंद टारियै । गरह आनंद उचारिय ॥  
 निंदा कुल संपात । काल गच्छै अबुझि मति ॥  
 सिद्धि बोध जिहि होय । काल गच्छै जु गरह भति ॥  
 इक रहै गरह सोई ग्रहन । रहन सोय सो ग्रह नही ॥  
 इहि रोज साहि साडति कुफर । करहि अरज आनन गहि ॥  
 छं० ॥ ३०२ ॥

ततार खां का कहना कि शत्रु और सर्प का विश्वास  
 करना उचित नहीं ।

तव तातर निसुरति । पानि वर जोर समीप ॥  
 वे अदव्व सुलितान । नेक जंपी पुव अप्प ॥  
 अदव रप्पि टै दान । निजरि दिप्पियै न दुर अरि ॥  
 वर कुरान काजौ कहंत । अदव सुविधान पुव करि ॥  
 नट भट्ट सह डंकनि<sup>१</sup> डहर । अप्प पेल दुममन दरस ॥  
 विष वाद वाद पाषंड विय । करि न साहि आलम परस ॥  
 छं० ॥ ३०३ ॥

सुनि ततार हुजाव । करन जुलि साहि सिकंदर ॥  
 कौय बहुत अरिजंग । फेरि अग्या सब वंदरि<sup>२</sup> ॥  
 हिंदवान भर कही । कळ्यौ सेना सब साजिय ॥  
 मिले राह विच आनि । स्याह चींटिय दल माजिय ॥  
 सहिमान साहि दल सबै करि । तव पुच्छिय इह कोन गति ॥

( १ ) ए० कृ० को०—कहै भट्ट । ( २ ) ए० कृ० को०—नेक पुव्व सुजाप आप ।

( ३ ) ए० कृ० को०—मंकनि । ( ४ ) मो०—दंदिर ।

सुक्लाम कोय मोदी दियन<sup>१</sup> । पर्यौ पोन लीनौ सुभति ॥

छं० ॥ ३०४ ॥

तत्तार खां का कहना कि खाड़ा खुदा कर तब कवि  
को बुलाओ ।

दूहा । फिर्यौ सिकांदर वात सुनि । तब कहं काजि किताब ॥

खाड़ा हथ्य पृदाय कै । आनौ भट्ट सिताव ॥ छं० ॥ ३०५ ॥

फुनि ततार अरदास करि । अप्य अहित जो चह्य ॥

काहि स पिष्यौ विकट बित । साहि न कीजै गरुह ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

फिरि ततार अरदास करि । वे आलम सु विधान ॥

नट नाटक डिंभी<sup>२</sup> डमरू । ना वूझहि सुलतान ॥ छं० ॥ ३०७ ॥

वे फकीर अरु जाइ तप । हम करामाति सुलतान ॥

कहिग गरुह दोय पुच्छियै । अरु जु खेइ कछु दोन ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कवित्त । सुनहु साहि साहाब । बघत या गहिय अम गुर ॥

समय करीम कुरान । सजहु निमाज बंदिधुर ॥

इह अदीन कफरान । कान तस नाम न लिज्जै ।

जितै आनि अणनी । तिते या रहन न दिज्जै ॥

तुम जान ग्यान अति सुनि गरुअ । दैन सौष को तुम समन ॥

मति मान जान गोरी गरुअ । समय विचारौ सत्ति मन ॥

छं० ॥ ३०९ ॥

शाह का कहना कि वह गुणी पुरुष है मैं उससे अवश्य  
मिलूंगा तू मूर्ख क्या जाने ।

तब जंपै साहाब । सुनहि ततार घान तत ॥

इह सु चंड मति मंडि । दीन मंदित सदा हित ॥

छंद प्रबंध कवित्त । पढहि आलम मन रंजै ॥

विषम बैर उद्धार । ताहि सुनि बोत समुझै ॥

बुझ्झवन बत्त जीरन जुगति । इय बरदाइय ग्यान गुर ॥

चिहु देसं चंड संहै मखि । रसन प्रेस रस भस्म धर ॥

छं० ॥ ३१० ॥

तसि जौ तत्तार । साहि पानी न विधि वर ॥

इह लु चंद कोफर कुराह । वक्तव्य अरियन दुर ॥

इह सु सेव मज द्रुग । मंच जानै अति आगम ॥

तंच मंच सुद्विय प्रमान । वृत्तिय वीरागम ॥

कीजै न वक्त इह जुगति मिलि । जो बुझै घन चंड सव ॥

इहो जु साहि गुनियन गरुअ । तौ बहु आनौ भट्ट अव ॥

छं० ॥ ३११ ॥

दृष्टा । तव जंपै साहाव तमि । रे सुनि पान ततार ॥

जे निस प्रेही गुन गरुअ । सुन्यो सयल मति सार ॥ छं० ॥ ३१२ ॥

तत्तार खां का पुनः मना करना परंतु शाह का न मानना ।

पां तवार तव उच्चर्यौ । सुनि सुलतान सुभास ॥

अरियन जन जेवल हो । क्यों मिलियै नर तास ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

जिहि छंछो संसार सुय । जिहि छंड्यौ ग्रह वास ।

ता पुरप कौ दुज्जनह । जो सजन को आस ॥ छं० ॥ ३१४ ॥

इह सुभट्ट चहुआन को । सुन्यौ वीर वरसत्त ॥

अरजु साहि आलम करै । सु कहै वनै छवपत्ति ॥ छं० ॥ ३१५ ॥

वे ततार गोसर गुमर । वक्त न दुष्कृतै तत ॥

विधि विधिना भंजन मतै । को रप्यै हित गति ॥ छं० ॥ ३१६ ॥

सुनि ककस वर वेन निप । वरजि अय्य दरवान ॥

गो फकीर वर है सुभट । दुष्य बहुत चहुआन ॥ छं० ॥ ३१७ ॥

कवि का दरवाजे पर आना परंतु तत्तार खां के इशारे के

अनुसार दरवान का उसे भीतर जाने से रोकना ।

कवित्त । बोलि पान पचिय हुआव । पान पीरोज बुलाइय ॥

कहा भट्ट कविचंद । हृष्य अय्य वरदाइय ॥

( १ ) ए० कृ० को०—तिहु देस । ( २ ) ए० कृ० को०—बुव ।

( ३ ) ए० कृ० को०—वे ततार गुम रप्य गुर सुनन बुझै तत वक्त ।

जोग जुगति पुच्छियै । तंत पुच्छियै सुभग्गा ॥  
 कहि गल्ही लै दान । प्रान संतोष सुजग्गा<sup>१</sup> ॥  
 बर मित्त असप्यति भट्ट वह । को<sup>२</sup> भंजै न्दिम्भान गति ॥  
 तत्तार पान पुरसान पां । हसति जान जानै सुभति ॥

छं० ॥ ३१८ ॥

हुहा । तव सहाव सुष उच्चर्यौ । मियां मलिक जै पान ॥  
 दौरि चंद संसुह चलै । वे बुल्लै सुलितान ॥ छं० ॥ ३१९ ॥  
 चल्थौ चंद समुहाय तव । मीर मलिक न सथ्य ॥  
 देषि रूप दर जोग कौ । रुकि दरवानन तथ्य ॥ छं० ॥ ३२० ॥  
 आवत जान्यौ चंद जब । तव मति पान ततार ॥  
 साहि अजानै अप्य मति । रुकायौ दरवार ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

**कविचन्द का रोके जानै पर देवी का स्मरण करना ।**

जव रक्यौ कविचंद दर । तव चितिय हिय धीर ॥  
 संच रूप अगुत करन । लग्यौ बर विधि वीर ॥ छं० ॥ ३२२ ॥  
 भुजंगी ॥ नमो देव देवस वीरोधि वीर । स्वयं जापिनोकं स्वयं ना कसीरं ॥  
 चयं<sup>३</sup> काल रूअं त्रिगुन्नं त्रिधामं । हुअं<sup>४</sup> कारनं क्तित अन्नं क नामं ॥  
 छं० ॥ ३२३ ॥

रूअं लघु थूलं सु आयास तूलं । वरं अग्र कालौ स्वरं सहिसूलं ॥  
 सदो भैरवं रूप वीरं बिराजं । वरं अग्र काही सुधारी सुकाजं ॥  
 छं० ॥ ३२४ ॥

जहा संकटं सेव मानै अपारं । तहा आप<sup>५</sup> आयं नियं<sup>६</sup> काम सारं ॥  
 रमं वीर लोकं त्रिलोकं त्रिहूलं । गदाचक्र बाहं<sup>७</sup> हथं धनु जूयं ॥  
 छं० ॥ ३२५ ॥

मदगं त्रिहूलं परीधं सुधासं । ग्रहै ब्रह्म संकीर्ति संगी दुरासं ॥  
 कनै कुंत कत्ती पुरस्सी कुठारं । धरै सबल सेल नाली कनारं ॥  
 छं० ॥ ३२६ ॥

(१) मो०—सुभग्गा । (२) ए० कृ० को०—अयं । (३) ए० कृ० को०—हुकं ।

(४) ए० कृ० को०—सक्या । (५) मो०—अयं । (६) मो०—निजं । (७) मो०—बानं ।

हलं मूसलं भिंडि पाली फरिका । जमं दहू निहू परस्सं छुरिका॥  
धरै आवधं एक अन्नेक नामं । जहां संक सेवं तहां आय कामं ॥  
छं० ॥ ३२७ ॥

अहं संकटं आय लुभ्यौ अनूपं । करौ आज काजं अहं आय जूपं॥  
करौ आज मोया प्रगटं सरूपं । महा मोहनं आसुरं शय्य नूपं॥  
छं० ॥ ३२८ ॥

सुने आइयं वीर अस्तुति चंदं । भई आसुरानं सवै बुद्धि मंदं ॥  
भयौ आय वीरं स हुंकार सहं । धरा धम्म धम्म उड़ी रैन रहं ॥  
छं० ॥ ३२९ ॥

फाटी पौरि परदार क्षमी क्षमीरं । भई हाय हायं सहौ साहि मौरं॥  
छं० ॥ ३३० ॥

शाह के आज्ञानुसार हुज्जाव का कवि को शाह के  
संमुख लिवा जाना ।

पोतिसाह वाक्यं ।

चौपाई ॥ तव सहाव बोल्यो हुज्जावह । अहो भट्ट आनो सितावह ॥  
तव हुजाव आयौ कवि पासह । बोलि चलयौ कवि अंदर तासह ॥  
छं० ॥ ३३१ ॥

उस स्थान का वर्णन जहां पर कवि शाह के संमुख गया ।  
पहरी । सम कहिय वत्त पर दार साहि । हित अहित चित्त दिष्पौ सताहि॥  
आलम्स कहइ सो करहि तथ्य । आवन्न देहि कै रुकहि पथ्य ॥  
छं० ॥ ३३२ ॥

बुल्यो सुचंद हज्जूर साह । बुभक्षन्न वत्त अप पातिसाह ॥  
वैराग चंद तुम जोग सत्त । जोगह विरुद्ध हम मिलन<sup>२</sup> मत्त ॥  
छं० ॥ ३३३ ॥

संग्रह्यौ पान पानह हुजाव । तुम चलयौ चंड बुल्ले<sup>३</sup> सहाव ॥  
लै रप्पि मद्धि ठठ्ठौ महल्ल । सुव्वास रास अंदर चहल्ल ॥  
छं० ॥ ३३४ ॥



बैठक सुरंग सुभ चित्त साल । सोईत अति उज्जास भाल ॥  
विस्तार सहल वर रंग भोम । प्रासाद उंच मंडप सिरोम ॥

छं० ॥ ३३५ ॥

वात्यानि<sup>१</sup> जाल पति मत्ति नूप । हिस थंभ जोति जग मग सरूप ॥  
कलकंत कनक कुंदन सुमाल । एकेक रूप रंजतरसाल ॥

छं० ॥ ३३६ ॥

जगहि सजोति नग जटित जास । राजत रवनि दसकंध वास ॥  
अथकाल रूप तरुनी महल । दह इक भुम्भि रोचित रहल ॥

छं० ॥ ३३७ ॥

जालीय वार छजि सुत्ति दाम । नग जंनु वह सज्जे सु काम ॥  
सत घन उंच साला सु एक । तहां मयन सयन सुष सेज नेक ॥

छं० ॥ ३३८ ॥

वनि गौष पट्ट सज्जे सुथाल । आछादि साम आसन उछार ॥  
मूढाव गादि मंडी सुथान । बैठा सु<sup>२</sup> साहि आसन उतान ॥

छं० ॥ ३३९ ॥

दस पंच हथ्य अधि चित्रसाल । सम फिरत मंडि सह मत्त<sup>३</sup> आल ॥  
उमराव मीर बैठै सुतथ्य । कुलवंत खर संग्राम हथ्य ॥

छं० ॥ ३४० ॥

उंचे उतान बंधे अनूप । घनि थिज्ज<sup>४</sup> मनहु मंडे सरूप ॥  
ठठौ सु कियौ कविचंद आनि । उमरा मीर सब अन्नि मानि ॥

छं० ॥ ३४१ ॥

दूहा । दिष्यन रूप सु जोग कौ । आए सब नर नारि ॥

अंदर बासी अथ्य सह । मिले निरष्यन हार ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

चोटक । मिलि साह हरम्स हरम्स चढी । प्रिथीराजह अंत अनंत बढी ॥

जर कंवर अंवर से पटयं । क्षमि जानि भुमंकत ता तटयं ॥

छं० ॥ ३४३ ॥

मिलि तुंगत मासिक ताटकयं । जनु देव विमान सुरा सकयं ॥

( १ ) ए० कृ० को०—वासानि ।

( २ ) मो०—जु ।

( ३ ) ए० कृ० को०—सहस्र ।

( ४ ) ए० कृ० को०—घनग्रज्जि ।

दिपिनं घन सासि कविंद इहं । नव रासित भासि सबह कहं ॥

छं० ॥ ३४४ ॥

दूहा चित्तं रूप कविचंद कौ । जै जगि गोरिय राव ॥

जिहि दुचित्त अरि गंजियै । सो अथवै उग्गाव ॥ छं० ॥ ३४५ ॥

गाथा । निरषे रूप सुभट्टं । तन विभूति जट्ट जूटायं ॥

कल पानी चप पानी । निरषे अद्भुत तेज विद्यानं ॥

छं० ॥ ३४६ ॥

पातिसाह वाक्यं ।

शाह का कवि से योग के विषय में प्रश्न करना ।

पहरी । बुल्लाइ चंद हजूर साह । बूझै सुवत्त अप पातिसाह ॥

वैराग जिंद कहौ जोग गति । जोगहि विरुद्ध हम मिलन मति ॥

छं० ॥ ३४७ ॥

कविचंद वाक्यं ।

सुरिल्ल ॥ एक मंहरत रूप निरप्ये । बुल्लौ साह कवी सम सप्ये ॥

माया मोह सुष्य संसारं । दारा पुत्र पौत्र परिवारं ॥

छं० ॥ ३४८ ॥

धन धामं शौपय अनि अथ्यी । मोह जाल विलसन विस बथ्यी ।

नह छुट्टै कलि कर्म प्रकारं । जोग भ्रम जनु षंडाधारं ॥

छं० ॥ ३४९ ॥

बंधे पंच इंद्री परिवारं । बंधे पंच धारना धारं ॥

कांचन जेम उपल अवि लप्ये । बंधे गंठि आतमा सप्ये ॥

छं० ॥ ३५० ॥

भंगर विषम गिरिवर वासं । मिलन एक आतमा सहासं ॥

इहि विधि विवरि सु जोगह जित्तै । अवर उभै चुकै सुह रत्तै ॥

छं० ॥ ३५१ ॥

तव जंपै कविचंद महामय । सुनि गोरौ साहव गज्जन वय ॥

दरस जात सब लोक समथ्यय । दरसन कारन तीरथ अथ्यय ॥

छं० ॥ ३५२ ॥

( १ ) ए० क० को०—चित्त ।

धरपति दरस सहि करतारं । तिहि पहु दरसन वंचि विचारं ॥

छं० ॥ ३५३ ॥

कवित्त । सो जागी परिमान । लेय अहार इन सुभति ॥

ज्यौ लेपन लिसि ग्रहै । अधिक नन लेप अप्य छति ॥

से राजन परिनाम । कवहु चपै नन लच्छिय ।

ज्यौ अंघि रूप नन चपै । सोय राजन मन अच्छिय ॥

पंडित सु विनय विद्या चपै । चिपाति स्वामी जिय चपै ।

सुत सोय तात रिन उद्धरै । पिता सोय अथ्यहु अप्यै ॥

छं० ॥ ३५४ ॥

पतिसाह वाक्य ।

पद्धरी । कविचंद कही जब इह सुकथ । पतिसाह तवै अप्पिय सुवत्त ॥

शंगार वीर जौ जोग सत्त । जोगह विरुद्ध हम मिलन मत्त ॥

छं० ॥ ३५५ ॥

दूहा । हमहि निलै जैचंद सुनि । विरह दरिद्रीय लोभ ॥

अरु जु दुनौ महि संचरहि । हम सौ मिलत न सोभ ॥

छं० ॥ ३५६ ॥

चन्द वाक्य ।

तवही चंद कवि उच्चर्यौ । सुभ पुच्छहु सुलतान ॥

जोग भोग इहि रीति तौ । सब जानौ सु विद्वान ॥

छं० ॥ ३५७ ॥

पातिसाह वाक्य ।

कवित्त । जोग सुनौवरदाय । इक संतोष तत्त गुर ॥

अप्य पावन रहै प्रान । ग्रहै संतोष मंच उर ॥

कंद मूल जिन पत्र । रहै नुनि अरघन काल ॥

वन गज कीटी अंग । अंग संतोष सुपाल ॥

संतोष रतन पर मन्नि नर । तजि संतोष हम चितियै ॥

जोगह विरुद्ध हम मिलन मति । इह अबुद्धि इह मंतियै ॥

छं० ॥ ३५८ ॥

चंद वाक्यं ॥

दोहा ॥ हम अबुद्धि सुरतान इह । भट्ट भाष सुष काज ॥  
नव रस ले रस अप्परस । इहै जोग सुष काज ॥

छं० ॥ ३५६ ॥

पातिसाह वाक्यं ॥

कवित्त ॥ जोय सुष्य कविचंद । होय वितराग देह घत ॥  
सुपनि सोय मुनि रुद्र । चक्रवरती न लहु छित ॥  
सो न सुष्य हरि हरन । ब्रह्म पावै न नाग नर ॥  
लहि न सुष्य ससि सूर । सुष्य लडै न काल वर ॥  
लडौ न सुष्य सुर असुर नर । नह लडौ द्रिगपाल किहि ॥  
सो सुष्य जोग क्यों मुक्कियै । क्यों कविंद्र आयौ सुइहि ॥

छं० ॥ ३६० ॥

चंद वाक्यं ॥

चौपाई । वीतराग सह चित्त सहायौ । सुपह काज तज्जे सुष भायौ ॥  
इक जपूई<sup>१</sup> अरदास नरिंदं । करै साहि तौ मुक्कौ<sup>२</sup> दंढं ॥

छं० ॥ ३६१ ॥

पातिसाह वाक्यं ॥

दोहा ॥ जो कछु मंगहु भट्ट वर । करै बनै सुविहान ॥  
भुमि लच्छि द्यौं चंद तुहि । नह अप्पौं चहुआन ॥

छं० ॥ ३६२ ॥

चंद वाक्यं ॥

नह मंगै कविचंद नृप । कहौं न रसना छंडि ॥  
कथ्य पुब आलम कहौ । छिनक अवन जो मंडि ॥

छं० ॥ ३६३ ॥

बालपनै प्रथिरीज सम । अति मिचं तन कीन ॥  
जुकछु स्वाद मन मै भयौ । इच्छा रस मँगि लीन ॥

छं० ॥ ३६४ ॥

( १ ) भे० छिन ।

( २ ) ए० क० को०—द्रंढ ।

( ४ ) ए० क० को०—मुक्कै ।

( ३ ) ए० क० को०—जपूई ।

( ५ ) ए०—दिंद ।

पुत्र पराक्रम राज किय । कछु जंघो तुछ ग्यान ॥

अरु जु कछु तुछ जंघिहौ । सब जानौ सुविहान ॥

छं० ॥ ३६५ ॥

इक सुदिन ग्रथिराज रस । मुष कहुँ तिहि वार ॥

सिंगिनि सरवर इच्छिविन । सत्त हनन घरियार ॥

छं० ॥ ३६६ ॥

वर सुनंत कपै हियौ । दिल न रहै सुरतान ॥

सुद्वरोग औ रोग मन । कहुन कौं सुविहान ॥

छं० ॥ ३६७ ॥

तीं आयो तुहि आस करि । तो पासै चहुआन ॥

सो दरोग दिल लगि सुक । कहुन को सुविहान

छं० ॥ ३६८ ॥

सैं जान्यो अचरिज मन । नृपति संच कौ लीह ॥

तव लगि इहि विधिना लषा । आय संपत्ते दीह ॥

छं० ॥ ३६९ ॥

अरिल ॥ कहुन कौं पतिसाह तुंही । मनमंभ रह्यौ कविसाल जुही ॥

आयो सु आज करि पैज तही । बन जांड सुसाह सहाव गही ॥

छं० ॥ ३७० ॥

पातिसाह वाक्य ।

दुहा ॥ सुनि सहाव गह गह हंस्यौ । वे वे भट्ट सुभट्ट ॥

अंघिहीन मति हीन भौ । कहा मंगै मति नट्ट ॥

छं० ॥ ३७१ ॥

अंघिहीन सैं बल घय्यौ । मति नट्टी सुरतान ॥

जु कछु मोहि अणन कछ्यौ । बोल होय परिमान ॥

छं० ॥ ३७२ ॥

चंद वाक्य ।

तबै भट्ट अरदास करि । सच कहौ सुविहान ॥

( १ ) ए० कृ० कौ०—तिहि ।

( २ ) ए० कृ० कौ०—मंगौ ।

जु कछु कहीं कविचंद कौ । सो दिज्जय सुविहान ॥

छं० ॥ ३७३ ॥

पातिसाह वाक्य ।

कवित्त ॥ अवे चंद मन मंद । नच भगो मृदंग भगि ॥

गयौ मुरह मिटि तार । पंथ जंजी जचह लगि ॥

रहै ' इह आंसाफ । पंथ लगो पंथी सह ॥

अप्य बाट लगयौ । पंथ कट्टै कहि गह गह ॥

को सात तात को मुक्त को । को सेवक साईं सुहुअ ॥

साजंस मंत लभौ रवनि । गयौ राज बल राज तुअ ॥

छं० ॥ ३७४ ॥

चंद वाक्य ।

दूहा ॥ सब विधि घटी नरिंद कौ । हम जाचक नह पीर ॥

वचन परै सिर कट्टि दै । ते पिचो कुल धीर ॥

छं० ॥ ३७५ ॥

पातिसाह वाक्य ॥

तव चिंतिय साहाव मन । हंसि वुल्यौ सम चंद ॥

जाय मंगि सम राज सौ । हम दिष्यहि आनंद ॥ छं० ३७६ ॥

पद्मरी \* ॥ सुरतोन जाम फुरमान किन । हुज्जाव पान तिहि सथ्य दिन ॥

ले जाहु चंद प्रथिराज पास । तू मंग हम्हा दिष्यै तमास ॥

छं० ॥ ३७७ ॥

दूहा ॥ तव गोरी हुज्जाव प्रति । कहै सुकवि लै जाहु ॥

अरस परस विन दूरि तै । लै आसीस कहाउ ॥

छं० ॥ ३७८ ॥

हुजावपान वाक्य ।

कवित्त ॥ बोलि पान पद्वी हुजाव । बोलि पीरोज पान वर ॥

दस हथ्यनि प्रथिराज । निजरि रष्यौ अवन्न कर ॥

दरस द्रिगन अप्यौ । परस दरस नन पावै ॥

( १ ) ए० इहै ।

\* इस छन्द को ए० क० कौ० तीन प्रतियों में मुरल्ल और मो० में अरिल्ल करके लिखा है ।

जु कछु कहै संभरौ । मंगि सोई यह आवै ॥  
 घरियार हनन मंगै वरह । अकल अपूरव वत्त इह ॥  
 दिष्यै चित्त अपिन सुचित । कहों साह अगै सु कह ॥  
 छं० ॥ ३७९ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज के पास जाना ।

दूहा ॥ चल्थौ भट्ट चित मनि कल । संकट तज्जन प्रान ॥  
 फुटत नन<sup>१</sup> दिष्यत नयन । इन अवस्थ चहुआन ॥ छं० ॥ ३८० ॥  
 अग्या मनि हुजाव पहु । लै चलिय कवि सथ्य ॥  
 प्रथम राज पासह गयौ । तब रुक्यौ दह<sup>२</sup> इध्य ॥ छं० ॥ ३८१ ॥  
 दर्शकों के बीच कवि का कौतुक करना ।

अरिस्त ॥ बाल वृद्ध मिलि मत्त तमासै । मनौ इंद्र मिलि मेछ छमासै<sup>३</sup> ॥  
 भुर जंवू नट नाटक किन्ने । आचिज परवस रासिक भिन्ने<sup>४</sup> ॥  
 छं० ॥ ३८२ ॥  
 तारी तीन दई तिन बारह । बज्जन मिसि बुल्यौ बिहु वारह ॥  
 हहि वेरह कवि रेन उछारिय । टग टग लगि रहे नर नारिय ॥  
 छं० ॥ ३८३ ॥

भुजंगी ॥ टगे टग लगौ हरमौ सुभीरं । नटौ नट बुल्लै सुवाने गंभीरं ॥  
 ठटौ दुर्गा रण्यौ घरी पंघ नीरं । बटौ घट्टि घरियार वंधे सुवीरं ॥  
 छं० ॥ ३८४ ॥  
 हहकंत कौतूहलं धाम धामं । भई भुस्मि छाया विमानं न जानं ॥  
 ग्रहं मुक्ति लालं विहारंत वीरं । ग्रहै पानि उज्जाव बुल्यौ सुधीरं ॥  
 छं० ॥ ३८५ ॥

चंद वाक्य ।

कवित्त ॥ सुनि हुजाव मुष आव । उजाव पुच्छै सुदि उंतुहि ।

( १ ) ए० क० को०—नेन ।

( २ ) मो०—दस ।

( ३ ) ए० क० को०—छडासै ।

( ४ ) ए० क० को०—सिन्ने ।

छंडि पानि सुनि वानि । हानि जिन देइ अंस मुहि ॥  
 सेत पीत कलहरिय । लाल पुत्तरीय सुअंवर ॥  
 तहां उचारत वत्त । हनै गोरीधर उस्सर ॥  
 आचंभ एक नजरहि निरप । हम सीपह हंसिय दसम<sup>१</sup> ॥  
 अस लप्य असंग उचित कर । तव सुभट्ट दिष्यौ असम ॥  
 छं० ॥ ३८६ ॥

दूहा ॥ जव निरप्यौ हुजाव उध । मंच थंभि उचरप्यि ॥  
 चलि कारन प्रथिराज कौ । कह्यौ सुमीत समप्यि ॥  
 छं० ॥ ३८७ ॥

कवि का राजा की करुणामय मूर्ति देखकर आशीर्वाद देना  
 परन्तु राजा का कवि को सिर न नवाना ।

पड्यरी ॥ तव गयौ चंद नृप तथ्य याह । जहां मित्र वयट्टो दिट्ट चाह ॥  
 दस हथ्य रप्यि दिनी असीस । सिर नयौ नहीं मन करिय रीस ॥  
 छं० ॥ ३८८ ॥

दूहा ॥ चप्य हीन द्रुवल नृपति । दस वंभन रहै पास ॥  
 रोस अगनि तन प्रजरै । चिन्ता अतिहि उदास ॥ छं० ॥ ३८९ ॥  
 कवित्त ॥ निमिल जीय वर सिंध । दई तन दुष्ट भाव करि ॥  
 रोस अगनि प्रजरंत । जाय आक्रित अग्नि क्षर ॥  
 भौकित तन निकाम । वीर तन छीन सु पंजर ॥  
 अरि<sup>२</sup> तित्तै चिंत्यौ सुक्रान्त । संभर्यौ चंद सुर ॥  
 घत सिंचि वीर पावक क्षर । रीस रवत तन प्रजर्यौ ॥  
 कहि भट्ट वीर विरदावली । देत राज रज संभर्यौ ॥  
 छं० ॥ ३९० ॥

कवि का विरदावली पढ़ना और राजा का कवि का वाणी  
 पहिचान कर क्रोधित हो उसे धिक्कारना ।

पड्यरी ॥ धर पंथ राय आजान वाह ।<sup>३</sup> दुरजनन भरि घर राय दाह ॥

( १ ) मो०—हसम ।

( २ ) ए० क० को०—अति ।

( ३ ) ए० क० को०—दुरजन नरींद्र रा वीर दाह ।



चालुक्क राय पर पैज पार । पंगुरे राय जग जग्य ढार ॥

छं० ॥ ३६१ ॥

वर वीर जित्त ससिवृत लिनि । कमधज्ज राय सिरदार किनि ॥  
संभरे वत्त संभरि नरेस । सुर बंधि बंध जिहि कियौ भेस ॥

छं० ॥ ३६२ ॥

रनयंभ यंभ जस मंडि पान । चालुक्क चंपि जालौर थान ॥  
धनु धनुष धीर अर्जुन नरेस । जित्तया वीर दप्पिन सुदेस ॥

छं० ॥ ३६३ ॥

सन मध्य राय अवधूत धृत । संभरीय राव सोनेस पूत ॥  
जग रषि नाम जर जर सरीर । चलि संगि संगि आयौ सुधीर ॥

छं० ॥ ३६४ ॥

पहिचानि चंद सिर धुन्यौ राय । संगह सरन बुल्यौ जुवाय

छं० ॥ ३६५ ॥

दूहा ॥ सुनि कवित्त चलि चित्त किय । अदभुत भट्ट सरीर ॥

मोहि उलंघ्यौ जानि कै । चिंतत प्रबुधुन धीर ॥

छं० ॥ ३६६ ॥

कवि का कहना कि मैं होनहार को क्या जानूं ।

भवति न सुभ्यौ मोहि पै । हैं कों कंगुर जांड ॥

हम तुम छेहौ इह भयौ । भावी देवह थांड ॥

छं० ॥ ३६७ ॥

चौपाई ॥ बोलि चंद संकर वर दाइय । ग्रहै रहैं ज्यौं मनसा धाइय ॥

मत्ति कविंद कविंद उपावै । एक चोट षग मग्न दिषावै ॥

छं० ॥ ३६८ ॥

कवित्त ॥ दिष्यत घान पीरोज । अग्न चह्लै विमान वर ॥

स्याम सेत अरु रत्त । पौत धज भिस्ति देव धर ॥

पीर फेर तौ जाइ । जाय अछरी प्रगुंक्षर ॥

इह अचिज्ज दिषियै । इंद्र इंद्रान चंद वर ॥

चवरुष उचोर वर मंच किय । हब्बन बन बन रुकि मुष ॥

तिहि घरी भट्ट सुप सामि तन । कही वत्त मंडीत<sup>१</sup> रूप ॥

छं० ॥ ३८६ ॥

कवि का गला भर कर राजा को समझाना परन्तु राजा  
का फिर भी सिर न नवाना ।

दूहा ॥ नेह<sup>२</sup>नीर रुकि कांठ कवि । नैन झलझल पानि ॥

विन वोमत<sup>३</sup> बोल्हौ नृपति । चंद चिंति वर वानि ॥छं०॥४००॥

समझि राज मन मंझ तुअ । ग्रह निसा मंझ वैठि ॥

उलुक अइ निसि अंत की । ग्यान सवदह दिट्ट ॥

छं० ॥ ४०१ ॥

पञ्चरी ॥ विग्रह सुदेव नवत नह अग्नि । ढरि अ'पि पानि मन चित्तह लग्नि ॥

पहिचानि चंद वर धुनिग सीस । सिर नयौ नहीं मन करियरीस ॥

छं० ॥ ४०२ ॥

कवित्त ॥ संभरि नरेस करि रीस । सीस धुनिन धनु सज्जहि ॥

ईहि मित्त तन चित्त । चित चिंतत सोइ सज्जहि ॥

निकट सुनै सुरतान । वास दिसि हथ्य उंच सौ ॥

जस अवसर सत नंचि । अथि लुट्टहि न करिन भौ ॥

कवि का राजा से कहना कि तू वह वरदान दे जो

तूने देने को कहा था ।

द्वै दान जानि संभरि धनी । उहि गड्डहि तुहि जलहि हवि ॥

दित अदित हंस दोउ उड़हि चलि । इह उप्पर कह करहि कवि ॥

छं० ॥ ४०३ ॥

राजा का कहना कि मैं नेत्रहीन होकर अब कैसे

निशाना बेध सकता हूं ।

दूहो ॥ चंद मंत पुनि जानयौ । एह अवस्थ कवि देपि ॥

( १ ) मो०—मंडिय मुरूप ।

( २ ) ए० कृ० को०—तेह ।

( ३ ) ए० कृ० को०—बोल्त ।

( ४ ) ए० कृ०—मै ।

दिष्टमान<sup>१</sup> सेवे सुकुन । बिन दिठ हनै विसेषि ॥

छं० ॥ ४०४ ॥

वे अंघिन हीनौ सु हौं । तूँ चव अंघि न चूक ॥

असुर बधों किम बिन सुरह । उर<sup>२</sup> सुर बध्यौ उलूक ॥

छं० ॥ ४०५ ॥

कवि का कहना कि मैं शाह को बुलाऊंगा आप  
वचन दीजिए ।

चौपाई ॥<sup>३</sup> तूँ राजा समर्थ्य सुजान । सुरग अरथ जानहि सग्यान ॥

अरथी दोष न पूछिय राय । बगसि नरिंद बुलाऊं साहि ॥

छं० ॥ ४०६ ॥

राजा दनह सुरत्ति सुमेक । घरियार सत्त सर बंधन तेक ॥

अंघि पान मन चित्तव लग्न । दोइ सुजस तुअ नरपति भग्न ॥

छं० ॥ ४०७ ॥

राजा का कवि का अभिप्राय समझ कर शोकित होना ।

दूहा ॥ सुनि कवित्त चल चित्त किय । हय गय भूमि न दव ॥

असमै जो संगै सुकवि । निपति विचारिय सब ॥

छं० ॥ ४०८ ॥

बहु विचारि चिते न्पति । विपति तनह मन अंघि ॥

सर सरीर सुकत सुवर । तेजति उडुहि पंष ॥

छं० ॥ ४०९ ॥

चित चितिय भिचह बयन । दह दिसि भूम पयाल ॥

सिर धुनि सीस निषेध करि । लभै चंद मुहाल ॥

छं० ॥ ४१० ॥

कवि का पृथ्वीराज को प्रबोधन कराना ।

कवित्त ॥ अरे नरिंद वा बंध । पिंड कचौ सुर<sup>४</sup> सचौ ॥

अंब तेज संमीर । धरा आकासग पंचौ ॥

( १ ) ए०—दिष्टमान ।

( २ ) ए० कृ० को०—उह ।

( ३ ) ए० कृ० को०—तू राजा समर्थ्यह धीर । सुरग अरथ जानहि सब वीर ।

( ४ ) ए० कृ० को०—भूप ।

( ५ ) ए० कृ० को०—सर ।

अरा जोल विद्यौ । काल आनन सहि पिलहि ॥  
 हुंतं पपि हं अजप । जंपि सरवर करि मिलहि ॥  
 उडि चलै हंस हंसह सरस । छंडि नेह तन पंजरहि ॥  
 प्रथिराज आज सोमंत करि । 'जस नरिंद जिहि उब्बरहि ॥

छं० ॥ ४११ ॥

राजा का कहना कि कवि सो सब संभव है  
 वा असंभव है ।

दूहा ॥ समय सुपेती समय रन । समय भोग सुध जोग ॥  
 असमै कोइ न आदरै । क्यौं आनौ संजोग ॥ छं० ॥ ४१२ ॥  
 कवि वाक्य कि करतूत लेने को सब समय है ।

कवित्त ॥ अरे नरिंद नर मत्त । कूहकूह निज रप्पं ॥  
 कंगुर गोल संग्रह्यौ । 'काल भप्यै उन भप्यं ॥  
 काल पग लै जम्म । काल गुरमंच उचारं ॥  
 वितति वित्त आवित्त । वित्त ते वित्त निहारं ॥  
 जो होय भेस तौ साम बल । असमौ समौ परप्पियै ॥  
 ना रहै देव अहि देव बल । देव दहन हर पिप्पियै ॥  
 छं० ॥ ४१३ ॥

राजा वाक्य ।

दूहा ॥ अरे चंद असमै समै । परप पुरिष दिग होइ ॥  
 उहै काल अंतर परै । नर निरबल पप जोइ ॥ छं० ॥ ४१४ ॥

कविचंद वाक्य ।

कवित्त ॥ सुनि नरिंद सब धंध । 'कोन हतौत तुंज नर ॥  
 जीत वच संजोग । जोग जीव' प्रमान वर ॥  
 जोग क पानी परत । उठै बुद बुद जोनी जिय ॥  
 पंच मूल बंध पंच । पंच गो बंधि सम्मि जिय ॥

( १ ) मो०-जेहि नरिंद जग उब्बरहि ।

( २ ) मो०-कालपै उन भपं ।

( ३ ) ए. क. को०-कोन हतौ तनुजनर ।

( ४ ) ए. क. को०-जिव जेत ।

इक रहै किति चिंती सुचिंत । चिन्तहारौ चिंतियै ॥

नचियै सुजोय अवसर बनै । अवसर नखन मत्तियै ॥

छं० ॥ ४१५ ॥

दूहा ॥ जस जीतन जुग वत्तड़ी । सह वत्तड़ी अकथ्य ॥

बोल रहै धर सषियै । वत्त तत्त वह अथ्य ॥ छं० ॥ ४१६ ॥

राजा वाक्य ।

बार बार मोही कहै । एक वैन सों मान ॥

धाम धरती जो लहौ । तौ अप्पौ तो दान ॥

छं० ॥ ४१७ ॥

कविचंद वाक्य ।

कवित्त ॥ साठ हजार वरष । करत तप पलक चप्प पुलि ॥

गंगा जल सहि मच्छ । देषि क्रीड़ंत चित्त डुलि ॥

मानधात पुत्रिका । वरिय प्रारथ्य पचासं ॥

पंच हजार कुमार । जनमि सुकदेव प्रकासं ॥

सो भरी रिष्य राजस रचे । भंति भंति सुप भोगवत ॥

कहि चंद ग्यान ऊपजि चलयौ । माया छल तजि सुपन वत ॥

छं० ॥ ४१८ ॥

षंडीवन प्रजलत । एक प्रणीलक निकसि ॥

जदुपति पेषि पर्यपि । पथ सों कथ कथा वसि ॥

इह सुजीव करि जग्य । भयौ षटवार पुरंदर ॥

अजहूँ क्रम लागि जोग । फिरत चौरासी अंदर ॥

कहि चंद मत्ति भेटै जगत । कौरति सा दाने वजत ॥

संभरि नरिंद संभरि कितक । ता कारन पिचवट तजत ॥

छं० ॥ ४१९ ॥

पच पुरातन क्षरिग । बहुरि नह चढ पलासह ॥

इह सुनि संभरि वार । बहुरि ना भोग विलासह ॥

असमै संभरि वार । प्रान जौ सत सों सुकै ॥

( १ ) ए. कृ. को. बोध ।

( २ ) ए. कृ. को. - तनन वत्तन अथ्य ।

सुजन छोल संसार । वान किस पध्यह चुखै ॥  
 संसार सकल इस उचरत । दोहौ कंठह धवल छर ॥  
 अवसान गर्यै सा पुरिस कौ । लखौ जीवो लप्य सर ॥  
 छं० ॥ ४२० ॥

रे नरिंद सह सुपन । अपन द्विषित अस जगन ॥  
 नरक राज किय साज । रंक भौ रज्ज सिकंमन ॥  
 जीव जंत सह रवनि । पंच मलह प्रपंच वनि ॥  
 दिष्टमान विन ६हौ । मुकत संसै न करै फनि ॥  
 सहदेव विस्न अग्या दवन । गति अगति संसौ न करि ॥  
 सह मुकति ह्यथ किति सध्य वधि । ग्रिहत विना निम्मान धरि ॥  
 छं० ॥ ४२१ ॥

एक वान कंवरी । एक सर एक समुद्री ॥  
 इय गुन विन जे जरै । इष्य विन काम सु कट्टी ॥  
 अवन चप्य कर साहि । साहि दिप्य दिसि बाई ॥  
 स्त्रर बंध अरि बंध । चित चिते वहु नाई ॥  
 नृप राज गलह रष्यै सुजुग । जीव दिसा सो सुकि वर ॥  
 निप रहै जोग तन छंडिहां । तन रष्यौ जुग रहन भर ॥  
 छं० ॥ ४२२ ॥

श्लोक ॥ उलूको वद्धतो येन । तादृशं क्रियते बलं ॥  
 अनुसारं सु शब्द न । वाक्यं म्लेच्छाधिपं शृणु ॥  
 छं० ॥ ४२३ ॥

चौपाई ॥ हों समै अंध जम अंध प्रवीन । वैर अंध आतुर मति हीन ॥  
 अंधा दुष्य न देपै राइ । वगस नरिंद बुलाज साहि ॥  
 छं० ॥ ४२४ ॥

दूहा ॥ प्रकृत पुरुष कियन कहर । काम अंध चित चित ॥  
 ए पर दुष जानै नहीं । तुं किन जानै मित ॥  
 छं० ॥ ४२५ ॥

तीन वान चहु आन वर । प्रगट कहै सुखितान ॥

काल ग्रह सँभरि धनी । वर अप्पौ सुहि दान ॥

छं० ॥ ४२६ ॥

पृथ्वीराज वाक्य ।

सुनौ चंद वरदाय वर । कह निम्नै निम्मान ॥

सबद प्रगट गोरी कहै । तौ तुझ अप्पौ दान ॥

छं० ॥ ४२७ ॥

कविचंद वाक्य ।

जौ अप्पौ सुहि दान वर । चंद चित्त बहु धीर ॥

तौ निम्मान सुनि निम्नयौ । जीय न'तत्त सरौर ॥

छं० ॥ ४२८ ॥

आनंदे प्रथिराज जिय<sup>१</sup> । बंध कियौ कवि सथ्य ॥

हनौ साहि घरियार सौ<sup>२</sup> । उभै इष्य मिलि हथ्य ॥

छं० ॥ ४२९ ॥

जिहि बेधै जग जित्तियै । जिहि बेधै जस होइ ॥

सो विद्वन<sup>३</sup> सोमेस सुअ । कित्त प्रगट्ट<sup>४</sup> लोइ ॥

छं० ॥ ४३० ॥

हुजाब का कवि को लिया कर शाह के पास आना ।

कवि बुझ्झवि प्रथिराज कौ<sup>५</sup> । गह्यौ धाय हुजाब ॥

सबै रीति किहि राज कू<sup>६</sup> । जुगति सुवथ्य जवाब ॥

छं० ॥ ४३१ ॥

पङ्करी ॥ साई या विघ आकर्षि<sup>१</sup> जाम । बुझ्झौ न कपट हुजाब<sup>२</sup> ताम ॥

घरियार घात हुंकार राज । करि फिर्यौ कब्बि हुजाब उवाब ॥

छं० ॥ ४३२ ॥

आए सुपास गोरी नरिंद । बुझ्झयौ अथ्य घरियार भिंद ॥

बिक्ख्यौ उअर गोरी सहाब । मानहि सुहीन बलहीन आव ॥

छं० ॥ ४३३ ॥

( १ ) ए. कृ. को०-तीयन ।

( २ ) ए०-दिय ।

( ३ ) मो०-वेधन ।

( ४ ) ए० क० को०-सौ ।

( ५ ) ए० कृ० को०-जुगति जुथ्य जुवाब ।

( ६ ) ए० कृ० को०-चहुआन ।

अग्या सुदीन धरियोर साहि । पुर पुरह छोरि आनहु सुरोहि ॥  
 धरिआर आज बंधन सुअत्त । कौतिग काज<sup>१</sup> मिलि सव सत्त ॥  
 छं० ॥ ४३४ ॥

कविचन्द का शाह से कहना कि यदि आप आज्ञा देना  
 स्वीकार करें तो राजा दान देना स्वीकार करता है ।  
 कवित्त ॥ तव सुचंद वरदाय । साहि अग्गे कर जोरे ॥

कृपन गंठि जिमि साहि । राज गंठि न अव छोरे ॥  
 नट नकोर नहि करहि । जाउ जिहि आस छंडि तव ॥  
 अदभुत रस असमान । जाइ सुक्यौ न घन<sup>२</sup> अव ॥  
 छंद्यौ सुलोभ जिय जंम कह । और अतिव अंतर रहै ॥  
 फुरमान साहि सत्तहि बंधौ । विन फुरमान न सर गहै ॥  
 छं० ॥ ४३५ ॥

ततार खां का खिझकर कविचन्द को डपटना ।

तव ततार भुकि उयौ । भट्ट जीवन पर रूठौ ॥  
 पातसाहि गोरी नरिंद । अग्यौ भयौ भूठौ ॥  
 सत्त सुभर धरियार । अग्र विन इक्क न विहिय ॥  
 सरद सुमुय उचरहि । होइ अग्यौ जो सिहिय ॥  
 फुरमान साहि तुहि तौ नहीं । जिय चहुआन न होइ कल ॥  
 इह बाह रह सिंगिन धरिय । ए धरियार न विहि बल ॥  
 छं० ॥ ४३६ ॥

कवि का पुनः कहना कि यदि शाह बचन दे तो प्रत्यक्ष  
 तमाशा देखलो ।

दूहा ॥ जे फुरमानत अप्प मुष । दै तिह वेर हमीर ॥  
 घर धरियारन वज्जिहै । सर सौ सह गंभीर ॥

छं० ॥ ४३७ ॥

( १ ) ए० कु० को०—राज ।

( २ ) ए० कु० को०—बहु ।



सपत घात घरियार घन । पंच घात हनि जान ॥  
 कठन काम गोरी हनन । अप्य देत फुरमान ॥ छं० ॥ ४३८ ॥  
 साहि जलाल दुहाइ कहि । जल जानीत निवाज ।  
 अप्य देइ फुरमान तिय । सुनै सुमत्तिय राज ॥ छं० ॥ ४३९ ॥  
 शाह के शब्द देने पर सहमत होना और घरियार मंगा  
 कर सजाया जाना ।

सुनि ततार सुनि रुस्तमी । सुनि निसुरति हज्जाव ॥  
 दिस्त्रियपति सो अप्पिहै । देय साहि जो आव ॥ छं० ॥ ४४० ॥  
 कवित्त ॥ मंगि साहि घरियार । दिसित मंडे उत्तर दिसि ॥  
 सौ क्रम नृपति घरीव । क्रम सत अइ साहि लिस ॥  
 सिंधु, राग सहनाइ । पंच सदावर वद ॥  
 मेघ यज्ज आकृत । वीर नीसानति नद ॥  
 प्रजपत्ति षां पुरसान षां । चाव दिसा निप विंटियौ ॥  
 चहुआन कलातक जग तपै । किहि लख्यौ वर मिंटियौ ॥  
 छं० ॥ ४४१ ॥

कौतुक देखने के लिये दर्शकों की भाड़ होना ।

मातीदाम ॥

चढि वेगस सथ्य सुगोष हरम्स । चिगजारि न वाल सुवेसन रंम ॥  
 सुभै थन थान प्रकार निनारि । मनं क्रम चित्र चितंत सवार ॥  
 छं० ॥ ४४२ ॥  
 सकंगुर सोह कुरंग नयन । किधों गिरि कूट ससीक सर्वन ॥  
 सितं सित कंगुर वाल उझकि । तिनं मझि नोरि नरीर तलकि ॥  
 छं० ॥ ४४३ ॥  
 चढे वर पुत्र उकत्ति हरे । मनु दंपति काम कोलास धरे ॥  
 विकसंत नरी नर कित्ति मुहं । मनु अंक रका दिन अइ सुहं ॥  
 छं० ॥ ४४४ ॥

( १ ) ए० कु० को—चढि वेग हरम्स सुगोष हरम्स ।

( २ ) ए० कु० को०—सुवेसन रंम ।

चिंह पास भुवनं दूरं मरजै ।<sup>१</sup> छरियं हथ मंजु सुव्रन छजै ॥  
मनु देपन राज तमास गुरौ । ससि सूर अण सन सुष्य जुरौ ॥  
छं० ॥ ४४५ ॥

उड़ि धूम बज्जी विषमं पवनं । परियौ दस मंदर वार मनं ॥  
छं० ॥ ४४६ ॥

तत्तारखां का कहना कि आज जुमारात है आज  
रहनं दाजिए ।

दूहा ॥ देपि भूप नक पून वर । पां ततार कहि भांति ॥  
आज रषि साहाव वर । पर्यौ दिवस जमारति ॥  
छं० ॥ ४४७ ॥

तत्तार खां का शाह से अपने स्वप्न का हाल कहना  
और समझाना ।

कवित्त ॥ बोलि पान तत्तार । साहि सपनं पर जक्कि ॥  
अद्भुत चरित मैं दिठ्ठ । सीस दिट्ठी न पोज लहि ॥  
ग्रहसारं संसार । पीर पैगंवर रुठ्ठं ॥  
विन बहर उम्मरी । नेघ आकूत सु बुठ्ठं ॥  
वर स्वान सिंघ जंजुक सयन । हरसिद्ध बीबी भग्गरी ॥  
पंजरत बारपट्टन सकल । अकल कित्ति सम्हौ लरी ॥  
छं० ॥ ४४८ ॥

दूहा ॥ सेत वस्त्र कत्ती रहौ । मों विंटे तिनि वार ॥  
औ रन मुक्क्यौ दिप्पियै । राज निद्धि बड़ सार ॥  
छं० ॥ ४४९ ॥

कवित्त ॥ कहै पान तत्तार । साहि दुल्लभ मनुच्छ जम ॥  
वार वार पावै न । बहुरि अवतार राज कृम ॥  
छिन में देह भजंत । प्रान धरिजै इह धत्त ॥  
वर कोटर घरियार । उत न बड्डे जुध तत्त ॥

इह देह जतन करि पारियै । कहै पीर पैगंबरह ॥  
 बल भट्ट तदिन निधि अष्य वह । सुनौ साहि कहि उम्बरह ॥  
 छं० ॥ ४५० ॥

छिनू बार धरि सेष । इंद्र हरि जात जग्य यह ॥  
 अश्वजीत कुँवार । कोपि सारंत पग लय ॥  
 प्रथुराजा पहिचानि । आनि ग्रह सष्य सुमंडिय ॥  
 करे रूप तिन सहित । जियत सुरपति को छंडिय ॥  
 मघवान लाज लुप्ति न सकिय । कलियुग कारन रष्य ॥  
 तत्तार कहत पतिसाह सों । ते प्रगट्ट अप पिष्य ॥  
 छं० ॥ ४५१ ॥

शाह का कहना कि मैं तो अब कहा हुआ बचन  
 नहीं पलट सकता ।

दूहा ॥ सुनौ पान ततार इह । गुर गलहां इत तत्त ॥  
 जु कछु बत्त सुष कहियै । करै वनै सुनि मित्त ॥  
 छं० ॥ ४५२ ॥

उवन खर संभरि अवन । निप चिती करतार ॥  
 उदति दीत<sup>१</sup> दो पंजरह । हंस सु उडुन हार ॥  
 छं० ॥ ४५३ ॥

कवित्त ॥ जीव सिंघ आसिंघ । सींह उज्जंत<sup>२</sup> तत्तनय ॥  
 या फुरमान अपीस । बाच चंदन वर दानय ॥  
 जोइ सिंघ आसिंघ । राज सिंघ नन जान ॥  
 बच्च सिंघ सो सिंघ । सेन सिंघसि पुनि पान ॥  
 छचीस अस्स छची धरै । बचन भट्ट जंपै लिया ॥  
 देहंन छीन भगौ सया । भगौ सा पंचन चियो ॥  
 छं० ॥ ४५४ ॥

( १ ) ए० कु० को०—दीव ।

( २ ) ए० कु० को०—उक्षत लत ।

तत्तार खां का खिझकर दरबार से उठ जाना ।

शुक्ति ततर पां उठि । हाथ सिर झारि सीस धुनि ॥

वर सुकै दरवार । गई सुरतान सत्ति फुनि ॥

विधि विधान नृमान । सत्ति छुट्टी पैगंवर ॥

बोली पान पुरसान । दिष्टि तत्तार भिस्ति घर ॥

कविचंद राज चहुआन पै । सर अदभुत उच्चार पिय ॥

घरियोर एक सत सर इकै । वर वर वद भारे सरिय ॥

छं० ॥ ४५३ ॥

शाह का कवि को पान देना कि हमने दिया  
तुम राजा से मांगो ।

दूहा ॥ उहै दैन नृपति कछौ । उहि मंग्यौ फरमान ॥

सु कविचंद सरसे मिलै । पानि साहि चहुआन ॥

छं० ॥ ४५४ ॥

कवित्त ॥ भयौ चंद मुख चंद । दंद गय काम सपत्तौ ॥

पाति साहि गोरी नरिंद । दियौ बोल निरतौ ॥

तवहि चंद वरदाइ । बहुरि राजन पै आयौ ॥

ज कछु तंत को संत । अंति कहि कहि समझायौ ॥

हैं दियौ दान चिंता न करि । होइ चंद सहे निरति ॥

फरमान कज अंगे परौ । देहि साहि मंगे निपति ॥

छं० ॥ ४५५ ॥

कवि का राजा को लिवा कर रंगभूमि  
में आना ।

पहरी ॥ कवि चलयौ राज प्रथिराज लेन । मिलि चले सुरथ सुर सवेगेन ॥

बुझावै राज लै चलयौ भट्ट । उम्भरा मौर सब मिले यट्ट ॥

छं० ॥ ४५६ ॥

जान्यौ सुअंत प्रथिराज अप्प । किनौ जुगति द्रुग्गा सुजप्प ॥

( १ ) ए० कु० को—वेद ।

( २ ) मो०—उमराव ।

रोमंच अस्म उभार अंग । सूरंत अति बढ्यौ सुरंग ॥

छं० ॥ ४५७ ॥

चहुआन तेज देख्यौ अनूप । तिस भयौ<sup>१</sup> हित्त सुरतान रूप ॥

भुज धर्यौ चंद कवि चाहुआन । उल्लस्यौ सौस सजि आसमान ॥

छं० ॥ ४५८ ॥

सुरतान निजरि चहुआन आन । भैभीत कालसह सथ्य जानि ॥

आकृत बजि<sup>२</sup> वर किसल बाग । जानयौ सथ्य निप वर विभाग ॥

छं० ॥ ४५९ ॥

प्रथिराज सब देख्यौ सु<sup>३</sup>आव । अंतक रूप सवगुन सहाव ॥

रुष्ययौ राज मधि<sup>३</sup> रंगभोम । कौतिग सब देखंत व्योम ॥

छं० ॥ ४६० ॥

संवत अट्ठावन माघ मास । अनसित्त पष्प दसमी सुभास ॥

दिन घटिय पंच पल आदि जात । तारक मूल चिव तिथ्य पात ॥

छं० ॥ ४६१ ॥

प्रथिराज आनि मधि रंगभोम । साहाव उंच गहकंत व्योम ॥

घरियार घात बंधे समुप्य । पठई कमान साहाव पुप्य ॥

छं० ॥ ४६२ ॥

**हुजाव का राजा के हाथ में कमान देना और राजा**

**का कई कमान तोड़ देना ।**

कवित्त ॥ प्रथम राज कमान । आनि दिन्ही हुजाव ॥

गहिय राज चहुआन । तानि भंजी<sup>४</sup> तर आव ॥

अवर आनि कमान । सोन बलराज समान ॥

इस भंजिय दह पंच । अतिहि काठिन्य कमान ॥

उच्चर्यौ घान मीरान इस । हयौ तात हम जेन रन ॥

अच्छे कमान हम ग्रह गरुअ । सोइ समय्यौ साहि इन ॥

छं० ॥ ४६३ ॥

( १ ) मो०—तिन्नयौ ।

( २ ) ए० कु० को०—जु ।

( ३ ) ए० कु० को०—अंग ।

कवि का कहना कि राजा का निज कमान दिया जाय  
यही बहुत है ।

चवै चांद बरदाइ इम । सुनि मीरन सुरतान ॥  
दै कमान चौहान कौं । साहि दियै कछु दान ॥

छं० ॥ ४६६ ॥

राजा को हुजाव का वही कमान देना और तत्तार का पुनः  
कहना कि यह तमाशा न देखो इस में मारे पड़ोगे ।

कवित्त ॥ असद सुअन कमान । आनि दीनी हुजाव ॥  
निरषि ताम गोरी नरिंद । तत्तार सिताव ॥  
अति प्रमान उत्तान । भार अनभू १ इषि वर ॥  
गुन गुरान घन प्रान । टंक पच्चीस जेअर जुर ॥  
इष्पे विसाहि आचिज्ज मन । दैन राज प्रसंस किय ॥  
उच्चर्यौ ताम तत्तार तमि । धुनि सौस कत कं पि जिय ॥

छं० ॥ ४७० ॥

अहो साहि साहाव । सुनौ अरदास हित हर ॥  
अरि स्तु<sup>१</sup> इहै आरिष्ट । दिष्पि अनभूत तेज नर<sup>२</sup> ॥  
इह कमान उत्तान । जेअर जुत्तान समान ॥  
नन दीजै या हृथ्य । चिंति प्राकृम पुमाग<sup>३</sup> ॥  
कमान<sup>४</sup> याहि संगह सजै । सु जनु नाग लद्धिय मनी ॥  
सम पंष चिरह संगह मिलै । चिंति काल कृत अप्पनी ॥

छं० ॥ ४७१ ॥

काल व्याल दसा कराल । समपंष कोप सम ॥  
ता आनन अंगुरी । कोइ मेलै सुमंत कृम ॥  
आय अभुत्त<sup>५</sup> उमरा । सोम पष्पलि सब सज्जै ॥  
क्रोध सज्जि करिवान । मत्त मारहि<sup>६</sup> विन कज्जै ॥

( १ ) ए० कृ० को०—जु ।

( २ ) ए०—तर ।

( ३ ) ए० कृ० को०—प्रमानं, पुरानं ।

( ४ ) ए० कृ० को०—प्रमानं ।

( ५ ) ए० कृ० को०—या अभुत्त ।

( ६ ) ए० कृ० को०—मारन ।

कवि का कहना कि राजा का निज कमान दिया जाय  
यही बहुत है ।

चवै चंद वरदाइ इम । सुनि मीरन सुरतान ॥  
दै कमान चौहान कौं । साहि दियै कछु दान ॥

छं० ॥ ४६६ ॥

राजा को हुजाव का वही कमान देना और तत्तार का पुनः  
कहना कि यह तमाशा न देखो इस में मारे पड़ोगे ।

कवित्त ॥ असद सुअन कमान । आनि दीनी हुजाव ॥  
निरवि ताम गोरी नरिंद । तत्तार सिताव ॥  
अति प्रमान उत्तान । भार अनभू १ इष्य वर ॥  
गुन गुरान घन प्रान । टंक पच्चीस जेअर जुर ॥  
इष्ये विसाहि आचिज्ज मन । दैन राज प्रसंस किय ॥  
उच्चर्यौ ताम तत्तार तमि । धुनि सौस कत कपि जिय ॥

छं० ॥ ४७० ॥

अहो साहि साहाव । सुनौ अरदांस हित्त हर ॥  
अरि लू<sup>१</sup> इहै आरिष्ट । दिष्य अनभूत तेज नर<sup>२</sup> ॥  
इह कमान उत्तान । जेअर जुत्तान समान ॥  
नन दीजै या हथ्य । चिंति प्राकृ<sup>३</sup>स्स पुमाग<sup>३</sup> ॥  
कमान<sup>४</sup> याहि संगह सजै । सु जनु नाग लद्धिय मनी ॥  
सम पंष चित्<sup>५</sup>ह संगह मिलै । चिंति काल कृत अप्पनी ॥

छं० ॥ ४७१ ॥

काल व्याल दसा कराल । समपंष कोप सम ॥  
ता आनन अंगुरी । कोइ नेलै सुमंत क<sup>६</sup>म ॥  
आय अभुत्त<sup>६</sup> उम्भरा । सोम पष्यलि सब सज्जै ॥  
क्रोध सज्जि करिवान । मत्त मारहि<sup>७</sup> विन कज्जै ॥

( १ ) ए० कृ० को०—जु ।

( २ ) ए०—तर ।

( ३ ) ए० कृ० को०—प्रमानं, पुरानं ।

( ४ ) ए० कृ० को०—प्रमानं ।

( ५ ) ए० कृ० को०—या अमुत्त ।

( ६ ) ए० कृ० को०—मान ।

वच्चै सुसाहि तत्तार तुअ । मस करि चिंत ततार जुअ ॥

विन नयन वान इच्छै गुनै । सो नन विद्वै घात तुअ ॥

छं० ॥ ४७२ ॥

संकर वड्यौ सिंघ । ताहि पोलिय रस पिस्सै ॥

कौन सुरम जग्गावै । कोप करि तासम पिस्सै ॥

याहि न रघ्यौ साहि । रोस वड्यै स्वरत्तन ॥

याहि न पेपौ निजरि । याहि नह मिलियै वत्तन ॥

पल दुष्ट एह चहुआन कौ । मस करि संग कमान प्रस ॥

किंत दुष्ट भट्ट संगह सज्यौ । जौ घन बुक्कै मति मरम ॥

॥ छं० ॥ ४७३ ॥

### कवि की उक्ति ।

तवहि साहि साहाव । हुज्जाव हजूर सदि ॥

दिय कमान तिहि हथ्य । देहु चहुआन वाच वदि ॥

काल कला किय प्रान । तन बुक्किय मोह मन ॥

दिय दिस्सैसह पान । धर्यौ जीवनि साहि जन ॥

हिकमति अनेक वंचत कहत । जु कछु साई निस्मान सुधि ॥

सेटै न मिटै हाकिस हसम । बल अनेक जो करै बुधि ।

छं० ॥ ४७४ ॥

राजा का अपनी कमान पाकर परम प्रसन्न होना और

निसुरत्त खां का राजा के हाथ में तरकस भी देना ।

पद्मरी ॥ संगहे पान कमान राज । उम्भरे अंग अंतर विराज ॥

आलिंग बुंवि उर चपि अण्ण । वड्येव तेज तामंस दण्ण ॥

छं० ॥ ४७५ ॥

कर धरे स धनु आनंद चित्त । विछुर्यै मिल्यौ चिरकाल मित्त ॥

कमान राज मिलि तेज ताय । अरि मंझि विंढि मिलि मनु सहाय ॥

छं० ॥ ४७६ ॥

आवरे स्वर अंगह असेस । मन त्रिद्व त्रिद्वि वामन विसेसि ॥

तन जगि रोम उम्भारि वीर । लगिय सुतण मन पास नीर ॥

छं० ॥ ४७७ ॥



आवृत्त वरन सम किरन बैन । प्रवलण्य सख पारस्स नैन ॥  
फारकत अधर थरकत बाह । संतक्कि खर मंडल सुराह ॥

छं० ॥ ४७८ ॥

चितै जु इष्ट मन जंपि जाप । तामंस तेम तन तेज ताप ॥  
कर रोहि पान धारै कमान । गुंधरै गयन धुंधरि दिसान ॥

छं० ॥ ४७९ ॥

त्रिष दाह विषम समबहि समीर । संपात चक्र उलका समीर ॥  
आसन घट्टि मिलिअंत साहि । बुझ्झै न मोह मतिमंद ताह ॥

छं० ॥ ४८० ॥

आमूढ चित्त उल्लरा मीर । टगटगिय लग्गि अंतर उरीर ॥  
आरिष्ट इष्ट सोचहि अपार । ठंकेव मोह मै काल भार ॥

छं० ॥ ४८१ ॥

सनसृष आनि सज्जे घर्यार । भुअ पान असिय निप अंतरार ॥  
चढ़ि उंच कज्ज कौतिग हरस । सम बाल वृद्ध सज्जे सरस ॥

छं० ॥ ४८२ ॥

उच्चर्यौ राज सम चंद ताम । मंगहु सु बान मस करि विराम ॥  
बरदाय साहि अरदास कौन । नप देहु बान कौतिग चिन्ह ॥

छं० ॥ ४८३ ॥

तब साहि ताम बच्च्यौ अभीर । निसुरत्ति देहु तरकस तीर ॥  
निसुरत्ति आनि दिय साहि हथ्य । तरकस तीर गोरी गुरथ्य ॥

छं० ॥ ४८४ ॥

राजा का कमान लेकर उसे संधानना, कविचंद का  
राजा को ज्ञान समझा कर दृढ़ता देना ।

कवित्त ॥ ग्रहिय तीर गोरीस । कौन चिन इच्छ अप्प कर ॥

काल अंत पल प्रेम । बुद्धि भगिय समोह भर ॥

दिषि नंध्यौ दिल्लीस । धरिय सज्जै सु सीस कवि ॥

कर दीनौ चहुआन । प्रान बद्ध्यौ सुईस तब ॥

तामंस रज्ज तन ताम तन । घन बीरत्त उभार भर ॥

सुरतान प्राण कारन प्रलय । जनु जस सज्ज्यौं दंड कर ॥

छं० ॥ ४८५ ॥

दूहा ॥ लगी टगटगी सोहितन । अरु अत लगे मीर ।

किन्तु रूप सुस्फूर्तैव मन । भरिय घटी अति भीर ॥

छं० ॥ ४८६ ॥

ग्रहिय चंद दीनौ नृपति । धर्यौ पानि प्रथिराज ॥

चंपि अग्र सुष सलित विया । करन काल अरि काज ॥

छं० ॥ ४८७ ॥

इल घसि पानि पविष्ट किय । सिंगिनि सर गुन बंधि ॥

चरचि चंद सुषचंद भय । मिलिय राज मन तंधि ॥

छं० ॥ ४८८ ॥

झित सुधरै सब सुद्धरै । कहै राज अव धारि ॥

सुर नर सुनि वर जात सब । राजन सरन सुधारि ॥

छं० ॥ ४८९ ॥

कवित्त ॥ वचन सच्च तन कच । सिद्धि साधक इम अष्पय ॥

वापौ कूप तटाक । देव सुर नर झित भष्पय ॥

पंथ तत्त किय पिंड । तथ्य षोडस आधार ॥

सुनि मंडल घट चक्र । वाय मंडल अधिकार ॥

पिल्लैजु काल सिर उप्परै । कहि चंद तेन पटंतरै ॥

प्रथिराज नृपति धीरज धरि । बोल रापि कल अंतरै ॥

छं० ॥ ४९० ॥

चंद्रायना ॥ वात सबै प्रथिराज सुनी । सर इकै आईय ।

सर चुकै नृप पाछली । मामूर गमाइय ॥

कोरि पवोरा किहते । अरि भंजे जट्टे ॥

इहि सर आइ विल विया । नही तर सह गड्डे ॥ छं० ॥ ४९१ ॥

( १ ) ए० कृ० को०-चकित । ( २ ) ए०-वसन ।

( ३ ) ए० कृ० को०-भइय ।

( ४ ) मो०-चत्र ।

( ५ ) ए० कृ० को०-पठवर ।

( ६ ) ए० कृ० को०-कौडि पवाड़ा ।

( ७ ) ए० कृ० को०-नइ तरु गड्डे ।

दूहा ॥ कहि राजन सहि मंडलै । निसिपत्ती रवि सष्य ॥  
जौ मारै सुरतान को । सकल चाव तौ रष्यि ॥

छं० ॥ ४६२ ॥

सुनि राजन कविचंद कहि । षेल एक इह षेलि ॥  
करि धीरज मारे बनै । रज पाछिली उवेलि ॥

छं० ॥ ४६३ ॥

वेली बहुरि न पाइ है । इहै जानि तुम बात ॥  
दिल्लीपति जुग जुग अमर । उगारौ' अपियात ॥

छं० ॥ ४६४ ॥

कवित्त ॥ अहंकार मद मोह । लोभ साया घटि लग्गी ॥  
काम क्रोध भय त्रिषा । पुधानीयं तन जग्गी ॥  
दुष सुष बंध्यो जीव । दुय्य अंतर सुष पावै ॥  
सुष अंतर दुष होय । निगम सुर नर इम गावै ॥  
सुष दुष रहइ घटिकासु जिम । राजन एह परंपरा ॥  
करि मग्न अचल संभरि धनौ । गयौ जावन आईय जुरा ॥

छं० ॥ ४६५ ॥

राजा का कहना कि मित्र अब वह पुरुषार्थ नहीं  
है क्या करूं ।

दूहा ॥ अंघि विनट्टी हीन मति । हुअ पुरपातन मंद ॥  
सुग्रह सुट्टि द्रिढ़ न रहै । क्यों मारहु कविचंद ॥

छं० ॥ ४६६ ॥

सिर तुट्टै षत्रिय निपति । अरियन गहि दावंत ॥  
गयन ग्रज सुनि सिंघ जिम । तलपि<sup>२</sup> तप्पि जिय दित ॥

छं० ॥ ४६७ ॥

अवन सवद जौ संभरौं । अरिमुष बोलै सोइ ॥  
तौ मारौं कविचंद जौ । वह कमान बल होइ ॥

छं० ॥ ४६८ ॥

कवि का कहना कि तुम बाण संधानों में तुम्हें  
वैसाही न करदूँ तो कवि नहीं ।

सह तीन सुरतान के । अवन सुनाजं तुल्लु ॥  
सोइ कमान सो बल करहुं । तौ जानै कवि सुल्लु ॥  
छं० ॥ ५०० ॥

पुरुष बोल हकै कहै । बार बार बच दोष ॥  
धरि धीरज मैं प्रथम कहि । साहि बुलाजं सुष्य ॥  
छं० ॥ ५०१ ॥

कवि का राजा को पुनः समझाना और उत्कर्ष देना ।

बुद्धिहीन फिरि फिरि बुकै । अम छंडिय धरि धीर ॥  
अप्य सवारय नेलिह दै । परम तत्व गहि तीर ॥  
छं० ॥ ५०२ ॥

अप्य मरन सब कौ दियै । लज्जी जीय धरंत ॥  
संभरेस कविचंद कहि । विरले मार मरंत ॥  
छं० ॥ ५०३ ॥

अरिग्रह जौ वासुर वसै । अप्य सुआरय काज ॥  
सो जीवत नप अतक सम । गत अजाद गत लाज ॥  
छं० ॥ ५०४ ॥

जौ पित्रिय अरि सबद सुनि । जोइ लाज छोरंत ॥  
ता जननी को दोष नप । कलुक जाति सहि अंति ॥  
छं० ॥ ५०५ ॥

तो तन सब सज्जिय नपति । सबद वेध औ हाथ ॥  
अरि रोपै घरियोर अप । मारि अमाने वात ॥  
छं० ॥ ५०६ ॥

सर फुट्टा बिन माम मति । बल प्रौरुष पड़ियोह ॥

( १ ) ९०—नृति ।

झुंकार ज्यों अरिधन तनी । पापत लप्पडि योह ॥

छं० ॥ ५०७ ॥

कवित्त ॥ पवन संधि धरि ध्यान । मंडि छल बल<sup>२</sup> करि भूपति ॥

जल थल महिल सुभक्ति । रहै सु सबद देवंगति ॥

इन पहिली किहि विजै । घरी ऐसी नह पाइय ॥

इह बासुर इह जाम । तुझ्क वपते<sup>२</sup> इह आइय ॥

दिह राषि जीव संभरि धनी । सो सठौ अरिसुष जड़ी ॥

सामंत नाथ कविचंद कहै । रहै जुगै जुग बतडी ॥

छं० ॥ ५०८ ॥

पृथ्वीराज का उत्तेजित होकर कहना कि मैं शत्रु को अवश्य  
मार गिराऊंगा ।

दूहा ॥ लगा बोख सु लगना । घट उट्टी घन अग्नि ॥

उस सेवर सुष बुल्यौ । नृप गय नंगन लगि ॥

छं० ॥ ५०९ ॥

चंद्रायना ॥ तो जानै कविचंद मौ सुप तीर लगाउं ।

गंग धरन रवि चंद लगि कलि बोलि रहाउं ॥

इह बासुर बेला घड़ी हों बहुरि न पाउं ।

ताराइन जिम तूट तौ अरिधरनि धुकाउं ॥

छं० ॥ ५१० ॥

कवि का पुनः राजा को उत्तेजित करना ।

दूहा ॥ बार बेर असपति ग्रहिय । सब नृप लगो पाइ ॥

तुअ भुज बल अचरिज कह । अब इह मारि गिराइ ॥

छं० ॥ ५११ ॥

कवित्त ॥ जस काजै कलि कल । भार सोवन नद अप्यौ ॥

सिवर कपि अप्यौ । सीस जगदेव सम्यौ ॥

विक्रम राव नरिंद । कट्टि पर दुष जस क्षलै ॥  
 राजा रावल राव । सुजस कारज यपि चलै ॥  
 पायो न इसौ तिनहं सुजस । कल्लो चंद सों दिठ्ठइय ॥  
 सर एक बीच दुरयो सुजस । डारि तीर किन कट्टइय ॥

छं० ॥ ५१२ ॥

दूषा ॥ सुरतानह मुर सुवद दै । अब मिलि ह्वय कामान ॥  
 अब मूरप किं सोच मन । समझ संधि चहुआन ॥

छं० ॥ ५१३ ॥

### पृथ्वीराज वचन ।

फेरि राज इह वत्त कहि । वरदिय दै वर कान ॥  
 हनौ साहि घरियार सों । जो अप्यौ विय वान ॥

छं० ॥ ५१४ ॥

### कविचन्द वचन ।

कवित्त ॥ एक वान चहुआन । राम रावन उथप्ये ॥  
 एक वान चहुआन । कृन्न सिर अजुन कप्ये ॥  
 एक वान चहुआन । चिपुर सिर संकर विद्विय ॥  
 एक वान चहुआन । अमर लप्यन पारद्विय ।  
 सो एक वान संभरि धनी । वियो वान नह मुक्कियौ ॥  
 घरियार एक इक सुगरिय । एक वान नृप चुक्कियै ॥

छं० ॥ ५१५ ॥

### पृथ्वीराज वचन ।

दूषा ॥ कहै राज कविराज सुनि । मो बल सकति अपार ॥  
 अप्यै संभरि धौरहर । सत्त हनौ घरियार ॥ छं० ॥ ५१६ ॥

### कविचन्द वचन ।

कवित्त ॥ द्रोणाचारिज पास । वान विद्या पढ़ि पंडव ॥

पराक्रम पारष्य । लोह सै वष्य सु मंडव ॥  
 साया लताईस । सवा लष पच सोप प्रति ॥  
 पच पच पारमान । भार मन सवा लष धृति ॥  
 जसि वान संच अरजुन तव । धनुष प्रंचि जंपिय सुवल ॥  
 कविचंद्र कहत प्रथिराज सुनि । पचि पचि छेदिय सकल ॥

छं० ॥ ५१७ ॥

कविचन्द्र का राजा को समझाना कि सात नहीं  
 एक को वेध ।

अरिह ॥ तिहि अर्जुन समान तूं रज्जन । जौ सर संधि हनै पति गज्जन ॥  
 सत धरयार तनौ अचरज्जन । अचरिज प्रान मान सम तज्जन ॥

छं० ॥ ५१८ ॥

कजित ॥ इक फोरि लंभरी । सत फोरै जस नासय ॥  
 ते दीहा संक्रमै । जे अंग मलयो गिर वासय ॥  
 'सिर हरयो आंघवै । उरह अरि समौ न बुझै ॥  
 सृञ्चौ न जीवे कोइ । मोहि परमप्यर सुझै ॥  
 इम जंपै चंद्र बरहिया । वेहो कंधै धवलहर ॥  
 औसांन न बुझै रे हिया । इकन फोरै इक सर ॥

छं० ॥ ५१९ ॥

पचि होय परधान । घाय पंडौ दिषलावै ॥  
 लाह होय परधान । भरे घर राज यँभावै ॥  
 कायय होय प्रधान । अहो निस रहै पियंतौ ॥  
 बंभन होय प्रधान । सदा रष्यवै अचिंत्यौ ॥  
 नाई प्रधान कीजै नहीं । चंदुविरद सच्चौ चवै ॥  
 चहुआन वान गुन सटवै । सम चुकिस मोटै तवै ॥

छं० ॥ ५२० ॥

जेन बाल भारष्य । वाय पुत्तह पग बिंध्यौ ॥

जेन बान अयिरथ्य । धरा उप्पर हरि संध्यौ ॥  
 जेन बान भारथ्य । ग्रहै कौरव कुल पोयौ ॥  
 परदूषर ताड़िका । तास सुष अंत समोयौ ॥  
 सुरतान प्रान तिन बान गहि । सु कविचंद सचो चवै ॥  
 सोई जवान तुअ कर चढ़ै । मम चुकिस मोटै तवै ॥

छं० ॥ ५२१ ॥

श्लोक ॥ मादहे चित्त पुरानानि । नीति कालानि संचये ॥  
 अप्पण बान बानानि । किं प्राण सुक्कन शंसण ॥ छं० ॥ ५२२ ॥  
 कवित्त ॥ संभरि नरस करि रीस । सीस धुन्नहि नह संकहु ॥  
 चलहु चित्त नह करहि । मोहि अप्पणरि मन अंकहि ॥  
 उत्तमंग कर असिय । वाह उप्पर वासन्नहि ॥  
 सैल वत्त संचरै । राय भुअपति सब सुन्नहि ॥  
 सुरतान घान गुर ग्यान गहि । गुर अचिछर चंदह मनिय ॥  
 सुक्कहि नसत्त सर सत्त कह । तूं सामंत खरन धनिय ॥  
 छं० ॥ ५२३ ॥

प्रथीराज कल्मान । बान दृढ़ सुट्टि गहिय कर ॥  
 जिन विसमौ मन करहि । करहि भुअपति अप्पु वर ॥  
 जु कळु दियौ कौमास । कियौ अप्पनो सु पायौ ॥  
 सोइ संभरिय सहाय । तुहिज अस्सरपुर आयौ ॥  
 विधिना विधान मोटै कवन । दीनमान दिन पाइयै ॥  
 सर इक्क फौज संभरि धनी । सत्तह जुगग रहाइयै ॥  
 छं० ॥ ५२४ ॥

कवि के इशारे पर राजा का शाह की तरफ  
 मुख करना ।

गिरनारा लगि गौड़ । देस जीता जंगल थल ॥  
 लंका गढ़ जित्तयौ । समद जित्तौ उर सलियल ॥  
 हथिना वर जित्तयौ । सीम कंधारा बंधिय ॥  
 मथुरापुर जित्तयौ । एक सुष धारन संधिय ॥



प्रथिराज सुनवि सभरि धनी । सुहिनैही मम जानि सुप ॥  
इस जंपै चंद वरदिया । सजि जालधर देस सुप ॥

छं० ॥ ५२५ ॥

दूहा ॥ जल विन भट्सु भट्सु से । करि अप्पहि सुप वन ॥  
परम तत्त सुख्यौ नपति । संगहि फुरमानन ॥ छं० ॥ ५२६ ॥

पृथ्वीराज का कमान ले सनाह होकर शाह के  
हुकम की प्रतीक्षा करना ।

पद्मरी ॥ फुरमान मान संग्यौ सु चंद । चपहु अति अंध चप भइय इंद ॥  
ठगठगिय लगी बुधि भगिय साहि । फुरमान दियौ मनो करज गाहि  
छं० ॥ ५२७ ॥

कवि का डमरू बजाकर शाह से हुकम देने के लिये  
प्रार्थना करना और राजा को उत्कर्ष देना ।

दूहा ॥ मानि नपति वरचंद कहि । डँवरु गहि वर छप्य ॥  
महि मथ्यै गोरी सु वर । कहि कहि जंपि सु अप्य ॥ ५२८ ॥  
कवित्त ॥ हुंकारै सु गिरइ । राम जल सायर बडौ ॥  
गिर तोल्यौ इनवत । देव हुंकारै दिहौ ॥  
हुंकारै लषिमन । भवर गय नंगन पार्यौ ॥  
हुंकारै कलि कन । मेर चिट अंगुलि चार्यौ ॥  
चहुआन रान सभरि धनी । बह सुवान तुअ कर लह्यौ ॥  
छेदै न तीर सत्तह तवै । असपति हुंकारौ द्यौ ॥  
छं० ॥ ५२९ ॥

बादशाह की आज्ञा से पृथ्वीराज का सर संधानना  
और कवि का बिरदावली पढ़ना ।  
हुकम साहि गोरी नरिंद । अप्यै फिरि दीनौ ॥

वान सु बर प्रधिराज । काज अण्णै सु लीनौ ॥  
 तव पढ़ि वीर नरिंद । छंद विरदावलि पुद्यह ॥  
 सुनत जस्यौ ज्यौ नाग । नाग संतर सुनि तद्यह ॥  
 अददात पोर लम्भय नहीँ । जीहा सेस सद्यस कहि ॥  
 खबलेस द्रात्य कारन मनहु । छंद पद्यरिय जति महि ॥

छं० ॥ ५३० ॥

पदरी ॥ जित्तए जूह गोगी नरिंद । पुरसान जी ति गति करिय मंद ॥  
 आरत काल भजि मति जीत । दिप्यियै रूप भै भै अभीत ॥

छं० ॥ ५३१ ॥

जुलि कान्न जोग तुंही नरिंद । नष्ययो भोम उड़ि स्तर दंद ॥  
 बंधयौ शाप रथ' जुत वीर । जिहि वध्यौ तिमिरलिंगत मीर ॥

छं० ॥ ५३२ ॥

सुर जीति असुर सुर भौ प्रमान । सत समद वाच दिटुतु वपान ॥  
 चहु आन बंधि तिहि कियौ बंध । पुज्जी जु साहि जिन पुटि सुख ॥

छं० ॥ ५३३ ॥

चढ़ि जंग पंग जिहि भंग कीन । परवत्त पारि जिहि हेम लीन ॥  
 एिंदवान हृद परवत प्रमान । तहाँ लगि कीन सुरतान आन ॥

छं० ॥ ५३४ ॥

पुरसान हृथ्य नथ्यी पिछान । गजपति बंधि कौ वीर आनि ॥  
 पुरसान मीर पसु सम सतीन । सौ सूर जीत चतुरंग कीन ॥

छं० ॥ ५३५ ॥

सुरतान टेक ढाहे सुपास । अदभुत चरित्त मुकै न गास ॥

छं० ॥ ५३६ ॥

शाह के हुंकार देने पर राजा का उसके तालू पर  
 निशाना लक्ष करना ।

दूहा ॥ वधन धरी चयुआन पै । वचन समण्यै साहि ॥

चित्त तोस तालुक रपि । सब संपत्तौ आय ॥ छं० ॥ ५३७ ॥

पहिले हुकम पर राजा का सर संधानना, दूसरे पर चढाना  
और तीसरे पर शाह का तालू वेध देना ।

हनूफाल ॥ सुरतान अग्ग प्रथिराज । जनु मत्त मद गजराज ॥

बिन चप्प उभौ मेर । चिहुं कोद अरिगन फेर ॥

छं० ॥ ५३८ ॥

कपि घटिय पान ततार । कविचंद बैन उचार ॥

कर करषि न्यप कोवंड । धर धरनि थर ब्रह्मांड ॥

छं० ॥ ५३९ ॥

दिव देव जै जै बैन । व्योमान सुरछरि ऐन ॥

करि करपि धनु पर वान । सुत सक्र पानि प्रमोन ॥

छं० ॥ ५४० ॥

कहि चंद जंपत साहि । फुरमान धरहु सु बाहि ॥

सुप उच्चरै सुरतान । मै देउं तिय फुरमान ॥

छं० ॥ ५४१ ॥

सै अंग साहि जलाल । सुप उच्चरै सद आल ॥

फर फरकि उष्ट फराल । जनों सुपत गजवत काल ॥

छं० ॥ ५४२ ॥

फिर चंद राजन प्रोस । इक वान इक धरियास ॥

फुरमान इक भय साहि । सुनि सवद अवन्न चाहि ॥

छं० ॥ ५४३ ॥

भय उभय बर फुरमोन । इक इप्प धनु कर कान ॥

सुनि त्रितिय बैन अतिंत । सुरतान भूमि पतंत ॥

छं० ॥ ५४४ ॥

वरषंत अंवर ऐन । पहु पंजली वर गेंन ॥

सुर सूर सुरपति सोषि । दिन प्रवल प्रथुपति आषि ॥

छं० ॥ ५४५ ॥

सुरतान गौ हरि साज । भिन करै आतम राज ॥

चहुआन भर सुरतान । इक जोति मडि समोन ॥

छं० ॥ ५४६ ॥

नव वाक नव रस छंद । सरसें मिलै कविचंद ॥

छं० ॥ ५४७ ॥

दूहा ॥ चितिय साहि फुरमान सुप । जिस कब्यौ सुर काल ॥

छन्द्यौ तांमि प्रथिराज तमि । वचन वचन सुप ढाल ॥

छं० ॥ ५४८ ॥

कवित्त ॥ भयौ एक फुरमान । वान जोगिनिपुर संध्यौ ॥

सोइ सचद अरु वान । अग्र अविचल करि बंध्यौ ॥

भयौ विद्यौ फुरमान । तानि रप्यौ अवनंतरि ॥

तियौ भयौ अनभयो । पर्यौ पतिसाहि धरंतरि ॥

लौ दसन रसन तालुअ सघन । सोस फट्टि दह दिसि गवन ॥

सुरतान पर्यौ पां पुकरै । भयौ चंद राजन सरन ॥

छं० ॥ ५४९ ॥

शाह के प्राणहीन होकर गिर पड़ने पर कवि का

राजा का हठयोग द्वारा प्राण त्याग

करने को कहना ।

दूहा ॥ सिलक बंधि फट्टिय प्रयुक्त । नयन तोल अति सन्नि ॥

लवन कंठि किडिय विकल । तग्यौ साहि सम धुनि ॥

छं० ॥ ५५० ॥

पर्यौ साहि धर देपि कवि । समझायौ नृप जाग ॥

आसन बंधि उलट्टि चक । छंड़ि प्राण उल्लोक ॥

छं० ॥ ५५१ ॥

राजा का कहना कि यह मुझसे कैसे होसकता है ।

तब राजन कविराज सौं । कहै भेद पर ग्यान ॥

राजस विच सातुक करन । क्यो आवै कवि जान ॥

छं० ॥ ५५२ ॥

शाह के मरने पर महा हाहाकार होना ।

कवित्त ॥ परत धरनि सुरतान । पान मिलि पलक पिट्टि सिर ॥

मैं वरज्यौ बहु बार । साहि दुसमन असंघ वर ॥

भवन भोग रहि जोग । पास आयौ रत तुअ अरि ॥  
 वचन विद्धि तिहि सिद्धि । लियौ गोरी नरिंद हरि ॥  
 तिल मक्ख भट्ट टूकइ करौ । तव तु साहि गोरी धरौ ॥  
 हिंदवान पान इस उच्चरै । अब प्रतीत कोय जिन करौ ॥  
 छं० ॥ ५५३ ॥

कविचन्द का छुरी से अपना सिर काट कर राजा  
 को भी छुरी सौंप देना ।

कहै पान तत्तार । भट्टकरि टूक रज्ज सम ॥  
 मै द्रिग देषत कहि भट्ट । दुष्ट देषियै काल अम ॥  
 धरौ साहि अब गौरि । विनै साहाव चरन लगि ॥  
 चंद राज वर घेरि । लोछ छुट्टै न अंग लगि ॥  
 छुरिका कविंद जट मक्ख थी । कहि भट्ट काटि सीस अप ॥  
 तां पछै चंद वरदाय ने । दइय राज वर हथ्य नप ॥  
 छं० ॥ ५५४ ॥

दूहा ॥ भूत वृंत मन वृत्तयौ । भवछित पढि कविचंद ॥  
 गयौ अण्ण जीवंत करि । तजिय सुवर ग्रह दंद ॥  
 छं० ॥ ५५५ ॥

राजा पृथ्वीराज का प्राणान्त और रासो की इति ।

कवित्त ॥ सरन चंद वरदाइ । राज पुनि सुनिग साहि हनि ॥  
 पुहपंजलि असमान । सीस छोड़ी सुदेव तनि ॥  
 सेछ अवद्धित धरनि । धरनि सब तीय सोह सिग ॥  
 तिनहि तिनह संजोति । जोति जोतिहि संपातिग ॥  
 रासौ असंभ नव रस सरस । चंद छंद किय अमिय सम ॥  
 अंगार बीर करुना बिभछ । भय अदभुत एसंत सम ॥  
 छं० ॥ ५५६ ॥

पृथ्वीराज की पूर्व कथा और उनका गुण एवं सुश्रुत गान ।  
 कवित्त ॥ दुंद रूप दानव उतंग । बोलि आना नरिंद दिय ॥

अस्ति सकल सोमंत । तेज प्रधिराज वीर विय ॥  
 वल विक्रम अति स्मर । जीह कविचंद प्रमानं ॥  
 एक ठास उपज्जै । एक थल सरन निधानं ॥  
 संजाल काल दिल्ली रहौ । चौसट्टा टोडर समनि ॥  
 दैवत्त पद दैवान गति । दैव गति जोगह सघनि ॥

छं० ॥ ५५७ ॥

रिन जित्यौ कमधज्ज । साहि वंध्यौ गहि गोरी ॥  
 मैवाती मठ किड । दौरि सो श्रुतिय तोरी ॥  
 यहुँ भंज्यो भीम । धरा गुज्जर दिसि धायौ ॥  
 इहै करी अपियात । कलस कुल नृपति चढायौ ॥  
 कौयो न कि छुँ करिहै न को । जग जित्तै जुग जस लियौ ॥  
 संभली सकल भूपति वयन । कौजै ज्यौं पिथ्यल कियौ ॥

छं० ॥ ५५८ ॥

भुजंग ॥ पर्यौ संभरी राइ दीसै उतंगा । मनोमेर वज्जी कियं अंग भुंगा ।  
 जिनै वारवारं सुरत्तान साछौ । जिनै भंजि के भीम चालुक गाछौ ।

छं० ॥ ५५९ ॥

जिनै भंजि मैवात दै वार वंध्यौ । जिनै नाहरं राइ गिरनार संध्यौ ॥  
 जिनै भंजि यट्टा सु कब्यौ निवदं । जिनै भंजि सहिपाल रिनथंभ दंद ॥

छं० ॥ ५६० ॥

जिनै जीति जहों ससीद्रत्त आनी । जिनै भंजि कमधज्ज रथ्यौ ज, पा न ॥  
 जिनै भंजि पंडा सु उज्जैन माहीं । परंमार भीमंग पुत्री विवाही ॥

छं० ॥ ५६१ ॥

जिनै दौरि कमधज्ज साहाय कौयौ । जिनै कंगुरा लोय हस्तीर दीयौ ॥  
 जिनै बोलि अजबालका पेत ढाछौ । जिनै गाहि रा पंग संजोग लायौ ॥

छं० ॥ ५६२ ॥

भए राइ राजा अनेकं सु यानं । किने शब्द कै सथ्य लुक्यौ न यानं ॥  
 इने संभरी राइ साहाव हन्यौ । उभै दीन जासं पराक्रम मन्यौ ॥

छं० ॥ ५६३ ॥

सब देव छरं पुहणं वं धार । सुरं जोति जोतिं सजोतिं समाए ॥  
तिनक्षी उपसा कवीचंद भाषी । मिले हंस हंस रवी चंद साषी ॥  
छं० ॥ ५६४ ॥

कवित्त ॥ नयन बिना नरघात । कहौ ऐसी कहु किछी ॥  
हिंदू तुरक अनेक । छर पै सिद्ध न सिद्धी ॥  
धनि साहस धनि हथ्य । धनि जस वासन पायौ ॥  
ज्यो तरु छुटै पच । उडै अप सत्तियौ आयौ ॥  
दिष्यै सु सथ्ययौ साह कौ । मनु नखिच नभ तें टर्यौ ॥  
गोरी नरिं कविचंद कहि । आय धर पर इम पर्यौ ॥  
छं० ॥ ५६५ ॥

हरफ घान कहि वत्त । प्रात पहिलै दिन भुल्लै ॥  
भट्ट देषि दाबोर । फेरि देतह किम फुल्लै ॥  
फुनि पहिलौ सनमंध । बार बारह सु गह्यौ जव ॥  
सहि सहाव छंडयौ । दियो भरि दंड तुमहि तव ॥  
कम्मान कहर कर सर वरह । गज्जनेस पत तो बह्यौ ॥  
बहुवास मलय चंदव अगर । दुज काँध भट राजन दह्यौ ॥  
छं० ॥ ५६६ ॥

सुन्यौ हंस हंसनिय । हंस विन हंसप सुकै ॥  
दसम द्वार उडि हंस । पंच मिलि पंचह रुकै ।  
इंद्र आप उडार । दुँढ ठिल्लिय ब्रज कंतिय ॥  
जथ्य कथ्य न्निक्षये । आय जुगिनपुर वत्तिय ॥  
उंडूर वाय तिन बहु उडै । वाय भणि तिन तथ्य परि ॥  
संजोग जंत भँजि जंच वर । भगौ सार तत्तौ निवरि ॥  
छं० ॥ ५६७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके पातिसाहि बानवेध मरन राजाचंद  
सुजसकरण पश्चात् बधनो नाम सड़सठवां प्रस्तावः समाप्तः ॥ ६७ ॥

## अथ राजा रयनसी नाम प्रस्ताव लिप्यते ॥

[ अङ्गसदृशं समय ]

पृथ्वीराज के पकड़े जाने पर और कवि के कांगड़े  
से छूट आने पर राजा रयनसी का  
पाट बैठना ।

दूहा ॥ पुत्र कथा प्रारंभ कहि । सिंघालोकन कथ्य ॥  
जव ते गज्जन वै ग्रह्यौ । असपति दिल्ली नथ्य ॥

छं० ॥ १ ॥

ज्यौ रेवा गज अहिय मनि । चातक पावस नभम ॥  
ज्यौ दरिद्र संपत्ति यै । यों गज्जन प्रथु लभम ॥

छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ ग्रहिय राज सुरतान । गयौ गज्जन गज्जन वै ॥  
पंच पथ्य पंजाव । थान थपिय तज्जन वै ॥  
पथिय पां पीरोज । सोव साहिव करि मंडिय ॥  
लगि लाहौर दिसान । मीर मीरन पर छंडिय ॥  
पथ इंद्र कोस सत इक्क पर । मेछ सेन पारस सरिय ॥  
रुकि रहै रेन राजन रवद । मनो सिंघ सिंघह अरिय ॥

छं० ॥ ३ ॥

दूहा ॥ जोगिनिपुर राजै रयन । चंपि न सकै कोय ॥  
कलह केलि नित नित करै । रज वढ़ रप्यै सोय ॥

छं० ॥ ४ ॥

भावी गति भव न्निमयौ । छुटि आयौ कविचंद ॥  
सुप्य कंद सुनै कवि । दुप पंगुरि वर कंद ॥

छं० ॥ ५ ॥

( १ ) ए० क० को०-संपत्ति पयै ।

( २ ) ए० क० को०-तद्धित वै ।

( ३ ) ए० क० को०-सुप ।



राजक्रिय कारन सकल । कार्ये रयने चहुआन ॥  
दान न्हान गो ब्राह्मनह । दिख विविध परिवान ॥

छं० ॥ ६ ॥

कवित्त ॥ राज देव प्रोहित । आय आभासि उचारं ॥  
ढिल्ली धर ढिल्लरिय । होइ निरधार आधारं ॥  
सबै सूर सामंत । रेन राजन आचारं ॥  
करिय एक मन सङ्ग । रीति राजन व्यवहारं ॥  
सुभ दिवस लगन सिंघासनह । घरि मूढ़ा गादी सरिय ॥  
कहुयौ तिलक सामंत मिलि । मेघाडं सर सिर धरिय ॥

छं० ॥ ७ ॥

कविचन्द के कौशल से शाह और पृथ्वीराज का मरण  
सुनकर रयनसी जी का सब सामंत मंडली से  
सलाह करना ।

कितक दिवस अति विषम । गए पल पग पटकै ॥  
सुन्यौ राज वरदाइ । हन्यौ सुरतान सटकै ॥  
रोस' रुद्र उष्ययौ । भयौ वीरां रस सारं ॥  
धनि राज' प्रथिराज । गिल्यौ साहाव सुतारं ॥  
उकसे रयन सामंत सब । मंत मंडि धर धुंसियै ॥  
संजुरे वीर आभासि भर । नाम प्रथुक्त परसंसियै ॥

छं० ॥ ८ ॥

उत्तराधिकारी सामंत मंडली का वर्णन ।

बोलि भान पुंडीर । वीर पावस कौ जायौ ॥  
बोलि पुत्त रनधीर । अनुज धीरत्त सवायौ ॥  
सामंत सौं गहिलोत । सहन सुअ मथन सहन र'भ ॥  
जैत करन पांवार । सार परताप रयन घ'भ ॥  
बीरोधि हहु सुम्मेर सदि । वीर चंद जैसिंघ सजि ॥  
संकरौ सिंघ बनवीर वर । धंधे रोजग मनि रजि ॥

छं० ॥ ९ ॥

भान तेज चालुक्क । धक्क अरितम्ह अहारन ॥  
 पारिहार रनधीर । भीर भर' रे'न सधारन ॥  
 सारंग दे गप्परौ । टा करन डाक वजावन ॥  
 क्लरभा रघुवंस । बंध रन सिंघ कहावन ॥  
 ता अनुज बंधि राजसि कुंअर । राजदेव राम दुज सुअ ॥  
 सब आय सथ्य सिरदार लै । वड गुंजर भोजल्ल भुअर ॥

छं० ॥ १० ॥

दूहा ॥ ईसरदास अनंत वर । भुज ठिल्लिन चहुआन ॥  
 मंत तंत बुझ्भौ नृपति । कहौ कन्ह विधि जान ॥

छं० ॥ ११ ॥

कवित्त ॥ कहत भान चालुक्क । वार लद्धिय हम याहिय ॥  
 सारंग दे गप्परौ । तेग तत्ते होइ साहिय ॥  
 धंधेरौ धुमकेस । वेस वडुही बड्डा ॥  
 इनकौ मंत मरन्न । करनपूर बलि बड्डा ॥  
 लषलेन तुरिय चुकौ पुरिय । इह अचंभ नन मानियै ॥  
 रनभंग लाज रजपूत जौ । फनि अभंग रन ठानियै ॥

छं० ॥ १२ ॥

युवक सामंत मंडली का मत होना कि शाही  
 सेना से छेड़छाड़ की जावे ।

दूहा ॥ इक सो नौ अरु सा पुरिस । भग्ना फेरि जुरंत ॥  
 कायर षप्पर काच कन । मन भग्ना न मिलंत ॥

छं० ॥ १३ ॥

कहै भान पुंडीर मति । अरु मिलि ईसरदास ॥  
 पुंडीरा रनधीर कहि । राजन मुकै पास ॥

छं० ॥ १४ ॥

सेवक सामि सवंग धरि । चिह दिसि चोट अहुट्टि ॥  
 अनिय धार अड्डौ अरै । टूक टूक होय तुट्टि ॥ छं० ॥ १५ ॥

इह मति करि सज्जौ सु दल । कहि सुमेर परताप ॥  
संकर<sup>१</sup> सिंघ सामंत सी । अरिवल तोलै आप ॥

छं० ॥ १६ ॥

धवल दीह संसुह धवल । रथ सामंत सरंध ॥  
यों लहि राजन वंस धुर । धवल रतन नव कंध ॥

छं० ॥ १७ ॥

उधर गजनी में शहाबुद्दौन के उत्तराधिकारी का  
तरुतनशीन होना ।

उत गोरी गजन दिसा । यप्पिय विनै सहोव ॥  
मेछ मखुरति दीन मति । धर्यौ गौरि साहाव ॥

छं० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ धरिय गौरि साहाव । पान मिलि पलक पिट्टि सिर ॥  
सहस पंच इक लप्प । करह बंगरिय टूक पिरि ॥  
चिहुर रोम उप्पोर । भई सेव भेष दिवानै ॥  
तन तोवह झूरंत । अहों हिंदू परवानै ॥  
उमरा मौर अल्लह उमरि । इन अभूत कूम मानयौ ॥  
दुसमन विसास सुविहान किय । तव कुमंत हम जानयौ ॥

छं० ॥ १९ ॥

दूहा ॥ तिया भरोसौ ना करे । अरु दुरजन वेसास ॥  
पुव्व विरोध न वीसरै<sup>२</sup> । ते लभै सुष वास ॥

छं० ॥ २० ॥

कवित्त ॥ तव मिलि घान ततार । घान निसुरति सजेरिय ॥  
रुस्तम घान हुआव । घान घानौ मिलि गोरिय ॥  
मीर मलिक मीरन । हदफ पां हद पुरेसी ॥  
कालन पां मारूफ । घान सारूफ सुरेसी ॥  
पुरसान घान पुरसान पां । जंद जिहाज जादुलपति ॥  
प्रवीय पंच साहाव सुदि । प्रथुक जात इक नाम भति ॥

छं० ॥ २१ ॥

साइत सोधि सहाव । पूछि काजी कुतवानिय ॥  
 नवल तपत नव रोज । छच चामर सां भानिय ॥  
 पढ़ि कुतवा फातिया । विनै साहाव सुनाम ॥  
 गजनेस गरुअत्त । करै कायावर काम ॥  
 दिलिय दिसान सल्लै सरस । अहनिसि नौं न चप धरहि ॥  
 छिंदवान राज उप्पर रयन । उक्रसि उक्रसि असिग्रह करहि ॥  
 छं० ॥ २२ ॥

सलाह पक्की होजाने पर राजा रयनसी का शाही सेना  
 पर आक्रमण करने को सन्नद्ध होना ।

दूहा ॥ तपत रयनसी राज वर । चित सान्त चढ़ान ॥  
 बोल बोल चीवट परै । ज्यौ भगै पापान ॥  
 छं० ॥ २३ ॥

परहंसा पप्यै सरै । एह अनागत वत्त ॥  
 कटु जलै कोइल करै । बलै लोह लहि घत्त ॥  
 छं० ॥ २४ ॥

पत्त परप्पन रपन रिधि । बैर वहीरन सल्ल ॥  
 गति अंतर पंतर पवित । बछे पुत्र नवल ॥  
 छं० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ वे सामंत समथ्य । जेन सुरतान जु साहिय ॥  
 वे सामंत समथ्य । बोल बोले निरवाहिय ॥  
 वे सामंत समथ्य । जुगा जुग कीरति रप्पिय ॥  
 वे सामंत समथ्य । चंद सूरिज जिहि सप्पिय ॥  
 हम रयन काज रप्पहि धरह । अब धीरत्तन मंडियै ॥  
 धर थान पथ्य पंजाव लगि । पगग मग पल पंडियै ॥  
 छं० ॥ २६ ॥

( १ ) ए० कृ० को०—कोइ लक्करै ।

( २ ) कृ० को०—पगग ।

दूहा ॥ रयन राज इह संत सुनि । मन डम्भरि असमान ॥  
संत सबै एकंत करि । दल भंजां सुलतान ॥

छं० ॥ २७ ॥

कवित्त ॥ तंतु एक जो ग्रहै । चिरीय बंधन पग तोरै ॥  
सहस लेलि बल भरै । बंधि गजराज अहोरे ॥  
एकलौ बल करै । बहुत अग्यै पग छोरे ॥  
मिलनि स्वर सामंत । करै बरदान ठठोरै ॥  
सत सत्त संच हस मरन मत । इह सुभ्रम्भ रजपूत नहि ॥  
जीवत धरा भौगै आवर । बलिय रयन इह बात कहि ॥

छं० ॥ २८ ॥

दूहा ॥ रजवट चूरी काच की । भग्गी फिरि न सँधाइ ॥  
सनिया नाहीं लाष कौ । कौले आंच तपाइ ॥

छं० ॥ २९ ॥

कवित्त ॥ फुनि जंघिय रतनेस । सुनहु सामंत स्वर भर ॥  
दिग्ग विजय रावन कात । बोलि नारद रिषेसर ॥  
सुर नर पंगव बंधि । कहा वह विरद बुलावहु ॥  
तौ जानिहिं बलवंत । जीति अंतक पुर आवहु ॥  
सुनि तमकि जुह लंकाधिपति । करिय काल सो चाल बंधि ॥  
तसलीम तीन करि छुट्यौ । संजमनी पत पेत मंधि ॥

छं० ॥ ३० ॥

गाथा ॥ दस दस कोरिम सद्यं । इक कंजुरिय रघ्य संरिनयं ॥  
द्यौ निसान निसंकं । सुरतान थान भाजनं काजं ॥

छं० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ गागरि मद्धि प्रगट्टि रिषि । लागर करि अचवन् ॥  
अनल कुंड उतपन्न अग । पग रिन रुपै कवन्न ॥ छं० ॥ ३२ ॥

राजा रघुनारायण जी का सब सेना तैयार करके पंजाब की सर-  
हद पर स्थित शाही सेना पर आक्रमण करने के लिये  
कूच करना ।

कवित्त ॥ वज्र निसाँध घन जान । उमड़ि आपाठ डंडूर ॥  
धमकि धरा धर धर हरै । पिट्ट तट्टि कछ कछूर ॥  
हलकि हूर हय चढ़े । किलकि जोगिनि वेताल ॥  
भलकि तेग हय भले । नचि नारद वेताल ॥  
ओपंत टोप संजोसमधि । मनु भद्रव धन भान सरि ॥  
नवतीय सहस दल वल अतुल । चलिय रघुन सब सौज करि ॥  
छं० ॥ ३३ ॥

पङ्करी ॥ करि सेन साज चलि रघुन राज । वज्र अनंत वाजंत वाज ॥  
हरिवा सुभट अग्नै विराज । मन धरे सासिधर ब्रह्म वाज ॥  
छं० ॥ ३४ ॥

पह धूरि पूरि पिष्ययन भोन । धर धरिय धरा मिलि आसमान ॥  
सलसलिय सैस कसमस करान । दिगपाल दंति पंतिय डरान ॥  
छं० ॥ ३५ ॥

द्वारंभ काप्यय पिट्टपान । फिरि जगे वीर वेताल आन ॥  
जोगिनिय गहे पत्तर पयान । संग चले गिद्धि सिद्धी सयान ॥  
छं० ॥ ३६ ॥

सुर असुर जुद्ध देषन उमड़ । गड अडै मत्त जानै कि भद्र ॥  
हनहनय सह हैहै हिँसान । पर सह धरा वज्रै प्रमान ॥  
छं० ॥ ३७ ॥

घहरति घंट घूबरन सोर । पावस जानि बोलंत मोर ॥  
सज्जिय सनाह घन जेम स्याह । बगपति भंति आवधि अथाह ॥  
छं० ॥ ३८ ॥

घनु धनु हरंत रत पीत तेज । फहरति फिरै जनु अभभतेज ॥

हथनारि गोर जंबूर सथ्य । छुटुंत अम्भ पावै न पथ्य ॥

छं० ॥ ३९ ॥

दिल्लिय धरान चढि चाहुआन । संवोधि वोधि सबै भरान ॥

सुर सहस्र गज सय सौन मुष्प । जानै कि कूट पव्वय सरुष्प ॥

छं० ॥ ४० ॥

नय सत्त सहस्र सेना सुभार । पायक सहस्र सुर पंच सार ॥

पंचह सुअनी बंधी दिसान । मधि अनिय रयनसिय चाहुआन ॥

छं० ॥ ४१ ॥

मुष अग्र भार पुंडीर सथ्य । दाहिनी फौज ईसर समथ्य ॥

रघुबंध वीर सुर वाम कोद । उन पीठ सकल सामंत मोद ॥

छं० ॥ ४२ ॥

छुटुंत वाय वेगी तुषार । दह कोस उभय संध्या सवार ॥

फिरि उहटि डोरि ज्यौं गुडी हथ्य । धुमलहि देस फिरि मिलहि सथ्य ॥

छं० ॥ ४३ ॥

दिल्लिय दिसान सें तीन कोस । म्लेछान भंजि उम्भरे रोस ॥

थनथान थान सुविहान कुकि । साष्टाव विनै सुनियौ उरुकि ॥

छं० ॥ ४४ ॥

झिगसाष जान विंछिय चटकि । उछर्यौ भूमि तें हाथ इक्क ॥

कोकाल ग्रह्यौ जगयौ सजौव । प्रज्जर्यौ जानि अग्गीव घौव ॥

छं० ॥ ४५ ॥

हुंकार हाक नासा फुंकार । सुर चलै जानि मारुत प्रहार ॥

कोपयौ कहर असपति गुरेस । सहि सकै कौन पल्लटयौ जेस ॥

छं० ॥ ४६ ॥

अकुटिय कराल बल घालि मुच्छ । चंपयौ काल जानै कि मुच्छ ॥

आतुर अनंत बोल्यौ सु दाउ । चापरे करिग नीसान घाउ ॥

छं० ॥ ४७ ॥

राजा रघुनत्ती का शाही सेना को सार भगा कर लाहौर पर  
अपने थाने बैठना और इस बात का गजनी में  
समाचार पहुंचना ।

दूहा ॥ घुरि निसान सुविहान कर । हय गय इभय पलानि ॥  
कलहलिय सायर सपत । प्रलय पलटिय जानि ॥

छं० ॥ ४८ ॥

रतन सेन चहुआन वर । रोपि अण्णने वीर ॥  
पंच पथ्य सुरतोन वर । घन मंडिय हम्मीर ॥

छं० ॥ ४९ ॥

धर धुंसे चहुआन वर । पंथ भग्गि तन पंडि ॥  
धर गज्जनी नरिंद वर । रतन लियै अब दंडि ॥

छं० ॥ ५० ॥

पह्वरी ॥ पंजाव यान सब साहि मंडि । उट्टए सकल रयनंस पंडि ॥  
किय चंप साहि ठिलिय भरान । अच्छै जु खूर तपि चाहुआन ॥

छं० ॥ ५१ ॥

लाहोर लौह छंडिय सुधाइ । ग्रिह मंडि अण्व जनु पिट्टराइ ॥  
चहुआन सवर दिन दिन प्रकार । गोरी नरिंद दर गइ पुकार ॥

छं० ॥ ५२ ॥

कविता ॥ विनय खूर साहाव । साहि पुकार प्रपत्तिय ॥  
मग भंजि सु विहान । छंडि पंजाव जुइ तिय ॥  
हसस हयगय यान । देस लुट्टे सुलतानिय ॥  
पुल भगा नदि सिंधु । आन सज्जिय हिंदवानिय ॥  
तुरकान तेज तत्तार वर । करिय रनह भग्गत भिरि ॥  
आहट्ट वीर दुसमन बलिय । वर लग्गौ गौरी सुगिरि ॥

छं० ॥ ५३ ॥

( १ ) भो०—रतन लियै अदंड ।



उक्त समाचार पाकर शाह का कुटवार खां को अपना प्रति-  
निधि बनाना और अन्य सरदारों को हिन्दुस्तान पर  
चढ़ाई करने की आज्ञा देना ।

निसा अइ उत्तरिय । भेद चहौ चहुआनं ॥  
कुंची अषि नरिंद । वीर कुटवारति पानं ॥  
पद्मी पां पीरोज । लोह लीनौ पुनि भगौ ॥  
अपान वर यान । दई दुसमन फिरि लगौ ॥  
ढिल्ली वछित भग्ना सुवर । पान पान गोरी सुवर ॥  
साहाव विनै साहाव सुनि । तोन वंधि वंधन सुभर ॥  
छं० ॥ ५४ ॥

बोलि पान तत्तार । लज्ज साहाव साहि वर ॥  
बोलि पान पुरसान । लज्ज पुरसान कंध भर ॥  
बोलि मीर मारुफ । जिने वंधे चहुआनं ॥  
बोलि हवसि जादुल । सत्त वर सहस समानं ॥  
साहाव सहित साहाव पट । सा लिनै संभारि कस ॥  
रत रतन वीर वंधन सुदिन । सुनिय सथ्य पथ्ययनि अम ॥  
छं० ॥ ५५ ॥

पत्ति प्रौढ तत्तार । मति तजि तमकि तोन वंधि ॥  
जल जोवन साहाव । दुहु साहाव तेज संधि ॥  
करि मिलान सुविहान । आनि हिंदवान सुसंकिय ॥  
वर निवाज करि वीर । तुंग सुविहान हृष्टय शिय ॥  
पच्छिम ऐराक पुच्छै न्नपति । पुब दिसा पालान वर ॥  
द्विगपाल हलि हलिय दिसा । चलिय वत्त अरि घरन घर ॥  
छं० ॥ ५६ ॥

( १ ) मो०—तत्त ।

( २ ) ए० कु० को०—पथ्यहति ।

( ३ ) ए०—ऊढ़ ।

( ४ ) मो०—मनि ।

शाही सेना का हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करना ।

शाही सेना के कूच का आतंक वर्णन ।

पहरी ॥ धवलीय सेन चलि धवल स्वर । दो मिलिय अट्ट दिस लागि करूर ।  
सुक्ल कौ न भान विधि भान तेज । विच्छुरहि चका वर मिलि सुरेज ॥

छं० ॥ ५७ ॥

हस्यैति नाग गति गिरि समान । रवि रथ्य अम रज रुक्मि मान ॥  
वर स्याम पीत धवली हरत्त । सोभन्त सेन चतुरंग मत्त ॥

छं० ॥ ५८ ॥

नच्चैति वीर नारद चंग । जट जूट ईस सिर नच्चि गंग ॥  
नच्चही वीर चक्रवाक नन्द । आनन्द रहित ग्रह चक्कि दन्द ॥

छं० ॥ ५९ ॥

उरक्तै कुरंग पय विच तुपार । सिर ढरै नाग लचि नमै भार ॥  
रुक्मि कौय नद सुर वज्जि रंग । सहनाय नद मोहै कुरंग ॥

छं० ॥ ६० ॥

अथ वल्ल ठोल वज्जे प्रकार । वज्जन्त तवल सुद्धह टकार ॥  
वज्जै ददंग औपस्य चंग । मंडिय सुरत्ति नारद प्रसंग ॥

छं० ॥ ६१ ॥

सुह अरिय सह सुह चंग मौर । काट तार तार मंजीर हीर ॥  
वसुरिय वज्जि सारंग भेरि । वज्जन्त सिंघ भू, भू, भूर फेरि ॥

छं० ॥ ६२ ॥

वज्जिय निसान गुंडौर सह । वज्जे जंजीर जरि गज्ज सह ॥  
वज्जन्त घट घूघरन सार । पप्पर निसद सद बंधि मोर ॥

छं० ॥ ६३ ॥

साहाव विनै साहाव स्वर । उतर यौ सेन सह सिंधु पूर ॥  
साहाव विनै साहाव दीन । फरमान हिंदु बंधन सुकीन ॥

छं० ॥ ६४ ॥

अलाह अग्रा भी अण्हीन । करतार तुं व करि एक दीन ॥

उत्तरे सिंधु हय विहय साहि । सुकै बिवाह चिन्हाव धाइ ॥

छं० ॥ ६५ ॥

सतनंज सतन जिम करि प्रमान । चर कहैं धाइ सुनि चाहुआन ॥

छं० ॥ ६६ ॥

शाही सेना के चढ आने का समाचार पाकर रयनसी जी का  
राजपूत सरदारों से सलाह करना ।

कवित्त ॥ कर बलघान ततार । हनस हरवल हज्जाविय ॥

बीच बिनै साहाब । फौज बंधी दरियाविय ॥

झूँच झूँच हिंदवान । दिसा दप्पिन पंजावी ॥

जोर सार सुरतान । सुनिय आवंत सितावी ॥

रस उभै सहस गज हय सुरंग । दादस लष सहसंग गिनि ॥

पांडक अनंत कहि गिननि मति । चलिय फौज हिंदवान मनि ॥

छं० ॥ ६७ ॥

रयनसी जी का कहना कि ऐसा मंत्र करना चाहिए जिसमें  
बात रहै और हँसाई न हो ।

तब सुनि रयन सहाब । आव उत्तरि जुरि भग्ग ॥

सोइ सुमंत किजियै । मंत सुझरै जुअंग ॥

आगे ही छिजिया । त्वर सामंत सुभारी ॥

हम कंधै इल भार । दियो ग्रथिराज विचारी ॥

तुम करौ मंत भर इह होय । ज्यौं रजवट वट सुझरै ॥

विन मंत घत पुज्जै नही । बोल सु बोला उझरै ॥

छं० ॥ ६८ ॥

सोचि सब भर सुभर । मूल रणन मत मंडौ ॥

पावस ल्हअ सहाय । कन्ह जौगिनपुर छंडौ ॥

धर पझर सुक्रियै । जोध मंडव धर बंकी ॥

सवर सुनौ सुरतान । पुत्र वर जसौ इहका ॥  
 सामंत बिना सो संत करि । पट्टी पुत्र न पोइयै ॥  
 हिंदवान सवै हँ सिहै द्रुअन । जुद्ध मुकिय बल जोइयै ॥  
 छं० ॥ ६६ ॥

सब सामंतों का युद्ध करने पर उद्यत होना और दिल्ली के  
 किले में ही युद्ध होने की बात पक्की होना ।

दूहा ॥ धवल दीह दीये सुवर । धवल होय पुत्रोय ॥  
 धवल लीह लीहै ग्रहै । मरन धवल यों होय ॥  
 छं० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ जैत पुत्त पांवार । जैत सम जैत सवायौ ॥  
 सत सामंत न भ्रम । भ्रम छचौ छिति पायौ ॥  
 वीर वंक वसुमती । वीर वंकाही वंकी ॥  
 वीरनि वर पडरी । वीर लिय वीरां संकी ॥  
 पडरी भूमि वंकेति भट । धर वंकी नप मति नही ॥  
 जोगिनिय थान जोगिनि पुरह । दुहँ सामि बल बल जिही ॥  
 छं० ॥ ७१ ॥

दूहा ॥ लधि छंटौ प्रथिराज नै । धर अण्णी सुलतान ॥  
 कछू छैन घटि तूँ तपै । पूरन करि चहुअन ॥  
 छं० ॥ ७२ ॥  
 अनंत वली अहुअन नै । सुक्कि छर ससि वेस ॥  
 संघातक संभरि सुरस । वर आनदे रेस ॥  
 छं० ॥ ७३ ॥

कवित्त ॥ कहै मत्त पांवार । रतन रण्यौ लजि रतनह ॥  
 जस सुभ्रम प्रथिराज । तुंम प्रगटौ सुम तानह ॥  
 रतन दीप प्रगटियै । कित्ति चिहु मग्गह सुभ्रम ॥  
 मरन महन मो पुरष । मोहि परमण्वर सुभ्रम ॥

( १ ) ऐं० कुं० को०—परमछर ।

सत बरस आव यानस घटी । अड़ बाल विरधत्त गय ॥  
संताप सुष्य साथा विअस । सेष न मुक्कहि लोय अय ॥  
छं० ॥ ७४ ॥

धीरं जो रनधीर । बंध पावस उचारिय ॥  
स्वामि रनह नंपवै । हृथ्य अय्यं लुगि गारिय ॥  
सरन तत्तहय स्वर । राज रघ्यौ राजानिय ॥  
करि काया बल भंग । रहै छुट्टै सुलतानिय ॥  
सनमंध जीव जीवन सरन । वर विधान वर लप्प पर ॥  
सत सत्त सत्ति कीजै नही । सत कीजै रजपूत वर ॥  
छं० ॥ ७५ ॥

चंद्रायना ॥ थंभ मंडि वर कित्ति सु सोमेसं वरं ।  
स्वर अय्यि दिल्ली जस जीतियै डंवरं ॥  
इसौ संभरी नाथ राज प्रथिराजरं ।  
मंडि रत्तन धज्ज यौ जुग द्वेल अंवरं ॥  
छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ दिल्ली वै दिल्ली करी । वर दिल्ली वै तथ्य ॥  
रहै जैत पंभह जितै । सिंघ प्रान मति जथ्य ॥  
छं० ॥ ७७ ॥

रज रप्पन रहि राजसी । दिल्लीय दिल्ली नथ्य ॥  
पावासर ऊपर चढे । रतन सेन सव सथ्य ॥  
छं० ॥ ७८ ॥

ईसर दाल महेस कहि । हम मति इत्ती सार ॥  
दिल्ली गढ़ गढ़ौ ग्रहै । तौ हम जुडै सार ॥  
छं० ॥ ७९ ॥

कवित्त ॥ तव सुभान पुंडीर । वीर रनधीर पुंडीर ॥  
चालुका भर सान । बोलि जै सिंघ सुधीर ॥  
करन सुभर पदताप । वीर चंद वन वीर ॥  
सारंग दे गप्परी । टांक चाटा उत नीर ॥  
सुनि मंत मन एकंत करि । भलौ भलौ भर सब कहि ॥  
रयनसी राज दिल्ली सुवर । गढ़ संगही सो चित्त लहि ॥  
छं० ॥ ८० ॥

शाही सेना के दूत का आना और राजा रयनसी का युद्ध  
का प्रस्ताव स्वीकार करना ।

दिल्लीय दिसि सुखतान । साजि चले चतुरंगिय ॥  
दज्जि वीर नौतान । पान पुरसोन अंभगिय ॥  
नेउं वर उत्तरत्त । धाइ चर आय सुगोरिय ॥  
कछां गयौ चहुआन । वीर पावस रस जोरिय ॥  
घाहस पयान पायाल कँपि । तूर कंषि पन्नग डरिय ॥  
दुनदन सुदैव गढ़ सज्जयौ । वंधि चाल संमुह भरिय ॥  
छं० ॥ ८१ ॥

शाही सेना का किले को घेर लेना ।

गढ़ उप्पर सुखतान । चंपि चतुरंग चलाए ॥  
घय गय घंट ठनंकि । तूर पप्पर गहराय ॥  
नेजा वर वरैष्य । उडिय धुंधरि दिसि धोरिय ॥  
नुर साखत तुरि चले । चोर उज्जल ढरि चोरिय ॥  
तारस मिलंत सारस विछुरि । चकी चक चित चंद वर ॥  
सज्जयौ रतन वर भान अरि । राह रूप गोरीत भर ॥  
छं० ॥ ८२ ॥

सुरिला ॥ सकि सुवर पांवा सर वीरं । परि पारस सुखितान सुमीरं ॥  
गढ़ गह्वो देषै पवारं । राजसिंघ चहु तिहि वारं ॥  
छं० ॥ ८३ ॥

पहरी ॥ जोर वरस वर गोरी प्रमान । ग्रह ग्रहन राह चहुआन भान ॥  
रज कज धाइ रज्जौर पान<sup>१</sup> । अति मन्नि तिथ्य धारह मिलान<sup>२</sup> ॥  
छं० ॥ ८४ ॥

कपित्त ॥ विनै साहि साहाव । उपटि दरिया हिछोरै ॥  
गढ़ घेर्यौ चिहु कोर । प्रलै जनु मेर सुवोरै ॥  
गोर नार छूटंत । मरत मेछाइन भारी ॥

( १ ) मो०—ग्रह ग्रहन भान रह चाहुआन । ( २ ) ए० छं० को०—पति ।

( ३ ) ए० छं० को०—मिलंत ।

इन हिंदू पति राज । घात लक्ष्मी सुकरारी ॥  
 आवट्टि सेन अध अन्न अध । वज्र कोट भेदै नहीं ॥  
 सुविहान तमकि तत्तार पर । हम हलान बत्ता कही ॥

छं० ॥ ८५ ॥

पड्वरी ॥ रत पीत धवल वर भरि प्रमान । दिस उभै चारि मंडेति पान ॥  
 सुभरन भरन आवृत्त जोट । मनो पावस्त काल वर विंटी कोट ॥

छं० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ सरद काल कौ चंद । परी पारस वर सुदल ॥  
 तिमर भान बिंटयौ । कूट बिंटे रुकि वदल ॥  
 कौ इंद्र पुर विंटयौ । बलीसोहं वलि रावं ॥  
 कौ जलपति विंटयौ । मडि वडवानल पावं ॥  
 कौ भ्रमाल धारि संकरत वर । इह उष्म राजत गढ ॥  
 कवि कहै चंद वरदाइ वर । कौ कोट विंट सुन्नार मढ ॥

छं० ॥ ८७ ॥

सात महीने दो दिन पर्यंत किला न टुटने पर तत्तार खां  
 का सुरंग लगा कर किले की दीवार उड़ा देना ।

दूहा ॥ सप्त मास दिन उभय वर । ठोहन मंझौ वीर ।  
 बजे असपति साम दह । गजि सुगोरी वीर ॥

छं० ॥ ८८ ॥

कवित्त ॥ तव तत्तारहि कसति । सार सौधड मुष भारिय ॥  
 करि सुरंग संचार । मडि दर मंझ सुधारिय ॥  
 करिय सज्ज सब सेन । आनि आतस संचारिय ॥  
 लंगि कसान पाषान । उडिय असमान अंगारिय ॥  
 आघात सार सोरां सुवजि । लेहु लेहु मुष मेछ कहि ॥  
 हिंदवान प्राण अब तुच्छ हैं । फते नाम सुविहान लहि ॥

छं० ॥ ८९ ॥

सुरंग से केले की पश्चिम दीवार का टूटना ।

चलि मध्यान सुलतान । साहि फुरमान अघि भर ॥

बाहि वीर परतंग । गजि आयास लगि वर ॥  
 नर भर गज आहुटिय । लुधिय पर लुधिय अहुटिय ॥  
 दिसि पच्छिम सुलतान । वान सुधा रवि छुटिय ॥  
 पर कोट भगि पापान उडि । नर सनेट वर उडि चलिय ॥  
 जानै कि चंग रस वाय वंधि । यह सुमग नर चिक्रलिय ॥  
 छं० ॥ ६० ॥

पां ततार तिहि वार । मंडि फुरमान पान लिय ॥  
 फिरि चिहुं मग सु दिष्यि । चिंति दिसि वान यान विय ॥  
 विना भौति गढ मग । नारि जंवूर लगइय ॥  
 अप्प सथ्य वर अह । कोट यह मग उडाइय ॥  
 तिहि यान कोट पुंडीर भुज । धीरज ही धीरज वर ॥  
 चहुं सु सथ्य सुरतान भर । लोह सार मच्चिय विधर ॥  
 छं० ॥ ६१ ॥

किले की दीवार टूट जाने पर दोनों तरफ से तलवार  
 का युद्ध होना ।

लग्गा वर सावाति । आनि स्वरन सुप रोह्यौ ॥  
 थकि गोर जंवूर । पूर पति साह छंछौह्यौ ॥  
 जगि सार सा वाति । पान दोरे पग साहे ॥  
 उत हिन्दू आलोल । सामि छल भ्रम समहै ॥  
 पुंडीर भान परतंग धरि । अरि ततार अहु अरसम ॥  
 संजुरिय भाक भंभर वजिय । वहे धार धारह रसम ॥  
 छं० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ मग अमग करि रुंध्यौ । लेख न लभत पार ॥  
 भर लगो पावस भरत । पग न पडत धार ॥

छं० ॥ ६३ ॥

( १ ) ए०—नर चित्त कलिय । ( २ ) ए० कु० को०—चित्त ।

( ३ ) ए०—असत । ( ४ ) ए० को०—समर ।



## युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ धार धारं मिली, सोर छक्कै मिली ॥  
ओज धारा चलौ, बोलि पग्नं पुली ॥

छं० ॥ ८४ ॥

आयुधे अत्तली, बोल बोलै बुली ॥  
बंवरी उचल्ली, सुंछ भोहा मिली ॥

छं० ॥ ८५ ॥

काल कंक कली, ० ० ० ॥  
भट्ट चट्टं परी, बय्य बय्य अरी ॥

छं० ॥ ८६ ॥

धिग धक्की धरी, कट्टियं दुजरी ॥  
जीन सोइ करी, हहु हहु जरी ॥

छं० ॥ ८७ ॥

बार पारं करी, लुष्टि लुष्ट्यं परी ॥  
भान पुंडीरयं, घान पंडीरयं ॥

छं० ॥ ८८ ॥

घान तत्तारयं, पिंड पच्छारयं ।  
दूर हल्लारयं, अछरी पारयं ॥

छं० ॥ ८९ ॥

चौसठी चारयं, पप्परं सारयं ।  
ईस सीसं लियं, कंठ मालं कियं ।

छं० ॥ ९० ॥

कवित्त ॥ जुरत घान तत्तार । भान पुंडीर जुरंतह ॥

अस्त वस्त रुधि मंस । सानि एकंग करंतह ॥

पंच सत्त परि मौर । हिंदु सयतीन परंतह ॥

अवर हयगय जुष्ट । पंड सुष परे अनंतह ॥

उप्पर पुंडीर रनधीर करि । संगि समाहि आयौ समुह ॥

मारुफ सुष सरदान मिलि । मनु अनप्य सौकीभं मुह ॥

छं० ॥ ९१ ॥

( १ ) ए० कृ० को० — सौकीन मुह ।

वीर रनधीर का दरवाजा रोकना और शाही सेना के कई  
सरदारों को मार कर आप मरना ।

सोतीदास ॥ इते रनधीर समाह्विय सख । उते मारुफ किशौ पग भेल ॥

उभाटिय ओड़न पग सुभारि । निजस्त्रिय सिंगि फुटे धरपारि ॥

जं० ॥ १०२ ॥

धुकंतय पान समाह्विय तेक । हयौ हय दप्पिन अंगुरि एक ॥

पर्यौ धर मारुफ पान विहल । उभौ रनधीर जुधै अरि सख ॥

छं० ॥ १०३ ॥

वकारिय वंवरि उटिय वीर । जुकासन मीर समाह्विय तीर ॥

कारपि कमान छुटौ सर वेग । लय्यौ फुटि टटुर लीनिय तेग ॥

छं० ॥ १०४ ॥

दुष्टयल आरिय कटुकवारि । सुकासन मीर ढर्यौ धर गार ॥

उते रनधीर पर्यौ धर बेत । इते वर सामंत वधिय नेत ॥

छं० ॥ १०५ ॥

भिरै धित अण्य उभै दिनि जान । सु जवारिय घेत लुनंत किसान ॥

पचारिय सामंत बोलिय पान । अर्यौ निसुरति ऊभै घटिजान ॥

छं० ॥ १०६ ॥

कारपिय पंजर पंजर भीडि । लगे वय अथ्य पछारिय मीडि ॥

हयौ निसुरति सुरत्तिन काय । जु सामंत पंजर हंस उडाय ॥

छं० ॥ १०७ ॥

रहे दोय कंठनि कंठ लगाय । मनो हित वंटाहि प्रेम मनाय ॥

विधौ कठ साल जरे कल लाइ । जुरै सथ सामंत सिंह थवाइ ॥

छं० ॥ १०८ ॥

पर्यौ निसुरति सतं सुरघायि । \* \* \* ॥

सिरप्पर नाग चढे जु हुआव । कहै ठग लेहु सिताव सिताव ॥

छं० ॥ १०९ ॥

करन्न पवार पटोधर जैत । उभै पग आरि महापय घेत ॥

ढिल्यौ गजराज हुआव पचारि । सरोस न आरि करन्न पचारि ॥

छं० ॥ ११० ॥

उभै दँत पंड भसुंड सुमारि । क्षरौ कँध पद्मय शंग सुठारि ॥  
ढर्यौ गजरांज करौ सु चिकार ॥ \* \* \* \*

छं० ॥ १११ ॥

परंत हुजाव अजाव औसान । गुरज समाहि उद्यौ असमान ॥  
करन सिर प्पर क्षारिय क्षाक । किरच्च किरच्च कर्यौ तन पाक ॥

छं० ॥ ११२ ॥

सटोप सकुच्चि अकुच्चिय माहि । ग्रह्यौ धुकि षान हुजाव समाहि ॥  
षवोस पवार सुकेसर नाम । ह्यौ षग मीर पर्यौ धर ताम ॥

छं० ॥ ११३ ॥

हुजाव परंत हुऔ हयकार । सुनी सुरतान हुजाव पुकार ॥  
सबै दल एक हजार हुजाव । कढ्यौ दोउ कोद सुश्रित्त अजाव ॥

छं० ॥ ११४ ॥

कारन परंत उभै सत स्हर । ग्रहै सिर ईस भिदे तन स्हर ॥  
परंत करन प्रताप कैमास । तनै सुत संगि समाहिय तास ॥

छं० ॥ ११५ ॥

रुन्यौ दल रुस्तम काटिय तीर । ह्यौ परताप निकस्सिय सीर ॥  
लगे सरु धक्कि चलाइय संगि । समेत तुरंग ढह्यौ लगि अंग ॥

छं० ॥ ११६ ॥

दुह्रं भर जुटुत पुटुन नाहि । बहै धर षंड जु ओन प्रवाहि ॥  
करे पनमीर मलिक अचंक । करे जनु सोरलियै कपि नंक ॥

छं० ॥ ११७ ॥

हजार उभै सत तीन जमन । परे कटि हिंदु सत सतमन ॥

छं० ॥ ११८ ॥

**प्रथम दिन के रुनधीर के युद्ध में मृत योद्धाओं के नाम ।**

दूहा ॥ उभय सहस सत तीन सौ । रुस्तम वर जुधवान ॥

से सत्तर हिंदू परिग । हय गय रुद्धि विहान ॥

छं० ॥ ११९ ॥

शाही सेना का किले में पिठने के लिये अग्रसर होना और  
बीर चन्द का मोरचा रोकना ।

कवित्त ॥ परि कौसाम प्रताप । ठान गेनी दंडोरिय ॥  
घुसत मेछ घन घाय । बास जनु भंभा भौरिय ॥  
लेटु लेटु सुप मेछ । मार सुप अंपहि मारे ॥  
धुअ सुमेर सामंत । दिगै नहि पाय सुधारे ॥  
गोपयौ कएर अनपति जहर । एबान हफि मिला कह कार्थी ॥  
वज्रंग ओठ धरकोट सम । आय बीर चंदए अर्यौ ॥  
छं० ॥ १२० ॥

दूसरे दिन बीरचंद के साथ कई राजपूत सरदारों का काम  
आना और यवन सेना का बल बढ़ना ।

मोतीदास ॥ अर्यौ अडकोटह बीर सुचंद । मनीं चिकुटाचल इंद सुनंद ॥  
फारस्सिय ओड़न दध्य करार । वटै जनु कटुत वार कवार ॥  
छं० ॥ १२१ ॥

मिगिहय मीर हए दुजनेज । समेत फारस्सि हन्यौ करि तेज ॥  
पर्यौ धर मीर मलक सुमार । मनो चक भांड उतारि कुलार ॥  
छं० ॥ १२२ ॥

अनेक पराक्रम चंद सुवीर । अघाय सुघाय कार्थी भवतीर ॥  
सुमेर जादुल हुअौ दिठ मेल । उनें उन उन्नहि भेदिय सेल ॥  
छं० ॥ १२३ ॥

मनो नट भंगुर मंडिय पेल । उरा पर दीसहि अंजु केलि ॥  
धुनें धुनि दोउ परे धर छोनि । अघाय सुघाय उड़्यौ हंस देनि ॥  
छं० ॥ १२४ ॥

हठी हडराउ सुषेत परंत । उभै मुर सत्त मलेछ सरंत ॥  
इक सत हिंदुअ सखिय सार । मिटे अम लम्भिय कोपि दुवार ॥  
छं० ॥ १२५ ॥

(१) गो०—हिंडै । (२) ए० कृ० को०—वज्रंग आठ धर कोट सम । (३) ए०—नग ।

जै सिंघ पचारि दुआरि अरंत । मच्चौ जुध भारय सापि भरंत ॥  
घनं घन गोरिय जोरिय सार । इसौ जुध जानि सहौदधिवार ॥  
छं० ॥ १२६ ॥

आरै षग धार चिनंग क्रिस्तान । मनो निसि कूटहि लोह तपान ॥  
घरी अध जुध मच्चौ अनिवार । परे होउ भीछ सुगसुर धार ॥  
छं० ॥ १२७ ॥

ग्रहै असि दास सहैस अरिंस । करी कुटवार घनेस परिंस ॥  
बधे दिसि संकर सिंघ सुछार । मुषे मँडि मीरन पान छंछार ॥  
छं० ॥ १२८ ॥

दोज दिसि जुड अनुड अपार । दुआँ सिलि दोँउ न एकं कार ॥  
दुनै सुष उच्चहि मार सुमार । \* \* \* ॥  
छं० ॥ १२९ ॥

बकै सुविष्टान कि आन प्रसान । महाभर आन बकै चहुआन ॥  
महाजुध जुद्धहि भीछ करूर । कटे धर पंड विहंड गरूर ॥  
छं० ॥ १३० ॥

बरै बनवीर पवार किवार । ग्रहै कर आवध लै सयवार ॥  
पचारिय लेख धर्यौ धर पार । अहुद्विय पेड पचास सुवार ॥  
छं० ॥ १३१ ॥

भगे भगि लेख समाहिय तीर । फिर्यौ पां दफ सुवुढन मीर ॥  
मची सुहलेल पर्यौ बनवीर । तिलं तिल अछरि वंदि सरीर ॥  
छं० ॥ १३२ ॥

जगं मनिराव धँधेरिय आइ । सिल्यौ ततरोस दुसंसन घाइ ॥  
आर्यौ षंछ दफ सुदण्णिन पाइ । हयौ तिन तेग जगंसनि राइ ॥  
छं० ॥ १३३ ॥

पर्यौ बनवीर जगंसन देपि । भर्यौ भर चालुक मान विसेष ॥  
सारूप सकातिय अलि सरोस । भिरै जनुराह रु भान रुकोस ॥  
छं० ॥ १३४ ॥

सहाव विनै घर पुद्विय पानि । इते दल भण्यि चालुक भान ॥  
पर्यौ पुरसान लघु दरसान । सरूप पर्यौ धर पैजि प्रमान ॥  
छं० ॥ १३५ ॥

पर्यौ भर चालुक भारथ पेपि । नच्यौ रनधीर ग्रहै कर तेक ॥  
जुरे परिहार पुरेसिय घान । परे रन पंच हजार पठान ।

छं० ॥ १३६ ॥

सवे दल हिंदुअ सत्त सतान । कमान पठान करषिय वान ॥  
लग्यौ रनधीर फ,य्यौ परवान । मनो जल जोरिय मंछ परान ॥

छं० ॥ १३७ ॥

पिभे समसेर पुरेसिय रूक । हन्यौ मध उद्ध करो दोइ टूक ॥  
इसौ जुध ढिल्लिय कोट ठरंत । मच्यौ भर मेछ सुहिंदु जुरंत ॥

छं० ॥ १३८ ॥

पलच्चर मूचर पेचर देव । परंम महंन न दिट्टौ केव ॥  
अघाइय सह करै जैकार । चवट्टिय पप्पर पुरि प्रचार ॥

छं० ॥ १३९ ॥

परे गज जूथ कटे हय थाट । चले वहि ओन नदीरय वाट ॥  
सहावनि जे भर पोष समूर । परे कटि मंडल लैग्रहि स्हर ॥

छं० ॥ १४० ॥

गयौ भर भार उतारिय स्हर । लयौ चह,आन सु कित्ति परूर ॥  
सहाव न मंडिय दिस्सिय आस । न छोरिय रेन परौ पड पास ॥

छं० ॥ १४१ ॥

परिगह स्हर परे पयरीर । परौ मनु मेर अडिग अपार ॥  
दुहं दिसि तक्कहि मेछ भ,भार । करौ मक्त सिंघ मनो सु गुंजार ॥

छं० ॥ १४२ ॥

कवित्त ॥ उभय दीह रन लगि । सेन आलुथि लुथि पर ॥

हिंदु मेछ रन तोल । वीर वज्जे अभंग धर ॥

वर ओलंस नरिंद । टंद वज्जे विरभानं ॥

कोट ओट छुट्टयौ । सार सेमुप चढि पान ॥

धन धार धार सिव वास वर । असि पहार धारह चढे ॥

संग्राम रवनि भारथ्य भिरि । कुल संग्राम संगुर वढे ॥

छं० ॥ १४३ ॥

( १ ) ए० कृ० को०-हूर । ( २ ) ए० कृ० को०-भज्जे ।

किया टूटा हुआ जानकर राजा रयनसा जी का राजगुरु को  
बुलाकर मंत्र पूछना ।

हूँ ॥ गढ़ दुट्टत जान्यौ सुभर । कट्टै रतन न जाइ ॥  
राज गुरु वर बोलिबौ । तत्त सुमत्त उपाइ ॥

छं० ॥ १४४ ॥

प्रोहित का मंत्र देना कि कट मरना सलाह है ।

कवित्त ॥ सुनौ रतन चहुआन । पूर वैरी नदियं तिय ॥  
राज रषि वर तत्त । सुरै सुर सुभर कित्तिय ॥  
गगुलि' खर सामंत । गिल्यौ पहु गोरी राहं ॥  
उगलि छुट्टि वर भान । चिंति सुविहान सु साहं ॥  
निद्वार वीर फल होइ फुनि । फूल मुहुंगे वीय वर ॥  
ज्यौ होइ सोइ जो उव्वरै । जारखर धावै न धर ॥

छं० ॥ १४५ ॥

मति घट्टिय रजपूत । सार संसार मरन वर ॥  
सुकति पदारथ सुकि । दीनहु ज्यै न घर घघर ॥  
सार इहै संसार । पत्त मन सथ्य सजाइय ॥  
पति घट्टत मन रहै । जंम षोयौ जिहि जाइय ॥  
वर चौर चौर अछरि ठरै । वरह वरह जरि झगारै ॥  
तिसना रु तेज माया पमुकि । सुगति काल जित उव्वरै ॥

छं० ॥ १४६ ॥

राजा रयनसिंह का जौहर करना ।

जौहर चिंति रयन । गढ़ संध्यौ रतन हुअ ॥  
सकल सबै रजपूत । करै अस्तुति तदेव भुअ ॥  
कित्ति जित्ति तन मंडि । काल घट घटै न घट्टै ॥  
असिवर अरि धाकंत । जम्म बंधन वर छुट्टै ॥  
सब तंत गार इक सट्टिवर । बिष प्रवरत प्रवरत्त हुअ ॥

( १ ) ए०-उगलि ।

( २ ) मो०-जगरे ।

( ३ ) मो०—कालति उव्वरै ।

( ४ ) ए० कृ० को० काल दूटै न घट्टै ।

दिन हससि जीय दिन अद्य निस । जोहर रक्षि वर सामि तुअ ॥  
छं० ॥ १४७ ॥

पाल बंधि अरि बंधि । पाल बंधे सुप बंधे ॥  
इए काया कारसौ । जानि अस मारग संधे ॥  
जल जार तुट्यौ । भिदै रवि मंडल सथ्य ॥  
अच्छरि वर संग्रहै । सुकति लट्टी निधि हथ्य ॥  
रन धवल धवल कहूँति सिर । असुर खर समुह भिरै ॥  
उच्चरी बार बढ, गुज्जरह । जक अग्नि लग्गा फिरै ॥  
छं० ॥ १४८ ॥

दोपहर ढरते रयनसी का किले से निकलना और  
मुस्लमानों का उसे पकड़ने के लिये धावा करना ।  
दूहा ॥ विपहर नमत रवि नमत तम । दीत अदीत वसान ॥  
सह सु रष्ट परिवार उत । पंच पंच पन पान ॥  
छं० ॥ १४९ ॥

पंड सुपै नग नग करौ । करि पल पट्ट प्रमान ॥  
अव सहाव भूकि यो कछौ । विगह ग्रहौ चहुआन ॥  
छं० ॥ १५० ॥

कवित्त ॥ तव सहाव सुनि पंच । नाम एकै जति न्यारिय ॥  
हवसी औरसि नौर । तीय गजनी संभारिय ॥  
मकड़ लोदौ रह । आप समवरि अधिकारिय ॥  
पुरसाना पानेस । जोर धरि जवन हँकारिय ॥  
तव पैज करिय अव अग्र हौं । तुम लज्जा पच्छा फिरै ॥  
इहकारि हाक भू, भू, भौ सजुर । महि हिंदू जिंदू भिरै ॥  
छं० ॥ १५१ ॥

हिन्दू और मुस्लमान दोनों का परस्पर घमासान  
युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ भिरे हिंदू मेछान रोस पचारी । रघूवीर रासिंघ राजैस भारी ॥

( १ ) भा०-अव ग्रहों ।



वलीभद्र कुरंभ रारै न आगै । करै हाक भाकं सुरै मेछ भागै ॥

छं० ॥ १५२ ॥

दिसा दषिणं राव सारंग नेतं । गुरं गष्वरं पष्वरं बंधि देतं ॥  
बड़ गुजरं भोज रा राम सुत्तं । दिसा वाम मंछौ मनी इंद्र पुत्तं ॥

छं० ॥ १५३ ॥

दुजं राम सुत्तं दिवं राज तथ्यं । कुरं जुध द्रोणं भए जानि पथ्यं ॥  
भरं ईसरं दास का कन्ह जायं । चिहुं पारसं कोट चहुआन रायं ॥

छं० ॥ १५४ ॥

टिक्थौ टाक चाटा सुपं नाट पायं । नटै नाट कोदा चिहुं षण्ण धायं ॥  
चपे चोहुआनं सहावं पचानं । अरे ओडनं नंषि कहुं क्षिपानं ॥

छं० ॥ १५५ ॥

रघूवीर कुरंभ बंध तथ्यं । वजे आवधं आवधं लग्गि बथ्यं ॥  
मची हाय हायं लगै घाय घायं । नही अप्प पार सुधं जुद्ध ताथं ॥

छं० ॥ १५६ ॥

गरं लग्गि साहाव कुरंभ एकं । हन्यौ हक्कसी जाति जुद्धे सतेकं ॥  
दुती बंध रनसिंघ सिंघं पचारै । तिनें एक साहाव मार्यौ पछारे ॥

छं० ॥ १५७ ॥

सुरं राजसी बंध साहाव गाजी । तिनं तेग तेगं अनो अन्य बाजी ॥  
लग्गो वीर रस्सं कठं तार तारं । कटे कंध कामंध छोगी पथारं ॥

छं० ॥ १५८ ॥

बड़ गुजरं भोज मक्की सहावं । दुनै सामि लाजं दुनै सुष्य आवं ॥  
दुनै सज्जरी षंजरी पंजरीयं । दुनै दुज्जरी मह ज्यौं दडि कीयं ॥

छं० ॥ १५९ ॥

दुनै दंत दंत ग्रहै कंट रेसं । उड्यौ हंस हंसं दुनै बाल बेसं ॥  
दुजं राज साहाव लो दीस नूरं । दिसा वाम आयौ मनोराह लूरं ॥

छं० ॥ १६० ॥

दिसा वामयं वा गूरज प्रकारं । कर्यौ पुट्टि घाया पर्यौ दुज्ज धारं ॥  
गजे टाक नाटं चिह्नं कोछ राजं । तबै छंडियं षंड सुलतान पाजं ॥

छं० ॥ १६१ ॥

मची मार मारं मुर्यौ सत्त पायं । इसौ चंपिहं सेन चहुआन रायं ॥  
जुटे भारथं ईसरं दास सूरं । उते मेछ भंडा गड़े बट्टि नूरं ॥

छं० ॥ १६२ ॥

विनै साहि साहाव आनं करूरं । भिरे मेछ मस्मंद गातं गरूरं ॥  
उते ईसरं दास का कन्ह पुत्तं । गयौ गज्जनेसं हन्यौ गज्ज नेतं ॥

छं० ॥ १६३ ॥

रपै रेन टेकं मुरे पंक नाहीं । इसौ जुद्ध आनुड चहुआन साही ॥  
बढ़े आन पुरसान पां रोस धायौ । तिनं ईसरं दास रा पूर धायौ ॥

छं० ॥ १६४ ॥

टिक्यौ टाक पुरसान सों मेल घाये । सवै मस्च तुट्टै डिगे नाहि पाये ॥  
घरौ एकलौं टांक सिर सार तुथ्यौ । परौ जानि संभयार घरियार कुथ्यौ ॥

छं० ॥ १६५ ॥

उतै डेढ़ हज्जार मेछानं पारे । परे सात सें घेत हिंदू पचारे ॥

छं० ॥ १६६ ॥

कन्ह के पुत्र ईसरदास एवं अन्य वीरों का पराक्रम से  
काम आना ।

दूहा ॥ ईसर दास जु कन्ह कौ । लगि पुज्यौ पतिसाह ॥

मनों गयँट के सघन सरि । करि दहवट्ट दुगाह ॥

छं० ॥ १६७ ॥

चढत मेछ तिन दिनह वर । संभं सुमिटि भारथ्य ॥

पथ्य पोष कूरंभ रहि । बंध तौन पारथ्य ॥

छं० ॥ १६८ ॥

बढ़े आनि पुरसान पति । पां पुरसान पुरेस ॥

दिसि दाप्पिन धवलिय सयन । चपि संभरी नरेस ॥

छं० ॥ १६९ ॥

दक्ष भगो चहुआन भिरि । रन तंचौ भगि सार ॥

रयन सेन नन भज्जई । जानि सुवज्जन हार ॥

छं० ॥ १७० ॥

उभै परिगगह रयन सौं । लज्ज परिगगह कोरि ॥

जस भावी तस ब्रिम्भयौ । सत्तिय सत्त न छोरि ॥

छं० ॥ १७१ ॥

चौपार्द ॥ जरानीय तेलनि चढि वीरं । गय लज्जी सिसु आव न मीरं ॥

लग्गि न कली फूल वर वीरं । लज्जी गहन रयन झुज सीरं ॥

छं० ॥ १७२ ॥

कवित्त ॥ भय नाटक लज टंक । टंक भय लज्ज सुमेरं ॥

चाव हिसि रवि सामि । घाव चहुँ दह वेरं ॥

ढंढोरिय बर ढाल । माल हर बंधि कमल वर ॥

इंद्र लोक जम लोक । लोक हरि छंडि ब्रह्मधुर ॥

रजपूत सोइ रजपूत वट । वट चुक्कि पावै न वर ॥

सो करो कित्ति ज्यौं उधरौ । कहियै जिहि रवि चक्ष तर ॥

छं० ॥ १७३ ॥

शाह के आज्ञानुसार पीरोज खां का रयनसी के सारहने  
आकर प्रचारना और रयनसी का उसे मार गिराना ।

परे पान पुरसान । पर्यौ बड़ गुज्जर भोजं ॥

चंपे वर चहुँआन । आन रंग रोस सरोजं ॥

देखे वर चहुँआन । पान पुरसान सु उप्पर ॥

मघ पद्मी पीरोज । धरे सुविहान झुज पर ॥

रे हिंदु दंड असपत्ति अग । को दरिया झुज वर तिरै ॥

तसलीम बिनै साहाव करि । सरच छोरि जिय उधरै ॥

छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ रे पद्मी पीरोज सुनि । हूँ दिल्ली पिय पुत ॥

जिन गज्जन वै बंधयौ । क्यौं बोलै सति गत ॥

छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ पद्विय घाँ पीरोज । रवन सम्हौ असु न पिय ॥

दो भरहानी दिष्ट । उभै अंकुरि आरुषिय ॥

संधि वान कक्षान । प्रान गुन मुंच न धारिय ॥  
 टट्टर लुगि चहुआन । वीर सन्नाह उकारिय ॥  
 ग्रधिराज राज सम वान गहि । फटि टट्टर सधि मीर सिर ॥  
 लग पंष मीर बाहिर रही । मनु राह छर अधपत्ति सिर ॥  
 छं० ॥ १७६ ॥

दूहा ॥ परत पान पीरोज कै । दौरिय पान जिहाज ॥  
 सैद सेष सीनौर मिलि । रूक्यौ रयनसी राज ॥  
 छं० ॥ १७७ ॥

यवन सेना का रयनसी को घेरना और बड़े पराक्रम से  
 हथियार करत हुए रयनसी जी का मारा जाना ।

मोतीदामा ॥ रूक्यौ मिलि भेछ रयनह राज । करै मनुसिंध करौ पर गाज ॥  
 उभौ सम रंगन अप्पन एक । लियै दुरजोधन कौ मनु टेक ॥  
 छं० ॥ १७८ ॥

जराव को मौर वंध्यौ उतमंग । उगै ग्रहनो कि समेर कौ शंग ॥  
 ठलकत ठाम वनी गजगाह । घटा घन मानहु गंग प्रवाह ॥  
 छं० ॥ १७९ ॥

रह्यौ पुल बागे रंग्यौ कसमीर । जन उज्यौ मुत्तिय साल सभौर ॥  
 पलकत सोवन संकर पग । कलकत बीच अमोलिक नग ॥  
 छं० ॥ १८० ॥

दिषै इ वनै तिहि बेर को भूप । कहंत वनंत न रूप अनूप ॥  
 घड़ा अवरौ वर भार अनौन । दल पर गौरिय बाग सुलीन ॥  
 छं० ॥ १८१ ॥

जपे मथुरेसर नषि वृहाल । तरकिय जानि कि वीर प्रयास ॥  
 परी अनचित पलटल माय । टगटग लगिय उट्टि न हाथ ॥  
 छं० ॥ १८२ ॥

गये सब कायर भजि समूर । मनी उडि पच पवन्न बधूर ॥  
 रह्यौ रुपि एकल पान जिहाज । जिने भुज मंडिय गज्जन लाज ॥  
 छं० ॥ १८३ ॥

तिनें नषि सायक घंघि कमान । गयौ चुकि बाम भुजा चहुआन ॥  
विद्यो सर घंघि कौ न पत जास । पहुँचिय आय कौ अंतक ताम ॥  
छं० ॥ १८४ ॥

भरे नग रोस प्रहारिय सेल । तुरंग समेत कियौ धर भेल ॥  
यरच्छिय अछिय लगिय अंग । रही थगि हेँवर पान दुजंघ ॥  
छं० ॥ १८५ ॥

पर्यौ इ रछ्यौ धर पंजर जानि । गयौ मनु हंस उडे असमान ॥  
चह चह बंवर वज्रत तूर । चळ्यौ रिन राध सुरातन पूर ॥  
छं० ॥ १८६ ॥

उछी सिर बंवरि लुछ सुवंक । रंगे अग मह कि वीय मयंक ॥  
अछ वरुन भय द्विग अंत । मनें बड वागिनि मझि धपंत ॥  
छं० ॥ १८७ ॥

प्रगट्टिय आनन द्वादस फूर । भृगुद्विग चट्टि कपाल करूर ॥  
कळ्यौ परिवार परिगह देषि । विचारिय जीवन अप्य अलेष ॥  
छं० ॥ १८८ ॥

करों कोइ अज बडौ अपियात । इनों असपत्ति घरें मन बात ॥  
चळ्यौ हय हकि दिसा गजनेस । रछ्यौ रथ घंघि गयन दिनेस ॥  
छं० ॥ १८९ ॥

क्रमे संग अछरि छरन झूल । लिये कर कम्बल चौसर फूल ॥  
हयगय मेछ फवजिय ठेलि । मनें विन मेहरि होरिय ढेलि ॥  
छं० ॥ १९० ॥

उडे रज डंमर अंबर छाया । मनो घन बहर पावस आय ॥  
चळ्यौ गज ऊपर देषि हमीर । छरे किलकार हँकारिय बीर ॥  
छं० ॥ १९१ ॥

धुरी नष बाजि धरनि धसकि । पर्यौ सिर भार घनंग कसकि ॥  
उभै नरनाह महा बलवंत । उभै मन मंडिय भारथ पंति ॥  
छं० ॥ १९२ ॥

उभै सिरदार रमाइन केक । उभै मद मोकल आनि अरेकि ॥

उभै हूक ताक गुमान अमान । उभै कदि पापन छेष्ट रिसान ॥

छं० ॥ १८३ ॥

उभैइ पितान को वर न भारि । अनो अनि तोलि उभै तरवारि ॥

कार्यो नग को नग घाव पछि । गयो कटि दंत भसुंड सुदक्ष ॥

छं० ॥ १८४ ॥

सहाव विन करि पोरि को घाइ । गयो कटि को सिर सभरि राय ॥

परोइ ने मुंजि कि डोरि दिखेस । कार्यो हंडमाल को मेरु महेस ॥

छं० ॥ १८५ ॥

उठी रत छिछकमंध उतंग । मनो वल छुटिय जावक रंग ॥

विना लिरपे गपरे सहाराज । उनगिय तेग अजघ्न विराज ॥

छं० ॥ १८६ ॥

जहां तहं वाघत सह दुग्ध । जहां तहं सारन मोर सरह ॥

जहां तहं घायल घाइ धुजंत । जहां तहं कायर भाजि लुक्त ॥

छं० ॥ १८७ ॥

जहं तहं लोहिन के मचि कीच । जहां तहं गिघ कखे तिन बीच ॥

जहां तहां लोधि उलट्ट पुलट्ट । जहां तहं कीन सुघट्ट कुघट्ट ॥

छं० ॥ १८८ ॥

जहां तहं कालिज फेफर बूक । जहां तहं आमिष अंत जँबूक ॥

जहां तहं सुंड रडव्वड तुंड । जहां तहं वाँह वगत्तर पंड ॥

छं० ॥ १८९ ॥

जहां तहं चीसठि जोगिनि झुंड । जहां तहं नारद सडव तंड ॥

जहां तहं अछरि हूर हमल । जहां तहं विंद वरे भल भल ॥

छं० ॥ २०० ॥

जहां तहं लेत करीन की गाल । जहां तहं सकार गूथत माल ॥

जहां तहं वीर वीताल डकार । जहां तहं सिंधु राग उचार ॥

छं० ॥ २०१ ॥

जहां तहं सार को बूर उडाय । जहां तहं दारत ही सुदिपाइ ॥

इसौ हथ वाह वहंत छछौह । हियै चदि कीन करै तहं लोह ॥

छं० ॥ २०२ ॥

तबै अप कुप्पि काही सुरतान । करों किन हल्ल सवें तुरकोन' ॥  
करिहरि मेछ कलाप करोर । परी करि अहु करीन किकोर ॥

छं० ॥ २०३ ॥

तुल्ल जँवूरति तीरनि मीरि । रयन कमड धरा पर ढारि ॥  
उरा पर दौसत छेक अनेकि । मनो घट रूप घरूल बनेकि ॥

छं० २०४ ॥

काटे नग राज तुरंग समेत । घने कटि घाट मेछायन षेत ॥  
करे रवि मंडल अंदर राह । विराजिय जाय कौ बैकुंठ माह ॥

छं० ॥ २०५ ॥

धनिष्ठनि जंपत देव विमान । बधावत फूल करंत वषान ॥  
रहैम सुरा सुर मान बगात । रहै न सुमेर धराधर सात ॥

छं० ॥ २०६ ॥

जिसौ न्यप पिथ्य परद्विय पट्ट । तिसौ भुजभार निवाहि निपट्ट ॥  
सँसार असार मे कथ्य उगारि । भयौ रज रजन पाइ लगारि ॥

छं० ॥ २०७ ॥

पराक्रम पार न पाइय सेस । कहाँ लगि जंपिय चंद कवेस ॥  
बजे असुराइन जीति निसान । परे चहुआन फिरी धर आन ॥

छं० ॥ २०८ ॥

लूटो वन संक हयगय देस । रजवट्ट रषि गयौ रयनेस ॥

छं० ॥ २०९ ॥

रयनसी के मरने पर दिल्ली पर मुसल्मानी  
कब्जा होना ।

जवित्त ॥ खवर ढारि तजि चवर । नषिय पग लागि सुवथ्य ॥

धर नषिय चहुआन । पच्चि पारिय सह सथ्य ॥

भिरि गट्टे चहुआन । बलिय कट्टे निभ्भारिय ॥

वर पंचाइन थकि । म्रिग चषे उभ्भारिय ॥

अरि ढारि अरि वरै बाहि बाहि वेह्य वत ॥  
 ढहि वाज नग्न वर राज वर । उज्जारै वर सत्त जत ॥  
 छं० ॥ २१० ॥

दूछा ॥ सिर लुट्ठ सुत्तिय सुवरि । मुट्ठि हयगय रोज ॥  
 जीति वदे नीसान नद । कर्यौ साहि वर काज ॥  
 छं० ॥ २११ ॥

घर ढिल्ली पतिसाह घर । घर पुट्टै चढि ह्य ॥  
 नयौ नवेरौ यप्पिहै । इह सुविहानी सथ्य ॥  
 छं० ॥ २१२ ॥

लगि जोहर भारथ्य मचि । प्रलै काल मनो जग्य ॥  
 ढिल्ली घर नथन गहिय । परिय पराक्रम लगि ॥  
 छं० ॥ २१३ ॥

**दिल्ली कब्जे में करके कन्नौज पर मुसलमानी सेना का  
 आक्रमण करना ।**

कवित्त ॥ जीति पयल्लै सथ्य । ह्य पुर पंच विलगौ ॥  
 पुट्टि पान पुरसान । पान चहुआन सु अगौ ॥  
 दिसि कनवज कमधज्ज । सज्जि जैचंद सु उप्पर ॥  
 सुनि अवाज भय राज । आज भजत नर कुप्पर ॥  
 इह नेछ मत्त वासन विरद । जुह जेअ पुज्जै न वर ॥  
 सनमुष्य सजौं अप्पन सुभर । करौ क्षार उभक्षार धर ॥  
 छं० ॥ २१४ ॥

उभय दिवस सैरंम । राय जयचंद प्रपत्तौ ॥  
 इत गज्जन वै सेन । धाड चर पवरि नियत्तौ ॥  
 उभय चतियं दिन प्रात । मात कालिंदी तट्टह ॥  
 मिले पंग पतिसाह । वहै धर ओन उपट्टह ॥  
 जुहंत जोध दिन सत्त भय । छर रंभ नन रंडरिय ॥



हर हंड साल गुंथत गहर । रंक जेम रतनं हरिय ॥

छं० ॥ २१५ ॥

असिय लष्प तोषार । सजड़ पष्पर सायदल ॥

सहस हस्ति चवंसट्टि । गरुअ गज्जंत महाबल ॥

पंच कोटि पाइक । सुफर पारक धनुहर ॥

जुध जुधान बर वीर । तोन बंधन सडन भर ॥

छत्तीस सहसरन नाइवौ । विहि निम्मान ऐसो कियौ ॥

जैचंद राइ कविचंद कहि । उदधि बुद्धि कै धर लियो ॥

छं० ॥ २१६ ॥

कहि न ईस कहि इंद । कह न ब्रह्मा सावित्री ॥

गन गंधर्व अपहरा । वत्त नारद निरत्नी ॥

कहि न मेर सह सहन । मनिष मनषे को गिलियौ ॥

कहौ उडियन आकास । जलनि कैते जेलिलियौ ॥

संग्राम मिले सुरनर असुर । अनल पंच दिट्टौ अरनि ॥

जैचंद राव किहि परि हुँझौ । कहि निसंक सच्चौ धरनि ॥

छं० ॥ २१७ ॥

इस मुसलमानी आक्रमण में जैचन्द का लड़ कर मारा जाना।

इंद्र पथ्य धर लिङ्ग । रथन सथ्यों असुरायन ॥

दिसि कनवज आवंत । सुन्यौ जैचंद पराइन ॥

सयन सनम्मुष आय । जुद्ध भारथ भर मच्चौ ॥

जित्यौ विनय सहाव । परत धर सिर वर नच्चौ ॥

न्रम्मान पान भायौ विगति । असिय लष्प जिते असुर ॥

जैचंद कमध सचह सहस । हनिय लगि गय धार धुर ॥

छं० ॥ २१८ ॥

सु सिर पर्यौ रिन भुअन । तेह गिरधरनि उचांयौ ॥

गिरधन अपहर लेत । राव चाहत न पायौ ॥

गिरिधनि कर हवि छुट्टि । पर्यौ गंगा जल भीतर ॥

गंगह लियो उछंग । लैन चाहै सिर संकर ॥

नंगा सुपास लिय जय नयन । घर उछाह किय आप कौ ॥  
गल हंड साख लै संठयौ । वह सुसीस जयचंद कौ ॥

छं० ॥ २१६ ॥

### ग्रंथसमाप्ति उपसंहार ।

धन हिंदू प्रथिराज । जिने रजवह उजारिय ॥  
धनि हिंदू प्रथिराज । बोल कलि सक्षु उगारिय ॥  
धनि हिंदू प्रथिराज । जेन सुविद्वानह संधी ॥  
वार वार ग्रहि मुक्कि । अंत कोलह सर बंधी ॥  
रनसिंह रयन राजन सुधनि । जिन घर सिर सट्टै दईय ॥  
करि सकय कोय मच्छर सरद । तौ जुग किति बेलिय वईय ॥

छं० ॥ २२० ॥

प्रथम वेद उद्धार । बंभ मछह तन किनो ॥  
दुतिय वीर वाराह । धरनि उद्धरि जस लिनो ॥  
कौनारक नभ देस । धरम उद्धरि सुर सपिय ॥  
क्षरम क्षर नरेस । हिंद हद उद्धरि रपिय ॥  
रघुनाथ चरित हनुमंत कृत । भूप भोज उद्धरिय जिम ॥  
प्रथिराज सुजस कवि चंद कृत । चंद नंद उद्धरिय डम ॥

छं० ॥ २२१ ॥

पद्मरी ॥ नवरस विलास रासौ विराज । एकेक भाष अनेक काज ॥  
जो सुनय विविध रासौ विवेक । गुन अनंत सिद्धि पावहि अनेक ॥

छं० ॥ २२२ ॥

क्षरत्त दान विद्यान सोन । नाटक गेय विद्या विनान ॥  
चातुरी भेद वचनह विलास । गति गरम नरम रस हास रास ॥

छं० ॥ २२३ ॥

गति साम दान भर दंड भेद । सब काम धाम निद्वान वेद ॥  
वाचंत कवित हारंत गोप । बर विनय विद्धि बुभक्षय सदाप ॥

छं० ॥ २२४ ॥

विधि सरज सार रिन बहिन भार । गतिमान दान निरवानकार ।  
चौवरन धरम कारन विवेक । रस भाष भेय विग्यान नेक ॥

छं० ॥ २२५ ॥

पौरान सकल कथ अष्टय भोय । भारष्टय अष्टय वे वन्नताय ॥  
कलि काव्य रस्स प्रादास रंग । बंधनिय छंद बुझ्छै सुजंग ॥

छं० ॥ २२६ ॥

विद्वेकदान विचार चार । गति वाम वाम रति रंग भार ॥  
नव सपत कला विचार वेद । विग्यान थान चौरासि भेद ॥

छं० ॥ २२७ ॥

गति पंच अरथ विग्यान मान । उप्पमा जेव मति अंग थान ॥  
रितु रस रसानि बेलास गति । मंतन सुमंत आभासि अति ॥

छं० ॥ २२८ ॥

भोगवन पहूमिति विचार विद्धि । अरु इष्ट देव उप्पाय सिद्धि ॥  
गंधर्व कला संगीत सार । पिंगलह भेद लघु गुरु प्रचार ॥

छं० ॥ २२९ ॥

पित मात पति परिचरत भेय । राजंग राज राजंत जेय ॥  
परब्रह्म ध्यान उद्धार सार । विधिभगति विस्व तारन पार ॥

छं० ॥ २३० ॥

आधुनह वेद छय गय विनान । ग्रह गति मति जातिग थान ॥  
कलि सार सार बुझ्छहि विचार । संमलहि भूप रासौ सुधार ॥

छं० ॥ २३१ ॥

पावहि सुअरथ अरु भस्म काम । निरमान मोष पावहि सुधाम ॥  
आवरत चारि जौ सुन हि राजा पावहि सुचित्त बंछहि सुकोज ॥

छं० ॥ २३२ ॥

असुमेध जग्य सम फल ग्रमान । तुलदान प्रान ब्रह्मंड वान ॥  
वद्रिका जात फल जगन्नाथ । रामेस सेत पावै समोथ ॥

छं० ॥ २३३ ॥

कासीय महाफल माथुरात । अवगाह पुन्य पावै सनात ॥  
उज्जैनि तिष्ठथ माया सुकांति । द्वारिका अयोध्या भुवन भांति ॥

छं० ॥ २३४ ॥

ए तिग्म मोछदायक कहंत । ते पुरस सुनंत रासो लहंत ॥  
हरिसद्व मात तुलजा विषयात । कसमीर क'गुर हि गुलाज मात ॥  
छं० ॥ २३५ ॥

ज्वाला अनेक मुप कुंड जेह । परस्यां प्रमान फल लहै तेह ॥  
सन वाच कंस सुनहौ सुराज । पोवहि सुचित अभिलाष काज ॥  
छं० ॥ २३६ ॥

प्रतिपदा चंद दिपि सुरह गाय । नौलिक जटंत नौलहिल पाइ ॥  
पयपान भेद ज्यो हंस जानि । संभलै राजराजन सुजानि ॥  
छं० ॥ २३७ ॥

इह ग्रंथ उदधि लहरीत रंग । वाचंत सुनंत उपजे सुरंग ॥  
नन सुनै मूढ़ मतिमंद कान । आलसू अधिक निद्रा विराम ॥  
छं० ॥ २३८ ॥

लालचि लछन गुन हीन देह । नन सुनै कान रासो सुतेह ॥  
संभलै हार दातार रास । कवियन विलास पूरवन आस ॥  
छं० ॥ २३९ ॥

कवित्त ॥ प्रथीराज गुन सुनत । होय आनन्द सकल मन ॥  
प्रथीराज गुन सुनत । करय संग्राम स्यार रन ॥  
प्रथीराज गुन सुनत । कथन कपटय ते खुल्लय ॥  
प्रथीराज गुन सुनत । हरपि गुंगौ सिर डुल्लय ॥  
रासो रसाल नवरस सरस । आजानौ जानप लहै ॥  
निसटौ गरिष्ट साहस करै । सुनहु सति सरसति कहै ॥  
छं० ॥ २४० ॥

सुनि रासो सुर राय । रिभूक्त ब्रह्मा हरि संकर ॥  
उमया धरि हरि भाव । सुनिय नारद गुनंकर ॥  
जु कछु तत्त गुर ग्यान । दान माननि मन रंजन ॥  
सस्त्र कला साधन । मानि अरियन दल भंजन ॥  
सब रस विचार विद्या भुवन । मंच जंच साधन सुतन ॥  
कविचंद छंद बंधिय जुगति । पढत गुनत पावै सुमति ॥  
छं० ॥ २४१ ॥

रामोइन भारध्य । ग्रंथ अठ दसै प्रमानं ॥  
 सुनत सिद्धि घर रिद्धि । होय रासौ सनमानं ॥  
 अठ सठ तीरथ न्हाय । गाय गुन गोविंद गानं ॥  
 ता सम वरि ओतान । लिषत वाचत विधि जानं ॥  
 गंगा सनान दिन प्रति लहय । जे नरिंद रासो सुनय ॥  
 डाकिनिय भूत बेताल छल । रोग सोग दोषन कुनय ॥

छं० ॥ २४२ ॥

मंच सकति या मंझ । धूप अष्य उष्येवय ॥  
 सुनै अवन गुन एह । दान अडा करि देवय ॥  
 एक चित्त करि भाव । भाव या मंझ कह पावय ॥  
 अरथहीन ब्रनहीन । हीन छंदह नन गावय ॥  
 पिंगल प्रमान बहु भांति जुति । रस रूपक नव नव सरस ॥  
 वरदाय माय रसना रसिक । परचि प्रीति पावै सुरस ॥

छं० ॥ २४३ ॥

चिरजीवहु ओतान । काम मन बांछित पूरय ॥  
 चिरजीवहु ओतान । दुष्य आपद भय चूरय ॥  
 चिरजीवहु ओतान । पुत्र परिवार सहेतौ ॥  
 चिरजीवहु ओतान । दान कवियन जन देतौ ॥  
 छै पाट घाट भंडार भरि । आस सास सफली फलय ॥  
 धरि ध्यान जाग साधय जुगति । जरा अत्य तन ना कलय ॥

छं० ॥ २४४ ॥

इति श्री कविचंद बिराचिते पृथ्वीराज रामके राजकुंअर श्री रेनसी अभिषेक,  
 दिल्ली नगर वासे गोरी सहाब गोरी धरनम्, विनय सहाब पानिसाह तखत  
 करनम्, परस्पर युद्ध जुरनमूनम्, दिल्ली जोहर जरनम्, राजा, श्रीरेनसी मरणम्,  
 राजा जैचन्द गंगा सरनम् नाम अडसठवां प्रस्ताव संपूरणम् ॥६८॥



## अथ महोबा समयो लिख्यते ।

चौहान और चंदेल कुल में कैसे झगड़ा पड़ा  
इसका सूचना ।

दूहा । कहे चंद गुन छंद पढि । क्रोध उदंगल सोइ ॥  
चाहुआन चंदेल कुल । कंदल उपजन कोइ ॥

छं० ॥ १ ॥

विवाह के अनन्तर सुलतान को कैद करके पृथ्वीराज  
की सेना का महोबा में पहुँचना ।

समुद्र सिपर गढ परनि नृप । पकरि साहि लिय संग ।  
चलि वहीर आई महुव । चढिव रंग वहु रंग ॥

छं० ॥ २ ॥

समुद्र सिपरगढ से विवाह करके चलने पर सुलतान का  
बीच में आ घेरना, उसे जीत कर पृथ्वीराज का दिल्ली  
की ओर चलना ।

कवित्त । समद सिपरि गढ परनि । राज दिल्ली दिसि चलिव ॥  
पातिसाह सुनि पवरि । धाइ विचही रनि मल्लिव ॥  
सकल सिमिटि सामंत । चंद कैमास बुद्धिवर ॥  
लहिव जुड चहुआन । गहिव प्रियीराज साहि कर ॥  
रजपुत छंडि पचास रन । लूटि जवन सेना घनिय ॥  
पठान सात हजार पर । जीति चर्यौ दिल्ली धनिय ॥

छं० ॥ ३ ॥

\* इस समय की घटना का सम्बन्ध तो पृथ्वीराज के जीवनचरित से अवश्य है पर अनेक कवियों ने इस कथा के वर्णन में अपनी कवित्व शक्ति दिखाई है पर नाम अपना न देकर चन्द वादाई ही का दिया है । इसलिये इस समय के चन्द की रचना होने में सन्देह है अतएव यह अंत में दिया जाता है ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना, कुछ घायल सरदारों का रास्ता भूल कर सहोबे में आपहुँचना, वहाँ भारी वर्षा होनी, सरदारों का बिकल होकर परमाल राजा के बाग में छाया में ठहरना, मालियों का रोकना, बातों बात बढ जाने पर मालियों का गाली दे बैठना, सरदारों का माली को मार गिराना, मालिन का रानी मल्हन देवी के पास आकर सब वृत्तांत कहना, रानी का राजा को बुलाकर समाचार सुनाना, राजा का अपने वीरों को इन सभी के पकड़लाने की आज्ञा देना ।

पड़री । वरनी विवाह चहुआन रान । व्यास वचन जौ करि प्रमान ॥

जहव गरब भानियौ बीर । कंमोदनीति जी ते गहीर ॥

छं० ॥ ४ ॥

रन कटि पंच सत्तह हजार । जहव कसोद दल करि दुसार ॥

सुलतान पकरि नृप लियो आप । रस्तम ततार सिटि पाइ ताप ॥

छं० ॥ ५ ॥

जुगिनि पुरेस दिसि रज धाइ । भूली वहीर सहौवे सुआइ ॥

घाइल कितेक रजपूत संग । दासी सुमंजरी अति उमंग ॥

छं० ॥ ६ ॥

पहुंचे सु सहवे नगर आइ । वरसियौ सेह बूंदनि अघाइ ॥

भय विवल लोग घाइल उताप । उपवाग साँझ चलि गए आप ॥

छं० ॥ ७ ॥

जहं महल ठाम उत्तंग नेक । पलभलिय जोध चढि बलिय नेक ॥

वरजियौ जाइ मालीग सोइ । बोलियौ बोल अति क्रुद्ध होइ ॥

छं० ॥ ८ ॥

गारौ सुदीन उत्तंग हथ्य । विरचियौ बाहि पथ्यर समथ्य ॥

लुगी सुजाय रजपूत सीस । धायौ सु तेग करि करि वरीस ॥

छं० ॥ ९ ॥

दीनी सु सौस दुहूँ घालि सोइ । उडि पर्यौ मध्य धरि विगरि होइ ।  
भइ ब्रह्म सुनी परिमाल राज । पट्टयौ जोध करि हुकुम साज ॥

छं० ॥ १० ॥

चंदैत वैत जागरां स्तूर । चैर सुमहस डक मलहन नूर ॥  
सौलंघी जदव सजि अनेक । सजि गहरसार गोहिल अनेक ॥

छं० ॥ ११ ॥

वाजियौ वनाफर जुद्ध ताइ । हरदास भगेलौ वीर विभाइ ॥  
आए सु सजि द्वार सोइ । गुहरिय वत्त दरवान दोइ ॥

छं० ॥ १२ ॥

रानी मलहन देही हजूर । गुहरिय बात दरजान दूरि ॥  
उंचे अवास छाजे सु सुइ । परिमाल राज बैठे विरुद्ध ॥ छं० ॥ १३ ॥  
मालिन पुकारी करि नवीन । परिमाल जुद्ध पर हुकुम दीन ॥

छं० ॥ १४ ॥

परिमाल देव की आज्ञा से सरदारों को पकड़ने के लिये  
सेना का आना, घोर युद्ध होना, परिमाल की तीन हजार  
सेना का मारा जाना, पृथ्वीराज के तीस वीरों को मारा जाना  
और सत्रह का घायल होना, यह समाचार पाकर परिमाल  
देव का क्रोध कर अपने प्रसिद्ध वीर ऊदल को बुलाकर उन  
घायलों के सिर काट लाने की आज्ञा देना, ऊदल का कहना  
कि यह घायलों को मारना वीर धर्म के विरुद्ध है, राजा का

कुछ भी न सुनना ।

दूहा ॥ पकरि वाग रजपूत सब । क्रोध जानि परिमाल ॥

सिर लंगो असमान को । पग लंगौ पायाल ॥ छं० ॥ १५ ॥

मोतीदास ॥ किये परिमाल सुहुकम गाजि । चले सब रावत जंग पै साजि ॥

चंदैल वनाफर सुष्य सुहूर । वघेलत गोहिल लोह करूर ॥

छं० ॥ १६ ॥



चले भर जागर मलहन सोइ । सजे भरजद्व भद्व होइ ॥  
निवाजिय वैस नरेस हुकम् । सनम्मुष सुन्न सु वन्न रुकम्

छं० ॥ १९

चले हरदास वघेल बलिष्ट । पचारै सक उचारै इष्ट ॥  
सुनी रजपूतन वात कुढंग । वंधे वपु घाव सुघाव सुअंग

छं० ॥ १८

कहैं रजपूत सुनौ जब घर । सुनौ परिमाल करौ जिन वैर  
सुनौ चहुआन न छंडहि दाव । करौ मति अब चंदेल उप

छं० ॥ १७

करौ प्रियराज सौं काज विरुद्ध । भजौ जन घेत जुरौ जब  
इसौ सुनि वानि किये रत नैन । कहे नृप मारहु मारहु

छं० ॥ १६

चले सब साजि चंदेल की फौज । पिलै रजपूत सनम्मुष  
मिली जब दिष्ट सौं दिष्ट करूर । जुरे रजपूत मरहु मरूर

छं० ॥ १५

मिले सुष आइ मुखाल जवान । उछालत आवत क्रुद्ध कस  
लगै सर साइक छत्तिय आइ । किधौं विष आसिय पासिय

छं० ॥ १४

लगै उर आनि सकत्तिय सेह । दुहौ कर वीर इहं विधि छे  
कटकत घाइल घग्गन काटि । घटकति सेलनि खेलनि राटि

छं० ॥ १३

गटकति चोटिय गिहनि दौरि । घटकति घाइल दाइल सौर  
चटकत चौप वहै करमाल । नटकत नाचइ घाइ मुखाल ॥

छं० ॥ १२

छटकत खर धरप्पर आइ । जटकत गुंथय जुगिय धाइ ॥  
भटकत इकन कौं गहि एक । नटकत लुट्य कुट्य मेक ॥

छं० ॥ ११

ठठकत कोइर देषिव युद्ध । उडकत डौरय वाजि विरुद्ध ॥  
ढढकय ढुकय रुकय पाय । रनंकत रुड घनंकत काय ॥

छं० ॥ १०

ही लावत वीर तमहि । परप्पर काइर जाइ रमकि ॥

इर दौरिच वीर दुरंत । धरहर चालि भयानकरत ॥

छं० ॥ २७ ॥

इहर तूर करुर लपाइ । परप्पर फट्टत जुद्धत काइ ॥

पर फौज पुरप्पुर मार । वरप्पर वाजत घाइन तार ॥

छं० ॥ २८ ॥

जिव सैन चंदेल । सरप्पर सुद्धिव विद्धिव घेल ॥

व घाइल घाइ । लरै प्रिथीराज कि सैन सुभाइ ॥

छं० ॥ २९ ॥

उमरे न पाइव चाल । भजी सब फौज लघी परिमाल ॥

मार सुतीन परे धर महि । भजी परिमाल फौज प्रसिध ॥

छं० ॥ ३० ॥

टे रन घाइल तीसक सोइ । रूपे सक पंडव होइ ॥

हौ गुन मंजरि पानिय धाइ । उर प्यावति किए सुचाइ ॥

छं० ॥ ३१ ॥

लगे सर सेलह सुसचह गात । करौ गुन मंजरी जुग्गिनि वात ॥

वांजिय वस चंदेल रतन । दोस से कीन पतन ॥

छं० ॥ ३२ ॥

नृप उदिल लीन वर

हाइव मरुहन दे तराई । सुनी तव कान पयादेउ आइ ॥

वारि । रहै वहि घाइल लीजियै मारि ॥

छं० ॥ ३३ ॥

तव उदिल

हौ द्रव रा वैन प्रसिध । सुनौ नृप र रजपूत अवध ॥

जन कौ भ्रम ताफ । करौ इनकी अब चुक सुमाफ ॥

छं० ॥ ३४ ॥

है प

रमाल सुवैन नपीन । हनी इन फौज हजार सु तीन ॥

इन कारन उदलसोइ । तवै द्रव चैन लहै मम दोइ ॥

छं० ॥ ३५ ॥